

## [१०] श्री प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

### “प्रश्नव्याकरणादशा” मूलं एवं वृत्तिः

[मूलं एवं अभयदेवसूरि रचित वृत्तिः]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा. ]

(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता → मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.)

13/10/2014, सोमवार, २०७० आसो कृष्ण ५

jain\_e\_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र-[१०], अंग सूत्र-[१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कंधः [-], ----- अध्ययनं [-] ----- मूलं [-]</b></p>
<p><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[-]</b></p> <p><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[-]</b></p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>॥ अर्हम् ॥</p> <p>श्रीमत्सुधर्मस्वामिगणभृत्प्ररूपितं</p> <p>श्रीमच्चन्द्रकुलालंकारश्रीमदभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं</p> <p><b>श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम् ।</b></p> <hr/> <p>१०१५ श्रेष्ठि मंछुभाइ तलकचंद झवेरी-सुरत      ७५० बाबु गुलाबचंदजी अमीचंदजी झवेरी-मुम्बाइ      ५०० श्रेष्ठि कल्याणचंद सौभाग्यचंद झवेरी-सुरत</p> <p>प्रसेधिका-एतेषां श्राद्धवर्याणां पूर्णद्रव्यसाहाय्येन शाह-वेणीचन्द्र सुरचन्द्रद्वारा-श्रीआगमोदयसामांतः      मुद्रितं मोहमय्यां 'निर्णयसागर'यन्त्रालये रा० रा० रामचन्द्र येसू शेडगे द्वारा      वीरसंवत् २४४५. विक्रमसंवत् १९७५. काईष्ट १९१९.      प्रतयः १०००. पण्यं १-१२-० पादोर्नं रूप्यकद्रयं.</p> </div> <p align="center">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रस्य मूल “टाइटल पेज”</p>



मूलाङ्कः ३०+१४

## प्रश्नव्याकरणदशाङ्ग सूत्रस्य विषयानुक्रम

दीप-अनुक्रमाः ४७

मूलांकः	अध्ययन	पृष्ठांकः	मूलांकः	अध्ययन	पृष्ठांकः	मूलांकः	-----	पृष्ठांकः
००१	-१- प्राणातिपातः	००४	०३०	-१- अहिंसा	२००			
००९	-२- मृषावादः	०५६	०३६	-२- सत्यं	२२९			
०१३	-३- अदत्तादान	०८६	०३८	-३- दत्तानुज्ञा	२४६			
०१७	-४- अब्रह्मं	१३२	०३९	-४- ब्रह्मचर्यं	२६२			
०२१	-५- परिग्रहः	१८४	०४४	-५- अपरिग्रहः	२८६			

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] "प्रश्नव्याकरणदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

## ['प्रश्नव्याकरणदशा' - मूल एवं वृत्ति:] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "प्रश्नव्याकरणदशाङ्ग" के नामसे सन १९२० (विक्रम संवत् १९७६) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब ।

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और श्रीमद्सागरानंदसूरिजी तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया ।

✦ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✦ आगम की सेवा करने के हमें तो बहुत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरूप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर श्रुतस्कन्ध, अध्ययन और मूलसूत्र के क्रमांक लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा श्रुतस्कन्ध एवं अध्ययन चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो सके, बायीं तरफ **आगम का क्रम** और इसी प्रत का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर सके । हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढ़ते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ **॥-॥** ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है ।

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक श्रुतस्कन्ध, अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चाहिते वर्ग, अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच सकता है । अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ट फूटनोट** भी लिखी है, जिसमे उस पृष्ठ पर चल रहे खास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है ।

अभी तो ये [jain\\_e\\_library.org](http://jain_e_library.org) का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है।

.....मुनि दीपरत्नसागर.

<b>आगम (१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [-], ----- अध्ययनं [-] ----- मूलं [-]</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [-]</p> <p style="text-align: center;">दीप अनुक्रम [-]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>॥ अर्हम् ॥</p> <p>चान्द्रकुलीनश्रीमदभयदेवाचार्यदृढव्याख्यायुतम् ।</p> <p><b>श्रीप्रश्नव्याकरणदशासूत्रम् ।</b></p> <hr/> <p>श्रीवर्द्धमानमानस्य, व्याख्या काचिद् विधीयते । प्रश्नव्याकरणाङ्गस्य, वृद्धन्यायानुसारतः ॥ १ ॥</p> <p>अज्ञा वयं शास्त्रमिदं गभीरं, प्रायोऽस्य कूटानि च पुस्तकानि ।</p> <p>सूत्रं व्यवस्थाप्यमतो विमृश्य, व्याख्यानकल्पादित एव नैव ॥ २ ॥</p> <p>अथ प्रश्नव्याकरणाख्यं दशमाङ्गं व्याख्यायते-अथ कोऽस्याभिधानस्यार्थः?, उच्यते, प्रश्नाः-अङ्गुष्ठादिप्रश्न- विद्यास्ता व्याक्रियन्ते-अभिधीयन्तेऽस्मिन्निति प्रश्नव्याकरणं, क्वचित् ‘प्रश्नव्याकरणदशा’ इति दृश्यते, तत्र</p> <hr/> <p>१ गङ्गादितो व्याख्यानरचनायाः नैव सूत्रं व्यवस्थाप्यं किं तु विमृश्य व्यवस्थाप्यमित्यर्थः.</p> </div> <p>प्र. व्या. १</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p style="text-align: center;"><b>अत्र प्रथम श्रुतस्कन्धः आरभ्यते</b></p> <p>प्रथमे श्रुतस्कन्धे प्रथम अध्ययनं “प्राणातिपात” आरभ्यते</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा ॥१॥</b></p>
<p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेववृत्तिः ॥ १ ॥</p> <p>प्रत सूत्रांक गाथा ॥१॥</p> <p>दीप अनुक्रम [१-२]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नानां-विद्याविशेषाणां यानि व्याकरणानि तेषां प्रतिपादनपरा दशा-दशाध्ययनप्रतिबद्धाः ग्रन्थपद्धतय इति प्रश्नव्याकरणदशाः, अयं च व्युत्पत्त्यर्थोऽस्य पूर्वकालेऽभूत्, इदानीं त्वाश्रवपञ्चकसंवरपञ्चकव्याकृतिरेवेहोपलभ्यते, अतिशयानां पूर्वाचारैरेदं युगीनानामपुष्टालम्बनप्रतिषेविपुरुषापेक्षयोत्तारितत्वादिति, अस्य च श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिसम्बन्धी पञ्चमगणनायकः श्रीसुधर्मस्वामी सूत्रतो जम्बूस्वामिनं प्रति प्रणयनं चिकीर्षुः सम्बन्धाभिधेयप्रयोजनप्रतिपादनपरां ‘जम्बू’ इत्यामन्त्रणपदपूर्वां ‘इणमो’ इत्यादिगाथामाह—</p> <p>॥ ॐ नमो वीतरागाय । नमो अरिहंताणं० । जंबू-इणमो अणहयसंवरविणिच्छयं पवयणस्स निस्संदं । वोच्छामि णिच्छयत्थं सुहासियत्थं महेसीहिं ॥ १ ॥</p> <p>‘जंबू’ इत्यादि । पुस्तकान्तरे पुनरेवमुपोद्घातग्रन्थ उपलभ्यते—‘तेणं कालेणं तेणं समणं चंपानाम नगरी होत्था, पुण्णभहे चेहए वणसंडे असोगवरपायवे पुढविसिलापट्टए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए नाम राया होत्था, धारिणी देवी, तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नाम थेरे जाहसंपन्ने कुलसंपन्ने बलसंपन्ने रूवसंपन्ने विणयसंपन्ने नाणसंपन्ने दंसणसंपन्ने चरित्तसंपन्ने लज्जासंपन्ने लाघवसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोभे जियनिहे जियइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जापहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरि-</p> </div> <p>१ आश्रवे शास्त्रप्रस्तावना</p> <p>॥ १ ॥</p>
	<p>→ अत्र “तेणं कालेणं०” इति सूत्रं वर्तते, मया तत् सूत्रस्य क्रमांक १ दत्तः, तत् पश्चात् “जम्बू० इणमो” इति सूत्रं (गाथा) वर्तते ।</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा ॥१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
गाथा  
॥१॥

दीप  
अनुक्रम  
[१-२]

त्तप्पहाणे चोदसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामा-  
णुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ जाव अहापडिरुवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं  
तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू नामं अ-  
णगारे कासवगोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव संखित्तविपुलतेयलेस्से अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामन्ते उहं-  
जाणू जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से अज्जजंबू जायसद्धे जायसंसए जायकोउहल्ले  
उप्पन्नसद्धे ३ संजायसद्धे ३ समुप्पन्नसद्धे ३ उट्ठाए उट्ठेइ २ जेणेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणेव उवागच्छइ २  
अज्जसुहम्मे थेरे तिकखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदइ नमंसइ नच्चासन्ने नाइदूरे विणएणं पंजलिपुडे  
पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइ णं भंते ! समणेणं भग० महा० जाव संपत्तेणं णवमस्स अंगस्स अणुत्तरोव-  
वाइयदसाणं अयमुट्ठे पं० दसमस्स णं अंगस्स पण्हावागरणाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पं०?, जंबू!  
दसमस्स अंगस्स समणेणं जाव संपत्तेणं दो सुयक्खंधा पण्णत्ता-आसवदारा य संवरदारा य, पढमस्स णं  
भंते ! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्जयणा पण्णत्ता?, जंबू ! पढमस्स णं सुयक्खंधस्स सम-  
णेणं जाव संपत्तेणं पंच अज्जयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते!० एवं चेव, एएसि णं भंते ! अण्हयसंवराणं  
समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?, तते णं अज्जसुहम्मे थेरे जंबूनामेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे  
जंबू अणगारं एवं वयासी-जंबू ! इणमो' इत्यादि, अयं च 'तेणं कालेणं २' इत्यादिको ग्रन्थः षष्ठाङ्गप्रथम-



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा ॥१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
गाथा  
॥१॥

दीप  
अनुक्रम  
[१-२]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ २ ॥

ज्ञातावदवसेयः । या चेह द्विश्रुतस्कन्धतोक्ताऽस्य सा न रूढा, एकश्रुतस्कन्धताया एव रूढत्वादिति । गाथा-  
व्याख्या त्वेवम्—‘जंबू’त्ति हे जम्बूनामन् ! ‘इणमो’त्ति इदं वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षासन्नं शास्त्रं ‘अण्हयसंवर-  
विणिच्छयं’ति आ-अभिविधिना क्लौति-श्रवति कर्म येभ्यस्ते आश्रवाः-आश्रवाः प्राणातिपातादयः पञ्च  
तथा संत्रियते-निरुध्यते आत्मतडागे कर्मजलं प्रविशदेभिरिति संवराः-प्राणातिपातविरमणादयः आश्रवाश्च  
संवराश्च विनिश्चीयन्ते-निर्णीयन्ते तत्स्वरूपाभिधानतो यस्मिंस्तदाश्रवसंवरविनिश्चयम्, तथा प्रवचनं-द्वाद-  
शाङ्गं जिनशासनं तस्य खर्जूरादिसुन्दरफलस्य निस्यन्द इव परमरसस्त्रुतिरिव निस्यन्दोऽतस्तं, प्रवचनफल-  
निस्यन्दता चास्य प्रवचनसारत्वात्, तत्सारत्वं च चरणरूपत्वात्, चरणरूपत्वं चाश्रवसंवराणां परिहारा-  
सेवालक्षणानुष्ठानप्रतिपादकत्वात्, चरणस्य च प्रवचनसारता “सामाहयमार्यं सुयनाणं जाव बिंदुसाराओ ।  
तस्सवि सारो चरणं सारो चरणस्स निव्वाण ॥ १ ॥” मिति [सामायिकादिकं श्रुतज्ञानं यावद्विन्दु-  
सारः । तस्यापि सारश्चरणं सारश्चरणस्य निर्वाणं] वचनप्रामाण्यादिति, वक्ष्ये-भणिष्यामि निश्चयाय-  
निर्णयाय निश्चयार्थं निश्चयो वार्थः-प्रयोजनमस्येति निश्चयार्थं वक्ष्ये इत्येतस्याः क्रियाया विशेषणमथवा  
निर्गतकर्मत्वयो निश्चयो-मोक्षस्तदर्थमित्येवं शास्त्रविशेषणमिदं, सुष्ठु केवलालोकविलोकनपूर्वतया यथा-  
ऽवस्थितत्वेन भाषितो-भणितोऽर्थो यस्य तत्तथा, कैः सुभाषितार्थमित्याह-महान्तश्च ते सर्वज्ञत्वतीर्थ-  
प्रवर्त्तनाद्यतिशयवत्त्वाद् ऋषयश्च-मुनयो महर्षयस्तैः, तीर्थकरैरित्यर्थः, अत्र च ‘जंबू’ इत्यनेन जम्बूनाम्नः

१ आश्रवे  
शास्त्रप्र-  
स्तावना

॥ २ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा ॥१॥</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>गाथा</b> <b>॥१॥</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१-२]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>सुधर्मस्वामिशिष्यत्वात् सुधर्मस्वामिना प्रणीतमिदं सूत्रत इत्यभिहितं, महर्षिभिरित्यनेन चार्थतस्तीर्थकरै- रिति ॥ इह च सुधर्मस्वामिनं प्रति श्रीमन्महावीरेणैवार्थतोऽस्याभिधानेऽपि यन्महर्षिभिरिति बहुवचननि- र्देशेन तीर्थकरान्तराभिहितत्वमस्य प्रतिपादितं तत्सर्वतीर्थकराणां तुल्यमतत्वप्रतिपादनार्थं, विषममतत्वे हि तेषामसर्वज्ञत्वप्रसङ्गादिति, इह च महर्षिग्रहणेन तदन्येषामपि सम्भवे यत् तीर्थकरैरिति व्याख्यातं तत् ‘अन्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउण’मिति वचनानुसारान्निरूपचरितमर्हच्छब्दप्रयोगस्य च तेष्वेव युज्यमा- नत्वादिति, एतेन चास्य शास्त्रस्योपक्रमाख्यानुयोगद्वारसम्बन्धिनः प्रमाणाभिधानभेदस्यागमाभिधानप्रतिभे- दस्याभेदभूता तीर्थकरापेक्षयाऽर्थत आत्मागमता गणधरापेक्षयाऽर्थतः अनन्तरागमता तच्छिष्यापेक्षया पर- म्परागमता प्रोक्ता, ‘जम्बू’ इत्यनेन सूत्रतः सुधर्मस्वाम्यपेक्षया आत्मागमता जम्बूस्वाम्यपेक्षयाऽनन्तराग- मता तच्छिष्यापेक्षया च परम्परागमतेति, अथवा अनुगमाख्यतृतीयानुयोगद्वारस्य प्रभेदभूतो य उपोद्घातनि- र्युक्त्यनुगमस्तत्सम्बन्धिनः पुरुषद्वारस्य प्रभेदभूताऽर्थतस्तीर्थकरलक्षणभावपुरुषप्रणीतता सूत्रतो गणधरल- क्षणभावपुरुषप्रणीतता चास्योक्ता, तथा च गुरुपर्वक्रमलक्षणः सम्बन्धोऽप्यस्य दर्शितः, एतदुपदर्शनेन चास्मिन् शास्त्रे आसप्रणीततयाऽविसंवादित्वेन ग्राह्यमेतदिति बुद्धिः प्रेक्षावतामाविर्भाविता, तथा आश्र- वसंवरविनिश्चयमित्यनेनास्याभिधेयमुक्तं, एतदभिधाने चोपक्रमद्वारान्तर्गतमर्थाधिकारद्वारं तद्विशेषभूतस्व- समयवक्तव्यताद्वारैकदेशरूपमुपदर्शितमिति, प्रवचनस्य निस्यन्दमित्यनेन तु प्रवचनप्रधानावयवरूपत्वम-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b>  <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा ॥१॥</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक गाथा ॥१॥  दीप अनुक्रम [१-२]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px 0;"> <p>प्रश्नव्याकर- ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३ ॥</p> <p>स्योक्तं, प्रवचनस्य क्षायोपशामिकभावरूपत्वेनोपक्रमाख्यानुयोगद्वारस्य नामाख्यप्रतिभेदस्य षण्णामाख्यप्रति- द्वारस्यावतारश्च दर्शितः, षण्णामद्वारे ह्यौदयिकादयः षड् भावाः प्ररूप्यन्त इति, निश्चयार्थमनेन त्वस्य शा- स्त्रस्य निश्चयलक्षणमनन्तरप्रयोजनमुक्तं, तद्भणनेन हि तदर्थिनः प्रेक्षावन्तोऽत्र प्रवर्त्तिता भवन्त्विति, नहि निष्प्रयोजनं प्रेक्षावन्तः कर्तुं श्रोतुं वा प्रवर्त्तन्ते, प्रेक्षावत्ताहानिप्रसङ्गात्, एवं चानुगमाख्यतृतीयानुयोगद्वार- स्योपोद्घातनिर्युक्त्यभिधानप्रतिद्वारस्य प्रतिभेदभूतं कारणद्वारमभिहितं, यतस्तत्रेदं चिन्त्यते-केन कारणेने- दमध्ययनमुक्तमिति, इहापि च तस्यैव निश्चयरूपस्य शास्त्रप्रतिपादनकारणस्य चिन्तितत्वात्, नन्वाश्रवसं- वरविनिश्चयमित्युक्तावपि निश्चयार्थमित्युच्यमानमतिरिच्यमानमिवाभाति, यत्र ह्याश्रवसंवरा विनिश्ची- यन्ते तत् तद्विनिश्चयार्थं भवत्येवेति, सत्यं, किन्तु आश्रवसंवरविनिश्चयमित्यनेनाभिधेयविशेषाभिधायकत्व- लक्षणं तत्स्वरूपमात्रमेव विवक्षितं, निश्चयार्थमनेन तु तत्फलभूतं प्रयोजनमिति न पुनरुक्ततेति, प्रयोजनं च प्रतिपादयतोपायोपेयभावलक्षणोऽपि सम्बन्धो दर्शितो भवति, यत इदं शास्त्रमुपायो निश्चयश्चास्योपेयमित्ये- वंरूप एवासाविति । यद्यपि चानुयोगद्वाराण्यध्ययनस्यैवावश्यकादावुपदर्श्यन्ते तथापीहाङ्गे श्रुतस्कन्धयोर- ध्ययनसमुदायरूपत्वात् कथञ्चिदुपक्रमादिद्वाराणां युज्यमानत्वात् यथासम्भवं गाथावयवैर्दर्शितानि, अत एवाचारटीकाकृताऽङ्गमुद्दिश्य तान्युपदर्शितानि । अनन्तरमाश्रवसंवरा इहाभिधेयत्वेनोक्ताः, तत्र च ‘यथो- द्देशं निर्द्देश’ इति न्यायादाश्रवांस्तावत्परिमाणतो नामतश्च प्रतिपादयन्नाह—</p> </div> <p>१ आश्रवे शास्त्रप्र- स्तावना          ॥ ३ ॥</p>



<b>आगम (१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा   २  </b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत गाथा   २  </b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप अनुक्रम [३]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>पञ्चविहो पण्णत्तो जिणेहिं इह अण्हओ अणादीओ । हिंसामोसमदत्तं अब्बंभपरिग्रहं चव ॥ २ ॥</p> <p>‘पञ्चविहो’ गाथा । पञ्चविधः-पञ्चप्रकारः प्रज्ञसः-प्ररूपितो जिनैः-रागादिजेतृभिः इह-प्रवचने लोके वा आ- स्त्वः-आश्रवः अनादिकः-प्रवाहापेक्षयाऽऽदिविरहितः उपलक्षणत्वादस्य नानाजीवापेक्षया अपर्यवसित इत्यपि दृश्यं सादित्वे सपर्यवसितत्वे वाऽऽश्रवस्य कर्मबन्धाभावेन सिद्धानामिव सर्वसंसारिणां बन्धाद्यभावप्रसङ्गः, अथवा ऋणं-अधमर्णेन देयं द्रव्यं तदतीतोऽतिदुरन्तत्वेनातिक्रान्तः ऋणातीतः अणं वा-पापं कर्म आदिः- कारणं यस्य स अणादिकः, नहि पापकर्मवियुक्ता आश्रवे प्रवर्त्तन्ते, सिद्धानामपि तत् प्रवृत्तिप्रसङ्गादिति, तमेव नामत आह-हिंसा-प्राणवधः ‘मोसं’ति सृषावादं अदत्तं-अदत्तद्रव्यग्रहणं अब्रह्म च मैथुनं परिग्रहश्च-स्वीकारो अब्रह्मपरिग्रहं, चकारः समुच्चये, एवशब्दोऽवधारणे, एवं चास्य सम्बन्धः अब्रह्म परिग्रहमेव चेति, अवधार- णार्थश्चैवं-हिंसादिभेदत एव पञ्चविधः, प्रकारान्तरेण तु द्विचत्वारिंशद्विधो, यदाह-“इंदिय ५ कसाय ४ अव्वय ५ किरिया २५ पण चउर पंच पणवीसा । जोगा तिन्नेव भवे वायाला आसवो होइ ॥ १ ॥” स्ति [ इन्द्रियाणि कषायाः अब्रतानि क्रियाः पञ्च चत्वारः पञ्च पञ्चविंशतिः । योगास्त्रय एव भवेयुः द्विचत्वारिंशदा- श्रवा भवन्ति ॥ १ ॥ ] एवं चानया गाथयाऽस्य दशाध्ययनात्मकस्याङ्गस्य पञ्चानामाश्रवाणामभिधायका- न्यायानि पञ्चाध्ययनानि सूचितानि, तत्र प्रथमाध्ययनविनिश्च(या)यप्रथमाश्रववक्तव्यतानुगमार्थमिमां द्वार- गाथामाह—</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>पञ्चविध-आश्रवाः</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं / गाथा ॥३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
गाथा  
॥३॥

दीप  
अनुक्रम  
[४]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४ ॥

जारिसओ जंनामा जह य कओ जारिसं फलं देति । जेविय करंति पावा पाणवहं तं निसामेह ॥ ३ ॥  
'जारिसो' गाहा, यादृशको-यत्स्वरूपकः, यानि नामानि यस्येति यन्नामा यद्भिधान इत्यर्थः, यथा  
च कृतो-निर्वर्त्तितः प्राणिभिर्भवतीति, यादृशं-यत्स्वरूपं फलं-कार्यं दुर्गतिगमनादिकं ददाति-करोति,  
येऽपि च कुर्वन्ति पापाः-पापिष्ठाः प्राणाः-प्राणिनस्तेषां वधो-विनाशः प्राणवधस्तं, 'तंति तत्पदार्थपञ्चकं  
'निसामेहं'ति निशमयत शृणुत मम कथयत इति शेषः । तत्र 'तत्त्वभेदपर्यायैर्व्याख्ये'ति न्यायमाश्रित्य यादृ-  
शक इत्यनेन प्राणिवधस्य तत्त्वं निश्चेयतया प्रतिज्ञातं, यन्नामेत्यनेन तु पर्यायव्याख्यानं, शेषद्वारत्रयेण तु  
भेदव्याख्या, करणप्रकारभेदेन फलभेदेन च तस्यैव प्राणिवधस्य भिद्यमानत्वात्, अथवा यादृशो यन्नामा  
वेत्यनेन स्वरूपतः प्राणिवधश्चिन्तितस्तत्पर्यायाणामपि याथार्थ्यतया तत्स्वरूपस्यैवाभिधायकत्वात्, यथा च  
कृतो ये च कुर्वन्तीत्यनेन तु कारणतोऽसौ चिन्तितः, करणप्रकाराणां कर्तृणां च तत्कारणत्वात्, यादृशं फलं  
ददातीत्यनेन तु कार्यतोऽसौ चिन्तितः, एवं च कालत्रयवर्त्तिता तस्य निरूपिता भवतीति, अथवा अनुगमा-  
ख्यतृतीयानुयोगद्वारावयवभूतोपोद्घातनिर्युक्त्यनुगमस्य प्रतिद्वाराणां 'किं कइविहं'मित्यादीनां मध्यात् कानि-  
चिद्नया गाथया तानि दर्शितानि, तथाहि-यादृशक इत्यनेन प्राणिवधस्वरूपोपदर्शकं किमित्येतत् द्वारमुक्तं,  
यन्नामेत्यनेन तु निरुक्तिद्वारं, एकार्थशब्दविधानरूपत्वात् तस्य, 'सम्महिट्ठी अमोहो' इत्यादिना गाथायुगेन  
सामायिकनिर्युक्तावपि सामायिकनिरुक्तिप्रतिपादनात्, यथा च कृत इत्यनेन कथमिति द्वारमभिहितं, ये-

१ आश्रवे  
यादृशादी-  
निद्वाराणि

॥ ४ ॥

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [१] + गाथा   ३  </b></p>
<p>प्रत गाथा   ३    दीप अनुक्रम [४]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>ऽपि च कुर्वन्त्यनेन कस्येति द्वारमुक्तं, फलद्वारं त्वतिरिक्तमिहेति । तत्र ‘यथोद्देशं निर्देश’ इति न्यायाद् या- दृश इति द्वाराभिधानायाह— प्राणवहो नाम एस निचं जिणेहिं भणिओ—पावो चंडो रुदो खुदो साहसिओ अणारिओ जिग्घिणो जि- स्संसो महब्भओ पइभओ १० अतिभओ वीहणओ तासणओ अणज्जो उव्वेयणओ य णिरवयक्खो णिद्धम्मो णिप्पिवासो णिक्कलुणो निरयवासगमणनिधणो २० मोहमहब्भयपयइओ मरणावेमणस्सो २२ । पढमं अधम्मदारं ॥ (सू० १)</p> <p>‘प्राणवहो’ इत्यादि, प्राणवधो हिंसा नामेत्यलङ्कृतौ वाक्यस्य एषः-अधिकृतत्वेन प्रत्यक्षो नित्यं-सदा न कदाचनपि पापचण्डादिकं वक्ष्यमाणस्वरूपं परित्यज्य वर्त्तत इति भावना, जिनेः-आसैर्भणितः-उक्तः, किं- विध इत्याह-पापप्रकृतीनां बन्धहेतुत्वेन पापः, कषायोत्कटपुरुषकार्यत्वाच्चण्डः, रौद्राभिधानरसविशेषप्रव- र्त्तितत्वाद्रौद्रः, क्षुद्रा-द्रोहका अधमा वा तत्प्रवर्त्तितत्वाच्च क्षुद्रः, सहसा-अवितर्कप्रवर्त्तित इति साहसिकः पुरुषस्तत्प्रवृत्तित्वात् साहसिकः, आराधाताः पापकर्मभ्य इत्यार्यास्तन्निषेधादनार्या-म्लेच्छाद्यस्तत्प्रवर्त्तितत्वा- दनार्याः, न विद्यते घृणा-पापजुगुप्सालक्षणा यत्र स निर्घृणः, वृशंसा-निःसूकास्तद्व्यापारत्वात् वृशंसः निष्क्रान्तो वा शंसायाः-श्लाघाया इति निःशंसः, महद् भयं यस्मादसौ महाभयः, प्राणिनं प्राणिनं प्रति भयं यस्मात् स प्रतिभयः, भयानि-इहलौकिकादीन्यतिक्रान्तोऽतिभयः, अत एवोक्तं-मरणभयं च भयाणंति</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only anelibrary.org</p>
	<p>“प्राणवधः” - नामक प्रथम अधर्मद्वारं</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [१]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१]</p> <p>दीप अनुक्रम [५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५ ॥</p> <p>[मरणभयं च भयानां] ‘वीहणउ’त्ति भापयति-भयवन्तं करोतीति भापनकः, त्रासः-आकस्मिकं भयं अक्रमो- त्पन्नशरीरकम्पमनःक्षोभादिलिङ्गितत्कारकत्वात्त्रासनकः, ‘अणज्जे’त्ति न न्यायोपेत इत्यन्याय्यः, उद्वेजनकः-चित्त- विह्वकारी उद्वेगकर इत्यर्थः, चकारः समुच्चये, ‘निरवयक्खो’त्ति निर्गताऽपेक्षा-परप्राणविषया वा परलोकादिविष- या वा यस्मिन्नसौ निरपेक्षः निरवकाङ्क्षो वा, निर्गतो धर्मात्-श्रुतचारित्रलक्षणादिति निर्धर्मः, निर्गतः पिपासा- या वध्यं प्रति स्नेहरूपाया इति निष्पिपासः, निर्गता करुणा-द्रया यस्मादसौ निष्करुणः, निरयो-नरकः स एव वासो निरयवासस्तत्र गमनं निरयवासगमनं तदेव निधनं-पर्यवसानं यस्य स निरयवासगमननिधनः त- त्फल इत्यर्थः, मोहो-मूढता महाभयं-अतिभीतिः तयोः प्रकर्षकः-प्रवर्तको यः स मोहमहाभयप्रकर्षकः, कचि- न्मोहमहाभयप्रवर्द्धक इति पाठः, ‘मरणावेमनस्सो’त्ति मरणेन हेतुना वैमनस्यं-दैन्यं देहिनां यस्मात् स मर- णवैमनस्यः । प्रथमं-आद्यं मृषावादाद्विरापेक्षया अधर्मद्वारं-आश्रवद्वारमित्यर्थः । तदेवमियता विशेषण- समुदायेन यादृशः प्राणिवध इति द्वारमभिहितं, अधुना यन्नामेतिद्वारमभिधातुमाह—</p> <p>तस्स य नामाणि इमाणि गोष्णाणि होंति तीसं, तंजहा—पाणवहं १ उम्मूलाणा सरीराओ २ अवीसंभो ३ हिंसविहिंसा ४ तहा अकिच्चं च ५ घायणा ६ मारणा य ७ वहणा ८ उद्वणा ९ तिवायणा य १० आरंभसमारंभो ११ आउयकम्मस्सुवद्दवो भेयणिट्ठवणगालणा य संवट्ठगसंखेवो १२ मच्चू १३ असंजमो १४ कडगमहणं १५ वोरमणं १६ परभवसंकांमकारओ १७ दुग्गतिप्पवाओ १८ पावकोवो य १९ पाव-</p> <p>१ आश्रवे वधस्वरूपं</p> <p>॥ ५ ॥</p> <p>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p> </div>
	<p>प्राणवधस्य त्रिंशत्-नामानि</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[६]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>लोभो २० छविच्छेओ २१ जीवियंतकरणो २२ भयंकरो २३ अणकरो य २४ वज्जो २५ परितावणअ- ण्हओ २६ विणासो २७ निज्जवणा २८ लुंपणा २९ गुणाणं विराहणत्ति ३० विय तस्स एवमादीणि णाम- धेज्जाणि होंति तीसं पाणवहसस कलुसस्स कडुयफलदेसगाइं । (सू० २)</p> <p>‘तस्से’त्यादि, तस्य-उक्तस्वरूपस्य प्राणिवधस्य चकारः पुनरर्थः नामानि-अभिधानानीमानि-वक्ष्यमाण- तया प्रत्यक्षासन्नानि गौणानि-गुणनिष्पन्नानि भवन्ति त्रिंशत्, तद्यथा-प्राणानां-प्राणिनां वधो-घातः प्रा- णवधः १ ‘उम्मूलणा सरीराउ’त्ति वृक्षस्योन्मूलनेव उन्मूलना-निष्काशनं जीवस्य शरीराद्-देहादिति २, ‘अवीसंभो’त्ति अविश्वासः, प्राणिवधप्रवृत्तो हि जीवानामविश्रंभणीयो भवतीति प्राणवधस्याविश्रंभकार- णत्वादविश्रंभव्यपदेश इति ३, ‘हिंसविहिंस’त्ति हिंस्यंत इति हिंस्या-जीवास्तेषां विहिंसा-विघातो हिंस्यविहिंसा, अजीवविघाते किल कथंचित्प्राणवधो न भवतीति हिंस्यानामिति विशेषणं विहिंसाया उ- क्तमथवा हिंसा विहिंसा चैकैवेह ग्राह्या द्वयोरुपादानेऽपि बहुसमत्वादिति, अथवा हिंसनशीलो हिंस्रः-प्रमत्तः ‘जो होइ अप्पमत्तो अहिंसओ हिंसओ इयरो’त्ति [यो भवत्यप्रमत्तोऽहिंसको हिंसक इतरः] वचनात् तत्कृता विशेषवती हिंसा हिंस्रविहिंसा ४, तथा ‘अकिच्चं व’त्ति तथा-तेनैव प्रकारेण हिंस्यविषयमेवेत्यर्थः, अकृत्यं च -अकरणीयं च, चशब्द एकार्थिकसमुच्चयार्थः ५, घातना मारणा च प्रतीते, चकारः समुच्चयार्थ एव ६-७, ‘वह- ण’त्ति हननं ८ ‘उहवण’त्ति उपद्रवणमपद्रवणं वा ९ ‘तिवाघणा ये’ति त्रयाणां-मनोवाक्कायानामथवा त्रिभ्यो</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Digital Library.org</p>
	<p>प्राणवधस्य त्रिंशत्-नामानि</p>

<b>आगम (१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२]</b>
<b>प्रत सूत्रांक [२]  दीप अनुक्रम [६]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- २० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>—देहायुष्केन्द्रियलक्षणेभ्यः प्राणेभ्यः पातना-जीवस्य भ्रंसना त्रिपातना, उक्तं च—‘कायवह्मणो तिष्ठिण उ अहवा देहाउइंदिअप्पाणा’ इत्यादि, अथवा अतिशयवती यातना-प्राणेभ्यो जीवस्यातिपातना तीतपि- धानादिशब्देष्विवाकारलोपात्, चकारोऽत्रापि समुच्चयार्थं इति १०, ‘आरंभसमारंभो’ति आरभ्यन्ते-विना- श्यन्त इति आरम्भा-जीवास्तेषां समारम्भः-उपमर्दः अथवा आरम्भः-कृष्यादिव्यापारस्तेन समारम्भो- जीवोपमर्दः अथवा आरम्भो-जीवानामुपद्रवणं तेन सह समारम्भः-परितापनमित्यारम्भसमारम्भः प्राण- वधस्य पर्याय इति, अथवा आरम्भसमारम्भशब्दयोरेकतर एव गणनीयो, बहुसमरूपत्वादिति ११, ‘आउ- यकम्मस्सुवह्वो भेदनिट्टवणगालणा य संवट्टगसंखेवो’ति आयुःकर्मण उपद्रव इति वा तस्यैव भेद इति वा तन्निष्ठापनमिति वा तद्गालनेति वा, चः समुच्चये, तत्संवर्त्तक इति वा, इह स्वार्थे कः, तत्सङ्केप इति वा, प्राणवधस्य नाम, एतेषां च उपद्रवादीनामेकतरस्यैव गणनेन नाम्नां त्रिंशत्पूरणीया, आयुश्छेदलक्षणार्थोपे- क्षया सर्वेषामेकत्वादिति १२ मृत्युः १३ असंयमः १४ एतौ प्रतीतौ तथा कटकन-सैन्येन किलिञ्जेन वा आक्रम्य मर्दनं कटकमर्दनं, ततो हि प्राणवधो भवतीत्युपचारात् प्राणवधः कटकमर्दनशब्देन व्यपदिश्यत इति १५ ‘वोरमणं’ति व्युपरमणं प्राणेभ्यो जीवस्य व्युपरतिः, अयं च व्युपरमणशब्दोऽन्तर्भूतकारितार्थः, प्राणवधपर्यायो भवतीति भावनीयं १६ ‘परभवसङ्गमकारक’ इति प्राणवियोजितस्यैव परभवे सङ्क्रान्तिस- द्भावात् १७ दुर्गतौ नरकादिकायां कर्त्तारं प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपातः दुर्गतौ वा प्रपातो यस्मात् स तथा</p> </div> <div style="width: 15%;"> <p>१ आश्रवे वधना- मानि          ॥ ६ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>
	<p>प्राणवधस्य त्रिंशत्-नामानि</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[६]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>१८ ‘पापकोवो यंत्ति पापं-अपुण्यप्रकृतिरूपं कोपयति-प्रपञ्चयति पुष्पाति यः स पापकोप इति अथवा पापं चासौ कोपकार्यत्वात् कोपश्चेति पापकोपः चः समुच्चये १९ ‘पापलोभो’त्ति पापं-अपुण्यं लुभ्यति-प्राणिनि स्निह्यति संश्लिष्यतीति यावत् यतः स पापलोभः, अथवा पापं चासौ लोभश्च तत्कार्यत्वात्पापलोभः २० ‘छविच्छेओ’त्ति छविच्छेदः-शरीरच्छेदनं तस्य च दुःखोत्पादनरूपत्वात् प्रस्तुतपर्यायविनाशकारणत्वाच्चोप-चारात् प्राणवधत्वं, आह—“तप्पजायविणासो दुक्खुप्पातो य संकिलेसो य । एस व्हो जिणभणिओ वज्जेयव्वो पयत्तेणं ॥ १ ॥”ति, [ तत्पर्यायविनाशो दुःखोत्पादश्च संक्लेशश्च । एष वधो जिनभणितो वर्जयितव्यः प्रयत्नेन ॥ १ ॥ ] २१ जीवितान्तकरणः २२ भयंकरश्च प्रतीत एव २३ ऋणं-पापं करोतीति ऋणकरः २४ ‘वज्जो’त्ति वज्रमिव वज्रं गुरुत्वात् तत्कारिप्राणिनामतिगुरुत्वेनाधोगतिगमनाद् वर्ज्यते वा विवेकिभिरिति वर्जः, ‘सावज्जो’त्ति पाठान्तरे सावद्यः-सपाप इत्यर्थः २५ ‘परितावणअण्हड’त्ति परितापनपूर्वक आश्रवः परितापनाश्रवः, आश्रवो हि मृषावादादिरपि भवति न चासौ प्राणवध इति प्राणवधसङ्ग्रहार्थमाश्रवस्य परितापनेति विशेषणमिति, अथवा प्राणवधशब्दं नामवन्तं संस्थाप्य शरीरोन्मूलनादीनि तन्नामानि सङ्कल्पनीयानि ततः परितापनेति पञ्चविंशतितमं नाम आश्रव इति षड्विंशतितममिति २६ ‘विनाश’ इति प्राणानामिति गम्यते २७ ‘णिज्झवण’त्ति निः-आधिक्येन यान्ति प्राणिनः प्राणास्तेषां निर्यातां-निर्गच्छतां प्रयोजकत्वं निर्यापना २८ ‘लुंपण’त्ति लोपना-छेदनं प्राणानामिति २९ ‘गुणानां विराधनेत्यपि चे’ति हिंस्यप्रा-</p> </div> <p>प्र. न्या. २</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>प्राणवधस्य त्रिंशत्-नामानि</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[६]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>णिगतगुणानां हिंसकजीवचारित्रगुणानां वा विराधना-खण्डना इत्यर्थः, इतिशब्द उपदर्शने, अपिचेति समुच्चये इति ३० । ‘तस्से’त्यादि प्राणिवधनाम्नां निगमनवाक्यं ‘एवमाईणि’त्ति आदिशब्दोऽत्र प्रकारार्थो यदाह—“सामीप्येऽथ व्यवस्थायां, प्रकारेऽवयवे तथा । चतुर्ध्वेषु मेधावी, आदिशब्दं तु लक्षये-॥ १ ॥” इति । तान्येवमादीनि-एवंप्रकाराण्युक्तस्वरूपाणीत्यर्थः नामान्येव नामधेयानि भवन्ति, त्रिंशत्प्राणिवधस्य कलुषस्य-पापस्य कटुकफलदेशकानि-असुन्दरकार्योपदर्शकानि यथार्थत्वात्तेषामिति । तद्विद्यता यन्नामेत्यु-क्तमथ गाथोक्तद्वारनिर्देशक्रमागतं यथा च कृत इत्येतदुपदर्शयति, तत्र च प्राणिवधकारणप्रकारे प्राणिवध-कर्तृणामसंयतत्वादयो धर्मा जलचरादयो वध्याः तथाविधमांसादीनि प्रयोजनानि च अवतरन्ति एतन्निष्पन्न-त्वात् प्राणिवधप्रकारस्येति तानि क्रमेण दर्शयितुमाह—</p> <p>तं च पुण करेति केई पावा अस्संजया अविरया अणिहुयपरिणामदुप्पयोगी पाणवहं भयंकरं बहुविहं बहु- प्पगारं परदुक्खुप्पायणप्पसत्ता इमेहिं तसथावरेहिं जीवेहिं पडिणिविटा, किं ते ? पाठीणतिमितिमिं गिल- अणेगल्लसविहजातिमंदुक्कदुविहकच्छभणक्कमगरदुविहगाहादिलिवेढयमंदुयसीमागारपुलुयसुंसुमारबहुप्पगा- राजलयरविहाणाकते य एवमादी, कुरंगरुरुसरभचमरसंवरहुरढभससयपसयगोणसरोहियहयगयखर- करभखग्गवानरगवयविगसियालकोलमजारकोलसुणकसिरियंदलगावत्तकोकंतियगोकणमियमहिसविग्घळ- गलदीवियासाणतरच्छअच्छब्भलसहूलसीहचिल्लचउप्पयविहाणाकए य एवमादी, अयगरगोणसवराहिम-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३  ॥ ७ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>प्राणवधस्य त्रिंशत्-नामानि</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>उल्लिकाउदरदन्धभुष्पफयासालियमहोरगोरगविहाणककए य एवमादी, छीरलसरंभसेहसेल्लगगोधुंदरणउल- सरडजाहगमुगुंसखाडहिलवाउपियघीरोलियसिरीसिवगणे य एवमादी, कादंबकवकवलाकासारसआडा- सेतीयकुललधंजुलपारिप्पवकीवसउणदीविय(पीपीलिय)हंसधत्तरिडगभासकुलीकोसकुंचदगतुंडढेणियालगसू- यीमुहकविलपिंगलक्खगकारंडगचक्कवागउक्कोसगरुलपिंगुलसुयवरहिणमयणसालनंदीमुहनंदमाणगकोरंगभिं- गारगकोणालगजीवजीवकतिसिरवड्कलावककपिंजलककवोतकपारेवयगचिडिगटिंककुक्कुडवेसरमयूरगचउ- रगहयपोंडरीयकरकवीरलसेणवायसयविहंगभिणासिचासवग्गुलिचम्मडिलविततपक्खिखहयरविहाणाकतेय एवमायी, जलथलखगचारिणो उ पंचिंदिए पसुगणे वियतियचउरिंदिए विविहे जीवे पियजीविए मरणवुक्खपडिकूले वराए हणंति बहुसंक्किलिडकम्मा । इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, किं ते?, चम्मवसामं- समेयसोणियजगफिप्फिसमत्थुलंगहितयंतपित्तफोफसदंतट्टा अट्टिभिंजनहनयणकण्णण्हारुणिनक्कधमणिसिं- दाडिपिच्छविसविसाणवालहेउं, हिंसंति य भमरमधुकरिगणे रसेसु गिद्धा तहेव तेंदिए सरीरोवकरण- डयाए क्खिण्णे वेंदिए वहवे वरथोहरपरिमंडणट्टा, अण्णेहि य एवमाइएहिं वहूहिं कारणसतेहिं अबुहा इह हिंसंति तसे पाणे इमे य एगिंदिए वहवे वराए तसे य अण्णे तदस्सिए चेव तणुसरीरे समारं- भंति अत्ताणे असरणे अणाहे अवंधवे कम्मनिगलवद्धे अकुसलपरिणाममंदवुद्धिजणदुव्विजाणए पुढवि- मये पुढविसंसिए जलमए जलगए अणलणिलतणवणस्सतिगणनिसिए य तम्मयतज्जिते चेव तदाहारे</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Digital Library</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ८ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>तत्परिणतवर्णगंधरसफासर्वोदिरूवे अचक्खुसे चक्खुसे य तसकाइए असंखे थावरकाए य सुहुमबायर-पत्तेयसरीरनामसाधारणे अणंते हणंति अविजाणओ य परिजाणओ य जीवे इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं, किं ते?, करिसणपोक्खरणीवाधिवप्पिणिकूवसरतलागचितिवेतिथखातियआरामविहारथूभपागारदारगोड-रअट्टालगचरियासेतुसंकमपासायविकप्पभवणघरसरणलेणआवणचेतियदेवकुलचित्तसभापवाआयतणावस-हभूमिघरमंडवाण य कए भायणभंडोवगरणस्स विविहस्स य अट्टाए पुढाविं हिंसंति मंदबुद्धिया जलं च मज्जणयपाणभोयणवत्थधोवणसोयमादिएहिं पयणपयावणजलावणविदंसणेहिं अगणिं सुप्पवियणतालयं-टपेहुणमुहकरयलसागपत्तवत्थमादिएहिं अणिलं अगारपरिवा[डिया]रभक्खभोयणसयणासणफलकमुसलउ-खलततविततातोज्जवहणयाहणमंडवविविहभवणतोरणाविडंगदेवकुलजालयद्धचंदनिज्जुगचंदसालियवेतियणि-स्सेणिदोणिचंगेरिखीलभेढकसभापवावसहगंधमल्लाणुलेवणंवरजुयनंगलमइयकुलियसंदणसीयारहसगडजाण-जोग्गअट्टालगचरिअदारगोपुरफलिहाजंतसूलियलउडमुसंढिसतग्घिवहुपहरणावरणुवक्खराण कते, अण्णेहि य एवमादिएहिं बहूहिं कारणसतेहिं हिंसन्ति ते तरुणणे भणिता एवमादी सत्ते सत्तपरिवजिया उवह-णन्ति दढमूढा दारुणमती कोहा माणा माया लोभा हस्सरतीअरती सोय वेदत्थी जीयकामत्थधम्म-हेउं सवसा अवसा अट्टा अणट्टाए य तसपाणे थावरे य हिंसंति हिंसंति मंदबुद्धी सवसा हणंति अवसा हणंति सवसा अवसा दुहओ हणंति अट्टा हणंति अणट्टा हणंति अट्टा अणट्टा दुहओ हणंति हस्सा हणंति वेरा</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३  ॥ ८ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>हणंति रतीय हणंति हस्सवेरारती य हणंति कुद्धा हणंति लुद्धा हणंति मुद्धा हणंति कुद्धा लुद्धा मुद्धा  हणंति अत्था हणंति धम्मा हणंति कामा हणंति अत्था धम्मा कामा हणंति ( सू० ३ )</p> <p>‘तं चे’त्यादि, यस्य स्वरूपं नामानि चानन्तरमुक्तानि तं प्राणवधमित्युत्तरेण पदेन सम्बन्धः, चकारो वि-  शेषणार्थः विशेषणं च कर्तुं कारकं, पुनःशब्दो भाषामात्रे, कुर्वन्ति-विदधति, केचिदिति-केचिदेव जीवाः न  पुनः सर्वे, कीदृशा इत्याह-पापाः-पातकिनः, त एव विभज्यन्ते-असंयताः-असंयमवन्तः अविरताः-न विशे-  षतो ये तपोऽनुष्ठाने रताः ‘अनिहुयपरिणामदुष्पयोगी’ति अनिभृतः-अनुपशमपरः परिणामो येषां ते तथा,  दुष्प्रयोगाः-दुष्टमनोवाक्कायव्यापारा येषां सन्ति ते तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, प्राणिवधं-प्राणातिपातं  किंभूतं?-बहुविधं भयङ्करं, पाठान्तरेण भयङ्करं, तथा ‘बहुविधा’ बहवः प्रकारा यस्य स तथा तं, सप्रभेद-भे-  दयुक्तमित्यर्थः, किंभूतास्ते?-परदुःखोत्पादनप्रसक्ताः, तथा ‘इमेहिं’ एतेषु प्रत्यक्षेषु त्रसस्यावरेषु जीवेषु प्र-  तिनिविष्टाः-तदरक्षणतस्तेषु वस्तुतो द्वेषवन्तः ‘किं ते’त्ति कथं तं प्राणवधं कुर्वन्तीत्यर्थः, तद्यथेति वा-‘पा-  ठीणे’त्यादि, पाठीना-मत्स्यविशेषाः तिमयस्तिमिङ्गलाश्च-महामत्स्या महामत्स्यतमाः अनेकश्लेषाः-विविधम-  त्स्याः सूक्ष्ममत्स्यखलमत्स्ययुगमत्स्यादयः विविधजातयो-नानाजातीया मण्डूका द्विविधाः कच्छपाः-मांस-  कच्छपअस्थिकच्छपभेदात् नक्रा-मत्स्यविशेषा एव ‘मकरदुविह’त्ति मकरा-जलचरविशेषाः सुंडामकरम-  त्स्यमकरभेदेन द्विभेदा ग्राहा-जलजन्तुविशेषा एव दिलिवेष्टमन्दुकसीमाकारपुलकास्तु ग्राहभेदा एव सुं-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [३]</p> <p>दीप अनुक्रम [७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ९ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>सुमारा-जलचरविशेषाः तत एषां द्वन्द्वः ततश्च ते च ते बहुप्रकाराश्चेति कर्मधारयोऽतस्तान् घन्तीति वक्ष्यमाणेन योगः, इह च द्वितीयाबहुवचनेऽप्येकाराभावश्छान्दसत्वात्, ‘जलचरविहाणाक ए एवमाइ’त्ति जलचराणां विधानानि-भेदास्तान्येव विधानकानि तानि कृतानि-विहितानि यैस्तथा तान् जलचरविधानककृतांश्च, इह च कशब्दलोपेन विधानशब्दस्यान्तर्दीर्घत्वं, एवमादीन्-पाठीनादीन्, तथा कुरङ्गा-मृगा हरवः-तद्विशेषाः सरभा-महाकाया आटव्यपशुविशेषाः परासरेति पर्याया ये हस्तिनमपि पृष्ठे समारोपयन्ति चमरा-आरण्यगावः संवरा-येषामनेकशाखे शृङ्गे भवतः ‘हुरवमे’त्ति उरभ्रा-मेषाः शशाः-शशका लोमटकाकृतयः प्रशया-द्विखुराटव्यपशुविशेषा गोणा-गावः रोहिताः-चतुष्पदविशेषाः पाठान्तरेण त एव हया-अश्वा गजा-हस्तिनः खरा-रासभाः करभा-उष्ट्राः खड्गा-येषां पार्श्वयोः पक्षवच्चर्माणि लम्बन्ते शृङ्गं चैकं शिरसि भवति वानरा-मर्कटाः गवया-गवाकृतयो वर्तुलकण्टाः वृका-ईहामृगपर्यायाः नाखरविशेषाः शृगाला-जम्बुकाः कोला-उंदराकृतयः पाठान्तरेण कोका-नाखरविशेषाः मार्जारा-विरालाः ‘कोलसुणग’त्ति महासूकराः अथवा क्रोडा-शूकरा श्वानः-कौलेयकाः श्रीकन्दलका आवर्त्ताश्च एकखुरविशेषाः कोकंतिका-लोमटका ये रात्रौ कौ कौ एवं रवन्ति गोकर्णा-द्विखुरचतुष्पदविशेषा मृगा-सामान्यहरिणाः कुरङ्गादयस्तु प्रागभिहिताः शृङ्गवर्णादिविशेषणास्तद्विशेषाः सामर्थ्यादत्र गम्याः महिषाः-प्रतीताः ‘विगघय’त्ति व्याघ्रा-नाखरविशेषाः छगला-अजाः द्वीपिकाः-चित्रकाभिधाना नाखरविशेषाः श्वानः-आटव्या एव कौलेयकाः</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३</p> <p style="text-align: center;">॥ ९ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तरक्षाः अच्छा भल्लाः शार्दूलाश्च व्याघ्रविशेषाः सिंहा-हरयः चित्तला-नाखरविशेषा एव पाठान्तरेण चित्रलाः-हरिणाकृतयो द्विखुरविशेषास्तत एषां कुरङ्गादीनां द्वन्द्वः, ‘चउप्पयविहाणाकए एवमाइ’ति चतुष्पदविधानकानि तज्जातिविशेषाः कृतानि-विहितानि यैर्व्यक्तिभूतैः कुरङ्गादिभिस्ते तथा, ततः पूर्वपदेन कर्मधारयः, ततस्तांश्च एवमादीन्-कुरङ्गादिप्रकारान्, तथा अजगराः-शयुपर्यायाः उरःपरिसर्पविशेषाः गोणसा-निष्फणाहिविशेषाः वराहयो-दृष्टिविषाहयः फणाकरणदक्षाः मुकुलिनो-ये फणा न कुर्वन्ति काकोदरा दर्भपुष्पाश्च दर्वीकरसर्पविशेषाः, आसालिका महोरगाश्चोरःपरिसर्पविशेषाः, तत्रासालिका यच्छरीरं द्वादशयोजनप्रमाणमुत्कर्षतो भवति, क्षयकाले च महानगरस्कन्धावारादीनामथ उत्पद्यते, महोरगास्तु मनुष्यक्षेत्रवहिर्भाविनो यच्छरीरं योजनसहस्रप्रमाणमुत्कर्षत आख्यायत इति, तत एतेषां द्वन्द्वः, ततः तेषां उरगविधानकानि कृतानि यैस्ते तथा ततः कर्मधारयः, ततश्च तांश्च एवमादीनि, तथा क्षीरलाः शरम्बाश्च-भुजपरिसर्पविशेषाः सेहाः-तीक्ष्णशलाकाकुलशरीराः शल्यका-यच्चर्मकतेलकैरङ्गरक्षा विधीयते गोधा उन्दुरा नकुलाश्च प्रतीताः शरटाः-कृकलाशा जाहकाः-कण्टकावृतशरीराः मुगुंसाः-खाडलिल्लाकृतयः खाड-हिलाः-कृष्णशुक्लपट्टाङ्कितशरीराः शून्यदेवकुलादिवासिन्यः वातोत्पत्तिका रूढ्यावसेया गृहकोकिलिकाः-गृहगोधिकाः, एतेषां द्वन्द्वः, तत एते च ते सरिसृपगणाश्चेति कर्मधारयस्ततस्तांश्च एवमादीन्-क्षीरलादि-प्रकारानित्यर्थः, तथा कादम्बा-हंसविशेषाः बकाश्च-वकोटकाः बलाकाश्च-विसकण्ठिकाः सारसाश्च-दावा-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>			
<p>प्रत सूत्रांक [३]</p> <p>दीप अनुक्रम [७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १० ॥</p> </td> <td style="width: 70%; padding: 5px;"> <p>घाटाः आडासेतीकाश्च कुललाश्च वंजुलाश्च-खदिरचञ्चवः पारिप्लवाश्च कीवाश्च शकुनाश्च पिपीलिकाश्च-पीपीतिकारका हंसाश्च-श्वेतपक्षाः धार्तराष्ट्राश्च-कृष्णचरणानना हंसा एव भासाश्च-सकुन्ताः 'कुलीकोस'त्ति कुटीक्रोशाश्च क्रौञ्चाश्च दक्तुण्डाश्च हेणिकालकाश्च शूचीमुखाश्च कपिलाश्च पिङ्गलाक्षकाश्च कारंडकाश्च चक्रवाकाश्च-रथाङ्गाः उत्क्रोशाश्च-कुरराः गरुडाश्च-सुपर्णाः पिङ्गलाश्च शुकाश्च-कीरा बर्हिणश्च-कलापवन्मयूराः मदनशालाश्च-सारिकाविशेषाः नन्दीमुखाश्च नन्दमानकाश्च कोरंकाश्च भृङ्गारकाश्च भृङ्गारिकाश्च-रसति निशि भूमौ ब्रह्मलशरीराः इत्येवंलक्षणाः कोणालकाश्च जीवजीवकाश्च तित्तिराश्च वर्त्तकाश्च लावकाश्च कपिञ्जलकाश्च कपोतकाश्च पारापतकाश्च चिटिकाश्च-कलंचिका ढिकाश्च कुर्कुटाश्च-ताम्रचूडाः वेसराश्च मयूरकाश्च-कलापवर्जिताः चकोरकाश्च हृदपुण्डरीकाश्च शालकाश्च पाठान्तरेण करकाश्च वीरल्लश्येनाश्च श्येना एव वायसाश्च-काकविहङ्गा भेनाशितश्च चाषाश्च-किकिदीविनः वल्गुल्यश्च चर्मास्थिलाश्च-चर्मचटका विततपक्षिणश्च-मनुष्यक्षेत्रबहिर्वर्त्तिन इति द्वन्द्वः, ते च ते 'खचरविहाणाकए य'त्ति खचरविधानककृताश्चेति, तथा तांश्च एवमादीन्-उक्तप्रकारान्, एतेषु च शब्देषु केचिदप्रतीयमानार्थाः केचिदप्रतीयमानपर्याया नामकोशेऽपि केषाञ्चित्प्रयोगानभिधानाद्, आह च—“जीवजीवकपिञ्जलचकोरहारीतवञ्जुलकपोताः । कारण्डवकादम्बकककुरायाः पक्षिजातयो ज्ञेयाः ॥ १॥” इति, पूर्वोक्तानेव सङ्ग्रहवचनेनाह-जलस्थलखचारिणश्च, चशब्दो जलचरादिसामान्यसमुच्चयार्थः पञ्चेन्द्रियान् पशुगणान् विविधान् 'वियतियचउरिंदिय'त्ति द्वे च त्रीणि च चत्वारि</p> </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३</p> <p style="text-align: center;">॥ १० ॥</p> </td> </tr> </table> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;"> <span style="float: left;">Jain Education International</span> <span style="float: right;">www.jainelibrary.org</span> </p>	<p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १० ॥</p>	<p>घाटाः आडासेतीकाश्च कुललाश्च वंजुलाश्च-खदिरचञ्चवः पारिप्लवाश्च कीवाश्च शकुनाश्च पिपीलिकाश्च-पीपीतिकारका हंसाश्च-श्वेतपक्षाः धार्तराष्ट्राश्च-कृष्णचरणानना हंसा एव भासाश्च-सकुन्ताः 'कुलीकोस'त्ति कुटीक्रोशाश्च क्रौञ्चाश्च दक्तुण्डाश्च हेणिकालकाश्च शूचीमुखाश्च कपिलाश्च पिङ्गलाक्षकाश्च कारंडकाश्च चक्रवाकाश्च-रथाङ्गाः उत्क्रोशाश्च-कुरराः गरुडाश्च-सुपर्णाः पिङ्गलाश्च शुकाश्च-कीरा बर्हिणश्च-कलापवन्मयूराः मदनशालाश्च-सारिकाविशेषाः नन्दीमुखाश्च नन्दमानकाश्च कोरंकाश्च भृङ्गारकाश्च भृङ्गारिकाश्च-रसति निशि भूमौ ब्रह्मलशरीराः इत्येवंलक्षणाः कोणालकाश्च जीवजीवकाश्च तित्तिराश्च वर्त्तकाश्च लावकाश्च कपिञ्जलकाश्च कपोतकाश्च पारापतकाश्च चिटिकाश्च-कलंचिका ढिकाश्च कुर्कुटाश्च-ताम्रचूडाः वेसराश्च मयूरकाश्च-कलापवर्जिताः चकोरकाश्च हृदपुण्डरीकाश्च शालकाश्च पाठान्तरेण करकाश्च वीरल्लश्येनाश्च श्येना एव वायसाश्च-काकविहङ्गा भेनाशितश्च चाषाश्च-किकिदीविनः वल्गुल्यश्च चर्मास्थिलाश्च-चर्मचटका विततपक्षिणश्च-मनुष्यक्षेत्रबहिर्वर्त्तिन इति द्वन्द्वः, ते च ते 'खचरविहाणाकए य'त्ति खचरविधानककृताश्चेति, तथा तांश्च एवमादीन्-उक्तप्रकारान्, एतेषु च शब्देषु केचिदप्रतीयमानार्थाः केचिदप्रतीयमानपर्याया नामकोशेऽपि केषाञ्चित्प्रयोगानभिधानाद्, आह च—“जीवजीवकपिञ्जलचकोरहारीतवञ्जुलकपोताः । कारण्डवकादम्बकककुरायाः पक्षिजातयो ज्ञेयाः ॥ १॥” इति, पूर्वोक्तानेव सङ्ग्रहवचनेनाह-जलस्थलखचारिणश्च, चशब्दो जलचरादिसामान्यसमुच्चयार्थः पञ्चेन्द्रियान् पशुगणान् विविधान् 'वियतियचउरिंदिय'त्ति द्वे च त्रीणि च चत्वारि</p>	<p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३</p> <p style="text-align: center;">॥ १० ॥</p>
<p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १० ॥</p>	<p>घाटाः आडासेतीकाश्च कुललाश्च वंजुलाश्च-खदिरचञ्चवः पारिप्लवाश्च कीवाश्च शकुनाश्च पिपीलिकाश्च-पीपीतिकारका हंसाश्च-श्वेतपक्षाः धार्तराष्ट्राश्च-कृष्णचरणानना हंसा एव भासाश्च-सकुन्ताः 'कुलीकोस'त्ति कुटीक्रोशाश्च क्रौञ्चाश्च दक्तुण्डाश्च हेणिकालकाश्च शूचीमुखाश्च कपिलाश्च पिङ्गलाक्षकाश्च कारंडकाश्च चक्रवाकाश्च-रथाङ्गाः उत्क्रोशाश्च-कुरराः गरुडाश्च-सुपर्णाः पिङ्गलाश्च शुकाश्च-कीरा बर्हिणश्च-कलापवन्मयूराः मदनशालाश्च-सारिकाविशेषाः नन्दीमुखाश्च नन्दमानकाश्च कोरंकाश्च भृङ्गारकाश्च भृङ्गारिकाश्च-रसति निशि भूमौ ब्रह्मलशरीराः इत्येवंलक्षणाः कोणालकाश्च जीवजीवकाश्च तित्तिराश्च वर्त्तकाश्च लावकाश्च कपिञ्जलकाश्च कपोतकाश्च पारापतकाश्च चिटिकाश्च-कलंचिका ढिकाश्च कुर्कुटाश्च-ताम्रचूडाः वेसराश्च मयूरकाश्च-कलापवर्जिताः चकोरकाश्च हृदपुण्डरीकाश्च शालकाश्च पाठान्तरेण करकाश्च वीरल्लश्येनाश्च श्येना एव वायसाश्च-काकविहङ्गा भेनाशितश्च चाषाश्च-किकिदीविनः वल्गुल्यश्च चर्मास्थिलाश्च-चर्मचटका विततपक्षिणश्च-मनुष्यक्षेत्रबहिर्वर्त्तिन इति द्वन्द्वः, ते च ते 'खचरविहाणाकए य'त्ति खचरविधानककृताश्चेति, तथा तांश्च एवमादीन्-उक्तप्रकारान्, एतेषु च शब्देषु केचिदप्रतीयमानार्थाः केचिदप्रतीयमानपर्याया नामकोशेऽपि केषाञ्चित्प्रयोगानभिधानाद्, आह च—“जीवजीवकपिञ्जलचकोरहारीतवञ्जुलकपोताः । कारण्डवकादम्बकककुरायाः पक्षिजातयो ज्ञेयाः ॥ १॥” इति, पूर्वोक्तानेव सङ्ग्रहवचनेनाह-जलस्थलखचारिणश्च, चशब्दो जलचरादिसामान्यसमुच्चयार्थः पञ्चेन्द्रियान् पशुगणान् विविधान् 'वियतियचउरिंदिय'त्ति द्वे च त्रीणि च चत्वारि</p>	<p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३</p> <p style="text-align: center;">॥ १० ॥</p>		



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>च पञ्च च इन्द्रियाणि येषां ते तथा द्वीन्द्रियास्त्रीन्द्रियाश्चतुरिन्द्रियाः पञ्चेन्द्रियाश्चेत्यर्थः ततस्तान्, वि- विधान् कुलभेदेन जीवान्-जन्तून् प्रियजीवितान्-अभिमत्प्राणधारणान् मरणलक्षणस्य दुःखस्य मरण- दुःखयोर्वा प्रतिकूलाः-प्रतिपन्थिनौ ये ते तथा तान् वराकान्-तपस्विनः, किमित्यत आह-प्रन्ति-विनाश- यन्ति, बहुसङ्क्लिष्टकर्माणः सत्त्वा इति गम्यते । एवं तावद्ब्रह्मद्वारेण प्राणवधस्य प्रकार उक्तोऽथ प्रयोजन- द्वारेण स उच्यते, एभिः-वक्ष्यमाणैः प्रत्यक्षैर्विविधैः कारणैः-प्रयोजनैः, ‘किं ते’ति किं तत् प्रयोजनं?, तद्य- थेति वा, चर्म-त्वक् वसा-शारीरः स्नेहविशेषः मांसं-पलं मेदो-देहघातुविशेषः शोणितं-रक्तं यकृद्-दक्षि- णकुक्षौ मांसग्रन्थिः फिफिसं-उदरमध्यावयवविशेषः मस्तुलिङ्गं-रूपालभेज्जकं हृदयं-हृदयमांसं अंत्रं-पुरी- तत् पित्तं-दोषविशेषः फोफसं-शरीरावयवविशेषः दन्ता-दशनाः, एतेषां द्वन्द्वः, तत एतेभ्य इदमित्येवं विगृह्यार्थशब्दो योजनीयः, चर्मादिनिमित्तमित्यर्थः, तथाऽस्थीनि-कीकशानि मजा-तन्मध्यावयवविशेषः नखाः-करजाः नयनानि-लोचनानि कर्णाः-श्रवणाः ‘ण्हारुणि’ति स्नायुः नक्त्ति-नासिका घमन्यो-नाड्यः शृङ्गं-विषाणं दंष्ट्रा-दशनविशेषः पिच्छं-पत्रं विषं-कालकूटं विषाणं-हस्तिदन्तः वालाः-केशाः एतेषां द्वन्द्वः ततस्त एव हेतुरित्येवं हेतुशब्दो योज्यः, ततः षष्ठ्यर्थे द्वितीया, ततोऽयमर्थः-अस्थिमज्जादिहेतोर्नन्तीति प्र- क्रमः, तथा हिंसन्ति च बहुसङ्क्लिष्टकर्माण इति प्रक्रमः, भ्रमराः पुरुषतया लोकव्यवहता मधुकर्यस्तु स्त्री- त्वव्यवहतास्तद्गणान्-तत्समूहान् रसेषु गृह्णा मधुग्रहणार्थमिति भावः, तथैव हिंसन्त्येवेत्यर्थः, त्रीन्द्रियान्</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [३]</p> <p>दीप अनुक्रम [७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ११ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>यूकामत्कुणादीन् शरीरोपकरणार्थं-शरीरोपकाराय यूकादिकृतदुःखपरिहारार्थमथवा शरीराय उपकरणाय- उपधये, अयमर्थः-शरीरसंस्कारप्रवृत्ता उपकरणसाधनसंस्कारप्रवृत्ताश्च विविधचेष्टाभिस्तान् व्रन्तीति, किं- भूतान्?-कृपणान्-कृपास्पदभूतानिति, तथा द्वीन्द्रियान् बहून् ‘वत्थोहरपरिमण्डणट्ट’त्ति वस्त्राणि-चीवराणि ‘उहर’त्ति उपगृहाणि आश्रयविशेषास्तेषां परिमण्डनार्थं-भूषार्थं, कृमिरागेण हि रज्यमानानि श्रूयन्ते व- स्त्राणि, आश्रयास्तु मण्ड्यन्ते एव शङ्खशुक्तिचूर्णेनेति, अथवा वस्त्रार्थं उपगृहार्थं परिमण्डनार्थं चेति, तत्र वस्त्रार्थं पट्टसूत्रसम्पादने कृमिहिंसा सम्भवति, आश्रयार्थं सृत्तिकाजलादिद्रव्येषु पूतरकादिघातो भवति, परिमण्डनार्थं हारादिकरणे शुक्ल्यादिद्वीन्द्रियाणामिति, अन्यैश्चैवमादिकैर्बहुभिः कारणशतैरबुधा-बालिशा ‘इह हन्ति’ इह-जीवलोके हिंसन्ति-व्रन्ति व्रसान् प्राणान्, तथा इमांश्च प्रत्यक्षान् एकेन्द्रियान्- पृथिवीकायिकादीन् वराकाः-तपस्विनः समारम्भन्त इति योगः, न केवलमेकेन्द्रियानेव व्रसांश्चान्यांस्तदा- श्रितांश्चैव, किंभूतान्?-तनुशरीरान् अत्राणान् अनर्थप्रतिघातकाभावात् अशरणान् अर्थप्रापकाभावात् अत एव अनाथान् योगक्षेमकारिनायकाभावात् अबान्धवान् स्वजनसम्पाद्यकार्याभावात् कर्मनिगडबद्धानि- ति व्यक्तं, तथा अकुशलपरिणामोदयावर्जितत्वेन मन्दबुद्धिश्च मिथ्यात्वोदयाद् यो जनो-लोकस्तेन दुर्विज्ञेया ये ते तथा तान्, पृथिव्या विकारा पृथ्वीमयास्तान् पृथ्वीमयान् पृथ्वीकायिकानित्यर्थः, तथा पृथिवीसंसृतान् अलसादिव्रसान्, एवं जलमयान्-अप्कायिकान् जलगतान् पूतरकादिव्रसान् सैवलादिवनस्पतिकायिकांश्च</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३</p> <p style="text-align: center;">॥ ११ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>अनलः-तेजस्कायः अनिलो-वायुकायस्तृणवनस्पतिगणो-बादरवनस्पतीनां समुदाय एतन्निसृतांश्च-एतदुप-जीवकांश्च त्रसानिति हृद्यं ‘तन्मयतज्जिय’त्ति तेषामनलानिलतृणवनस्पतिगणानां विकारास्तन्मया अन-लकायिकाद्य एव तथा तेषामेव-अनलादीनां जीवास्तज्जीवाः तद्योनिकास्त्रसा इत्यर्थः, तन्मयाश्च तज्जीवा-श्चेति तन्मयतज्जीवास्तांश्चैव, पाठान्तरेण तन्मयजीवाश्चेति, किंभूतांस्तान् ?-‘तदाहारे’त्ति ते-पृथिव्याद्य आ-धारो येषां ते तदाधारास्तानेव वा पृथिव्यादीनाहारयन्तीति तदाहारास्तान्, तेषामेव पृथिव्यादीनां परिणता वर्णगन्धरसस्पर्शैर्घा बोन्दिः-शरीरं सैव रूपं-स्वभावो येषां ते तथा तान्, अचाक्षुषान्-न चक्षुषा दृश्यांश्चाक्षु-षांश्च-चक्षुर्ग्राह्यान्, कानेवंविधानित्याह-त्रसकायः-त्रसनामकर्मोदयवर्त्तिजीवराशिस्तत्र भवास्त्रसकायिकाः तान्, कियत् इत्याह-असङ्ख्यातान्, तथा स्थावरकायांश्च-सूक्ष्माश्च बादराश्च तत्तन्नामकर्मोदयवर्त्तिनः, प्रत्येकशरीरमिति नामकर्मविशेषो येषां ते प्रत्येकशरीरनामानस्ते च साधारणाश्च-साधारणशरीरनामकर्मो-दयवर्त्तिन इति द्वन्द्वोऽतस्तान्, कियत् ?-अनन्तान् साधारणानेव, शेषस्थावराणामसंख्येयत्वात्, जीवा-निति योगः, किमिति इत्याह-घ्नन्ति, किंभूतान् ?-अविजानतश्च स्वधं, परिजानतश्च-सुखदुःखैरनुभवतः एकेन्द्रियान्, अथवा स्वधमजानतः एकेन्द्रियान् तमेव परिजानतस्त्रसानिति जीवान्-जन्तून् एभिर्विधिषैः कारणैः-प्रयोजनैः, ‘किं ते’त्ति किं तत् तद्यथेति वा, कर्षणं कृषिः पुष्करिणी-पुष्करवती चतुष्कोणा वा वापी-निष्पुष्करा वृत्ता वा ‘वप्पिण’त्ति केदाराः कूपसरस्तडागाः प्रतीताः चितिः-भित्त्यादेश्चयनं सृतकदहनार्थं</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only anelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १२ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>दारुविन्यासो वा वेदिः-वितर्दिका खातिका-परिखा आरामो-वाटिका विहारो-बौद्धाद्याश्रयः स्तूपः-चित्ति- विशेषः प्राकारः-शालः द्वारं-प्रतीतं गोपुरं-प्रतोली कपाट इत्यन्ये अट्टालकः-प्राकारोपरिवर्त्याश्रयविशेषः चरिका-नगरप्राकारयोरन्तरेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्गः सेतुः-मार्गविशेषः पालिर्वा सङ्क्रमो-विषमोत्तरणमार्गः प्रासादो-नरेन्द्राश्रयः विकल्पाः-तद्भेदा भवनानि-चतुःशालादीनि गृहाणि-सामान्यानि शरणानि-तृण- मयानि लथनानि-पर्वतनिकुट्टितगृहाणि आपणा-हृदाः चैत्यानि-प्रतिमाः देवकुलानि-सशिखरदेवप्रासादाः चित्रसभाः-चित्रकर्मवन्मण्डपाः प्रपा-जलदानस्थानं आयतनं-देवायतनं आवसथः-परिव्राजकाश्रयः भूमि- गृहं प्रतीतं मण्डपः-छायाद्यर्थः पटादिमय आश्रयविशेषः एतेषां द्वन्द्वस्तत एतेषां कृते-निमित्ते पृथिवीं हिं- सन्ति इति सम्बन्धः, भाजनानि-अमत्राणि सौवर्णादीनि भाण्डानि-तान्येव मृन्मयानि क्रयाणकानि वा लवणादीनि उपकरणानि-उदूखलादीनि एषां समाहारद्वन्द्वः ततस्तस्य विविधस्य चार्थाय-हेतवे पृथिवीं-पृ- थ्वीकायिकान् हिंसन्ति मन्दबुद्धिकाः, तथा जलं च-अपकायिकांश्च हिंसन्तीति वर्त्तते, मज्जनकं-स्नानं पानं भोजनं च प्रतीतं वस्त्रधावनं-वासःक्षालनं शौचः-आचमनमेतदादिभिः कारणैरिति प्रक्रमः, तथा पचनं पा- चनं च ओदनादेः जलावणन्ति-स्वतः परतो वाऽग्नेरुद्दीपनं विदर्शनं-अन्धकारस्थवस्तुप्रकाशनं एतैः कारणैः चः समुच्चये अग्निं हिंसन्ति, तथा सूर्पं प्रतीतं व्यञ्जनं-वायुदीरकं तालवृन्तं-तदेव द्विपुटादि 'पेहुणं'ति मयूराङ्गं मुखं-आस्यं करतलं-हस्तः सर्गपत्रं-वृक्षविशेषपर्णं वस्त्रं-प्रतीतं, एतदादिभिर्वातोदीरणवस्तुभिरनिलं-वायुं</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ आश्रवे वधकव- ध्यप्रयो- जनानि सू० ३  ॥ १२ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[३]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[७]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>हिंसन्तीति, तथा अगारं-गेहं 'परियारो'ति परिचारो-वृत्तिः खड्गादिकोशो वा भक्ष्याणि-मोदकादीनि 'स्वरविशदमभ्यवहार्यं भक्ष्य'मिति वचनात् भोजनानि-ओदनादीनि शयनानि शय्याः आसनानि-विष्टराणि फलकानि-अवष्टम्भनयूतादिनिमित्तानि मुशलान्युदूखलाश्च प्रसिद्धाः ततानि-वीणादीनि विततानि-पटहादीन्यातोद्यानि-वाद्यानि वहनानि-यानपात्राणि वाहनानि-शकटादीनि मण्डपाः प्रतीताः विविध-भवनानि-चतुःशालादीनि तोरणानि प्रतीतानि विटङ्कः-रूपोतपाली देवकुलं प्रतीतं जालकं-छिद्रान्वितो गृहावयवविशेषः अर्द्धचन्द्रः-सोपानविशेषः निर्यूहकं-द्वारोपरितनपार्श्वविनिर्गतदारु चन्द्रशालिका-प्रासादो-परितनशाला वेदिका-वितर्दिका निःश्रेणिः-अवतरणी द्रोणी-नौः चङ्गेरी-महती काष्ठपात्री बृहत्पट्टलिका वा कीलाः-शङ्खवः मेठकाः-मुण्डकाः सभा-आस्थायिका प्रपा-जलदानमण्डप आवसथः-परिवाजकाश्रयः गन्धाः-चूर्णविशेषाः माल्यं-कुसुममनुलेपनं-विलेपनं अम्बराणि-बस्त्राणि यूषो-युगं लाङ्गलं-शीरं 'मति-य'ति मतिकं येन कृष्टा क्षेत्रं मृद्यते कुलिकं-हलप्रकारः स्यन्दनो-रथविशेषो, यतो द्विविधो रथः-साङ्गामिको देवयानरथश्च, तत्र साङ्गामिकस्य कटीप्रमाणा वेदिका भवति, शिविका-पुरुषसहस्रवाहनीयः कूटाकारशिखराच्छादितो जम्पानविशेषः रथः-प्रसिद्धः शकटं-गत्री यानं-तद्विशेषः युग्यं-गोल्लदेशप्रसिद्धो द्विहस्तप्रमाणो वेदिकोपशोभितो जम्पानविशेष एव अट्टालकः-प्राकारोपरिवर्त्ती आश्रयविशेषः चरिका-नगरप्राकारान्तरालेऽष्टहस्तप्रमाणो मार्गः द्वारं-प्रतीतं गोपुरं-पुरद्वारं परिधा-अर्गला यन्त्राणि-अरघटादि-</p> </div> <p>प्र. व्या. ३</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [३]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [३]</p> <p>दीप अनुक्रम [७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>यन्त्राणि शूलिका-वध्यप्रोतनकाष्ठं पाठान्तरे शूलकः-कीलकविशेषः ‘लडड’त्ति लकुटः मुशुण्डिः-प्रहरण- विशेषः शतग्री-महती यष्टिः बहूनि च प्रहरणानि-करवालादीनि आवरणानि-स्फुरकादीनि उपकरश्च- गृहोपकरणं मञ्चकादि, तत एतेषां द्वन्द्वः, ततश्चैतेषां कृते-अर्थाय अन्यैश्च एवमादिभिर्बहुभिः कारणशतै- र्हिंसन्ति तरुगणानिति, तथा भणिताऽभणितांश्चैवमादिकान्-एवंप्रकारान् सत्त्वान् सत्त्वपरिवर्जितान् उप- गन्ति दृढाश्च मूढाश्च ते दारुणमतयश्चेति तथाविधक्रोधान्मानात् मायाया लोभात् हास्यरत्यरतिशोकात्, इह पञ्चमीलोपो दृश्यः, वेदार्थाश्च-वेदार्थमनुष्ठानं जीवश्च-जीवितं जीतं वा-कल्पतः, धर्मश्चार्थश्च कामश्चैत्ये- तेषां हेतोः-कारणात् स्ववशाः-स्वतन्त्रा अवशाः-तदितरे अर्थाय अनर्थाय च त्रसप्राणांश्च श्वावरांश्च र्हिंसन्ति मन्दबुद्धयः, एतदेव प्रपञ्चत आह-स्ववशा गन्ति अवशा गन्ति स्ववशा अवशाश्चैत्येवं ‘दुहउ’त्ति द्विधा गन्ति, एवं अर्थायेत्यादि आलापकत्रयं, एवं हास्यवैररतिभिरालापकचतुष्टयं, एवं क्रुद्धलुब्धमुग्धाः अर्थधर्मकामाश्चेति ॥ तदेवं यथा च कृत इति प्रतिपादितमधुना ‘फलप्रधानाः क्रिया’ इति न्यायात् फलद्वारं द्वारगाथायाः कर्तृद्वारात्प्रागुपन्यस्तमप्युल्लङ्घ्य ‘कर्त्रधीना क्रिये’ति न्यायात्कर्तुः प्रधानतया अल्पवक्तव्यत्वाद्वा येऽपि च कुर्वन्ति पापाः प्राणिवधमित्येतदाह—</p> <p style="text-align: center;">कयरे ते?, जे ते सोयरिया मच्छबंधा साउणिया वाहा कूरकम्मा वाउरिया दीवितबंधणप्पओगतप्पगलजालवीर- लंगायसीदब्भवगुराकूडडेलिहत्था हरिएसा साउणिया य वीदंसगपासहत्था वणचरगा लुद्धयमहुघातपोतघाया</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: center;">॥ १३ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>एणीयारा यएणियारा सरदहदीहिअतलागपल्लपरिगालणमलणसोत्तबंधणसलिलासयसोसगा विसगरस्स य दायगा उत्तणवहरदवग्गिणिद्वयपलीवका कूरकम्मकारी इमे य बहवे मिलक्खुजाती, के ते?, स-कज्जवणसच्चरवच्चरगायमुरुंडोदभडगतिसियपक्कणियकुलक्खगोडसीहलपारसकोचंधदविलविल्लपुल्लिंदअरो-सडोवपोक्कणगंधहारगबहलीयजल्लरोममासवउसमलया चुंचुया य चूलिया कौकणगा मेतपण्हवमालव-महुरआभासियाअणक्कचीणल्लहासियखसखासिया नेहुरमरहट्टमुट्टिअआरवडोविलगकुहणकेकयहूणरोमगरु-मरुगा चिलायविसयवासी थ पावमतिणो जलयरथलयरसणफ्तोरगखहचरसंडासतोडजीवोवग्घायजीवी सण्णी य असण्णिणो य पज्जत्ता असुभलेस्सपरिणामा एते अण्णे य एवमादी करेति पाणातिवायकरणं पावा पावाभिगमा पावरुई पाणवहकयरती पाणवहरूवाणुट्टाणा पाणवहकहासु अभिरमंता तुट्टा पावं करेत्तु होति य बहुप्पगारं । तस्स य पावस्स फलविवागं अयाणमाणा वट्टंति महब्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालबहु-दुक्खसंकडं नरयतिरिक्खजोणिं, इओ आउक्खए चुया असुभकम्मवहुला उववज्जंति नरएसु हलितं महा-लएसु वयरामयकुड्डुरुदुनिसंधिदारविरहियनिम्मह्वभूमितलखरामरिसविसमणिरयघरचारएसुं महोसिणस-यापतत्तदुग्गंधविस्सउव्वेयजणगेसु वीभच्छदरिसणिज्जेसु निच्चं हिमपडलसीयलेसु कालोभासेसु य भीम-गंभीरलोमहरिसणेसु णिरभिरामेसु निप्पडियारवाहिरोगजरापीलिएसु अतीवनिच्चंधकारतिमिस्सेसु पति-भएसुववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसेसु मेयवसामंसपडलपोच्चडपूयरुहिरुक्किणविलीणचिक्कणरसियावावण-</p> </div> <p style="text-align: center;"><small>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Digital Library</small></p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १४ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>कुहियचिक्खल्लकहमेसु कुकूलानलपलित्तजालमुम्मुरअसिक्खुरकरवत्तधारासुनिसितविच्छुयडंकनिवातोवम्म- फरिसअतिदुस्सहेसु य अत्ताणासरणकडुयदुक्खपरितावणेसु अणुवद्धनिरंतरवेयणेसु जमपुरिससंकुलेसु, तत्थ य अन्तोमुहुत्तलद्धिभवपच्चएणं निव्वत्तेति उ ते सरीरं हुंडं बीभच्छदरिसणिज्जं बीहणगं अट्ठिणहारु- णहरोमवज्जियं असुभदुक्खविसहं, ततो य पज्जत्तिमुवगथा इंदिएहिं पंचहिं वेदंति असुभाए वेयणाए उज्जल- बलविउलउक्कडक्खरफरुसपयंडघोरबीहणगदारुणाए, किं ते?, कंदुमहाकुंभियपयणपउलणतवगतलणभट्ट- भज्जणाणि य लोहकडाहुक्कहुणाणि य कोट्टबलिकरणकोट्टणाणि य सामलित्तिक्खग्गलोहकंटकअभिसरणप- सारणाणि फालणविदालणाणि य अवकोडकबंधणाणि लट्टिसयतालणाणि य गलगबलुलंवणाणि सुलग्गभे- यणाणि य आएसपवंचणाणि खिंसणविमाणणाणि विघुट्टणज्जणाणि वज्जसयमात्तिकात्ति य एवं ते ॥</p> <p>‘कयरे’त्यादि, तत्र कतरे कृष्यादिकारणैः प्राणिनो घ्नन्तीति प्रश्नः, उत्तरमाह—‘जे ते सोयरिए’त्यादि, तत्र शूकरैः—मृगयां कुर्वन्ति ये ते शौकरिकाः मत्स्यबन्धाः—प्रतीताः शकुनान् घ्नन्तीति शाकुनिकाः व्याधा- लुब्धकविशेषाः क्रूरकर्माण इत्येतेषामेव स्वरूपाभिधायकं विशेषणं, ‘वागुरिय’त्ति क्वचित्पाठः, तत्र वागुर- या—मृगबन्धनविशेषेण चरन्तीति वागुरिका इति, तथा द्वीपिकश्च—चित्रको मृगमारणाय बन्धनप्रयोगश्च— बन्धोपायः तत्रश्च—तरकाण्डविशेषो मत्स्यग्रहणार्थं जलावतारणाय गलं च—बडिशं जालं च—मत्स्यबन्धनं वीर- ल्लकश्च—श्येनाभिधानः शकुनिः शकुनिविनाशाय आयसी—लोहमयी दर्भमयी च या वागुरा—मृगबन्धनवि-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४  ॥ १४ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>शेषः सा च कूटेन या स्थाप्यते चित्रकादिग्रहणार्थं छेलिका-अजा सा कूटच्छेलिका सा च, अथवा कूटं- मृगादिग्रहणयन्त्रं छेलिका चेति द्वन्द्वस्ता हस्ते येषां ते तथा, 'दीविय'त्ति क्वचित्पाठस्तत्र द्वीपिकेन-चित्रकेण चरन्तीति द्वीपिका इति तत उत्तरपदेन द्वन्द्वः, अयमालापकः क्वचित्कथञ्चिद् दृश्यते, नवरं गमकपक्षमाश्रित्य व्याख्यातः, हरिकेशाः-चाण्डालविशेषाः कुणिकाश्च-सेवकविशेषाः क्वचित् 'साउणिय'त्ति पाठः तत्र शकुनेन चरन्ति शाकुनिका इति, 'विदंसगाः' विदंशंतीति विदंशकाः-श्येनादयः पाशाश्च-शकुनिबन्धनविशेषा हस्ते येषां ते तथा, वनचरकाः-सवराः लुब्धकाश्च-व्याधा मधुघाताः पोतघाताः मधुग्राहकाः शावघातकाश्चेत्यर्थः, 'एणीयार'त्ति एणी-हरिणी मृगग्रहणार्थं चारयन्ति-पोषयन्ति ये ते तथा 'पएणियार'त्ति प्रकृष्टाः एणीचाराः प्रैणी- चाराः सरो-जलाशयविशेषः हृदो-नदः दीर्घिका-सारिणी तडागं-प्रतीतं पल्लवं-नडुलमित्येतान् परिगालनेन च-शुक्तिशङ्खमत्स्यादिग्रहणार्थं जलनिःसारणेन मलनेन-मर्दनेन श्रोतोबन्धनेन च-जलप्रवेशवारणेन सलिला- श्रयान् परिशोषयन्ति ये ते तथा, तथा विषस्य-कालकूटस्य गरलस्य च-द्रव्यसंयोगविषस्य दायका-दातारो ये ते तथा, उत्तृणानां-उद्गततृणानां बल्लराणां-क्षेत्राणां द्वाग्निना-वन्यज्वलनेन निर्दयं-यथा भवतीत्येवं 'पलीचग'त्ति प्रदीपका ये ते तथा, कूरकर्मकारिण इमे ये बहवो 'मिलक्खुया' इति म्लेच्छजातीयाः 'के ते'त्ति तद्यथा-शका यवना शबरा बर्बराः कायाः मुरुंडाः उदा भडकाः तित्तिकाः पक्कणिकाः कुलाक्षाः गौडाः सिंहलाः पारसाः क्रोश्वाः अन्धाः द्राविडाः बिल्वलाः पुलिन्द्राः अरोषाः डोंबाः पोक्कणाः गन्धहारकाः बहलीकाः</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [४]</p> <p>दीप अनुक्रम [८]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px 0;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १५ ॥</p> <p style="text-align: center;">जल्लाः रोमा माषाः बकुशा मलयाश्च चुश्रुकाश्च चूलिकाः कौकणकाः मेदाः पहवाः मालवाः महुराः आभाषिका अणक्काः चीनाः ल्हासिकाः खसाः खासिका नेहरा ‘मरहट्ट’त्ति महाराष्ट्राः पाठान्तरेण मूढाः मौष्टिकाः आरवाः डोविलकाः कुहणाः केकया हूणाः रोमकाः रुवो मरुका इति, एतानि च प्रायो लुसप्रथमाबहुवचनानि पदानि, तथा चिलातविषयवासिनश्च-म्लेच्छदेशनिवासिनः, एते च पापमतयः, तथा जलचराश्च स्थलचराश्च ‘सणहपय’त्ति सनखपदाश्च सिंहादयः उरगाश्च-सर्पाः ‘खहयरसंडासतुंड’त्ति खचराः संदंस-तुण्डाश्च-संदंसकाकारमुखपक्षिण इति द्वन्द्वः, ते च ते जीवोपघातजीविनश्चेति कर्मधारयः, कथंभूता?-संज्ञिनश्चासंज्ञिनश्च पर्यासाः अशुभलेइयापरिणामाः, एते चान्ये चैवमादयः कुर्वन्ति प्राणातिपातकरणं-प्राणिवधानुष्ठानं पापाः-पापानुष्ठायिनः पापाभिगमाः-पापमेवोपादेयमित्यभिगमाः पापरुचयः-पापमेवोपादेयमिति श्रद्धानाः प्राणवधकृतरतिकाः प्राणवधरूपानुष्ठानाः प्राणिवधकथास्वभिरमन्तः ‘तुष्टा पावं करेत्तु होति य बहुप्पगारं’ति पापं-प्राणवधरूपं कृत्वा बहुप्रकारं तुष्टाश्च भवन्ति, ये ते कुर्वन्ति प्राणिवधमिति प्रकृतं । तद्विधता ये प्राणवधं कुर्वन्ति ते प्रतिपादिताः, इदानीं यादृशं फलं ददाति प्राणवध एतदुच्यते, ‘तस्से’त्यादि, तस्य च-पापस्य प्राणवधरूपस्य ‘फलविपाकं’ फलमिव-वृक्षसाध्यमिव विपाकः-कर्मणामुदयः फलविपाकः तं फलविपाकं ‘अयागमाण’त्ति अजानानाः वर्द्धयन्ति-वृद्धिं नयन्ति नरकतिर्यग्योनिमिति योगः, तद्वृद्धिश्च पुनः पुनस्तत्रोत्पादहेतुकर्मबन्धनात्, किंभूतां तां?, महद्भयं यस्यां सा महाभया तां महाभयां अविश्रामवेदनां-</p> </div> <p style="text-align: right;">१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: right;">॥ १५ ॥</p>
	<p style="text-align: center;">~ 33 ~</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>विश्रान्तिरहितासातवेदनां दीर्घकालं यावद्बहुभिर्दुःखैः शारीरमानसैर्या संकटा-सङ्कुला सा दीर्घकालबहुदुःख-सङ्कुला तां, नरकेषु तिर्यक्षु च या योनिरूपत्तिहेतुत्वात् सा नरकतिर्यग्योनिस्तां, ततश्च इतो-मनुष्यजन्मनः सकाशादायुःक्षये-मरणे सति च्युतास्सन्तः, 'तस्से' त्यादि च सूत्रं क्वचिदेव दृश्यते, अशुभकर्मवहुलाः-कलुषकर्मप्रचुराः उपपद्यन्ते-जायन्ते नरकेषु 'हुलियं'ति शीघ्रं महालयेषु-क्षेत्रस्थितिभ्यां महत्सु, कथंभूतेषु?-वज्रमयकुड्या रुन्दा-विस्तीर्णा निःसन्धयो-निर्विवरा द्वारविरहिता-अद्वारा निर्मार्दवभूमितलाश्च-कर्कशभूमयः ये नरकास्ते तथा खरामर्शाः-कर्कशस्पर्शाः विषमा-निम्नोन्नता निरयगृहसम्बन्धिनो ये चारकाः-कुड्यकुटा नारकोत्पत्तिस्थानभूता येषु नरकेषु ते तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयोऽतस्तेषु, तथा महोष्णाः-अत्युष्णाः सदाप्रतप्ता-नित्यतप्ता दुर्गन्धा-अशुभगन्धा विश्रा-आमगन्धयः कुथिता इत्यर्थः, उद्विज्यते-उद्विग्नैर्भूयते येभ्यस्ते उद्वेगजनकास्ते च ते तथा तेषु, तथा बीभत्सदर्शनीयेषु-विरूपेषु नित्यं-सदा हिमपटलमिव-हिमवृन्दमिव शीतला ये ते तथा तेषु च, कालोऽवभासः-प्रभा येषां ते कालावभासास्तेषु च, भीमगम्भीराश्च ते अत एव लोमहर्षणाश्च-रोमहर्षकारिणो भीमगम्भीरलोमहर्षणास्तेषु, निरभिरामेषु-अरमणीयेषु निष्प्रतीकारा-अचिकित्स्या ये व्याधयः- कुष्ठाद्याः ज्वराः-प्रतीताः रोगाश्च-सद्योघातिनो ज्वरशूलादयः तैः पीडिता ये ते तथा तेषु, इदं च नारकधर्माध्यारोपान्नरकाणां विशेषणमुक्तं, अतीव-प्रकृष्टं नित्यं-शाश्वतमन्धकारं येषु ते तथा तिमिस्सेव-तमिस्रगुहेव येऽन्धकारप्रकर्षास्ते अतीवनित्यानधकारतमिस्राः अथवा अतीव नित्यानधकारेण तिमिस्रेव च</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>			
<p>प्रत सूत्रांक [४]</p> <p>दीप अनुक्रम [८]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १६ ॥</p> </td> <td style="width: 70%; padding: 5px;"> <p>ये ते तथा तेषु, अत एव प्रतिभयेषु-वस्तु २ प्रति भयं येषु ते तथा तेषु, व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योति- ष्केषु, इह ज्योतिष्कशब्देन तारका गृह्यन्ते, मेदश्च-शारीरधातुविशेषः वसा च-शारीरः स्नेहः मांसं च-पि- शितं तेषां यत्पटलं-वृन्दं ‘पोचडं’ति अतिनिविडं च, पूयरुधिराभ्यां-पक्वरक्तशोणिताभ्यां उक्लिण्णन्ति- उत्कीर्णं मिश्रितं विलीनं-जुगुप्सितं चिककणं-आश्लेषवत् रसिकया-शारीररसविशेषेण व्यापन्नं-विनष्टस्वरूप- मत एव कुथितं-कोथवत् तदेव चिकखल्लं-प्रबलकर्दमः कर्दमश्च तदितरो येषु ते तथा तेषु, कुकूलानलश्च-का- रीषाग्निः प्रदीप्तज्वाला च मुर्मुश्च-भस्माग्निः असिधुरकरपत्राणां धारा च सुनिशितो वृश्चिकडङ्कस्य-तत्पु- च्छकण्टकस्य च निपात इति द्वन्द्वः एभिः औपम्यं-उपमा यस्य स तथा, तथाविधः स्पर्शाऽतिदुस्सहो येषां ते तथा तेषु, अत्राणा-अनर्थप्रतिघातकवर्जिता अशरणाश्च-अर्थप्रापकवर्जिता जीवाः कटुकदुःखैः-दारुणैर्दुःखैः परिताप्यन्ते येषु ते अत्राणाशरणकटुकदुःखपरितापनास्तेषु अनुबद्धनिरन्तराः-अत्यन्तनिरन्तरा वेदना येषु ते तथा तेषु, यमस्य-दक्षिणदिक्पालस्य पुरुषा-अम्बादयोऽसुरविशेषा यमपुरुषास्तैः सङ्कुला ये ते तथा तेषु, तत्र च-उत्पत्तौ सत्यामन्तर्मुहूर्त्तश्च-कालमानविशेषः लब्धिश्च-वैक्रियलब्धिर्भवप्रत्ययश्च-भवलक्षणो हेतुरन्तर्मु- हूर्त्तलब्धिभवप्रत्ययं तेन निर्वर्त्तयन्ति-कुर्वन्ति पुनस्ते-पापाः शरीरं, किंभूतं?-हुण्डं-सर्वत्रासंस्थितं बीभत्सं- दुर्दर्शनीयं-दुर्दर्शनं ‘बीहणगं’ति भयजनकं अस्थिस्लायुनखरोमवर्जितं, अशुभगन्धं च तदुःखविषहं चेत्यशुभ- गन्धदुःखविषहं, पाठान्तरेणाशुभं दुःखविषहं च यत्तत्तथा, ततः-शरीरनिर्वर्त्तनानन्तरं पर्यासिं-इन्द्रियपर्यासि-</p> </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: center;">॥ १६ ॥</p> </td> </tr> </table> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p>	<p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १६ ॥</p>	<p>ये ते तथा तेषु, अत एव प्रतिभयेषु-वस्तु २ प्रति भयं येषु ते तथा तेषु, व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योति- ष्केषु, इह ज्योतिष्कशब्देन तारका गृह्यन्ते, मेदश्च-शारीरधातुविशेषः वसा च-शारीरः स्नेहः मांसं च-पि- शितं तेषां यत्पटलं-वृन्दं ‘पोचडं’ति अतिनिविडं च, पूयरुधिराभ्यां-पक्वरक्तशोणिताभ्यां उक्लिण्णन्ति- उत्कीर्णं मिश्रितं विलीनं-जुगुप्सितं चिककणं-आश्लेषवत् रसिकया-शारीररसविशेषेण व्यापन्नं-विनष्टस्वरूप- मत एव कुथितं-कोथवत् तदेव चिकखल्लं-प्रबलकर्दमः कर्दमश्च तदितरो येषु ते तथा तेषु, कुकूलानलश्च-का- रीषाग्निः प्रदीप्तज्वाला च मुर्मुश्च-भस्माग्निः असिधुरकरपत्राणां धारा च सुनिशितो वृश्चिकडङ्कस्य-तत्पु- च्छकण्टकस्य च निपात इति द्वन्द्वः एभिः औपम्यं-उपमा यस्य स तथा, तथाविधः स्पर्शाऽतिदुस्सहो येषां ते तथा तेषु, अत्राणा-अनर्थप्रतिघातकवर्जिता अशरणाश्च-अर्थप्रापकवर्जिता जीवाः कटुकदुःखैः-दारुणैर्दुःखैः परिताप्यन्ते येषु ते अत्राणाशरणकटुकदुःखपरितापनास्तेषु अनुबद्धनिरन्तराः-अत्यन्तनिरन्तरा वेदना येषु ते तथा तेषु, यमस्य-दक्षिणदिक्पालस्य पुरुषा-अम्बादयोऽसुरविशेषा यमपुरुषास्तैः सङ्कुला ये ते तथा तेषु, तत्र च-उत्पत्तौ सत्यामन्तर्मुहूर्त्तश्च-कालमानविशेषः लब्धिश्च-वैक्रियलब्धिर्भवप्रत्ययश्च-भवलक्षणो हेतुरन्तर्मु- हूर्त्तलब्धिभवप्रत्ययं तेन निर्वर्त्तयन्ति-कुर्वन्ति पुनस्ते-पापाः शरीरं, किंभूतं?-हुण्डं-सर्वत्रासंस्थितं बीभत्सं- दुर्दर्शनीयं-दुर्दर्शनं ‘बीहणगं’ति भयजनकं अस्थिस्लायुनखरोमवर्जितं, अशुभगन्धं च तदुःखविषहं चेत्यशुभ- गन्धदुःखविषहं, पाठान्तरेणाशुभं दुःखविषहं च यत्तत्तथा, ततः-शरीरनिर्वर्त्तनानन्तरं पर्यासिं-इन्द्रियपर्यासि-</p>	<p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: center;">॥ १६ ॥</p>
<p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १६ ॥</p>	<p>ये ते तथा तेषु, अत एव प्रतिभयेषु-वस्तु २ प्रति भयं येषु ते तथा तेषु, व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योति- ष्केषु, इह ज्योतिष्कशब्देन तारका गृह्यन्ते, मेदश्च-शारीरधातुविशेषः वसा च-शारीरः स्नेहः मांसं च-पि- शितं तेषां यत्पटलं-वृन्दं ‘पोचडं’ति अतिनिविडं च, पूयरुधिराभ्यां-पक्वरक्तशोणिताभ्यां उक्लिण्णन्ति- उत्कीर्णं मिश्रितं विलीनं-जुगुप्सितं चिककणं-आश्लेषवत् रसिकया-शारीररसविशेषेण व्यापन्नं-विनष्टस्वरूप- मत एव कुथितं-कोथवत् तदेव चिकखल्लं-प्रबलकर्दमः कर्दमश्च तदितरो येषु ते तथा तेषु, कुकूलानलश्च-का- रीषाग्निः प्रदीप्तज्वाला च मुर्मुश्च-भस्माग्निः असिधुरकरपत्राणां धारा च सुनिशितो वृश्चिकडङ्कस्य-तत्पु- च्छकण्टकस्य च निपात इति द्वन्द्वः एभिः औपम्यं-उपमा यस्य स तथा, तथाविधः स्पर्शाऽतिदुस्सहो येषां ते तथा तेषु, अत्राणा-अनर्थप्रतिघातकवर्जिता अशरणाश्च-अर्थप्रापकवर्जिता जीवाः कटुकदुःखैः-दारुणैर्दुःखैः परिताप्यन्ते येषु ते अत्राणाशरणकटुकदुःखपरितापनास्तेषु अनुबद्धनिरन्तराः-अत्यन्तनिरन्तरा वेदना येषु ते तथा तेषु, यमस्य-दक्षिणदिक्पालस्य पुरुषा-अम्बादयोऽसुरविशेषा यमपुरुषास्तैः सङ्कुला ये ते तथा तेषु, तत्र च-उत्पत्तौ सत्यामन्तर्मुहूर्त्तश्च-कालमानविशेषः लब्धिश्च-वैक्रियलब्धिर्भवप्रत्ययश्च-भवलक्षणो हेतुरन्तर्मु- हूर्त्तलब्धिभवप्रत्ययं तेन निर्वर्त्तयन्ति-कुर्वन्ति पुनस्ते-पापाः शरीरं, किंभूतं?-हुण्डं-सर्वत्रासंस्थितं बीभत्सं- दुर्दर्शनीयं-दुर्दर्शनं ‘बीहणगं’ति भयजनकं अस्थिस्लायुनखरोमवर्जितं, अशुभगन्धं च तदुःखविषहं चेत्यशुभ- गन्धदुःखविषहं, पाठान्तरेणाशुभं दुःखविषहं च यत्तत्तथा, ततः-शरीरनिर्वर्त्तनानन्तरं पर्यासिं-इन्द्रियपर्यासि-</p>	<p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: center;">॥ १६ ॥</p>		

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>मानप्राणपर्यासिं भाषामनःपर्यासिं चोपगताः-प्राप्ता इन्द्रियैः पञ्चभिर्वेदयन्ति-अनुभवन्ति, कं ?-दुःखं, महा-कुम्भीपचनादीनि दुःखकारणानीति योगः, कया कलितानि?-अशुभया वेदनया दुःखरूपधेयर्थः, किंभूतये-त्याह-‘उज्जले’त्यादि तत्रोज्ज्वला-विपक्षलेशेनाप्यकलङ्किता बला-बलवती निवर्त्तयितुमशक्या विपुला-सर्वशरीरावयवव्यापिनी पाठान्तरेण तिउलत्ति-त्रीन्-मनोवाक्कायांस्तुलयति-अभिभवति या सा त्रिनुला उत्कटा-प्रकर्षपर्यन्तवर्त्तिनी खरं-अमृदुशिलावत् यद्द्रव्यं तत्सम्पातजनिता खरा परुषं-कर्कशं कूष्माण्डीदल-मिव यद् द्रव्यं तत्सम्पातसम्भवा परुषा प्रचण्डा-शीघ्रं शरीरव्यापिका प्रचण्डपरिवर्त्तितत्वाद्वा प्रचण्डा-घोरा-झगिति जीवितक्षयकारिणी औदारिकवतां, परिजीवितानपेक्षा वा ये ते घोरास्तत्परिवर्त्तितत्वात् घोरा इति, ‘बीहणग’त्ति भयोत्पादिका, किमुक्तं भवति?-दारुणा, तत एतेषां कर्मधारयोऽतस्तया वेदयन्तीति प्रकृतं, ‘किं ते’त्ति तद्यथा-कंदुः-लोही महाकुम्भी-महत्यूखा तयोः पचनं च भक्तस्येव ‘पउलणं’ति पचनविशेषश्च पृथुकस्येव तवगं-तापिका तलनं च सुकुमारिकादेरिव भ्राष्ट्रे-अंबरीषे भर्जनं च-पाकविशेषकरणं चण-कादेरिवेति द्वन्द्वोऽतस्तानि च लोहकटाहोत्काथनानि च इक्षुरसस्येव ‘कोट्ट’त्ति-क्रीडा तेन बलिकरणं-चण्डिकादेः पुरतो बस्तादेरिव उपहारविधानं, पाठान्तरे कोट्टा कोट्टकिरिया दुर्गा तस्यै च, कोट्टाय वा-प्राकाराय बलिकरणं तच्च कुट्टनं च-कुट्टिलत्वकरणं वैकल्यकरणं वा कुट्टेन वा चूर्णनं तानि च शालमल्या-वृक्षविशेषस्य तीक्ष्णाग्रा ये लोहकण्टका इव लोहकण्टकास्तेष्वभिसरणं च-आपेक्षिकमभिमुखागमनमपसरणं च-निवर्त्तनं</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [४...]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [४]  दीप अनुक्रम [८]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेववृत्तिः ॥ १७ ॥</p> <p>शाल्मलीतीक्ष्णाग्रलोहकण्टकाभिसरणापसरणे स्फाटनं च-सकृद्धारणं विदारणं च-विविधप्रकारैरिति, ते च ते अवकोटकबन्धनानि-बाहुशिरसां पृष्ठदेशे बन्धनानि यष्टिशतताडनानि च प्रतीतानि गलके-कण्ठे बलात्-हठात् यान्युल्लम्बनानि-वृक्षशाखादाबुद्धन्धनानि तानि गलकबलोल्लम्बनानि, शूलाग्रभेदनानि च व्यक्तानि, आदेशप्रपञ्चनानि-असत्यार्थादेशतो विप्रतारणानि, 'खिसनविमाननानि वा'तत्र खिसनानि-निन्दनानि विमाननानि-अपमानजननानि 'विद्युष्टपणिज्जणाणि'स्ति विद्युष्टानां-एते पापाः प्राप्नुवन्ति स्वकृतं पापफलमित्यादिवाग्भिः संशब्दितानां प्रणयनानि-वध्यभूमिप्रापणानि विद्युष्टप्रणयनानि वध्यशतानि व्यक्तानि तान्येव माता-उत्पत्तिभूमियेषां तानि वध्यशतमातृकाणि वध्याश्रितदुःखानीत्यर्थस्तानि च एवमित्युक्तक्रमेण ते-पापकर्मकारिण इत्यनेन सम्बन्धः ।</p> <p>पुव्वकम्मकयसंचयोवत्ता निरयग्गिमहग्गिसंपलित्ता गाढदुक्खं महब्भयं कक्कसं असायं सारीरं मानसं च तिव्वं दुविहं वेदेंति वेयणं पावकम्मकारी बहूणि पलिओवमसागरोवमाणि कलुणं पालेन्ति ते अहाउयं जमकातियतासिता य सहं करेंति भीया, किं ते?, अविभायसामिभायवप्पतायजित्तवं मुय मे मरामि दुब्बलो वाहिपीलिओऽहं किं दाणिऽसि? एवंदारुणो णिह्य मा देहि मे पहारे उस्सासेतं (एयं) मुहुत्तयं मे देहि पसायं करेहि मा रुस वीसमामि गेविज्जं मुयह मे मरामि, गाढं तण्हातिओ अहं देह पाणीयं हंता पिय इमं जलं विमलं सीयलंति घेत्तूण य नरयपाला तवियं तउयं से देंति कलसेण अंजलीसु दट्टूण य तं पवेवियं गोवंगा</p> </div> <p style="text-align: right;">१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: right;">॥ १७ ॥</p>
	<p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>अंसुपगलंतपप्पुयच्छा छिण्णा तण्हाइयम्ह कलुणाणि जंपमाणा विप्पेक्खन्ता दिसोदिसिं अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहूणा विपलायंति य मिगा इव वेगेण भयुव्विग्गा, घेत्तूण बला पलायमाणानं निरणुकंपा मुहं विहाडेत्तुं लोहडंडेहिं कलकलं ण्हं वयणंसि छुभंति केइ जमकाइया हसंता, तेण दह्वा संतो रसंति य भीमाइं विस्सराइं रुवंति य कलुणगाइं पारेवतगाव एवं पलवितविलावकलुणाकंदियवहरुन्न-रुदियसहो परिवेवितरुद्धवद्धयनारकारवसंकुलो णीसहो रसियभणियकुविउक्कइयनिरयपालतज्जिय गेणह-क्कम पहर छिंद भिंद उप्पाडेहुक्खणाहि कत्ताहि विकत्ताहि य भुज्जो हण विहण विच्छुभोच्छुब्भ आकह्व विकह्व किं ण जंपसि? सराहि पावकम्माइं दुक्कयाइं एवं वयणमहप्पगब्भो पडिसुया-सदसंकुलो तासओ सया निरयगोयराण महाणगरडज्जमाणसरिसो निग्घोसो सुच्चए अणिट्ठो त-हियं नेरइयाणं जाइज्जंताणं जायणाहिं, किं ते?, असिवणदब्भवणजंतपत्थरसूइतलक्खारवाविकलकलंन्त-वेयरणिकलंबवालुयाजलियगुहनिरुंभण उसिणोसिणकंटइल्लदुग्गमरहजोयणतत्तलोहमग्गमणवाहणाणि इ-मेहिं विविहेहिं आयुहेहिं किं ते मोग्गरमुसुंढिकरकयसत्तिहल्लगयमुसलचक्ककोततोमरसूललउलभिं डि-मालसद(द्ध)लपडिसचम्मेट्टुहणमुट्ठियअसिखेडगखग्गचावनारायंकणकक्कपणिवासिपरसुटंकतिक्खनिम्मल अण्णेहि य एयमादिएहिं असुभेहिं वेउव्विएहिं पहरणसतेहिं अणुवद्धतिव्वेरा परोप्परवेयणं उदीरंति अ-भिहणंता, तत्थ य मोग्गरपहारचुण्णियमुसुंढिसंभग्गमहितदेहा जंतोवपीलणफुरंतक्कपिया केइत्थ सच-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १८ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>म्मका विगत्ता णिमूलूलूणकण्णोद्वगासिका छिणहत्थपादा असिक्करकयतिकखकौतपरसुप्पहारफालियवासी-संतच्छित्तंगमंगा कलकलमाणखारपरिसित्तगाढडङ्गंतगतकुंतग्गभिण्णजज्जरियसव्वदेहा विलोलंति मही-तले विसुणियंगमंगा, तत्थ य विगसुणगसियालकाकमज्जारसरभदीवियवियग्घगसहूलसीहदप्पियखुहाभिभू-तेहिं णिच्चकालमणसिएहिं घोरा रसमाणभीमरूवेहिं अक्कमित्ता दढदाढागाढडक्ककड्डियसुतिकखनहफालि-यउद्धदेहा विच्छिप्पंते समंतओ विमुक्कसंधिवंधणावियंगमंगा कंककुररगिद्धघोरकट्टवायसगणेहिं य पुणो खरधिरदढणकखलोहतुंडेहिं ओवत्तित्ता पक्खाहयतिकखणकखविकिन्नजिब्भंछियनयणनिद्धओलुगविगतव-यणा, उक्कोसंता य उप्पयंता निपतंता भमंता पुव्वकम्मोदयोवगता पच्छाणुसएण डङ्गमाणा णिंदंता पुरेक-डाइं कम्माइं पावगाइं तहिं २ तारिसाणि ओसन्नचिक्कणाइं दुक्खातिं अणुभवित्ता ततो य आउक्खएणं उव्वट्टिया समाणा बहवे गच्छंति तिरियवसहिं दुक्खुत्तरं सुदारुणं जम्मणमरणजरावाहिपरियट्टणारहट्टं जलथलखहचरपरोप्परविहिंसणपवंचं इमं च जगपागडं वरागा दुक्खं पावेन्ति दीहकालं, किं ते?, सीउप्पहत-ण्हाखुहवेयणअप्पईकारअडविजम्मणणिच्चभउविग्गवासजग्गणवहबंधणताडणं कणनिवायणअट्टिभंजणनासा-भेयप्पहारदूमणल्लविच्छेयणअभिओगपावणकसंकुसारनिवायदमणाणि वाहणाणि य मायापितिविप्पयोगसो-यपरिपीलणाणि य सत्थग्गिविसाभिघायगलगवलआवलणमारणाणि य गलजालुच्छिप्पणाणि पओउलणविक-प्पणाणि य जावज्जीविगबंधणाणि पंजरनिरोहणाणि य सयूहनिद्धाडणाणि धमणाणि य दोहणाणि य कुदं-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ अधर्म-द्वारे प्राणवध-कारकाः प्रेत्यतद-वस्थाश्च सू० ४  ॥ १८ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>डगलबंधणाणं वाडगपरिवारणाणि य पंकजलनिमज्जणाणि वारिप्पवेसणाणि य ओवायणिभंगविसमणि- वडणदवग्गिजालदहणाई य, एवं ते दुक्खसयसंपलित्ता नरगाउ आगया इहं सावसेसकम्मा तिरिक्खपंचेदि- एसु पाविति पावकारी कम्माणि पमायरागदोसबहुसंचियाइं अतीव अस्सायककसाइं</p> <p>‘पुव्वकम्मकयसंचउवतत्त’त्ति पूर्वकृतकर्मणां सञ्चयेनोपतसा-आपन्नसंतापा ये ते तथा, निरय एवाग्निर्नि- रयाग्निस्तेन महाग्निनेव सम्प्रदीसा ये ते तथा, गाढदुःखां-प्रकृष्टदुःखरूपां द्विविधां वेदनां वेदयन्तीति योगः, किंभूतां?-महद्भयं यस्यां सा तथा तां कर्कशां कठिनद्रव्योपनिपातजनितत्वात् असातां-असाताख्यवेदनी- यकर्मभेदप्रभवां शारीरीं मानसीं च तीव्रां-तीव्रानुभागबन्धजनितां पापकर्मकारिणः, तथा बहूनि पत्थोप- ससागरोपमाणि करुणा-द्रयास्पद्भूताः करुणं वा पालयन्ति ‘ते’त्ति पूर्वोक्ताः पापकर्मकारिणः ‘अहाउयं’ति यथाबद्धमायुष्कं, गाहयाऽपि वेदनया नोपक्राम्यत इति भावः, तथा यमकायिकैः-दक्षिणदिक्पालदेवनिकाया- श्रितैरसुरैरैवादिभिरित्यर्थः त्रासिता-उत्पादितभया यमकायिकत्रासितास्ते च शब्दम्-आर्त्तस्वरं कुर्वन्ति भी- तास्सन्तः, ‘किं ते’त्ति तद्यथा ‘अविहाव’त्ति हे अविभाव्य!-अविभावनीयस्वरूप ‘सामि’त्ति हे स्वामिन् ‘भाय’त्ति! हे भ्रातः ‘वप्प’त्ति हे वप्प!, हे पितः! इत्यर्थः, एवं हे तात! ‘जियवं’ति हे जितवन्-प्रासजयजी- वित! ‘मुय’त्ति मुंच ‘मे’त्ति ‘मां’ मरामि’त्ति म्रिये, इह च नारकाणां बहुवचनप्रक्रमेऽपि यदेकवचनं तदेका- पेक्षं तज्जात्यपेक्षं छान्दसत्वाद्देति, यतो दुर्बलो व्याधिपीडितोऽहं ‘किं दाणि सि’त्ति किमिदानीमसि-भवसि?,</p> </div> <p>प्र. व्या. ४</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेववृत्तिः ॥ १९ ॥</p> <p>‘एवंदारुणो’ति एवंप्रकारो दारुणो-रौद्रो निर्दयश्च-निर्वृणश्च मा देहि मे-मम प्रहारान् ‘उस्सासेतं मुहुत्तगं मे देहि’ति उच्छ्वासमुच्छ्वासनमेन-अधिकृतं एकं वा मुहुत्तकं यावत् मे-मह्यं देहीति प्रसादं कुरुत मा रूप्यत विश्रमाभि-विश्रामं करोमि ‘मेविज्ज’ति प्रैवेयकं ग्रीवाबन्धनं मुञ्च मे-मम यतो ‘मरामि’ति त्रिये तथा गाहं-अत्यर्थं ‘तण्हाइउ’ति तृष्णादितः पिपासितोऽहं ‘देह’ति दत्त पानीयं-जलमिति नारकेणोक्ते सति नरकपाला यद् भणन्ति तदाह-‘हंता’ इति, यदि त्वं पिपासितस्ततो हंता हंतीति च वाऽऽमन्नणे पिब इदं जलं विमलं शीतलं, इतिः एतच्छब्दार्थः, भणन्तीति गम्यते, गृहीत्वा च निरयपालास्तसं त्रपुकं ‘से’ तस्य ददति कलशेनाञ्जलिषु, इष्ट्वा च तज्जलं प्रवेपिताङ्गोपाङ्गाः-कम्पितसकलगात्राः अश्रुभिः प्रगलद्भिः प्रपुते-प्रहुते अक्षिणी येषां ते अश्रुप्रगलत्प्रपुताक्षाः, ‘छिन्ना तण्हाइयम्ह’ इति भिन्नक्रमः तस्य चैवं सम्बन्धः-छिन्ना तृष्णाऽऽस्माकमित्येवंरूपाणि करुणानि वचनानीति गम्यते जल्पन्ति विपलायन्ते वेति योगः, विप्रेक्षमाणा ‘दिसो-दिसं’ति एकस्या दिशः सकाशादन्यां दिशं, अत्राणाः-अनर्थप्रतिघातवर्जिता अशरणाः-अर्थकारकविरहिता अनाथाः-योगक्षेमकारिविरहिता अबान्धवाः-स्वजनरहिता बन्धुविप्रहीणाः-विद्यमानबन्धवविप्रमुक्ताः, कथञ्चिदेकार्थिकान्यप्येतानि पदानि न दोषाय, अनाथताप्रकर्षप्रतिपादकत्वादिति, विपलायन्ते-विनश्यन्ति च, कथं?-मृगा इव वेगेन भयोद्विग्ना इति, गृहीत्वा च बलात् हठादित्यर्थः, नारकानिति गम्यते, तेषां च विपलायमानानां निरनुकम्पा यमकायिका इति योगः, मुखं विघाद्य-विदार्य लोहदण्डैः ‘कलकलं’ति कल-</p> </div> <p style="text-align: right;">१ अधर्म-द्वारे प्राणवध-कारकाः प्रेत्यतद-वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: right;">॥ १९ ॥</p>
	<p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>कलशब्दयोगात् कलकलं पूर्वोक्तं त्रपुकमिह स्पर्धते, णहेति वाक्यालङ्कारे, वदने-मुखे क्षिपन्ति, के इत्याह-केचिद्यमकायिका-अम्बादयः, किंभूताः?-हसन्त इति, ततो नारका यत् कुर्वन्ति तदाह-तेन च तसत्रपुणा दग्धाः सन्तो रसन्ति च प्रलपन्ति च, किंभूतानि वचनानीत्याह-भीमानि-भयकारीणि विस्वराणि-विकृतशब्दानि तथा रुदन्ति च करुणकानि-कारुण्यकारीणि, क इवेत्याह-पारापता इव, एवमित्येवंप्रकारो निर्घोषः श्रूयते इति सम्बन्धः, प्रलपितं-अनर्थभाषणं विलापः-आर्त्तस्वरकरणं ताभ्यां करुणो यः स तथा, तथाऽऽकन्दितं-ध्वनिविशेषकरणं बहु-प्रभूतं ‘रुदन्ति’ अश्रुविमोचनं रुदितं-आराटीमोचनं एतेषामेतानि वा शब्दो यत्र स तथा, तथा परिदेविताश्च-विलपिताः, वाचनान्तरे परिवेपिताश्च-प्रकम्पिता रुदाश्च बद्धकाश्च ये नारकास्ते तथा तेषां य आरवस्तेन यः सङ्कुलः स तथा, निरुष्टो-नारकैर्विमुक्त आत्यन्तिको वा तथा रसिताः-कृतशब्दा भणिताः-कृताव्यक्तवचनाः कुपिताः-कृतकोपाः उत्कृजिताः-कृताव्यक्तमहाध्वनयो ये निरयपालाः तेषां यत्तर्जितं-ज्ञास्यसि रे पाप! इत्यादि भणितं नारकविषयं ‘गिणह’न्ति गृहाण क्रम-लङ्घयेत्यर्थः प्रहारो लकुटादिना छिद्धि खड्गादिना भिद्धि कुन्तादिना ‘उप्पाडेहि’न्ति उत्पादय भूतलादुत्क्षिप ‘उक्खणाहि’न्ति उत्खनाक्षिगोलकवाहादिकं ‘कत्ताहि’न्ति कृन्त कर्त्तव्य नासादिकं विकृन्त च-विविधप्रकारैः ‘भुज्जो’न्ति भूयः एकदा हन्त! पुनरपि पाठान्तरे भञ्ज-आमर्द्दय हन- ताडय, क्रियार्थो हनशब्दो निपातः, ‘विहण’न्ति विशेषेण ताडय ‘विच्छुभ’न्ति विक्षिप त्रपुकादिकं मुखे विकीर्णं वा कुरु, वाचनान्तरे विच्छुभ निष्कालये-</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [४]</p> <p>दीप अनुक्रम [८]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेवो वृत्तिः ॥ २० ॥</p> <p>त्यर्थः, ‘उच्छुभ’त्ति आधिक्येन क्षिप-प्रवेशयेत्यर्थः, आकृष-अभिमुखमाकर्षणं कुरु विकृष-विपरीतं विकर्षणं कुरु, किं न जल्पसि ?, वाचनान्तरे तु किं न जानासि ?, स्मर हे पाप ! कर्माणि दुष्कृतानि, एवं-अमुना प्रकारेण यद्वदनं-नरकपालप्रतिपादनं तेन महाप्रगल्भः-अतिस्फारो यः स तथा, ‘पडिसुय’ति प्रतिश्रुतिप्रतिशब्दकस्तद्रूपो यः शब्दस्तेन सङ्कुलः त्रासकः वाचनान्तरे तु ‘वीहणओ तासणओ पइभओ अइभउ’त्ति एकार्थाः, सदा-सर्वदा, केषां त्रासक इत्याह-कदर्थ्यमानानां-यात्यमानानां निरयगोचराणां-नरकवर्तिनां ‘महानगरडञ्जमाणसरिसौ’त्ति दह्यमानमहानगरघोषसदृशो निर्घोषो-महाध्वनिः श्रूयतेऽनिष्टः ‘तहियं’ति तत्र नरके, केषां सम्बन्धीत्याह-‘नेरइयाणं’ किंभूतानामित्याह-यात्यमानानां-कदर्थ्यमानानां यातनाभिः-कदर्थ्यनाप्रकारैः, ‘किं ते’त्ति कास्ताः?-असिवनं-खड्गाकारपत्रवनं, दर्भवनं प्रतीतं, दर्भपत्राणि छेदकानि तद्राणि च भेदकानि भवन्तीति तद्यातनाहेतुत्वेनोक्तं, यंत्रप्रस्तरा-घरदादिपाषाणा यंत्रमुक्तपाषाणा वा यन्त्राणि च पाषाणाश्चेति वा यन्त्रपाषाणाः सूचीतलं-ऊर्ध्वमुखशूचीकं भूतलं क्षारवाप्यः-क्षारद्रव्यभृतवाप्यः ‘कलकलंत’त्ति कलकलायमानं यत् त्रपुकादि तद्भृता वैतरण्यभिधाना या नदी सा कलकलायमानवैतरणी कदम्बपुष्पाकारा वालुका कदम्बवालुका ज्वलिता या गुहा-कन्दरा सा तथा ततो द्वन्द्वः ततोऽसिवनादिषु यन्निरोधनं-प्रक्षेपस्तत्तथा, उष्णोष्णे-अत्युष्णे ‘कण्टइल्ले’त्ति कण्टकवति दुर्गमे-कृच्छ्रगतिके रथे-शकटे यद्योजनं गवाभिव तत्तथा ततो लोहपथे-लोहमयमार्गं यद् गमनं-स्वयमेवावाहनं च-अपरैर्गवाभिव</p> <p style="text-align: right;">१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: right;">॥ २० ॥</p> </div>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तत्तथा, ततः पदत्रयस्य द्वन्द्वः, ‘इमेहि’न्ति एभिर्वक्ष्यमाणैर्विविधैरायुधैः परस्परं वेदनामुदीरयन्तीति योगः  ‘किं ते’त्ति तद्यथा मुद्गरः-अयोधनः मुसुण्डिः-प्रहरणविशेषः ‘करकयं’ति क्रकचं-करपत्रं शक्तिः-त्रिशूलं  हलं-लाङ्गलं गदा-लकुटविशेषः मुशलं चक्रं कुन्तं च प्रतीतं तोमरो-बाणविशेषः शूलं प्रतीतं ‘लडड’त्ति लकुटं  भिडिमालः-प्रहरणविशेषः सद्दलो-भल्लः पट्टिसः-प्रहरणविशेषः ‘चर्मैष्टः’ चर्मवेष्टितपाषाणविशेषो द्रुघणो-  मुद्गरविशेषः मौष्टिको-मुष्टिप्रमाणः पाषाण एव असिखेटकं-असिना सह फलकं खड्गः-केवल एव चापं-  धनुः नाराचः-आयसो बाणः कणको-बाणविशेषः कल्पनी-कर्त्तिकाविशेषः वासी-काष्ठतक्षकोपकरणविशेषः  परशुः-कुठारविशेषः तत एतेषां द्वन्द्वः ततस्ते च ते दृक्कतीक्ष्णा अग्रतीक्ष्णा निर्मलाश्चेति कर्मधारयः, तत-  स्तैरिति व्याख्येयं, तृतीयाबहुवचनलोपदर्शनादिति, अन्यैश्चैवमादिभिः अशुभैर्वैक्रियैः प्रहरणशतैरभिघ्नन्तः  अनुबद्धतीव्रवैरा-अविच्छिन्नोत्कटवैरभावाः परस्परं-अन्योऽन्यं वेदनामुदीरयन्ति, नारका एव तिसृभ्यः नर-  कपृथ्वीभ्यः, परतो नरकपालानां गमनाभावात्, ‘तत्थे’ति तत्र च परस्पराभिहननेन वेदनोदीरणेन मुद्गरप्रहा-  रचूर्णितो मुसुण्डिभिः सम्भग्नो मथितश्च-विलोडितो देहो येषां ते तथा, तथा यन्त्रोपपीडनेन स्फुरन्तश्च कल्पि-  ताश्च-छिन्ना यन्त्रोपपीडनस्फुरत्कल्पिताः ‘केइत्थ’ति केचिदत्र-नरके सचर्मकाः-चर्मणा सह विकृता-उत्कृ-  प्ताः पृथक्कृतचर्माण इत्यर्थः, तथा निर्मूलोल्लूकणौष्ठनासिकादिछन्नहस्तपादाः असिक्रकचतीक्ष्णकुन्तपरशूनां  प्रहारैः स्फादिता-विदारिता ये ते तथा, वास्या संतक्षितान्यङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, ततः पदत्रयस्य कर्म-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [४]</p> <p>दीप अनुक्रम [८]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याकरण० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ २१ ॥</p> <p>धारयः, तथा 'कलकल'ति कलकलायमानक्षारेण यत्परिक्षिसं-परिषेकः तेन गाढं-अत्यर्थं 'डज्जंत'ति दृह्यमानं गात्रं येषां ते तथा, कुन्ताग्रभिन्नो जर्जरितश्च सर्वो देहो येषां ते तथा ततः कर्मधारयः, 'विलोलि'ति विलुलन्ति लुण्ठन्तीत्यर्थः महीतले-भूतले 'विसृणियंगमंग'ति जातश्वयथुकाङ्गोपाङ्गाः, वाचनान्तरे तु निर्गताग्रजिह्वाः, 'तत्थ य'ति तथा च-महीतलविलोलने वृकादिभिः विक्षिप्यन्त इति योगः, तत्र वृका-ईहामृगाः 'सुणग'ति कौलेयकाः शृगालाः-गोमायवः काकाः-वायसाः मार्जारा-बिडालाः सरभाः-परासराः द्वीपिकाः-चित्रकाः 'विग्रय'ति वैघ्राघ्राः व्याघ्रापल्यानि शार्दूला-व्याघ्राः सिंहाः प्रतीताः, एते च ते दर्पिताश्च-दृसाः क्षुद्रभिभूताश्च-बुभुक्षिता इति ते तथा तैः, नित्यकालमनशितैरिवानशितैः-निर्भोजनैः घोरा-दारुणक्रियाकारिणः आरसन्तः-शब्दायमानाः भीमरूपाश्च ये ते तथा तैः, आक्रम्य दृढदंष्ट्राभिर्गाढं-अत्यर्थं 'डक्क'ति दृष्टाः 'कड्विय'ति कृष्टाश्च आकर्षिता ये ते तथा, सुतीक्ष्णनखैः स्फाटित ऊर्ध्वो देहो येषां ते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, विक्षिप्यन्ते-विकीर्यन्ते 'समन्ततः' सर्वतः, किम्भूतास्ते?-विमुक्तसन्धिवन्धनाः-शुथीकृताङ्गसन्धानाः तथा व्यङ्गितानि-विकलीकृतान्यङ्गानि येषां ते तथा, तथा कङ्काः-पक्षिविशेषाः कुररा-उत्क्रोशाः गृध्राः-शकुनिविशेषाः घोरकष्टा-अतिकष्टाश्च ये वायसास्तेषां गणास्तैश्च 'पुणो'ति समुच्चयार्थः खराः-कर्कशाः स्थिरा-निश्चलाः दृढा-अभङ्गुरा नखा येषां ते तथा लोहवत् तुण्डं येषां ते तथा ततः कर्मधारयस्तैरवपत्य-उपनिपत्य पक्षैराहताः पक्षाहताः तीक्ष्णनखैर्विक्षिप्ता आकृष्टा जिह्वा आञ्छिते च-आकृष्टे</p> <p style="text-align: right;">१ अधर्म-द्वारे प्राणवध-कारकाः प्रेत्यतद-वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: right;">॥ २१ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>नयने-लोचने निर्दयं च निष्कृपं यथा भवत्येवं ‘उल्लुगं’ति अवरुणं भग्नं विकृतं च वदनं येषां ते तथा, पाठान्तरेण अवलुगणानि-छिन्नानि विकृतानि गात्राणि येषां ते तथा, उत्क्रोशन्तश्च-क्रन्दन्तः उत्पतन्तो निपतन्तो भ्रमन्तः पूर्वकर्षोदयोपगता इति च पदचतुष्टयं व्यक्तं, पश्चादनुशयेन-पश्चात्तापेन दह्यमानाः निन्दन्तो-जु-गुप्समानाः ‘पुरेखडाई’ पूर्वभवकृतानि कर्माणि-क्रियाः पापकानि-प्राणातिपातादीनि, ततः ‘तहिं २’ति तस्यां २ रत्नप्रभादिकायां पृथिव्यां प्रकृष्टादिस्थितिके नरके तादृशानि जन्मान्तरे उपार्जितानि परमाधार्मि-कोदीरितपरस्परोदीरितक्षेत्रप्रत्ययरूपाणि ‘उस्सण्णचिक्कणाई’ति उस्सण्णं-प्राचुर्येण चिक्कणाई-दुर्विमोचानि दुःखानि अनुभूय ततश्च निरयादायुःक्षयेणोदृत्ताः सन्तो बहवो गच्छन्ति तिर्यग्वसतिं-तिर्यग्योनिं, यतोऽल्पा एव मनुष्येऽप्यन्ते, दुःखोत्तारां अनन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणीरूपकायस्थितिकत्वात् तस्यां सुदारुणां दुःखा-श्रयत्वात् जन्मजरामरणव्याधीनां याः परिवर्त्तनाः-पुनः पुनर्भवानि ताभिररघट इवारघटो या सा तथा तां तिर्यग्वसतिं जलस्थलखचराणां परस्परेण विहिंसनस्य-विविधव्यापादनस्य प्रपञ्चो-विस्तारो यस्यां सा तथा तां, तस्यां च इदं वक्ष्यमाणप्रत्यक्षं जगत्प्रकटं न केवलमागमगम्यं किन्तु जङ्गमजन्तूनां प्रत्यक्षप्रमाण-सिद्धतया प्रकटमेवेति, वराकाः-तपस्विनः प्राणवधकारिण इति प्रक्रमः, दुःखं प्राप्नुवन्ति दीर्घकालं यावत्, ‘किं ते’ति तद्यथा शीतोष्णतृष्णाक्षुद्धिर्वेदनाः तथा अप्रतीकारं-सूतिकर्मादिरहितं अटवीजन्म-कान्तारजन्म नित्यं भयेनोद्विग्नानां मृगादीनां वासः-अवस्थानं जागरणं-अनिद्रागमनं च वधो-मारणं बन्धनं-संयमनं</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [४]</p> <p>दीप अनुक्रम [८]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ २२ ॥</p> <p>ताडनं-कुट्टनं अङ्कनं-तप्तायःशलाकादिना चिह्नकरणं निपातनं-गर्तादौ क्षेपणं अस्थिभञ्जनं-कीकसामर्दनं नासाभेदो-नासिकाविवरकरणं प्रहारः ‘दूमणं’ति द्वनमुपतापः छविच्छेदनं-अवयवकर्त्तनं अभियोगप्रा- पणं-हठाद् व्यापारप्रवर्त्तनं कसः-चर्मयाष्टिका अङ्कुशश्च-सृणिः आरा च-प्रवणदण्डान्तर्वर्त्तिनी लोहश- लाका तासां निपातः-शरीरनिवेशनं दमनं-शिक्षाग्राहणं ततो द्वन्द्वस्ततः एतानि प्राप्नुवन्तीति प्रक्रमः, वाह- नानि च भारस्येति गम्यं, मातापितृविप्रयोगः, श्रोतसां-नासालुखादिरन्ध्राणां च परपीडनानि-रज्ज्वादिदृढ- बन्धनेन बाधनानि यानि तानि तथा शोकपरिपीडितानि वा ततो द्वन्द्वः, ततस्तानि च शस्त्रं चाग्निश्च विषं च प्रसिद्धानि तैरभिघातश्च-अभिहननं गलस्य-कण्ठस्य गवलस्य-शृङ्गस्य आवलनं च-मोटनं अथवा गल- कस्य बलादावलनं मारणं चेति तानि च गलेन-वडिशेन जालेन च-आनायेन ‘उच्छिपणाणि’त्ति जलमध्या- न्मत्स्यादीनामुत्क्षेपणानि-आकर्षणानि यानि तानि तथा, ‘पउलनं’ पचनं ‘विकल्पनं’ छेदनं ते च यावज्जी- विकबन्धनानि पञ्जरनिरोधनानि चेति पदद्वयं व्यक्तं, खयूथ्यान्निर्द्धाटनानि च-खकीयनिकायात् निष्काल- नानीत्यर्थः, धमनानि-महिष्यादीनां वायुपूरणादीनि च दोहनानि च प्रतीतानि कुदण्डेन-बन्धनविशेषेण गले-कण्ठे यानि बन्धनानि तानि तथा वाटेन-वाटकेन वृत्त्येत्यर्थः, परिवारणानि-निराकरणानि यानि तानि तथा तानि च पंकजलनिमज्जनानि-कर्दमप्रायजले बोलनानि वारिप्रवेशनानि च-जले क्षेपाः तथा ‘ओवा- य’त्ति अवपातेषु गर्ताविशेषेषु उदक इत्येवंरूढेषु पतनेन निभङ्गो-भञ्जनं गात्राणामवपातनिभङ्गः स च विष-</p> <p style="text-align: right;">१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद्- वस्थाश्च सू० ४</p> <p style="text-align: right;">॥ २२ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only gajalibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>मात्पर्व्वतदंकादेर्निपतनं विषमनिपतनं तच्च द्वाग्निज्वालाभिर्दहनं चेति तानि आदिर्येषां तानि तथा, क- र्माणि प्राप्नुवन्तीति योगः, एवमुक्तन्यायेन ते प्राणघातिनः दुःखशतसम्प्रदीप्ता नरकादागता इह तिर्यग्लोके, किंभूताः?—सावशेषकर्माणाः तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेषु प्राप्नुवन्ति पापकारिणः, कानीत्याह?—कर्माणि—कर्मज- न्यानि दुःखानीति भावः, प्रमादरागद्वेषैर्बहूनि यानि सञ्चितानि—उपार्जितानि, तथा अतीव—अत्यर्थमसात- कर्कशानि—असातेषु—दुःखेषु मध्ये कर्कशानि—कठोराणि यानि तानि तथा ।</p> <p>भमरमसगमच्छिमाइएसु य जाइकुलकोडिसयसहस्सेहिं नवहिं चउरिंदियाण तहिं तहिं चैव जम्मणमरणाणि अणुभवन्ता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणघाणचक्खुसहिया तहेव तेइंदिएसु कुंधुपिप्पीलिकाअवधिकादिकेसु य जातिकुलकोडिसयसहस्सेहिं अट्टहिं अणूणएहिं तेइंदियाण तहिं २ चैव जम्मणमरणाणि अणुहवन्ता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणघाणसंपउत्ता गंडू- लयजलयकिमियचंदणगमादिएसु य जातीकुलकोडिसयसहस्सेहिं सत्तहिं अणूणएहिं वेइंदियाण तहिं २ चैव जम्मणमरणाणि अणुहवन्ता कालं संखेज्जकं भमंति नेरइयसमाणतिव्वदुक्खा फरिसरसणसंपउत्ता पत्ता एगिंदियत्तणंपि य पुढविजलजलणमारुयवणप्फति सुहुमवायरं च पज्जत्तमपज्जत्तं पत्तेयसरीरणाम साहा- रणं च पत्तेयसरीरजीविएसु य तत्थवि कालमसंखेज्जगं भमंति अणंतकालं च अणंतकाए फासिंदियभावसं- पउत्ता दुक्खसमुदयं इमं अणिट्ठं पारिविंति पुणो २ तहिं २ चैव परभवतरुगणगहणे कोदालकुलियदालणस-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Digital Library</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="369 438 481 678" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ २३ ॥</p> </div> <div data-bbox="604 438 1736 1061" style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>लिलमलणखुंभणरुंभणअणलाणिलविविहसत्थघट्टणपरोप्पराभिहणणमारणविराहणाणि य अकामकाइं पर- प्पओगोदीरणाहि य कज्जपओयणेहि य पेस्तपसुनिमित्तओसहाहारमाइएहि उक्खणणउक्कत्थणपयणकोट्ट- णपीसणपिट्ठणभज्जणगालणआमोडणसडणफुडणभज्जणल्लेयणतच्छणविलुंचणपत्तञ्जोडणअग्गिदहणाइयाति, एवं ते भवपरंपरादुक्खसमणुवद्धा अडंति संसारवीहणकरे जीवा पाणाइवायनिरया अणंतकालं जेविय इह माणुसत्तणं आगया कहिं वि नरगा उव्वट्टिया अधन्ना तेविय दीसंति पायसो विकयविगलरूवा खुज्जा वडभा य वामणा य बहिरा काणा कुंटा पंगुला विउला य मूका य मंमणा य अंधयगा एगचक्खू विणिहयसवेहया वाहिरोगपीलियअप्पाउयसत्थवज्जवाला कुलक्खणुक्किन्नदेहा दुब्बलकुसंघयणकुप्पमाणकुसंठिया कुरूवा क्किविणा य हीणा हीणसत्ता निच्चंसोक्खपरिवज्जिया असुहुदुक्खभागणरगाओ इहं सावसेसकम्मा, एवं णरगं तिरिक्खजोणिं कुमाणुसत्तं च हिंढमाणा पावंति अणंताइं दुक्खाइं पावकारी एसो सो पाणवहस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भयो बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वास- सहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति एवमाहंसु, नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवर- नामधेज्जो कहइ सीहपाणवहणस्स फलविवागं, एसो सो पाणवहो चंडो रुद्धो खुद्धो अणारिओ निग्घिणो निसंसो महब्भओ वीहणओ तासणओ अणज्जो उव्वेयणओ य णिरवयक्खो निद्धम्मो निप्पिवासो निक्कलुणो निरय- वासगमणनिधणो मोहमहब्भयपवहुओ मरणवेमणसो पढमं अहम्मदारं समत्तंतिवेमि ॥ १ ॥ (सू० ४)</p> </div> <div data-bbox="1859 438 1971 742" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">॥ २३ ॥</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>तथा भ्रमरमशकमक्षिकादिषु चेति सप्तम्याः षष्ठ्यर्थत्वात् भमरादीनामिति व्याख्येयं, चतुरिन्द्रियाणामिति च संबन्धनीयं अथवा चतुरिन्द्रियाणां भ्रमरादिकेषु जातिकुलकोटीशतसहस्रेष्वेवं घटनीयमिति, जातौ-चतुरिन्द्रियजातौ यानि कुलकोटीशतसहस्राणि तानि तथा तेषु, तथा 'नवसु'त्ति 'तहिं २ चेव'त्ति तत्रैव २ चतुरिन्द्रियजातावित्यर्थः, जननमरणान्यनुभवन्तः कालं सङ्ख्यातकं-सङ्ख्यातवर्षसहस्रलक्षणं भ्रमन्ति, किम्भूताः? - नारकसमानतीव्रदुःखाः स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःसहिताः इन्द्रियचतुष्टयोपेता इत्यर्थः, 'तथैवे'ति यथैव चतुरिन्द्रियेषु तथैव त्रीन्द्रियेषु जननान्यनुभवन्तो भ्रमन्तीति प्रक्रमः । एतदेव प्रपञ्चयन्नाह—</p> <p>कुंथुपिपीलिकाअवधिकादिकेषु च जातिकुलकोटिशतसहस्रेष्वित्यादीन्द्रियगमान्तं चतुरिन्द्रियगमवन्नेयं, नवरं 'गंडूलय'त्ति अलसाः 'चंदणग'त्ति अक्षाः तथा 'पत्ता एगिंदियत्तणंपिय'त्ति न केवलं पञ्चेन्द्रियादित्वमेव प्राप्ताः एकेन्द्रियत्वमपि च प्राप्ता दुःखसमुदयं प्राप्नुवन्तीति योगः, किम्भूतमेकेन्द्रियत्वमित्याह-पृथ्वी-जलज्वलनमारुतवनस्पतिसम्बन्धि यत् एकेन्द्रियत्वं तत्पृथिव्याद्येवोच्यते, पुनः किम्भूतं तत्? -सूक्ष्मं वादरं च तत्तत्कर्मोदयसम्पाद्यं च तथा पर्याप्तमपर्याप्तं च तत्तत्कर्मोत्पाद्यमेव तथा प्रत्येकशरीरनामकर्मसम्पाद्यं प्रत्येकशरीरनामैवोच्यते साधारणशरीरनामकर्मसम्पाद्यं च साधारणं पर्याप्तादिपदानां च कर्मधारयः, चकारः समुच्चये, एवंविधं चैकेन्द्रियत्वं प्राप्ताः कियन्तं कालं भ्रमन्तीति भेदेनाह—'पत्तेये'त्यादि, 'तत्थवि'त्ति तत्रापि एकेन्द्रियत्वे प्रत्येकशरीरे जीवितं-प्राणधारणं येषां ते प्रत्येकशरीरजीवितास्तेषु-पृथिव्यादिषु चकार</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only anelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ २४ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>उत्तरवाक्यापेक्षया समुच्चयार्थः, कालमसङ्ख्यातं भ्रमन्ति, अनन्तकालं चानन्तकाये साधारणशरीरेष्वित्यर्थः, आह च—“अस्संखोसप्पिण्डस्सप्पिणी एगिंदियाणय चउण्हं । ता चेव ऊ अणता वणस्सईए उ बोद्धवा ॥ १ ॥” इति, किम्भूतास्ते?—स्पर्शेन्द्रियस्य भावेन-परिणामेन सत्तया वा सम्प्रयुक्ता ये ते तथा, दुःखसमुदयमिदं वक्ष्यमाणमनिष्टं प्राप्नुवन्ति, पुनः २ तत्रैव २ एकेन्द्रियत्वे इत्यर्थः, किम्भूते?—परः-प्रकृष्टः सर्वोत्कृष्ट-कायस्थितिकत्वाद् भव-उत्पत्तिस्थानं तरुणगणो-वृक्षगुच्छादिवृन्दसमूहो यत्रैकेन्द्रियत्वे पाठान्तरे तु पर-भवतरुणैर्गहनं यत्तत्तथा, तत्र दुःखसमुदयमेवाह-कुदालो-भूखनित्रं कुलिकं-हलविशेषस्ताभ्यां ‘दालनं’ति-विदारणं यत्तत्तथा, एतत्पृथिवीवनस्पत्योर्दुःखकारणमुक्तं, सलिलस्य मलनं च मर्दनं ‘खुंभणं’ति क्षोभणं च ‘रुंभणं’ति रोधनं च सलिलमलनक्षोभणरोधनानि, अनेनाप्यायिकानां दुःखमुक्तं, अनलानिलयोः-अग्नि-वातयोर्विविधैः शस्त्रैः स्वकायपरकायभेदैः यत् घटनं-सङ्घटनं तत्तथा, अनेन च तेजोवायोर्दुःखमुक्तं, परस्प-राभिहननेन घन्मारणं च प्रतीतं विराधनं-परितापनं ते तथा ततो द्वन्द्वोऽतस्तानि च दुःखानि भवन्तीति गम्यं, तानि किम्भूतानि?—अकामकानि-अनभिलषणीयानि, एतदेव विशेषेणाह-परप्रयोगोदीरणाभिः-स्वव्यति-रिक्तजनव्यापारदुःखोत्पादनाभिर्निष्प्रयोजनाभिरिति हृदयं, कार्यैः प्रयोजनैश्च-अवश्यकरणीयप्रयोजनैः, किम्भूतैः?—प्रेष्यपशुनिमित्तकर्मकरगवादिहेतोरूपलक्षणत्वात्तदन्यनिमित्तं च यान्यौषधाहारादीनि तानि तथा तैरुत्वननं-उत्पाटनं उत्कत्थनं-त्वचोऽपनयनं पचनं पाकः कुट्टनं-चूर्णनं प्रेषणं-घरट्टादिना दलनं पिट्टनं-ताडनं</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे प्राणवध- कारकाः प्रेत्यतद- वस्थाश्च सू० ४  ॥ २४ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>भर्जनं-आष्टूपचनं गालनं-छाणनं आमोटनं-ईपद्भञ्जनं शटनं-खत एव विशरणं स्फुटनं-खत एव द्विधा-  भावगमनं भञ्जनं-आमर्दनं छेदनं-प्रतीतं तक्षणं-काष्ठादेरिव वास्यादिना विलुञ्चनं-लोमाद्यपनयनं पञ्च-  ज्जोडनं-तरुप्रान्तपल्लवफलादिपातनं अग्निदहनं प्रतीतं, एतान्यादिर्येषां तानि दुःखान्येकेन्द्रियाणां भव-  न्तीति गम्यं, तथा एकेन्द्रियाधिकारं निगमयन्नाह-एवम्-उक्तक्रमेण ते एकेन्द्रियाः भवपरम्परासु यद्दुःखं  तत्समनुबद्धं-अविच्छिन्नं येषां ते तथा अटन्ति संसारे एव 'बीहणकरे'ति भयङ्करः तत्र जीवाः प्राणानि-  पातनिरता अनन्तं कालं यावदिति । अथ प्राणानिपातकारिणो नरकादुद्धृता मनुष्यगतिगता यादृशा भ-  वन्ति तथोच्यते—'जेऽपिचेह मर्त्यलोके मानुषत्वमागताः-प्रासाः कथञ्चित् कृच्छ्रादित्यथो  नरकादुद्धृताः अधन्यास्तेऽपिच दृश्यन्ते प्रायशः-प्रायेण विकृतविकलरूपाः, प्रायशोग्रहणेन तीर्थकरादि-  भिव्यभिचारः परिहृतः, विकृतविकलरूपत्वमेव प्रपञ्चयन्नाह-कुब्जाः-वक्रजङ्घाः वटभाश्च-वक्रोपरिकाया  वामनाश्च-कालानौचित्येनातिह्रस्वदेहा बधिराः प्रतीताः काणाः-दीपकाणाः फरला इत्यर्थः, कुण्डाश्च-विकृतह-  स्ताः पङ्गुलाः-गमनासमर्थजङ्घाः विकलाश्च-अपरिपूर्णगात्राः मूकाश्च-वचनासमर्थाः पङ्गुलाः'अविय जलमूय'ति  पाठान्तरं तत्र अपिचेति समुच्चये जलमूकाः-जलप्रविष्टस्येव 'बुडबुड' इत्येवंरूपो ध्वनिर्येषां मन्मनाश्च-येषां  जल्पतां स्वलति वाणी 'अंधिल्लग'ति अन्याः एकं चक्षुर्विनिहतं येषां ते एकचक्षुर्विनिहताः 'सचिल्लय'ति  सर्वापचक्षुषः पाठान्तरेण 'सपिसल्लय'ति तत्र सह पिसल्लयेन-पिशाचेन वर्त्तन्त इति सपिसल्लयाः व्या-</p> </div> <p>प्र. व्या. ५</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ २५ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>धिभिः-कुष्ठायै रोगैः-ज्वरादिभिर्विंशतिष्ठाभिर्वा आधिभिः-मनःपीडाभिः रोगैश्च पीडिता व्याधिरोगपीडिताः अल्पायुषः-स्तोकजीविताः शस्त्रेण हन्यन्ते ये ते शस्त्रवध्याः बालाः-बालिशाः ततोऽन्धकारादीनां द्वन्द्वः, कुलक्षणैः-अपलक्षणैरुत्कीर्णः-आकीर्णो देहो येषां ते तथा, दुर्बलाः कृशाः कुसंहननाः बलविकलाः कुप्रमाणाः अतिदीर्घा अतिह्रस्वा वा कुसंस्थिताः-कुसंस्थानाः ततो दुर्बलादीनां द्वन्द्वः, अत एव कुरूपाः कृपणाश्च-रङ्गाः अत्यागिनो वा हीना जात्यादिगुणैर्हीनसत्त्वाः-अल्पसत्त्वाः नित्यं सौख्यपरिवर्जिताः अशुभम्-अशुभानुबन्धि यद्दुःखं तद्भागिनः नरकादुद्धृतास्सन्तः इह-मनुष्यलोके दृश्यन्ते सावशेषकर्म्मण इति निगमनं । अथ यादृशं फलं ददातीत्येतन्निगमयन्नाह-‘एवंमित्यादि एवमुक्तक्रमेण नरकतिर्यग्योनीः कुमानुषत्वं च हिण्डमानाः-अधिगच्छन्तः प्राप्नुवन्ति अनन्तकानि दुःखानि पापकारिणः प्राणवधकाः, विशेषेण निगमयन्नाह-एष स प्राणवधस्य फलविपाकः इहलौकिकः-मनुष्यापेक्षया मनुष्यभवाश्रयः पारलौकिकः-मनुष्यापेक्षया नरकगत्याद्याश्रितः अल्पसुखो-भोगसुखलवसम्पादनात् अविद्यमानसुखो वा बहुदुःखो नरकादिदुःखकारणत्वात् ‘महोभय’ इति महाभयरूपः बहुरजः-प्रभूतं कर्म प्रगाढं-दुर्मोचं यत्र स तथा दारुणो-रौद्रः कर्कशः-कठिनः असातः-असातवेदनीयकर्म्मोदयरूपः वर्षसहस्रैर्मुच्यते ततः प्राणीति शेषः, न च-नैव अवेदयित्वा तमिति शेषः अस्ति मोक्षः अस्मादिनि शेषः, इतिशब्दः समाप्तौ, अथ केनायं द्वारपञ्चकप्रतिबद्धप्राणातिपातलक्षणाश्रवद्वारप्रतिपादनपरः प्रथमाध्ययनार्थः प्ररूपित इति जिज्ञासायामाह-‘एवं’ इति एवंप्रकारम-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्म-द्वारे प्राणवध-कारकाः प्रेत्यतद-वस्थाश्च सू० ४  ॥ २५ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तीन्द्रियभूतभव्यभविष्यदर्थविषयस्फुटप्रतिभासप्रकाशनीयमभिहितं वस्तु ‘आहंसु’त्ति आख्यातवान् ‘ज्ञात-कुलनन्दनः’ ज्ञाताः-क्षत्रियविशेषाः तत्कुलनन्दनः-तद्वंशसमृद्धिकरः महात्मेति प्रतीतं, जिनस्तु-जिन एव वीरवरनामधेयः-वीरवरेति प्रशस्तनामा, तथा कथितवांश्च प्राणवधस्य फलविपाकं, अध्ययनार्थस्य महावीराभिहितत्वे प्रतिपादिनेऽपि यत् पुनस्तत्फलविपाकस्य वीरकथितत्वाभिधानं तत्प्राणवधस्यैकान्तिकाशुभफलत्वेनात्यन्तपरिहाराविष्करणार्थमिति, अथ शास्त्रकारः प्राणवधस्य स्वरूपं प्रथमद्वारोपदर्शितमपि निगमनार्थं पुनर्दर्शयन्नाह-एष स प्राणवधोऽभिहितः योऽनन्तरं स्वरूपतः पर्यायतः विधानतः फलतः कर्तृतश्च वक्तुं प्रति-ज्ञात आदावासीत्, किम्भूत इत्याह-चण्डः-कोपनः तत्प्रवर्त्तितत्वाच्चण्डः रौद्ररसप्रवर्त्तितत्वात् रौद्रः क्षु-द्रजनाचरितत्वात् क्षुद्रः अनार्थलोककरणीयत्वादनार्थः घृणाया अत्राविद्यमानत्वान्निर्घृणः निःशूकजनकृ-तत्वाद्दृशंसः महाभयहेतुत्वात् महाभयः ‘वीहणउ’त्ति भयान्तरप्रवर्त्तितत्वात् त्रासकः उत्रासहेतुत्वात् अ-न्याय्यो-न्यायादपेतत्वात् उद्वेजनकश्च उद्वेगहेतुत्वात् निरवकाङ्क्षः परप्राणापेक्षावर्जित इत्यर्थः, निर्दुर्मो-ध-र्मादपक्रान्तः निष्पिपासः-वध्यं प्रति स्नेहविरहात् निष्करुणो-विगतदयः निरयवासगमननिधन इति व्यक्तं मोहमहाभयप्रकर्षकः-तत्प्रवर्त्तकः मरणेन वैमनस्यं-दैन्यं यत्र स मरणवैमनस्यः । प्रथममधर्मद्वारं-मृषा-वादाद्यपेक्षयेदमाद्यमाश्रवद्वारं समाप्तं-तद्वक्तव्यतापेक्षया निष्ठां गतं इतिशब्दः समाप्तौ ब्रवीमि-प्रति-पाद्यामि तीर्थकरोपदेशेन न स्वमनीषिकयेति, एतच्च सुधर्मस्वामी जम्बूस्वामिनः स्ववचसि सर्वज्ञवचना-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [...४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ २६ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p style="text-align: center;">श्रितत्वेनाव्यभिचारीदमिति प्रत्ययोत्पादनार्थं तथा स्वस्य गुरुपरतन्नताविष्करणार्थं विनेयानां चैतद्व्यायप्रदर्शनार्थमाख्यातवानिति । प्रश्नव्याकरणाङ्गस्य प्रथमाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥ १ ॥</p> <p style="text-align: center;">-----</p> <p style="text-align: center;">व्याख्यातं प्रथममध्ययनं, अथ द्वितीयमारभ्यते, अस्य चायमभिसम्बन्धः-पूर्वं स्वरूपादिभिः प्राणातिपातः प्रथमाश्रवद्वारभूतः प्ररूपितः, इह तु सूत्रक्रमप्रामाण्याद् द्वितीयाश्रवद्वारभूतो मृषावादस्तथैव प्ररूप्यते, इत्येवंसम्बन्धस्यास्याध्ययनस्येदमादिसूत्रम्—</p> <p>जंजू वित्तियं च अलियत्रयणं लहुसगलहुचवलभणियं भयंकरं दुहकरं अयसकरं वेरकरं अरतिरतिरागदोसमणसंकिलेसवियरणं अलियनियडिसातिजोयवहुलं नीयजणनिसेवियं निस्संसं अप्पच्चयकारकं परमसाहुगरहणिज्जं परपीलाकारकं परमकिण्हेस्ससहियं दुग्गइविणिवायवहुणं भवपुणब्भवकरं चिरपरिचियमणुगतं दुरन्तं कित्तियं वित्तितं अधम्मदारं । (सू० ५) तस्स य णामाणि गोण्णाणि होंति तीसं, तंजहा—अलियं १ सढं २ अणज्जं ३ मायामोसो ४ असंतकं ५ कूडकवडमवत्थुगं च ६ निरत्थयमवत्थयं च ७ विहेसगरहणिज्जं ८ अणुज्जुकं ९ कक्कणा य १० वंचणा य ११ मिच्छापच्छाकडं च १२ साती उ १३ उच्छन्नं १४ उक्कलं च १५ अट्टं १६ अब्भक्खाणं च १७ किच्चिसं १८ वलयं १९ गहणं च २० मम्मणं च २१ नूमं २२ निययी २३ अप्पच्चओ २४ असमओ २५ असच्चसंधत्तणं २६ विवक्खो २७ अवहीयं २८ उवहिअसुद्धं २९</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्म-द्वारे मृषावाद-स्य स्वरूपं नामानि च सू० ५-६  ॥ २६ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र प्रथमे श्रुतस्कन्धे प्रथम अध्ययनं “प्राणातिपात” परिसमाप्तं  अथ प्रथमे श्रुतस्कन्धे द्वितीयं अध्ययनं “मृषावाद” आरभ्यते  “मृषावादः” - नामक द्वितीयं अधर्मद्वारं  मृषावादस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [५-६]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[५-६]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[९-१०]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>अवलोवोत्ति ३०, अविद्य तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेजाणि होंति तीसं सावज्जस्स अलियस्स वइजो- गस्स अणेगाइं ( सू० ६ )</p> <p>‘जंबू’ इत्यादि, जम्बूरिति शिष्यामन्त्रणवचनं, द्वितीयं च-द्वितीयं पुनराश्रवद्वारं अलीकवचनं-मृषावादः, इद- मपि पञ्चभिर्षादशकादिद्वारैः प्ररूप्यते, तत्र यादृशमिति द्वारमाश्रित्यालीकवचनस्य स्वरूपमाह-लघुः-गुणगौर- वरहितः स्वः-आत्मा विद्यते येषां ते लघुस्वकास्तेभ्योऽपि ये लघवस्ते लघुस्वकलघवस्ते च ते चपलाश्च कायादिभि- रिति कर्मधारयः तैरेव भणितं यत्तत्तथा, तथा भयङ्करं दुःखकरमयशःकरं वैरकरं यत्तत्तथा, अरतिरतिरागद्वेषल- क्षणं मनःसङ्केशं वितरति यत्तत्तथा, अलिकः-शुभफलापेक्षया निष्फलो यो निकृतेः-वाचनप्रच्छादनार्थं वच- नस्य ‘साइ’ति अविश्रम्भस्य च अविश्वासवचनस्य योगो-व्यापारस्तेन बहुलं-प्रचुरं यत्तत्तथा, नीचैः-जात्या- दिहीनैर्जनैः प्राय इदं निषेचितं-कृतं तत्तथा, नृशंसं-शूकावर्जितं निःशंसं वा-श्लाघारहितं अप्रत्ययकारकं-वि- श्वासविनाशकरं, इतः पदचतुष्टयं कण्ठ्यं, तथा भवे-संसारे पुनर्भवं-पुनः २ जन्म करोतीति पुनर्भवकरं चिरपरि- चितं-अनादिसंसाराभ्यस्तं अनुगतं-अविच्छेदेनानुवृत्तं दुरन्तं-विपाकदारुणं द्वितीयमधर्मद्वारं पापोपाय इति, एतेन यादृश इत्युक्तं ? । अथ यन्नामेत्यभिधातुकाम आह-‘तस्से’त्यादि सुगमं, यावत्तद्यथा-अलिकं १ शठं शठस्य-मायिनः कर्मत्वात् २ अनार्यवचनत्वादनार्थं ३ मायालक्षणकषायानुगतत्वान्मृषारूपत्वाच्च मायामृषा ४ ‘असंतगं’ति असदर्थभिधानरूपत्वादसत्कं ५ ‘कूडकवडमवत्थुं’ति कूटं-परवचनार्थं न्यूनाधिकभाषणं</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
	<p>मृषावादस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<p><b>आगम</b> <b>(१०)</b></p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [५-६]</b></p>
<p align="center"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[५-६]</b></p> <p align="center"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[९-१०]</b></p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- २० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ २७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>कपटं-भाषाविपर्ययकरणं अविद्यमानं वस्तु-अभिधेयोऽर्थो घञ तदवस्तु, पदत्रयस्याप्येतस्य कथञ्चित्समानार्थत्वेनैकतमस्यैव गणनादिदमेकं नाम ६ 'निरर्थकमवत्थयं व'त्ति निरर्थकं सत्यार्थान्निष्क्रान्तं अपार्थ-अपगतसत्यार्थं, इहापि द्वयोः समानार्थतया एकतरस्यैव गणनादेकत्वम् ७ 'विद्वेषगर्हणज्ज'ति विद्वेषो-मत्सरस्तस्माद् गर्हते-निन्दति येन अथवा तत्रैव विद्वेषात् गर्हते साधुभिर्यत् तद्विद्वेषगर्हणीयमिति ८ अन्वुक्तं-वक्रमित्यर्थः ९ कल्कं-पापं माया वा तत्करणं कल्कना सा च १० वञ्चना ११ 'मिच्छापच्छाकडं व'त्ति मिथ्येतिकृत्वा पश्चात्कृतं न्यायवादिभिर्यत्तत्तथा १२ सातिः-अविश्रम्भः १३ 'उच्छन्नं'ति अपशब्दं-विरूपं छन्नं-स्वदोषाणां परगुणानां वाऽऽवरणमपच्छन्नं, उत्थत्वं वा न्यूनत्वं १४ 'उत्कूलं व'त्ति उत्कूलयति-सन्मार्गादपध्वंसयति कूलाद्वा-न्यायसरित्प्रवाहतटादूर्ध्वं यत्तदुत्कूलं पाठान्तरेण उत्कलं-ऊर्ध्वं धर्मकलाया यत्तत्तथा १५ आर्त्त-ऋतस्य पीडितस्येदं वचनमतिकृत्वा १६ अभ्याख्यानं परमभि असतां दोषाणामाख्यानमित्यर्थः १७ किल्बिषं किल्बिषस्य-पापस्य हेतुत्वात् १८ वलयमिव वलयं वक्रत्वात् १९ गहनमिव गहनं दुर्लक्ष्यान्तस्तत्त्वत्वात् २० मन्मनमिव मन्मनं चास्फुटत्वात् २१ 'नृमं'ति प्रच्छादनं २२ निकृतिः-मायायाः प्रच्छादनार्थं वचनं २३ अप्रत्ययः-प्रत्ययाभावः २४ असमयः-असम्यगाचारः २५ असत्यं-अलीकं सन्दधाति-अच्छिन्नं करोतीति असत्यसन्धस्तद्भावो असत्यसन्धत्वं २६ विपक्षः सत्यस्य सुकृतस्य चेति भावः २७ 'अवहीयं'ति अपसदा-निन्द्या धीर्यसिंस्तदपधीकं पाठान्तरेण 'आणाइयं'आज्ञां जिनादेशमतिगच्छति-अतिक्रामति</p> </div> <div style="width: 15%;"> <p>१ अधर्म- द्वारे मृषावाद- स्य स्वरूपं नामानि च सू० ५-६</p> <p align="center">॥ २७ ॥</p> </div> </div>
	<p>मृषावादस्य त्रिंशत् नामानि</p>



<b>आगम (१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [५-६]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत सूत्रांक [५-६]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप अनुक्रम [९-१०]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>यत्तदाज्ञातिगं २८ ‘उवहिअसुद्धं’ति उपधिना-मायया अशुद्धं-सावद्यमुपध्यशुद्धं २९ अवलोपो-वस्तुसद्भाव- प्रच्छादनं, इतिरेवंप्रकारार्थः, अपिचेति समुच्चयार्थः, ३०, ‘तस्स एयाणि एवमाईणि णामधेज्जाणि होंति तीसं सावज्जस्स अलियस्स वयजोगस्स अपणेगाइं’ति इह वाक्ये एवमक्षरघटना कार्या-तस्यालीकस्य सावद्यस्य वाग्योगस्य एतानि-अनन्तरोदितानि त्रिंशत् एवमादीनि-एवंप्रकाराणि चानेकानि नामधेयानि-नामानि भवन्तीति यन्नामेति द्वारं प्रतिपादितम् २ । अथ ये यथा चालीकं वदन्ति तान् तथा चाह—</p> <p>तं च पुण वदंति केइ अलियं पावा असंजया अविरया कवडकुडिलकडुयचटुलभावा कुद्धा लुद्धा भयाय हस्सट्टिया य सक्खी चोरचारभडा खंडरक्खा जियजूईकरा य गहियगहणा कक्कुरुगकारगा कुलिगी उ- वहिया वाणियगा य कूडतुलकूडमाणी कुडकाहावणोवजीवी पडगारकलायकारुइज्जा वंचणपरा चारियचा- दुयारनगरगोत्तियपरिचारगा दुट्टवायिसूयकअणवलभणिया य पुव्वकालियवयणदच्छा साहसिका लहुस्सगा असच्चा गारविद्या असच्चट्टावणाहिचित्ता उच्चच्छंदा अणियगहा अणियता छंदेण मुक्कवाता भवंति अलियाहिं जे अविरया, अत्रे नत्थिकवादिणो वामलोकवादी भणंति नत्थि जीवो न जाइ इह परे वा लोए न य किंचिवि फुसति पुन्नपावं नत्थि फलं सुकयदुक्कयाणं पंचमहाभूतियं सरीरं भासंति हे! वातजोगजुत्तं, पंच य खंधे भणंति केई, मणं च मणजीविका वदंति, वाउजीवोत्ति एवमाहंसु, सरीरं सादियं सनिधणं इह भवे एगे भवे तस्स विप्पणासंमि सव्वनासोत्ति, एवं जंपंति मुसावादी, तम्हा दाणवयपोसहाणं तव-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
	<p>मृषावादस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ २८ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>संजमवंभचेरकलाणमाइयाणं नत्थि फलं नवि य पाणवहे अलियवयणं न चेव चोरिककरणपरदारसेवणं वा सपरिग्गहपावकम्मकरणंपि नत्थि किंचि न नेरइयतिरियमणुयाण जोणी न देवलोको वा अत्थि न य अत्थि सिद्धिगमणं अम्मापियरो नत्थि नवि अत्थि पुरिसकारो पच्चक्खाणमवि नत्थि नवि अत्थि कालमच्चू य अरिहंता चक्कवट्ठी बलदेवा वासुदेवा नत्थि नेवत्थि केइ रिसओ धम्माधम्मफलं च नवि अत्थि किंचि बहुयं च थोवकं वा, तम्हा एवं विजाणिऊण जहा सुबहु इंदियाणुकूलेसु सव्वविसएसु वट्टह णत्थि काइ कि-रिया वा अकिरिया वा एवं भणंति नत्थिकवादिणो वामलोगवादी, इमंपि बितीयं कुदंसणं असव्भाववा-इणो पण्णवेति मूढा-संभूतो अंडकाओ लोको सयंभुणा सयं च निम्मिओ, एवं एयं अलियं-पयावइणा इ-स्सरेण य कयंति केत्ति, एवं विणहुमयं कसिणमेव य जगंति केइ, एवमेके वदंति मोसं एको आया अका-रको वेदको य सुकयस्स दुक्कयस्स य करणाणि कारणाणि सव्वहा सव्वहिं च निच्चो य निक्किओ निग्गुणो य अणुवलेवओत्तिविय एवमाहंसु असव्भावं, जंपि इहं किंचि जीवलोके दीसइ सुकयं वा दुकयं वा एयं जदिच्छाए वा सहावेण वावि दइवत्तप्पभावओ वावि भवति, नत्थेत्थ किंचि कयकं तत्तं लक्खणविहाण-नियतीए कारियं एवं केइ जंपंति इद्धिरससातगारवपरा बहवे करणालसा परूवेति धम्मवीमंसएण मोसं, अवरे अहम्मओ रायदुट्ठं अब्भक्खाणं भणंति-अलियं चोरोत्ति अचोरयं करंतं डामरिउत्तिवि य एमेव उदासीणं दुस्सीलोत्ति य परदारं गच्छत्ति मइलित्ति सीलकलियं अयंपि गुरुत्तप्पओ, अण्णे एमेव भणंति</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७  ॥ २८ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education   Journal For Personal &amp; Private Use Only   jainelibrary.org</p>

<b>आगम (१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत सूत्रांक [७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप अनुक्रम [११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>उवाहणंता मित्तकलत्ताइं सेवंति अयंपि लुत्तधम्मो इमोवि विसंभवाइओ पावकम्मकारी अगम्मगामी अयं दुरप्पा बहुएसु य पापगेसु जुत्तोत्ति एवं जंपंति मच्छरी, भइके वा गुणकित्तिनेहपरलोगनिप्पिवासा, एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पायणप्पसत्ता वेहेन्ति अक्खातियवीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण मुहरी असमिक्खियप्पलावा निक्खेवे अवहरंति परस्स अत्थंमि महियगिद्धा अभिजुंजंति य परं असंतएहिं लुद्धा य करंति कूडसक्खित्तणं असच्चा अत्थालियं च कन्नालियं च भोमालियं च तह गवालियं च गरुयं भणंति अहरगतिगमणं, अन्नंपि य जातिरुक्खकुलसीलपच्चयंमायाणिगुणं चवलपिसुणं परमट्टभेदकमसकं विहेसमणत्थकारकं पावकम्ममूलं दुदिट्ठं दुस्सुयं अमुणियं निहज्जं लोकगरहणिज्जं बहुबंधपरिकिलेसबहुलं जरामरणदुक्खसोयनिम्मं असुद्धपरिणामसंकिलिट्ठं भणंति अलिया हिंसंति संनिविट्ठा असंतगुणुदीरका य संतगुणनासका य हिंसाभूतोवघातितं अलियसंपउत्ता वयणं सावज्जमकुसलं साहुगरहणिज्जं अधम्मजणणं भणंति अणभिगयपुन्नपावा, पुणोवि अधिकरणकिरियापवत्तका बहुविहं अणत्थं अवमहं अप्पणो परस्स य करंति, एमेव जंपमाणा महिससूकरे य साहिति धायगाणं ससयपसयरोहिण्य साहिति वागुराणं तित्तिर-वट्टकलावके य कर्त्विजलकयोयके य साहिति साउणीणं झसमगरकच्छभे य साहिति मच्छियाणं संखंके खुल्लए य साहिति भगराणं अयगरगोणसमंडलिद्वीकरे मउली य साहिति वालवीणं गोहा सेहग सल्ल-गसरडके य साहिति लुद्धगाणं गयकुलवानरकुले य साहिति पासियाणं सुकवरहिणमयणसालकोइलहंस-</p> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ २९ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>कुले सारसे य साहिति पोसगाणं वधबंधजायणं च साहिति गोम्मियाणं धणधन्नगवेले य साहिति तक्र- राणं गामागरनगरपट्टणे य साहिति चारियाणं पारघाइयपंधप्रातियाओ साहिति य गंठिभेयाणं कयं च चो- रियं नगरगोत्तियाणं लंछणनिलंछणधमणदुहणपोसणवणणदवणवाहणादियाइं साहिति बहूणि गोमियाणं धा- तुमणिसिलप्पवालरयणागरे य साहिति आगरीणं पुप्फविहिं फलविहिं च साहिति मालियाणं अग्घमहुकोसए य साहिति वणचराणं जंताइं विसाइं मूलकम्मं आहेवणआविंधणआभिओगमंतोसहिप्पओगे चोरियपरदारग- मणवहुपावकम्मकरणं उक्खंधे गामघातियाओ वणदहणतलागभेयणाणि बुद्धिविसविणासणाणि वसीकरण- मादियाइं भयमरणकिलेसदोसजणणाणि भाववहुसंकिलिट्टमलिणाणि भूतघातोवघातियाइं सच्चाइंपि ताइं हिंसकाइं वयणाइं उदाहरंति पुट्टा वा अपुट्टा वा परतत्तियवावडा य असमिक्खियभासिणो उवदिसंति सहसा उट्टा गोणा गवया दंमंतु परिणयवया अस्सा हत्थी गवेलेगकुड्डा य किज्जंतु किणावेध य विकेह पयह य सयणस्स देह पियय दासिदासभयकभाइल्लका य सिस्सा य पेसकजणो कम्मकरा य किंकरा य एए स- यणपरिजणो य कीस अच्छंति भारिया भे करित्तु कम्मं गहणाइं वणाइं खेत्तखिलभूमिवल्लराइं उत्तणघणसंक- डाइं डज्जंतु सूडिज्जंतु य रुक्खा भिज्जंतु जंतभंडाइयस्स उवहिस्स कारणाए बहुविहस्स य अट्टाए उच्छू दु- ज्जंतु पीलिज्जंतु य तिला पयावेह य इट्टकाउ मम घरट्टयाए खेत्ताइं कसह कसावेह य लहुं गामआगरनगरखे- डकब्बडे निवेसेह अडवीदेसेसु विपुलसीमे पुप्फाणि य फलाणि य कंदमूलाइं कालपत्ताइं गेणहेह करेह सं-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७          ॥ २९ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम (१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b>
<b>प्रत सूत्रांक [७]  दीप अनुक्रम [११]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>चयं परिजणद्वयाए साली वीही जवा य लुच्चंतु मलिजंतु उप्पणिजंतु य लहुं च पविसंतु य कोट्टागारं अप्पमहरक्कोसगा य हंसंतु पोयसत्था सेणा णिजाउ जाउ डमरं घोरा वट्टंतु य संगामा पवहंतु य सगडवाहणाइं उवणयणं चोलगं विवाहो जन्नो अमुगम्मि उ होउ दिवसेसु करणेसु मुहुत्तेसु नक्खत्तेसु तिहिसु य अज्ज होउ ण्हवणं मुदितं बहुखज्जपिज्जकलियं कोतुकं विण्हायणकं संतिकम्माणि कुण्ह ससिरविगहोवरागविसमेसु सज्जणपरियणसस य नियकसस य जीवियसस परिरक्खणद्वयाए पडिसीसकाइं च देह दह य सीसोवहारे विविहोसहिमज्जमंसभक्खन्नपाणमल्लानुलेवणपईवजलिउज्जलसुगंधिधूवावकारपुष्कफलसमिद्धे पायच्छित्ते करेह पाणाइवायकरणेणं बहुविहेणं विवरीउप्पायदुस्सुमिणपावसउणअसोमग्गहचरियअमंगलनिमित्तपडिघायहेउं वित्तिच्छेयं करेह मा देह किंचि दाणं सुद्धु हओ सुद्धु हओ सुद्धु लित्तो भिन्नत्ति उवदिसंता एवविहं करेति अलियं मणेण वायाए कम्मणा य अकुसला अणजा अलियाणा अलियधम्मणिरया अलियासु कहासु अभिरमंता तुट्ठा अलियं करेत्तु होति य बहुप्पयारं ( सू० ७ )</p> <p>‘तं चे’त्यादि, तत्पुनर्वदन्त्यलीकं ‘केइ’त्ति केचित् न सर्वेऽपि सुसाधूनामलीकवचननिवृत्तत्वात्, किंविशिष्टाः?—पापाः—पापात्मानः असंयताः—असंयमवन्तोऽविरताः—अनिवृत्ताः तथा ‘कवडकुडिलकडुघचटुलभाव’त्ति कपटेन हेतुना कुटिलो—वक्रः कटुकश्च विपाकदारुणत्वात् चटुलश्च—विविधवस्तुषु क्षणे २ आकाङ्क्षादिप्रवृत्तेर्भावः—चित्तं येषां ते तथा ‘कुट्टा लुट्टा’ इति सुगमम् ‘भयाय’त्ति परेषां भयोत्पादनाय अथवा भ-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>			
<p>प्रत सूत्रांक [७]</p> <p>दीप अनुक्रम [११]</p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३० ॥</p> </td> <td style="width: 70%; padding: 5px;"> <p>याच्च 'ह्रस्वद्विधा य'त्ति हासार्थिकाश्च-हासार्थिनः पाठान्तरेण हासार्थाय 'सक्खि'त्ति साक्षिणः चौराश्चार- भटाश्च प्रतीताः 'खंडरक्ख'त्ति शुल्कपालाः 'जियजूइकारा य'त्ति जिताश्च ते श्रुतकाराश्चेति समासः 'गहि- यगहण'त्ति गृहीतानि ग्रहणानि-ग्रहणकानि यैस्ते तथा 'कक्कगुरुगकारग'त्ति कल्कगुरुकं-माया तत्कारकाः 'कुलिङ्गी'त्ति कुलिङ्गिनः कुतीर्थिकाः 'उवहिया वाणियगा य'त्ति औपधिकाः-मायाचारिणः वाणिजका-व- णिजः किम्भूताः-कूटतुलाकूटमानिनः कूटकार्षापणोपजीविन इति पदद्वयं व्यक्तं, नवरं कार्षापणो-द्रम्मः 'पडकारकलायकारुइज्ज'त्ति पटकारकाः-तन्तुवायाः कलादाः-सुवर्णकाराः कारुकेषु-वरुटच्छिपकादिषु भवा कारुकीयाः, किंविधा एते अलीकं वदन्तीत्याह-वञ्चनपराः, तथा चारिका-हैरिकाश्चाटुकराः-मुखमङ्गलकरा नगरगुप्तिकाः-कोटपालाः परिचारका-ये परिचारणां-मैथुनाभिष्वङ्गं कुर्वन्ति कामुका इत्यर्थः, दुष्टवादिनः- असत्पक्षग्राहिणः शूचकाः-पिशुनाः 'अणबलभणिया य'त्ति ऋणे ग्रहीतव्ये बलं यस्यासौ ऋणबलो बल- वानुत्तमर्णस्तेन भणिता-अस्मद्द्रव्यं देहीत्येवमभिहिता ये अधमर्णास्ते तथा ततश्चारिकादीनां द्वन्द्वः 'पुव्व- कालियवयणदच्छ'त्ति वक्तुकामस्य वचनाद्यत् पूर्वतरमभिधीयते पराभिप्रायं लक्षयित्वा तत्पूर्वकालिकं व- चनं तत्र वक्तव्ये ये दक्षास्ते तथा, अथवा पूर्वकालिकानामर्थानां वचने ये अदक्षा-निरतिशयनिरागमास्ते तथा सहसा-अवितर्क्य भाषणे ये वर्तन्ते ते साहसिकाः लघुस्वका-लघुकात्मानः असत्याः-सद्भ्योऽहिताः गौरविकाः-ऋद्ध्यादिगौरवत्रयेण चरन्ति ये असत्यानामर्थानां स्थापनां-प्रतिष्ठामधि चित्तं येषां ते असत्य-</p> </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p align="center">॥ ३० ॥</p> </td> </tr> </table> </div>	<p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३० ॥</p>	<p>याच्च 'ह्रस्वद्विधा य'त्ति हासार्थिकाश्च-हासार्थिनः पाठान्तरेण हासार्थाय 'सक्खि'त्ति साक्षिणः चौराश्चार- भटाश्च प्रतीताः 'खंडरक्ख'त्ति शुल्कपालाः 'जियजूइकारा य'त्ति जिताश्च ते श्रुतकाराश्चेति समासः 'गहि- यगहण'त्ति गृहीतानि ग्रहणानि-ग्रहणकानि यैस्ते तथा 'कक्कगुरुगकारग'त्ति कल्कगुरुकं-माया तत्कारकाः 'कुलिङ्गी'त्ति कुलिङ्गिनः कुतीर्थिकाः 'उवहिया वाणियगा य'त्ति औपधिकाः-मायाचारिणः वाणिजका-व- णिजः किम्भूताः-कूटतुलाकूटमानिनः कूटकार्षापणोपजीविन इति पदद्वयं व्यक्तं, नवरं कार्षापणो-द्रम्मः 'पडकारकलायकारुइज्ज'त्ति पटकारकाः-तन्तुवायाः कलादाः-सुवर्णकाराः कारुकेषु-वरुटच्छिपकादिषु भवा कारुकीयाः, किंविधा एते अलीकं वदन्तीत्याह-वञ्चनपराः, तथा चारिका-हैरिकाश्चाटुकराः-मुखमङ्गलकरा नगरगुप्तिकाः-कोटपालाः परिचारका-ये परिचारणां-मैथुनाभिष्वङ्गं कुर्वन्ति कामुका इत्यर्थः, दुष्टवादिनः- असत्पक्षग्राहिणः शूचकाः-पिशुनाः 'अणबलभणिया य'त्ति ऋणे ग्रहीतव्ये बलं यस्यासौ ऋणबलो बल- वानुत्तमर्णस्तेन भणिता-अस्मद्द्रव्यं देहीत्येवमभिहिता ये अधमर्णास्ते तथा ततश्चारिकादीनां द्वन्द्वः 'पुव्व- कालियवयणदच्छ'त्ति वक्तुकामस्य वचनाद्यत् पूर्वतरमभिधीयते पराभिप्रायं लक्षयित्वा तत्पूर्वकालिकं व- चनं तत्र वक्तव्ये ये दक्षास्ते तथा, अथवा पूर्वकालिकानामर्थानां वचने ये अदक्षा-निरतिशयनिरागमास्ते तथा सहसा-अवितर्क्य भाषणे ये वर्तन्ते ते साहसिकाः लघुस्वका-लघुकात्मानः असत्याः-सद्भ्योऽहिताः गौरविकाः-ऋद्ध्यादिगौरवत्रयेण चरन्ति ये असत्यानामर्थानां स्थापनां-प्रतिष्ठामधि चित्तं येषां ते असत्य-</p>	<p>१ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p align="center">॥ ३० ॥</p>
<p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३० ॥</p>	<p>याच्च 'ह्रस्वद्विधा य'त्ति हासार्थिकाश्च-हासार्थिनः पाठान्तरेण हासार्थाय 'सक्खि'त्ति साक्षिणः चौराश्चार- भटाश्च प्रतीताः 'खंडरक्ख'त्ति शुल्कपालाः 'जियजूइकारा य'त्ति जिताश्च ते श्रुतकाराश्चेति समासः 'गहि- यगहण'त्ति गृहीतानि ग्रहणानि-ग्रहणकानि यैस्ते तथा 'कक्कगुरुगकारग'त्ति कल्कगुरुकं-माया तत्कारकाः 'कुलिङ्गी'त्ति कुलिङ्गिनः कुतीर्थिकाः 'उवहिया वाणियगा य'त्ति औपधिकाः-मायाचारिणः वाणिजका-व- णिजः किम्भूताः-कूटतुलाकूटमानिनः कूटकार्षापणोपजीविन इति पदद्वयं व्यक्तं, नवरं कार्षापणो-द्रम्मः 'पडकारकलायकारुइज्ज'त्ति पटकारकाः-तन्तुवायाः कलादाः-सुवर्णकाराः कारुकेषु-वरुटच्छिपकादिषु भवा कारुकीयाः, किंविधा एते अलीकं वदन्तीत्याह-वञ्चनपराः, तथा चारिका-हैरिकाश्चाटुकराः-मुखमङ्गलकरा नगरगुप्तिकाः-कोटपालाः परिचारका-ये परिचारणां-मैथुनाभिष्वङ्गं कुर्वन्ति कामुका इत्यर्थः, दुष्टवादिनः- असत्पक्षग्राहिणः शूचकाः-पिशुनाः 'अणबलभणिया य'त्ति ऋणे ग्रहीतव्ये बलं यस्यासौ ऋणबलो बल- वानुत्तमर्णस्तेन भणिता-अस्मद्द्रव्यं देहीत्येवमभिहिता ये अधमर्णास्ते तथा ततश्चारिकादीनां द्वन्द्वः 'पुव्व- कालियवयणदच्छ'त्ति वक्तुकामस्य वचनाद्यत् पूर्वतरमभिधीयते पराभिप्रायं लक्षयित्वा तत्पूर्वकालिकं व- चनं तत्र वक्तव्ये ये दक्षास्ते तथा, अथवा पूर्वकालिकानामर्थानां वचने ये अदक्षा-निरतिशयनिरागमास्ते तथा सहसा-अवितर्क्य भाषणे ये वर्तन्ते ते साहसिकाः लघुस्वका-लघुकात्मानः असत्याः-सद्भ्योऽहिताः गौरविकाः-ऋद्ध्यादिगौरवत्रयेण चरन्ति ये असत्यानामर्थानां स्थापनां-प्रतिष्ठामधि चित्तं येषां ते असत्य-</p>	<p>१ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p align="center">॥ ३० ॥</p>		



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]

दीप  
अनुक्रम  
[११]

स्थापनाधिचित्ताः उच्चो-महानात्मोत्कर्षणप्रवणइच्छन्दाः-अभिप्रायो येषां ते उच्चच्छन्दाः अनिग्रहाः-स्वैराः  
अनियता-अनियमवन्तोऽनवस्थिता इत्यर्थः अनिजका वा-अविद्यमानस्वजनाः अलीकं वदन्तीति प्रकृतं,  
तथा छन्देन-स्वाभिप्रायेण मुक्तवाचः-प्रयुक्तवचना अथवा छन्देन मुक्तवादिनः-सिद्धवादिनस्ते भवन्ति, के  
इत्याह-अलीकाद् ये अविरताः । तथा अपरे-उक्तेभ्योऽन्ये नास्तिकवादिनो-लोकायतिकाः वामं-प्रतीपं लोकं  
वदन्ति ये सतां लोकवस्तूनामसत्त्वस्य प्रतिपादनात्ते वामलोकवादिनो भणन्ति-प्ररूपयन्ति, किं?, शून्यमिति,  
जगदिति गम्यते, कथं?, आत्माद्यभावात्, तदेवाह-नास्ति जीवस्तत्प्रसाधकप्रमाणाभावात्, स हि न प्रत्यक्ष-  
ग्राह्योऽतीन्द्रियत्वेन तस्याभ्युपगतत्वात्, नाप्यनुमानग्राह्यः प्रत्यक्षाप्रवृत्तावनुमानस्याप्रवृत्तेः, आगमानां च  
परस्परतो विरुद्धत्वेनाप्रमाणत्वादिति, असत्त्वादेवासौ न याति-न गच्छति 'इहे'ति मनुष्यापेक्षया मनुष्य-  
लोके परे वाऽस्मिन्-तदपेक्षयैव देवादिलोके न च किञ्चिदपि स्पृशति-बध्नाति पुण्यपापं-शुभाशुभं कर्म  
नास्ति फलं सुकृतदुष्कृतानां-पुण्यपापकर्मणां जीवासत्त्वेन तयोरप्यसत्त्वात्, तथा पञ्चमहाभौतिकं शरीरं  
भाषन्ते हे इति निपातो वाक्यालङ्कारे वातयोगयुक्तं-प्राणवायुना सर्वक्रियासु प्रवर्तितमित्यर्थः, तत्र पञ्च-  
महाभूतिकमिति-महान्ति च तानि लोकव्यापकत्वाद् भूतानि च-सद्भूतवस्तूनि महाभूतानि, तानि पृथिवी  
कठिनरूपा आपो द्रवलक्षणाः तेज उष्णरूपं वायुश्चलनलक्षणः आकाशं शुषिरलक्षणमिति, एतन्मयमेव श-  
रीरं नापरः शरीरवर्त्ती तन्निष्पादकोऽस्ति जीव इति विवक्षा, तथाहि-भूतान्येव सन्ति, प्रत्यक्षेण तेषामेव प्र-

प्र. न्या. ६

Jain Education Library

For Personal & Private Use Only

jainelibrary.org

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [७]</p> <p>दीप अनुक्रम [११]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३१ ॥</p> <p>तीयमानत्वात्, तदितरस्य तु सर्वथा अप्रतीयमानत्वाद्, यत्तु चैतन्यं भूतेषूपलभ्यते तद्भूतेषु एव कायाकारप- रिणतेष्वभिव्यज्यते मद्याङ्गेषु समुदितेषु मदशक्तिवत्, तथा न भूतेभ्योऽतिरिक्तं चैतन्यं कार्यत्वान्मृदो घट- वदिति, ततो भूतानामेव चैतन्याभिव्यक्तिर्जलस्य बुद्बुदाभिव्यक्तिवदिति, अलीकवादिता चैषामात्मनः सत्त्वात्, सत्त्वं च प्रमाणोपपत्तेः, प्रमाणं च सर्वजनप्रतीतं जातिस्मरणाद्यन्यथाऽनुपपत्तिलक्षणमनेकथा शा- स्त्रान्तरप्रसिद्धमिति, न च भूतधर्मश्चैतन्यं, तदभावेऽपि तस्य भावाद्विवक्षितभूताभावेऽपि प्रेताद्यवस्थायां सर्वचैतन्यसद्भावाच्चेति, ‘पंच य खंधे भणंति केई’ति पंच च स्कन्धान् रूपवेदनाविज्ञानसंज्ञासंस्काराख्यान् भणंति केचिदिति-बौद्धाः, तत्र रूपस्कन्धः-पृथिवीधात्वादयो रूपाद्यश्च वेदनास्कन्धः पुनः-सुखा दुःखा सुख- दुःखेति त्रिविधवेदनास्वभावः विज्ञानस्कन्धस्तु-रूपादिविज्ञानलक्षणः संज्ञास्कन्धश्च-संज्ञानिमित्तोद्ग्राहणा- त्मकः प्रत्ययः संस्कारस्कन्धः पुनः-पुण्यापुण्यादिधर्मसमुदाय इति, न चैतेभ्यो व्यतिरिक्तः कश्चिदात्मास्यः पदार्थोऽध्यक्षादिभिरवसीयत इति, तथा ‘मणं च मणजीविया वयंति’ति न केवलं पञ्चैव स्कन्धान् मनश्च- मनस्कारो-रूपादिविज्ञानलक्षणानामुपादानकारणभूतो यमाश्रित्य परलोकोऽभ्युपगम्यते बौद्धैः, मन एव जीवो येषां मतेन ते मनोजीवास्त एव मनोजीविकाः, अलीकवादिता चैषां सर्वथाऽननुगामिनि मनोमात्ररूपे जीवे कल्पितेऽपि परलोकासिद्धेः, तदसिद्धिश्चावस्थितस्यैकस्यात्मनोऽसत्त्वान्मनोमात्रात्मनः क्षणान्तरस्यैवोत्पाद- नात् अकृताभ्यागमादिदोषप्रसङ्गात्, कथञ्चिदनुगामिनि तु मनसि जीवत्वाभ्युपगमः सम्यक्पक्ष एवेति,</p> <p style="text-align: right;">१ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p style="text-align: right;">॥ ३१ ॥</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Digital Library.org</p>

<b>आगम (१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b>
<b>प्रत सूत्रांक [७]  दीप अनुक्रम [११]</b>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तथा 'वाउजीवोत्ति एवमाहंसु'त्ति वातः-उच्छ्वासादिलक्षणो जीव इत्याहुरेके, सदभावाभावयोर्जीवनमरण- व्यपदेशात् नान्यः परलोकयाव्यात्माऽस्तीति, अलीकवादिता चैषां वायोर्जडत्वेन चैतन्यरूपजीवत्वायोगात्, तथा शरीरं सादि उत्पन्नत्वात् सनिधनं क्षयदर्शनात् 'इह भवे एगे भवे'त्ति इह भव एव-प्रत्यक्षजन्मैव एको भवः-एकं जन्म नान्यः परलोकोऽस्ति प्रमाणाविषयत्वात् तस्य-शरीरस्य विविधैः प्रकारैः प्रकृष्टो नाशो विप्रणाशस्तस्मिन् सति सर्वनाश इति-नात्मा शुभाशुभरूपं वा कर्म विशिष्टमवशिष्यते इति, एतत् एवं- उक्तप्रकारं 'जंपति' जल्पन्ति, के?-सृषावादिनः, सृषावादिता चैषां जातिस्मरणादिना जीवपरलोकसिद्धेः, तथा किमन्यद्ब्रदन्तीत्याह-यस्मात् शरीरं सादिकमित्यादि तस्माद्दानव्रतपौषधानां-वितरणनियमपूर्वोपवा- सानां तथा तपः-अनशनादि संयमः-पृथिव्यादिरक्षा ब्रह्मचर्यं प्रतीतं एतान्येव कल्याणं कल्याणहेतुत्वा- त्तदादियेषां ज्ञानभ्रष्टादीनां तानि तथा तेषां नास्ति फलं-कर्मक्षयसुगतिभ्रमनादिकं, नापि चास्ति प्राणव- धालीकवचनमशुभफलसाधनतयेति गम्यं, न चैव-नैव च चौर्यकरणं परदारसेवनं चास्त्यशुभफलसाधनतयैव, सह परिग्रहेण यद्वर्त्तते तत्सपरिग्रहं तच्च तत्पापकर्मकरणं च-पातकक्रियासेवनं तदपि नास्ति किञ्चित्, क्रो- धमानाद्यासेवनरूपं नरकादिका च जगतो विचित्रता स्वभावादेव न कर्मजनिता, तदुक्तं—'कण्टकस्य प्रती- क्षणत्वं, मयूरस्य विचित्रता । वर्णाश्च ताम्रचूडानां, स्वभावेन भवन्ति ही ॥ १ ॥' ति, सृषावादिता चैवमेतेषां- स्वभावो हि जीवाद्यर्थान्तरभूतस्तदा प्राणातिपातादिजनितं कर्मैवासौ अथानर्थान्तरभूतस्ततो जीव एवासौ</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal Use Only <span style="float: right;">jainelibrary.org</span></p>



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]

दीप  
अनुक्रम  
[११]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ३२ ॥

तदव्यतिरेकात् तत्स्वरूपवत्, ततो निर्हेतुका नारकादिविचित्रता स्यात्, न च निर्हेतुकं किमपि भवत्यति-  
प्रसङ्गादिति, तथा न नैरधिकतिर्यग्मनुजानां योनिः-उत्पत्तिस्थानं पुण्यपापकर्मफलभूताऽस्तीति प्रकृतं, न  
देवलोको वाऽस्ति पुण्यकर्मफलभूतः, नैवास्ति सिद्धिगमनं, सिद्धेः सिद्धस्य चाभावात्, अम्बापितरावपि न  
स्तः, उत्पत्तिमात्रनिबन्धनत्वान्मातापितृत्वस्य, न चोत्पत्तिमात्रनिबन्धनस्य मातापितृतया विशेषो युक्तः,  
यतः कुतोऽपि किञ्चिदुत्पद्यत एव, यथा सचेतनात् सचेतनं यूकामत्कृणादि अचेतनं मूत्रपुरीषादि अचेत-  
नाच्च सचेतनं यथा काष्ठाद् घुणकीटादि अचेतनं चूर्णादि, तस्मात् जन्यजनकभावमात्रमर्थानामस्ति नान्यो  
मातापितृपुत्रादिर्विशेष इति, तद्भावात्तद्भोगविनाशापमानादिषु न दोष इति भावो, मृषावादिता चैषां  
वस्त्वन्तरस्यापि च जनकत्वे समानेऽपि तयोरत्यन्तहिततया विशेषवत्त्वेन सत्त्वात्, हितत्वं च तयोः प्रती-  
तमेव, आह च—“दुष्प्रतिकारा”विलादि, नाप्यस्ति पुरुषकारः, तं विनैव नियतितः सर्वप्रयोजनानां सिद्धेः,  
उच्यते च—“प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थः, सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा। भूतानां महति  
कृतेऽपि हि प्रयत्ने, नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः ॥ १ ॥” मृषावादिता चैवमेषां-सकललोकप्रती-  
तपुरुषकारापलापेन प्रमाणातीतनियतिमताभ्युपगमादिति, तथा प्रत्याख्यानमपि नास्ति धर्मसाधनतया, ध-  
र्मस्यैवाभावादिति, अस्य च सर्वज्ञवचनप्रामाण्येनास्तित्वात् तद्भावादिनामसत्यता, तथा नैवास्ति कालमृत्युः,  
तत्र कालो नास्ति अनुपलम्भात्, यच्च वनस्पतिकुसुमादि काललक्षणमाचक्षते तत्तेषामेव स्वरूपमिति मन्तव्यं,

१ अधर्म-  
द्वारे  
मृषावा-  
दिनः  
सू० ७

॥ ३२ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>असत्यतायामपि स्वरूपस्य वस्तुनोऽनतिरेकात् कुसुमादिकरणमकारणं तरुणां स्यात्, तथा मृत्युः-परलोक-प्रयाणलक्षणोऽसावपि नास्ति, जीवाभावेन परलोकगमनाभावात्, अथवा कालक्रमेण विवक्षितायुष्कर्मणः सामस्यनिर्जरावसरे मृत्युः, तदभावश्चायुष एवाभावात्, तथा अर्हदादयो ‘नत्थि’त्ति न सन्ति प्रमाणाविषयत्वात् ‘नेवत्थि केई रिसउ’त्ति नैव सन्ति केचिदपि ऋषयो-गौतमादिमुनयः प्रमाणाविषयत्वादेव, वर्त्तमानकाले वा ऋषित्वस्यापि सर्वविरत्याद्यनुष्ठानस्यासत्त्वात्, सतोऽपि वा निष्फलत्वादिति, अत्र च शिष्यादिप्रवाहानुभेयत्वादर्हदादिसत्त्वस्यानन्तरोक्तत्वाद् वादिनामसत्यता, ऋषित्वस्यापि सर्वज्ञवचनप्रामाण्येन सर्वदा भावादित्येवमाज्ञाग्राह्यार्थापलापिनां सर्वत्रासत्यवादिता भावनीयेति, तथा धर्माधर्मफलमपि नास्ति किञ्चिद्बहुकं वा स्तोकं वा, धर्माधर्मयोरदृष्टत्वेन नास्तित्वात्, ‘नत्थि फलं सुकण’त्यादि यदुक्तं प्राक्तत्सामान्यजीवापेक्षया यच्च ‘धम्माधम्मे’त्यादि तद् दृश्यापेक्षयेति न पुनरुक्ततेति, ‘तम्ह’त्ति यस्मादेवं तस्मादेवं-उक्तप्रकारं वस्तु विज्ञाय ‘जहा सुबहुइंदियाणुकूलेसु’त्ति यथा-यत्प्रकाराः सुबहु-अत्यर्थमिन्द्रियालुकूला ये ते तथा तेषु सर्वविषयेषु वर्त्तितव्यं, नास्ति काचित् क्रिया वा-अनिन्द्यक्रिया अक्रिया वा-पापक्रिया पापेतर-क्रिययोरास्तिककल्पितत्वेनापारमार्थिकत्वात्, भणंति च-“पिब खाद् च चारुलोचने!, यदतीतं वरगात्रि! तन्न ते । नहि भीरु! गतं निवर्त्तते, समुदयमात्रमिदं कलेवरम् ॥ १ ॥” ‘एव’मित्यादि निगमनं । तथा इदमपि द्वितीयं नास्तिकदर्शनापेक्षया कुदर्शनं-कुमतमसद्भाववादिनः प्रज्ञापयन्ति सूढा-व्यामोहवन्तः, कुदर्शनता</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [७]</p> <p>दीप अनुक्रम [११]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३३ ॥</p> <p>च वक्ष्यमाणस्यार्थस्याप्रमाणकत्वात् तद्वादिप्रोक्तप्रमाणस्य च प्रमाणाभासत्वाद् भावनीया, किम्भूतं दर्शनमि- त्याह-सम्भूतो-जातः अण्डकात्-जन्तुयोनिविशेषात् लोकः-क्षितिजलानलानिलवननरनरकनाकितिर्यग्- रूपः, तथा स्वयम्भुवा-ब्रह्मणा स्वयं च-आत्मना निर्मितो-विहितः, तत्राण्डकप्रसूतभुवनवादिनां मतमि- त्थमाचक्षते—“पुढ्वं आसि जगमिणं पंचमहभूयवज्जिय गभीरं । एगण्णवं जलेणं महप्पमाणं तहिं अंडं ॥१॥ वीईपरेण घोलंत अच्छिउं सुहरकालओ फुटं । फुटं दुभागजायं अब्भं भूमी य संवुत्तं ॥ २ ॥ तत्थ सुरासुर- नारगसमणुयसचउप्पयं जगं सव्वं । उप्पण्णं भणियमिणं वंभंडपुराणसत्थम्मि ॥ ३ ॥” तथा स्वयम्भुनि- र्मितजगद्वादिनो भणन्ति—“आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम् । अप्रतर्क्यमविज्ञेयं, प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेकार्णवीभूते, नष्टस्यावरजङ्गमे । नष्टामरनरे चैव, प्रनष्टोरगराक्षसे ॥ २ ॥ केवलं गहरीभूते, म- हाभूतविवर्जिते । अचिन्त्यात्मा विभुस्तत्र, शयानस्तप्यते तपः ॥ ३ ॥ तत्र तस्य शयानस्य, नाभेः पद्मं वि- निर्गतम् । तरुणरविमण्डलनिभं, हृद्यं काञ्चनकर्णिकम् ॥ ४ ॥ तस्मिन् पद्मे भगवान्, दण्डी यज्ञोपवीतसं- युक्तः । ब्रह्मा तत्रोत्पन्नस्तेन जगन्मातरः सृष्टाः ॥ ५ ॥ अदितिः सुरसङ्घानां दितिरसुराणां मनुर्मनुष्याणाम् । विनता विहङ्गमानां माता विश्वप्रकाराणाम् ॥ ६ ॥ कद्रुः सरीसृपाणां सुलसा माता च नागजातीनाम् । सुरभिश्चतुष्पदानामिला पुनः सर्वबीजाना ॥ ७ ॥” मिति, एवमुक्तक्रममेतदनन्तरोदितं वस्तु अलीकं भ्रा- न्तज्ञानादिभिः प्ररूपितत्वात्, तथा प्रजापतिना-लोकप्रभुणा ईश्वरेण च-महेश्वरेण कृतं-विहितमिति केचि-</p> <p>१ अधर्म- द्वारे सृषावा- दिनः सू० ७</p> <p>॥ ३३ ॥</p> </div> <p>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>द्वादिनो वदन्तीति प्रकृतं, भणंति चेश्वरवादिनः—बुद्धिमत्कारणपूर्वकं जगत् संस्थानविशेषयुक्तत्वाद् घटा- दिवदिति, कुदर्शनता चास्य बलमीकबुद्धदादिभिर्हेतोरनैकान्तिकत्वात्, कुलालादितुल्यस्य बुद्धिमत्कार- णस्य साधनेन चेष्टविघातकारित्वादिति, तथा एवं यथेश्वरकृतं तथा विष्णुमयं-विष्णुवात्मकं कृत्स्नमेव जग- दिति केचिद्वदन्तीति प्रकृतं, भणंति च एतन्मतावलम्बिनो—“जले विष्णुः स्यले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके । ज्वालामालाकुले विष्णुः, सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥ १ ॥ अहं च पृथिवी पार्थ !, वाय्वग्निजलमप्यहम् । वनस्प- तिगतश्चाहं, सर्वभूतगतोऽप्यहम् ॥ २ ॥” तथा “सो किल जलयसमुत्थेणुदण्णेगन्नवंमि लोगमि । वीतीपरंपरेणं घोलंतो उदयमज्जमि ॥ १ ॥ स किल-मार्कण्डर्षिः, “पेच्छइ सो तसथावरपणदसुरनरतिरिक्खजोणीयं । एगन्नवं जगमिणं महभूयविवज्जियं गुहिरं ॥ २ ॥ एवंविहे जगंमी पेच्छइ नग्गोहपायवं सहसा । मंदरगिरिं व तुङ्गं महासमुहं व विच्छिन्नं ॥ ३ ॥ खंधमि तस्स सयणं अच्छइ तहि बालओ मणभिरामो । [विष्णुरि- त्यर्थः] संविद्धो सुद्धहिअओ मिउकोमलकुंचियसुकेसो ॥ ४ ॥ हत्थो पसारिओ से महरिसिणो एह तत्थ भ- णिओ य । खंधं इमं विलग्गसु मा मरिहिसि उदयवुद्धीए ॥ ५ ॥ तेण य घेत्तुं हत्थे उ मीलिओ सो रिसी तओ तस्स । पेच्छइ उदरंमि जयं ससेलवणकाणणं सव्वं ॥ ६ ॥” ति, पुनः सृष्टिकाले विष्णुना सृष्टं, कुदर्श- नता चास्य प्रतीतिबाधितत्वात्, तथा एवं-वक्ष्यमाणेन न्यायेन एके-केचनात्माद्वैतवाद्यादयो वदन्ति सृष्टा- -अलीकं यदुत एक आत्मा, तदुक्तम्—“एक एव हि भूतात्मा, भूते २ व्यवस्थितः । एकधा बहुधा चैव,</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>

<b>आगम (१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b>
<b>प्रत सूत्रांक [७]</b>  <b>दीप अनुक्रम [११]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३४ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ १ ॥” तथा “पुरुष एवेदं त्रिं सर्वं यद्भूतं यच्च भान्य”मित्यादि, कुदर्शनता चास्य सक- ललोकविलोक्यमानभेदनिबन्धनव्यवहारोच्छेदप्रसङ्गात्, तथा अकारकः सुखदुःखहेतूनां पुण्यपापकर्मणाम- कर्त्तात्मेत्यन्ये वदन्ति, अमूर्त्तत्वमित्यत्राभ्यां कर्त्तृत्वानुपपत्तेरिति, कुदर्शनता चास्य संसार्यात्मनो मूर्त्तत्वेन परिणामित्वेन च कर्त्तृत्वोपपत्तेरकर्त्तृत्वे चाकृताभ्यागमप्रसङ्गात्, तथा वेदकश्च-प्रकृतिजनितस्य सुकृतस्य दु- ष्कृतस्य च प्रतिबिम्बोदयन्यायेन भोक्ता, अमूर्त्तत्वे हि कदाचिदपि वेदकता न युक्ता आकाशस्येवेति कुद- र्शनताऽस्य, तथा सुकृतस्य दुष्कृतस्य च कर्मणः करणानि-इन्द्रियाणि कारणानि-हेतवः सर्वथा-सर्वैः प्र- कारैः सर्वत्र च देशे काले च, न वस्त्वन्तरं कारणमिति भावः, करणान्येकादश, तत्र वाक्पाणिपादपायूपस्थ- लक्षणानि पञ्च कर्मेन्द्रियाणि स्पर्शनादीनि तु पञ्च बुद्धीन्द्रियाण्येकादशं च मन इति, एषां चाचेतनाव- स्थायामकारकत्वात् पुरुषस्यैव कारकत्वेन कुदर्शनत्वमस्य, तथा नित्यश्चासौ, यदाह—“नैनं छिन्दन्ति श- स्त्राणि, नैनं दहति पावकः । न चैनं क्लेदयन्त्यापो, नैनं वहति मारुतः ॥ १ ॥ अच्छेद्योऽयमभेद्योऽयममूर्त्तो- ऽयं सनातन” इति, असच्चैतत्, एकान्तनित्यत्वे हि सुखदुःखबन्धमोक्षाद्यभावप्रसङ्गात्, तथा निष्क्रियः- सर्वव्यापित्वेनावकाशाभावाद् गमनागमनादिक्रियावर्जितः, असच्चैतत् देहमात्रोपलभ्यमानतद्गुणत्वेन त- न्नियतत्वात्, तथा निर्गुणश्च सत्त्वरजस्तमोलक्षणगुणत्रयव्यतिरिक्तत्वात् प्रकृतेरेव ह्येते गुणा इति, यदाह— “अकर्त्ता निर्गुणो भोक्ता, आत्मा कपिलदर्शने” इति, असिद्धं चास्य सर्वथा निर्गुणत्वं चैतन्यं पुरुषस्य स्व-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ अधर्मे- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p style="text-align: center;">॥ ३४ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]

दीप  
अनुक्रम  
[११]

रूपमित्यभ्युपगमात्, तथा ‘अणुवलेवड’त्ति अनुपलेपकः कर्मबन्धनरहितः, आह च—“यस्मान्न बध्यते नापि मुच्यते नापि संसरति कश्चित्, संसरति बध्यते मुच्यते च नानाश्रया प्रकृति”रिति, असच्चैतत्, मुक्तामुक्ता-योरेवमविशेषप्रसङ्गात्, पाठान्तरं—‘अन्नो अलेवड’त्ति तत्र अन्यश्च-अपरो लेपतः कर्मबन्धनादिति, एतदप्यसत्, कथंचिदिति शब्दानुपादानात्, ‘इत्यपिच’ इति-उपप्रदर्शने अपिचेति अलीकवादान्तरसमुच्चयार्थः, तथा एवं-वक्ष्यमाणप्रकारेण ‘आहंसु’त्ति ब्रुवते स्म असद्भावं-असन्तमर्थं यदुत यदेव-सामान्यतः सर्वमित्यर्थः इह-अस्मिन् किञ्चिद्-अविवक्षितविशेषं जीवलोके-मर्त्यलोके दृश्यते सुकृतं वा आस्तिकमतेन सुकृतफलं सुखमित्यर्थः दुष्कृतं वा दुष्कृतफलं दुःखमित्यर्थः, एतत् ‘जइच्छाए व’त्ति यदृच्छया वा स्वभावेन चापि दैव-तप्रभावतो वापि-विधिसामर्थ्यतो वापि भवति, न पुरुषकारः कर्म वा हिताहितनिमित्तमिति भावः, तत्र अनभिसन्धिपूर्विकाऽर्थप्रसिद्धदृच्छा, पठ्यते च—“अतर्कितोपस्थितमेव सर्वं, चित्रं जनानां सुखदुःखजातम् । काकस्य तालेन यथाऽभिघातो, न बुद्धिपूर्वोऽत्र वृथाऽभिमानः ॥ १ ॥” तथा “सत्यं पिशाचाः स्म वने वसामो, भेरीं कराग्रैरपि न स्पृशामः । यदृच्छया सिद्ध्यति लोकयात्रा, भेरीं पिशाचाः परिताडयन्ति ॥ १ ॥” इति, स्वभावः पुनर्वस्तुतः स्वत एव तथापरिणतिभावः, उक्तं च—“कः कण्टकानां प्रकरोति तैक्ष्ण्यं, विचित्रभावं मृगपक्षिणां च । स्वभावतः सर्वमिदं प्रवृत्तं, न कामचारोऽस्ति कुतः प्रयत्नः? ॥१॥” इति, दैवं तु विधिरिति लौकिकी भाषा, तत्रोक्तं—“प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यः, किं कारणं? दैवमलङ्घनीयम् । तस्मान्न शोचामि



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]

दीप  
अनुक्रम  
[११]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ३५ ॥

न विस्मयामि, यदस्मदीयं नहि तत्परेषाम् ॥ १ ॥” तथा “द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिधेर्दिशो-  
ऽप्यन्तात् । आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतम् ॥ १ ॥” इति, असद्भूतता चात्र  
प्रत्येकमेषां जिनमतप्रतिकुष्टत्वात्, तथाहि—‘कालो सहाव नियई पुव्वकयं पुरिसकारणेगंता । मिच्छत्तं  
ते चेव उ समासओ होति सम्मत्तं ॥ १ ॥” इति, तथा नास्ति-न विद्यतेऽत्र किञ्चिच्छुभमशुभं वा  
कृतकं-पुरुषकारनिष्पन्नं कृतं च-कार्यं प्रयोजनमित्यर्थः, पाठान्तरेण ‘नत्थि किञ्चि कयं तत्तं’ तत्र तत्त्वं  
-वस्तुस्वरूपमिति, तथा लक्षणानि-वस्तुस्वरूपाणि विधाश्च-भेदा लक्षणविधास्तासां लक्षणविधानां  
नियतिश्च-स्वभावविशेषश्च कारिका-कर्त्री सा च पदार्थानामवश्यन्तया यद्यथाभवने प्रयोजयित्री भवितव्य-  
तेत्यर्थः, अन्ये त्वाहुः-यत् मुद्गादीनां राद्धिस्वभावत्वमितरद्वा स स्वभावः यच्च राद्धावपि नियतरसत्त्वं  
न शाल्यादिरसता सा नियतिरिति, तथा चोक्तम्—“न हि भवति यन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विनापि  
यत्नेन । करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति ॥ १ ॥” असत्यता चास्य पूर्ववद्वाच्या, ‘एव’-  
मित्युक्तप्रकारेण केचिन्नास्तिकादयो जल्पन्ति—‘ऋद्धिरससातगौरवपराः’ ऋद्ध्यादिषु गौरवं-आदरः तत्प्र-  
धाना इत्यर्थः, बहवः-प्रभूताः करणालसाः-चरणालसाश्चरणधर्मं प्रत्यनुद्यताः स्वस्य परेषां च चित्ताश्वा-  
सननिमित्तमिति भावः, तथा प्ररूपयन्ति धर्मधिमर्शकेण-धर्मविचारणेन ‘मोसं’ति मृषा पारमार्थिकधर्म-  
मपि स्वबुद्धिदुर्विलसितेनाधर्मं स्थापयन्ति, एतद्विपर्ययं चेति भावः, इह च संसारमोचकादयो निदर्शन-

१ अधर्म-  
द्वारे  
मृषावा-  
दिनः  
सू० ७

॥ ३५ ॥

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]

दीप  
अनुक्रम  
[११]

मिति, तथा अपरे केचन अधर्मतः-अधर्ममङ्गीकृत्य राजदुष्टं-नृपविरुद्धं अभिमरोऽयमित्यादिकं अभ्या-  
ख्यानं-परस्याभिमुखं दूषणवचनं भणन्ति-ब्रुवते अलीकं-असत्यं, अभ्याख्यानमेव दर्शयितुमाह-‘चोर’  
इति भणन्तीति प्रकृतं, कं प्रतीत्याह-अचौर्यं कुर्वन्तं, चौरतामकुर्वाणमित्यर्थः, तथा डामरिको-विग्रहका-  
रीति अपिचेति समुच्चये भणन्तीति प्रकृतमेवेति, एवमेव-चौरादिकं प्रयोजनं विनैव, कथम्भूतं पुरुषं प्रती-  
त्याह-उदासीनं-डामरादीनामकारणं तथा दुःशील इति च हेतोः परदारान् गच्छतीत्येवमभ्याख्यानेन मलि-  
नयन्ति-पांसयन्ति शीलकलितं-सुशीलतया परदारविरतं तथा अयमपि न केवलः स एव गुरुतल्पक इति-  
दुर्विनीतः, अन्ये-केचन मृषावादिन एव निष्प्रयोजनं भणन्ति उपपन्नतः-विध्वंसयन्तः तद्वृत्तिकीर्त्यादिकमिति  
गम्यते, तथा मित्रकलत्राणि सेवते-सुहृद्द्वारात् भजते, अयमपि न केवलमसौ लुप्तधर्मो-विगतधर्म इति  
‘इमोवित्ति’ अयमपि, विश्रम्भघातकः पापकर्मकारीति च व्यक्तं, अकर्मकारी-स्वभूमिकानुचितकर्मकारी  
अगम्यगामी-भगिन्याद्यभिगन्ता अयं दुरात्मा-दुष्टात्मा ‘बहुएसु य पावगेसु’त्ति बहुभिश्च पातकैर्युक्त इत्येवं  
जल्पन्ति मत्सरिण इति व्यक्तं, भद्रके वा-निर्दोषे तेषां वाऽलीकवादिनां विनयादिगुणयुक्ते पुरुषे वाश-  
ब्दाद्भद्रके वा एवं जल्पन्तीति प्रक्रमः, किम्भूतास्ते इत्याह-गुणः-उपकारः कीर्तिः-प्रसिद्धिः स्नेहः-प्रीतिः  
परलोको-जन्मान्तरं एतेषु निष्पिपासा-निराकाङ्क्षा ये ते तथा एवं-उक्तक्रमेण एतेऽलीकवचनदक्षाः परदो-  
षोत्पादनप्रसक्ताः वेष्टयन्तीति पदत्रयं व्यक्तं, अक्षितिकबीजेन-अक्षयेण दुःखहेतुनेत्यर्थः, आत्मानं स्वं कर्म-

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]

दीप  
अनुक्रम  
[११]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ३६ ॥

बन्धनेन प्रतीतेन मुखमेव अरिः-शत्रुरनर्थकारित्वाद्येषां ते मुखारयः असमीक्षितप्रलापिनः-अपर्यालोचिता-  
नर्थकवादिनः निक्षेपात्-न्यासकानपहरन्ति परस्य सम्बन्धिनि अर्थे-द्रव्ये ग्रथितगृद्धाः-अत्यन्तगृद्धिमन्तः,  
तथा अभियुञ्जते च-योजयन्ति च परमसद्भिर्दूषणैरिति गम्यं, तथा लुब्धाश्च कुर्वन्ति कूटसाक्षित्वमिति  
व्यक्तं, तथा असत्याः-जीवानामहितकारिणः अर्थालीकं च-द्रव्यार्थमसत्यं भणन्तीति योगः कन्यालीकं च-  
कुमारीविषयमसत्यं भूम्यलीकं प्रतीतं तथा गवालीकं च प्रतीतं गुरुकं-बादरं स्वस्य जिह्वाच्छेदाद्यनर्थकरं प-  
रेषां च गाढोपतापादिहेतुं भणन्ति-भाषन्ते, इह च कन्यादिभिः पदैः द्विपदापदचतुष्पदजातयः उपलक्षणार्-  
थत्वेन संगृहीता द्रष्टव्याः, कथंभूतं तदित्याह-अधरगतिगमनं-अधोगतिगमनकारणं अन्यदपि च-उक्तव्य-  
तिरिक्तं जातिरूपकुलशीलानि प्रत्ययः-कारणं यस्य तत्तथा तच्च मायया निगुणं च-निहतगुणं निपुणं च वा  
इति समासः, तत्र जातिकुले-मातापितृपक्षौ तद्धेतुकं च प्रायोऽलीकं सम्भवति, यतो जात्यादिदोषात् केचि-  
दलीकवादिनो भवन्ति, रूपं-आकृतिः शीलं-स्वभावस्तत्प्रत्ययं तु भवत्येव, प्रशंसानिन्दाविषयत्वेन वा जा-  
त्यादीनामलीकप्रत्ययता भावनीयेति, कथंभूतास्ते?-चपला मनश्चापल्यादिना, किंभूतं तत्?-पिशुनं-परदो-  
षाविष्करणरूपं परमार्थभेदकं-मोक्षप्रतिघातकं ‘असंतगं’ति असत्कमविद्यमानार्थमसत्यमित्यर्थः असत्त्वकं  
वा-सत्त्वहीनं वा विद्वेष्यं-अप्रियं अनर्थकारकं-पुरुषार्थोपघातकं पापकर्ममूलं-क्लिष्टज्ञानावरणादिवीजं दुष्टं-  
असम्यक् दृष्टं-दर्शनं यत्र तद्दृष्टं दुष्टं श्रुतं-श्रवणं यत्र तद्दुःश्रुतं नास्ति मुणितं-ज्ञानं यत्र तदमुणितं निर्लज्जं

१ अधर्म-  
द्वारे  
मृषावा-  
दिनः  
सू० ७

॥ ३६ ॥



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">-लज्जारहितं लोकगर्हणीयं प्रतीतिं, ‘वधबन्धपरिक्लेशबहुलं’ तत्र वधो-यष्ट्यादिताडनं बन्धः-संयमनं परिक्लेशः- उपतापस्ते बहुलाः-प्रचुरा यत्र तत्तथा, भवन्ति चैतेऽसत्यवादिनामिति, जरामरणदुःखशोकेनेमं जरादीनां मूलमित्यर्थः, अशुद्धपरिणामेन संश्लिष्टं-सङ्कलेशवद्यत्तथा, भणन्ति, के?-अलीको योऽभिसन्धिः-अभिप्रा- यस्तत्र निविष्टा अलीकाभिसन्धिनिविष्टाः असद्गुणोदीरकाश्चेति व्यक्तं सद्गुणनाशकाश्च-तदपलापका इ- त्यर्थः, तथा हिंसया भूतोपघातो यत्रास्ति तद्विसाभूतोपघातिकं वचनं भणन्तीति योगः, अलीकसम्प्रयुक्ताः- सम्प्रयुक्तालीकाः, कथम्भूतं वचनं?-सावयं-गर्हितकर्मयुक्तं अकुशलं जीवानामकुशलकारित्वात् अकुश- लनरप्रयुक्तत्वाद्वा, अत एव साधुगर्हणीयं अधर्मजननं भणन्तीति पदत्रयं प्रतीतिं, कथम्भूता इत्याह?-अन- धिगतपुण्यपापाः-अवेदितपुण्यपापकर्महेतव इत्यर्थः, तदधिगमे हि नालीकवादे प्रवृत्तिः सम्भवति, पुनश्च अज्ञानोत्तरकालं अधिकरणविषया या क्रिया-व्यापारस्तत्प्रवर्त्सकाः, तत्राधिकरणक्रिया द्विविधा-निर्वर्त्तना- धिकरणक्रिया संयोजनाधिकरणक्रिया च, तत्राद्या खड्गादीनां तन्मुष्ट्यादीनां च निर्वर्त्तनलक्षणा, द्वितीया तु तेषामेव सिद्धानां संयोजनलक्षणेति, अथवा दुर्गतौ यकाभिरधिक्रियन्ते प्राणिनः ताः सर्वा अधिकरण- क्रिया इति, बहुविधमनर्थहेतुत्वात् अपमर्द्दं-उपमर्द्दनं आत्मनः परस्य च कुर्वन्ति, एवमेव अबुद्धिकं जल्प- न्तो-भाषमाणाः, एतदेवाह-महिषान् शूकरांश्च प्रतीतान् साधयन्ति-प्रतिपादयन्ति घातकानां-तद्विस- कानां, शशप्रशयरोहितांश्च साधयन्ति वागुरिणां, शशादय आटव्याः चतुष्पदविशेषाः, वागुरा-मृगबन्धनं</p> </div> <p style="text-align: center;">प्र. न्या. ७</p> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[७]  
दीप  
अनुक्रम  
[११]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ३७ ॥

सा येषामस्ति ते वागुरिणः, तित्तरवर्त्तकलावकांश्च कपिञ्जलकपोतकांश्च-पक्षिविशेषान् साधयन्ति शकुनेन-  
श्येनादिना मृगयां कुर्वन्तीति शाकुनिकास्तेषां, साउणीणमिति प्राकृतत्वात्, झषमकरान् कच्छपांश्च-ज-  
लचरविशेषान् साधयन्ति, मत्स्याः पण्यं येषां ते मात्स्यिकास्तेषां, 'संखं' क'त्ति शङ्खाः प्रतीताः अङ्गाश्च-रुद्धिगम्याः  
अतस्तान् क्षुल्लकांश्च-कपर्दकान् साधयन्ति, मकरा इव मकरा जलविहारित्वाद्दीवरास्तेषां, पाठान्तरे मग्गिणां  
-मार्गयतां तद्गवेपिणां, अजगरगोनसमण्डलिद्वर्वाकरमुकुलिनश्च साधयन्ति, तत्र अजगरादय उरगविशेषाः  
द्वर्वाकराः-फणभृतः मुकुलिनः-तदितरे, व्यालान्-भुजङ्गान् पान्तीति व्यालपास्ते विद्यन्ते येषां ते व्यालपिनः  
तेषां, अथवा व्यालपानामत्र प्राकृतत्वेन-बालवीणंति प्रतिपादितं, वाचनान्तरे 'वायलियाणं'ति दृश्यते, तत्र  
व्यालैश्चरन्तीति वैयालिकास्तेषां वैयालिकानामिति, तथा गोधाः सेहाश्च शल्यकशरटकांश्च साधयन्ति लु-  
ब्धकानां, गोधादयो भुजपरिसर्पविशेषाः शरटकाः-कृकलाशाः, गजकुलवानरकुलानि च साधयन्ते पा-  
शिकानां, कुलं-कुटुंबं यूथमित्यर्थः, पाशेन-बन्धनविशेषेण चरन्तीति पाशिकास्तेषां, शुकाः-कीरा बर्हिणो-  
मयूराः मदनशालाः-शारिकाः कोकिलाः-परभृतः हंसाः-प्रतीतास्तेषां यानि कुलानि-वृन्दानि तानि तथा,  
सारसांश्च साधयन्ति पोषकाणां-पक्षिपोषकाणामित्यर्थः, तथा वधः-ताडनं बन्धः-संयमनं यातनं च-कद-  
र्थनमिति समाहारद्वन्द्वस्तच्च साधयन्ति गोल्मिकानां-गुप्तिपालकानां, तथा धनधान्यगवेलकांश्च साधयन्ति  
तस्कराणामिति प्रतीतं, किन्तु गावो-बलीवर्द्धसुरभयः एलका-उरभ्राः, तथा ग्रामनगरपत्तनानि साधयन्ति

२ अधर्म-  
द्वारे  
मृषावा-  
दिनः  
सू० ७

॥ ३७ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>चारिकाणां, नकरं-करवर्जितं, पत्तनं द्विविधं-जलपत्तनं स्थलपत्तनं च, यत्र जलपथेन भाण्डानामागमस्तदाद्यं यत्र च स्थलपथेन तदितरत्, चारिकाणां-प्रणिधिपुरुषाणां, तथा पारे-पर्यन्ते मार्गस्य घातिका-गन्तूणां ह-ननं पारघातिका ‘पंधघाह्य’त्ति पथि-मार्गे अर्द्धपथे इत्यर्थः घातिका-गन्तूणां हननं पथिघातिका अनयो-र्द्वन्द्वोऽतस्ते, साधयन्ति च ग्रन्थिभेदानां-चौरविशेषाणां कृतां च चौरिकां-चोरणं नगरगुप्तिकानां-नगररक्ष-काणां साधयन्तीति वर्त्तते, तथा लाञ्छनं-कर्णादिकल्पनाऽङ्कनादिभिर्निर्लाञ्छनं-वर्द्धितककरणं ‘धमणं’तिध्मानं महिष्यादीनां वायुपूरणं दोहनं-प्रतीतं पोषणं-यवसादिदानतः पुष्टिकरणं वञ्चनं-वत्सस्यान्यमातरि योजनं ‘दुमणं’ति दुवनमुपतापनमित्यर्थः वाहनं-शकटाद्याकर्षणं एतदादिकानि अनुष्ठानानि साधयन्ति बहूनि गोमिकानां-गोमतां, तथा धातुः-गैरिकं धातवो वा-लोहादयः मणयः-चन्द्रकान्ताद्याः शिला-दृषदः प्रवा-लानि-विट्टुमाणि रत्नानि-कर्कतनादीनि तेषामाकराः-खानयस्तान् साधयन्त्याकरिणां-आकरवतां, ‘पुष्पे’-त्यादि वाक्यं प्रतीतं, नवरं विधिः-प्रकारः, तथा अर्थश्च-मूल्यमानं मधुकोशकाश्च-क्षौद्रोत्पत्तिस्थानानि अर्थ-मधुकोशकास्तान् साधयन्ति वनचराणां-पुलीन्द्राणां, तथा यन्त्राणि-उच्चाटनाद्यर्थाक्षरलेखनप्रकारान् जल-सङ्ग्रामादियन्त्राणि वा उदाहरन्तीति योगः, विषाणि-स्थावरजङ्गमभेदानि हालाहलानि मूलकर्म-मूलादि-प्रयोगतो गर्भपातनादि ‘आहेवणं’त्ति आक्षेपं पुरक्षोभादिकरणं पाठान्तरेण ‘आहिव्वणं’ति आहित्यं अहि-तत्त्वं-शत्रुभावं पाठान्तरेण ‘अविधणं’त्ति आव्यधनं मन्त्रावेशनमित्यर्थः आभियोग्यं-वशीकरणादि तच्च</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [७]</p> <p>दीप अनुक्रम [११]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px 0;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३८ ॥</p> <p>द्रव्यतो द्रव्यसंयोगजनितं भावतो विद्यामन्त्रादिजनितं बलात्कारो वा मन्त्रौषधिप्रयोगान्नानाप्रयोजनेषु तद्- व्यापारणानीति द्वन्द्वोऽनस्तान्, तथा चौरिकायाः परदारगमनस्य बहुपापस्य च कर्मणो-व्यापारस्य यत्करणं तत्तथा, अवस्कन्दान्-छलेन परबलमर्दनानि ग्रामघातिकाः प्रतीताः वनदहनतडागभेदनानि च प्रतीतान्येव बुद्धेर्विषयस्य च यानि विनाशनानि तथा वशीकरणानि प्रतीतानि भयमरणक्लेशद्वेषजनकानि कर्तुरिति ग- म्यते, भावेन-अध्यवसायेन बहुसङ्किक्लष्टेन मलिनानि-कलुषाणि यानि तानि तथा, भूतानां-प्राणिनां घा- तश्च-हननं उपघातश्च-परम्पराघातः तौ विद्येते येषु तानि भूतघातोपघातकानि, सत्यान्यपि द्रव्यतस्तानीति यानि पूर्वमुपदर्शितानि हिंसकानि-हिंसाणि वचनान्युदाहरन्ति, तथा पृष्टा वा अपृष्टा वा प्रतीताः परतसि- व्यावृत्ताश्च-परकृत्यचिन्तनाक्षणिकाः असमीक्षितभाषिणः-अपर्यालोचितवक्तारः उपदिशन्ति-अनुशासति सहसा-अकस्मात् यदुत उष्ट्राः-करभाः गोणा-गावः गवया-आटव्याः पशुविशेषाः दम्पन्तां-विनीयन्तां, तथा परिणतवयसः-सम्पन्नावस्थाविशेषास्तरुणा इत्यर्थः अश्वा हस्तिनः प्रतीताः गवेलगकुक्कुटाश्च-उरभ्रता- प्रचूडाश्च क्रीयन्तां-मूल्येन गृह्यन्तां क्रापयत च एतान्येव ग्राहयत च विक्रीणिध्वं विक्रेतव्यं, तथा पचत च पचनीयं, खजनाय च दत्त पिवत च पातव्यं मदिरादि, वाचनान्तरेण खादत पिवत दत्त च, तथा दास्यः- चेटिका दासाः-चेटकाः भृतकाः-भक्तदानादिना पोषिताः ‘भाइल्लगंत्ति ये लाभस्य भागं-चतुर्भागादिकं लभन्ते, एतेषां द्वन्द्वस्ततस्ते च शिष्याश्च-विनेयाः प्रेष्यजनः-प्रयोजनेषु प्रेषणीयो लोकः कर्मकराः-नियतकाल-</p> <p>॥ ३८ ॥</p> </div> <p>Jain Education   Digital For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>मादेशकारिणः किङ्कराश्च-आदेशसमाप्तौ पुनः प्रश्नकारिणः एते पूर्वोक्ताः स्वजनपरिजनं च कस्मादासते- अवस्थानं कुर्वन्ति ‘भारिया भे करित्तु कम्म’ति कृत्वा-विधाय कम्म-कृत्यं तत्समाप्तौ यतो भारिका-दुर्नि- र्वाहः ‘भे’ भवतां, ‘करित्ति’ति क्वचित्पाठः तत्र ‘भारिय’त्ति भार्या ‘भे’ भवतः सम्बन्धिन्यः कम्म कुर्वन्तु, अन्यान्यपि पाठान्तराणि सन्ति तानि च स्वयं गमनीयानि, तथा गहनानि-गहराणि वनानि च-वनखण्डाः क्षेत्राणि च-धान्यवपनभूमयः खिलभूमयश्च-हलैरकृष्टाः बल्लराणि च-क्षेत्रविशेषास्ततस्तानि उत्तृणैः-ऊर्द्ध- गतैः तृणैः घनं-अत्यर्थं सङ्कटानि-सङ्कीर्णानि यानि तानि तथा तानि दह्यन्तां, पाठान्तरेण गहनानि वनानि छिद्यन्तामखिलभूमिवल्लराणि उत्तृणघनसङ्कटानि दह्यन्तां, ‘सूडिज्जंतु यंत्ति सूद्यन्तां च वृक्षाः भिद्यन्तां छि- द्यन्तां वा यन्त्राणि च-तिलयन्त्रादिकानि भाण्डानि च-भाजनानि कुण्डादीनि भण्डी वा-गञ्जी एतान्या- दिर्यस्य तत्तथा तस्य उपधेः-उपकरणस्य ‘कारणाए’त्ति कारणाय हेतवे, वाचनान्तरे तु यत्र भाण्डस्योक्त- रूपस्य कारणात्-हेतोः, तथा बहुविधस्य च कार्यसमूहस्येति गम्यं, अर्थाय इक्षवो ‘दुज्जंतु’त्ति दूयन्तां लूय- न्तामिति धातूनामनेकार्थत्वात्, तथा पीड्यन्तां च तिलाः पाचयत चेष्टकाः गृहार्थं, तथा क्षेत्राणि कृषत कर्षयत वा, तथा लघु-शीघ्रं ग्रामादीनि निवेशयत, तत्र ग्रामो जनपदप्रायजनाश्रितः नगरं-अविद्यमानक- रदानं कर्षटं-कुनगरं, क?-अटवीदेशेषु, किंभूतानि ग्रामादीनि?-विपुलसीमानि, तथा पुष्पादीनि प्रतीतानि ‘कालपत्ताइं’ति अवसरप्राप्तानि गृहीत कुरुत सञ्चयं परिजनार्थं, तथा शाल्यादयः प्रतीताः लूयन्तां मलयन्तां</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>			
<p>प्रत सूत्रांक [७]</p> <p>दीप अनुक्रम [११]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३९ ॥</p> </td> <td style="width: 70%; padding: 5px;"> <p>उत्पूयन्तां च लघु च प्रविशन्तु कोष्ठागारं ‘अप्पमहुक्कोसगाइं’ति अल्पा-लघवो महान्तः-तदपेक्षया मध्यमा इत्यर्थः उत्कृष्टा-उत्तमाश्च हन्यन्तां पोतसार्थाः-बोहित्थसमुदायाः शावकसमूहा वा, तथा सेना-सैन्यं निर्यातु-निर्गच्छतु निर्गम्य च यातु-गच्छतु डमरं-विद्वरस्थानं तथा च घोरा-रौद्राश्च वर्त्तन्तां च-जायन्तां सङ्ग्रामा-रणाः तथा प्रवहन्तु च-प्रवर्त्ततां शकटवाहनानि-गन्धयो यानपात्राणि च, तथा उपनयनं-बालानां कलाग्रहणं ‘चोलगं’ति चूडापनयनं बालकप्रथममुण्डनं विवाहं-पाणिग्रहणं यज्ञो-यागः अमुष्मिन् भवतु दिवसे तथा सुकरणं-बवादिकानामेकादशानामन्यतरदभिमतं सुमुहूर्त्तं-रौद्रादीनां त्रिंशतोऽन्यतरोऽभिमतो यः एतयोः समाहारद्वन्द्वस्ततस्तत्र, तथा सुनक्षत्रे-पुष्यादौ सुतिथौ च-पञ्चानां नन्दादीनामन्यतरस्यामभिमतायां अद्य-अस्मिन्नहनि भवतु स्नपनं-सौभाग्यपुत्रायर्थं वध्वादेर्मज्जनं मुदितं-प्रमोदवत् बहुखाद्यपेयकलितं-प्रभू-तमांसमद्याशुपेतं तथा कौतुकं-रक्षादिकं ‘विण्हावणकं’ति विविधैर्मन्त्रमूलादिभिः संस्कृतजलैः स्नापनकं विलापनकं शान्तिकर्म च-अग्निकारिकादिकमिति द्वन्द्वः, ततस्ते कुरुत, केष्वित्याह-शशिरव्योः-चन्द्रसूर्य-योर्ग्रहेण-राहुलक्षणेन उपरागः-उपरञ्जनं ग्रहणमित्यर्थः शशिरविग्रहोपरागः, स च विषमाणि च-विधुराणि दुःखप्राशिवादीनि तेषु, किमर्थमित्याह-स्वजनस्य परिजनस्य च निजकस्य जीवितस्य च परिरक्षणार्थायेति व्यक्तं प्रतिशीर्षकाणि च-दत्तस्वशिरःप्रतिरूपाणि पिष्टादिमयशिरांसि आत्मशिरोरक्षार्थं यच्छत चण्डिका-दिभ्य इत्यर्थः, तथा दत्त च शीर्षोपहारान्-पश्वादिशिरोबलीन् देवतानामिति गम्यते, विविधौषधिमद्यमां-</p> </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>२ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p>॥ ३९ ॥</p> </td> </tr> </table> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>	<p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३९ ॥</p>	<p>उत्पूयन्तां च लघु च प्रविशन्तु कोष्ठागारं ‘अप्पमहुक्कोसगाइं’ति अल्पा-लघवो महान्तः-तदपेक्षया मध्यमा इत्यर्थः उत्कृष्टा-उत्तमाश्च हन्यन्तां पोतसार्थाः-बोहित्थसमुदायाः शावकसमूहा वा, तथा सेना-सैन्यं निर्यातु-निर्गच्छतु निर्गम्य च यातु-गच्छतु डमरं-विद्वरस्थानं तथा च घोरा-रौद्राश्च वर्त्तन्तां च-जायन्तां सङ्ग्रामा-रणाः तथा प्रवहन्तु च-प्रवर्त्ततां शकटवाहनानि-गन्धयो यानपात्राणि च, तथा उपनयनं-बालानां कलाग्रहणं ‘चोलगं’ति चूडापनयनं बालकप्रथममुण्डनं विवाहं-पाणिग्रहणं यज्ञो-यागः अमुष्मिन् भवतु दिवसे तथा सुकरणं-बवादिकानामेकादशानामन्यतरदभिमतं सुमुहूर्त्तं-रौद्रादीनां त्रिंशतोऽन्यतरोऽभिमतो यः एतयोः समाहारद्वन्द्वस्ततस्तत्र, तथा सुनक्षत्रे-पुष्यादौ सुतिथौ च-पञ्चानां नन्दादीनामन्यतरस्यामभिमतायां अद्य-अस्मिन्नहनि भवतु स्नपनं-सौभाग्यपुत्रायर्थं वध्वादेर्मज्जनं मुदितं-प्रमोदवत् बहुखाद्यपेयकलितं-प्रभू-तमांसमद्याशुपेतं तथा कौतुकं-रक्षादिकं ‘विण्हावणकं’ति विविधैर्मन्त्रमूलादिभिः संस्कृतजलैः स्नापनकं विलापनकं शान्तिकर्म च-अग्निकारिकादिकमिति द्वन्द्वः, ततस्ते कुरुत, केष्वित्याह-शशिरव्योः-चन्द्रसूर्य-योर्ग्रहेण-राहुलक्षणेन उपरागः-उपरञ्जनं ग्रहणमित्यर्थः शशिरविग्रहोपरागः, स च विषमाणि च-विधुराणि दुःखप्राशिवादीनि तेषु, किमर्थमित्याह-स्वजनस्य परिजनस्य च निजकस्य जीवितस्य च परिरक्षणार्थायेति व्यक्तं प्रतिशीर्षकाणि च-दत्तस्वशिरःप्रतिरूपाणि पिष्टादिमयशिरांसि आत्मशिरोरक्षार्थं यच्छत चण्डिका-दिभ्य इत्यर्थः, तथा दत्त च शीर्षोपहारान्-पश्वादिशिरोबलीन् देवतानामिति गम्यते, विविधौषधिमद्यमां-</p>	<p>२ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p>॥ ३९ ॥</p>
<p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ३९ ॥</p>	<p>उत्पूयन्तां च लघु च प्रविशन्तु कोष्ठागारं ‘अप्पमहुक्कोसगाइं’ति अल्पा-लघवो महान्तः-तदपेक्षया मध्यमा इत्यर्थः उत्कृष्टा-उत्तमाश्च हन्यन्तां पोतसार्थाः-बोहित्थसमुदायाः शावकसमूहा वा, तथा सेना-सैन्यं निर्यातु-निर्गच्छतु निर्गम्य च यातु-गच्छतु डमरं-विद्वरस्थानं तथा च घोरा-रौद्राश्च वर्त्तन्तां च-जायन्तां सङ्ग्रामा-रणाः तथा प्रवहन्तु च-प्रवर्त्ततां शकटवाहनानि-गन्धयो यानपात्राणि च, तथा उपनयनं-बालानां कलाग्रहणं ‘चोलगं’ति चूडापनयनं बालकप्रथममुण्डनं विवाहं-पाणिग्रहणं यज्ञो-यागः अमुष्मिन् भवतु दिवसे तथा सुकरणं-बवादिकानामेकादशानामन्यतरदभिमतं सुमुहूर्त्तं-रौद्रादीनां त्रिंशतोऽन्यतरोऽभिमतो यः एतयोः समाहारद्वन्द्वस्ततस्तत्र, तथा सुनक्षत्रे-पुष्यादौ सुतिथौ च-पञ्चानां नन्दादीनामन्यतरस्यामभिमतायां अद्य-अस्मिन्नहनि भवतु स्नपनं-सौभाग्यपुत्रायर्थं वध्वादेर्मज्जनं मुदितं-प्रमोदवत् बहुखाद्यपेयकलितं-प्रभू-तमांसमद्याशुपेतं तथा कौतुकं-रक्षादिकं ‘विण्हावणकं’ति विविधैर्मन्त्रमूलादिभिः संस्कृतजलैः स्नापनकं विलापनकं शान्तिकर्म च-अग्निकारिकादिकमिति द्वन्द्वः, ततस्ते कुरुत, केष्वित्याह-शशिरव्योः-चन्द्रसूर्य-योर्ग्रहेण-राहुलक्षणेन उपरागः-उपरञ्जनं ग्रहणमित्यर्थः शशिरविग्रहोपरागः, स च विषमाणि च-विधुराणि दुःखप्राशिवादीनि तेषु, किमर्थमित्याह-स्वजनस्य परिजनस्य च निजकस्य जीवितस्य च परिरक्षणार्थायेति व्यक्तं प्रतिशीर्षकाणि च-दत्तस्वशिरःप्रतिरूपाणि पिष्टादिमयशिरांसि आत्मशिरोरक्षार्थं यच्छत चण्डिका-दिभ्य इत्यर्थः, तथा दत्त च शीर्षोपहारान्-पश्वादिशिरोबलीन् देवतानामिति गम्यते, विविधौषधिमद्यमां-</p>	<p>२ अधर्म- द्वारे मृषावा- दिनः सू० ७</p> <p>॥ ३९ ॥</p>		



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [७]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[७]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[११]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>सभक्ष्यान्नपानमाल्यानुलेपनानि च प्रदीपाश्च ज्वलितोज्ज्वलाः सुगन्धिधूपस्यापकारश्च-अपकरणं-अङ्गारोप- रि क्षेपः पुष्पफलानि च तैः समृद्धाः-सम्पूर्णा ये शीर्षोपहारस्ते तथा तान्, दत्त चेति प्रकृतं, तथा प्रायश्चि- त्तानि-प्रतिविधानानि कुरुत, केन?-प्राणातिपातकरणेन-हिंसया बहुविधेन-नानाविधेन, किमर्थमित्याह- विपरीतोत्पाताः-अशुभसूचकाः प्रकृतिविकाराः दुःस्वप्नाः पापशकुनाश्च प्रतीताः असौम्यग्रहचरितं च-क्रूर- ग्रहचारः अमङ्गलानि च यानि निमित्तानि-अङ्गस्फुरितादीनि एतेषां द्वन्द्वस्तत एतेषां प्रतिघातहेतोः-उपह- ननिमित्तमिति, तथा वृत्तिच्छेदं कुरुत मा दत्त किञ्चिद्दानमिति, तथा सुष्ठु हत २, इह तु सम्भ्रमे द्वित्वं, सुष्ठु छिन्नो भिन्नश्च विवक्षितः कश्चिदिति एवमुपदिशन्तः एवंविधं नानाप्रकारं पाठान्तरे वा त्रिविधं-त्रिप्र- कारं कुर्वन्त्यलीकं द्रव्यतोऽनलीकमपि सर्वोपघातहेतुत्वाद् भावतोऽलीकमेव, त्रैविध्यमेवाह-मनसा वाचा 'कम्मुणा य'त्ति कायक्रियया, तदेतावता यथा क्रियतेऽलीकं येऽपि तत्कुर्वन्ति एतद्द्वारद्वयं मिश्रं परस्परेणोक्तं, अथ ये ते कुर्वन्ति तान् भेदेनाह-अकुशलाः-वक्तव्यावक्तव्यविभागानिपुणा अनार्याः-पापकर्मणो दूरम- याताः 'अलियाण'त्ति अलीका आज्ञा-आगमो येषां ते तथा, अत एव अलीकधर्मनिरताः, अलीकासु क- थास्वभिरममाणाः, तथा तुष्टा 'अलियं करेत्तु ह्येति य बहुप्पगार'मित्यत्र तुष्टा भवन्ति चालीकं बहुप्रकारं कृत्वा-उक्त्वेत्येवमक्षरघटना कार्येति । तथा अलीकविपाकप्रतिपादनायाह—</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम (१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [८]</b>
<b>प्रत सूत्रांक [८]</b>  <b>दीप अनुक्रम [१२]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="324 383 526 1125" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ४० ॥</p> </div> <div data-bbox="537 383 1792 1125" style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>तस्स य अलियस्स फलविवागं अयाणमाणा वड्ढेति महव्भयं अविस्सामवेयणं दीहकालं बहुदुक्खसंकडं नरयतिरियजोणिं तेण य अलिएण समणुवद्धा आइद्धा पुणव्भवंधकारे भमंति भीमे दुग्गतिवसहिमुवगया, ते य दीसंतिह दुग्गया दुरंता परवस्सा अत्थभोगपरिवज्जिया असुहिता फुडियच्छवित्रीभच्छविवन्ना खर-फरुसविरत्तज्झामज्झुसिरा निच्छाया लल्लविफलवाया असकतमसकया अगंधा अचेयणा दुभगा अकंता काकस्सरा हीणभिन्नघोसा विहिंसा जडबहिरन्धया य मम्मणा अकंतविकयकरणा णीया णीयजणनिसेविणो लोगगरहणिज्जा भिच्चा असरिसजणस्स पेस्सा दुम्मेहा लोकवेदअज्झप्पसमयसुतिवज्जिया नरा धम्मबुद्धि-वियला अलिएण य तेणं पडज्झमाणा असंतएण य अवमाणणपट्टिमंसाहिक्खेवपिसुणभेयणगुरुवंधवसय-णमित्तवक्खारणादियाइं अब्भक्खाणाइं बहुविहाइं पावेंति अमणोरमाइं हिययमणदूमकाइं जावजीवं दुरु-द्धराइं अणिट्ठखरफरुसवयणतज्जणनिव्वच्छणदीणवदणविमणा कुभोयणा कुवाससा कुवसहीसु किलिस्संता नेव सुहं नेव निव्वुइं उवलभंति अच्चंतविपुलदुक्खसयसंपलित्ता । एसो सो अलियवयणस्स फलविवाओ इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महव्भओ वहरयप्पगाढो दारुणो ककसो असाओ वाससह-स्सेहिं मुच्चइ, न अय अवेदयित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति, एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरव-रनामधेज्जो कहेसी य अलियवयणस्स फलविवागं एयं तं बितीयंपि अलियवयणं लहुसगलहुचवलभणियं भयंकरं दुहकरं अयसकरं वेरकरं अरतिरतिरागदोसमणसंकिलेसविरयणं अलियणियडिसादिजोगबहुलं नी-</p> </div> <div data-bbox="1803 383 2004 1125" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p style="text-align: center;">२ अधर्म- द्वारे मृषावा- दविपाकः सू० ८</p> <p style="text-align: center;">॥ ४० ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<b>आगम (१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [८]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत सूत्रांक [८]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप अनुक्रम [१२]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>यजणनिसेवियं निस्संसं अप्पच्चयकारकं परमसाहुगरहणिज्जं परपीलाकारकं परमकण्हलेससहियं दुग्गतिवि- निवायवड्डुणं पुणवभवकरं चिरपरिचियमणुगयं दुरुत्तं वितियं अधम्मदारं समत्तं ॥ २ ॥ ( सू० ८ )</p> <p>‘तस्से’त्यादि ‘तस्स’त्ति यद् द्वितीयाश्रवत्वेनोच्यते तस्य अलीकस्य फलस्य-कर्मणो विपाकः-उदयः सा- ध्यमित्यर्थः, तमजानन्तो वर्द्धयन्ति महाभयां-अविश्रामवेदनां दीर्घकालं बहुदुःखसङ्घटां नरकतिर्यग्गोनिं तत्रोत्पादनमित्यर्थः, तेन चालीकेन तज्जनितकर्मणेत्यर्थः समनुबद्धाः-अविरहिताः आदिग्धास्तु-आलिङ्गिताः पुनर्भवान्धकारे भ्राम्यन्ति भीमे दुर्गतिवसतिमुपागताः, ते च दृश्यन्ते इह-जीवलोके, किंभूता इत्याह-दु- र्गताः-दुःस्था दुरन्ताः-दुष्पर्यवसानाः परवशाः-अखतन्त्राः अर्थभोगपरिवर्जिताः-द्रव्येण भोगैश्च रहिताः ‘असुहियंत्ति असुखिताः अविद्यमानसुहृदो वा स्फुटितच्छवयः-विपादिकाविचर्चिकादिभिर्विकृतत्वचः बी- भत्सा-विकृतरूपा विवर्णा-विरूपवर्णा इति पदत्रयस्य कर्मधारयः तथा खरपरुषा-अतिकर्कशस्पर्शाः वि- रक्ताः-रतिं कचिदप्यप्राप्ताः ध्यामाः-अनुज्ज्वलच्छायाः शुषिराः-असारकाया इति पदचतुष्टयस्य कर्मधा- रयः, निष्ठायाः-विशोभाः लज्जा-अव्यक्ता विफला-फलासाधनी वाग् येषां ते तथा ‘असक्कयमसक्कयं’त्ति न विद्यते संस्कृतं-संस्कारो येषां ते असंस्कृताः असत्कृताः-अविद्यमानसत्कारास्ततः कर्मधारयो मकार- श्चालाक्षणिकः अत्यन्तं वा असंस्कृतासंस्कृताः अत एवागन्धाः-अमनोज्ञगन्धाः अचेतना विशिष्टचैतन्याभा- वात् दुर्भगाः-अनिष्टाः अकान्ताः-अकमनीयाः काकस्येव खरो येषां ते काकखरा हीनो-ह्रस्वो भिन्नश्च-स्फुटितो</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [८]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [८]</p> <p>दीप अनुक्रम [१२]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याकरण० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ४१ ॥</p> <p>घोषो येषां ते तथा विहिंस्यन्त इति विहिंसाः जडा-मूर्खाः बधिरान्धकाश्च ये ते तथा पाठान्तरेण जडबधिरमूकाश्च मन्मनाः-अव्यक्तवाचः अकान्तानि-अकमनीयानि विकृतानि च करणानि-इन्द्रियाणि कृत्यानि वा येषां ते तथा, वाचनान्तरेऽकृतानि च-न कृतानि विरूपतया कृतानि करणानि वैस्ते तथा, नीचा जाल्यादिभिः नीचजननिषेविणो लोकगर्हणीया इति पदद्वयं व्यक्तं, भृत्याः-भर्त्सव्या एव, तथा असदृशजनस्य-असमानशीललोकस्य द्वेष्या-द्वेषस्थानं प्रेष्या वा-आदेश्याः दुर्मेधसो-दुर्बुद्धयः, ‘लोके’त्यादि श्रुतिशब्दस्य प्रत्येकं सम्बन्धात् लोकश्रुतिः-लोकाभिमतं शास्त्रं भारतादि वेदश्रुतिः-ऋक्सामादिवेदशास्त्रं अध्यात्मश्रुतिः-चित्तजयोपायप्रतिपादनशास्त्रं समयश्रुतिः-आर्हतबौद्धादिसिद्धान्तशास्त्रं ताभिर्वर्जिता ये ते तथा, क एते एवम्भूता इत्याह-नरा-मानवाः, धर्मबुद्धिविकलाः प्रतीतं, अलीकेन च-अलीकवादजनितकर्माग्निना तेन-कालान्तरकृतेन प्रदह्यमानाः ‘असंतर्णं’ति अशान्तकेन-अनुपशान्तेन असता वा-अशोभनेन रागादिप्रवर्त्ति-तेनेत्यर्थः अपमानादि प्राप्नुवन्तीति सम्बन्धः, तत्रापमाननं च-मानहरणं पृष्टिमांसं च-परोक्षस्य दूषणाविष्करणं अधिक्षेपश्च-निन्दाविशेषः पिशुनैः-खलैर्भेदनं च-परस्परं प्रेमसम्बद्धयोः प्रेमच्छेदनं गुरुबान्धवस्वजन-मित्राणां सत्कमपक्षारणं च-अपशब्दं क्षारायमाणं वचनं पराभिभूतस्य वा एषामपक्षकरणं-सान्निध्याकरण-मित्यर्थः एतानि आदिर्येषां तानि तदादिकानि, तथा अध्याख्यानानि-असदूषणाभिधानानि बहुविधानानि प्राप्नुवन्ति-लभन्ते इत्यनुपमानि पाठान्तरेण अमनोरमाणि हृदयस्य-उरसो मनसश्च-चेतसो ‘दूमगाइं’ति</p> <p align="right">॥ ४१ ॥</p> </div> <p>२ अधर्म- द्वारे मृषावा- दविपाकः सू० ८</p> <p align="right">॥ ४१ ॥</p>
	<p align="center">~ 85 ~</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [८]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[८]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१२]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>दावकान्युपतापकानि यानि तानि तथा, यावज्जीवं दुरुद्धराणि-आजन्माप्यनुद्धरणीयानि अनिष्टेन खरपरु-  षेण च-अतिकठोरेण वचनेन यत्तर्जनं-रे दास! पुरुषेण भवितव्यमित्यादि निर्भर्त्सनं-अरे! दुष्टकर्मकारि-  न्नपसर दृष्टिमागादित्यादिरूपं ताभ्यां दीनवदनं 'विमण'सि विगतं च मनो येषां ते तथा, कुभोजनाः कुवा-  ससः कुवसतिषु क्लिश्यन्तो नैव सुखं शारीरं नैव निर्घृतिं-मनःस्वास्थ्यं उपलभन्ते-प्राप्नुवन्ति अत्यन्तविपु-  लदुःखशतसम्प्रदीप्ताः । तदियताऽलीकस्य फलमुक्तं, 'एसो' इत्यादिना त्वधिकृतद्वारनिगमनं इति, व्याख्या  त्वस्य प्रथमाध्ययनपञ्चमद्वारनिगमनवत्, 'एयं तं बितियंपी'त्यादिनाऽध्ययननिगमनं, अस्य त्वधिकृताध्ययन-  प्रथमद्वारवद् व्याख्यानं, परं एतत्तद्यत्प्रागुद्दिष्टं द्वितीयमपि अधर्मद्वारं न केवलं प्रथममेवेति विशेषः, तदेवं  द्वितीयमधर्मद्वारं समासभिति, इतिशब्दब्रवीमिशब्दावपि पूर्ववदेवेति प्रश्नव्याकरणे द्वितीयमध्ययनं विव-  रणतः समासभिति ॥ २ ॥</p> <hr/> <p style="text-align: center;"><b>अथ तृतीयमदत्तादानाख्यमधर्मद्वारम् ।</b></p> <p>व्याख्यातं द्वितीयमध्ययनं, अथ तृतीयमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सह सूत्राभिहिताश्रवद्वारकमकृत एवं  सम्बन्धोऽथवा पूर्वत्रालीकस्वरूपं प्ररूपितं अलीकं चादत्तग्राहिणः प्रायेण जल्पन्तीत्यदत्तादानस्वरूपमिह प्ररू-  प्यते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमादिसूत्रम्—</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र प्रथमे श्रुतस्कन्धे द्वितीयं अध्ययनं “मृषावाद” परिसमाप्तं  अथ प्रथमे श्रुतस्कन्धे तृतीयं अध्ययनं “अदत्तादानं” आरभ्यते  “अदत्तादानः” - नामक तृतीयं अधर्मद्वारं</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [९]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[९]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ४२ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>जंबू! तद्व्यं च अदत्तादानं हरदहमरणभयकलुसतासणपरसंतिगऽभेजलोभमूलं कालविसमसंसियं अहोऽच्छि- न्नतण्हपत्थाणपत्थोइमइयं अकित्तिकरणं अणज्जं छिद्दमंतरविधुरवसणमग्गणउस्सवमत्तपमत्तपसुत्तवंचण- क्खिखणघायणपराणिहुयपरिणामतक्करजणबहुमयं अकलुणं रायपुरिसरक्खियं सया साहुगरहणिज्जं पिय- जणमित्तजणभेदविप्पीतिकारकं रागदोसबहुलं पुणो य उप्पूरसमरसंगामडमरकलिकलहवेहकरणं दुग्गइवि- णिवायवहुणं भवपुणब्भवकरं चिरपरिचितमणुगयं दुरंतं तद्व्यं अधम्मदारं ( सू० ९ )</p> <p>‘जम्बू!’ इत्यादि, यथा पूर्वार्ध्ययनयोः यादृशयन्नामादिभिः पञ्चभिर्द्वारैरध्ययनार्थप्ररूपणा कृता एवमिहापि करिष्यते, तत्र यादृशमदत्तादानं स्वरूपेण तत्प्रतिपादयंस्तावदाह-हे जम्बू! तृतीयं पुनरास्रवद्वाराणां, किं?— अदत्तस्य धनादेरादानं-ग्रहणमदत्तादानं हर दह इति-एतौ हरणदाहयोः परप्रवर्त्तनार्थौ शब्दौ दहनहरणप- र्यायौ वा छान्दसाविति तौ च मरणं च-मृत्युः भयं च-भीतिरेता एव कलुषं-पातकं तेन त्रासनं-त्रासजनन- स्वरूपं यत्तत्तथा तच्च तत् तथा ‘परसंतिग’त्ति परसत्के धने योऽभिध्यालोभो-रौद्रध्यानान्विता मूर्च्छा स मूलं-निबन्धनं यस्यादत्तादानस्य तत्तथा तच्चेति कर्मधारयः, कालश्च-अर्द्धरात्रादि विषमं च-पर्वतादिदुर्गं ते संश्रितं-आश्रितं यत्तत्तथा, ते हि प्रायः तत्कारिभिराश्रीयेते इति, ‘अहोऽच्छिण्णतण्हपत्थाणपत्थोइम- इयं’ति अधः-अधोगतौ अच्छिन्नतृष्णानां-अनुदितवाञ्छानां यत्प्रस्थानं-यात्रा तत्र प्रस्तोत्री-प्रस्ताविका प्रवर्त्तिका मतिः-बुद्धिर्यस्मिंस्तत् तथा, अकीर्त्तिकरणमनार्थं एते व्यक्ते, तथा छिद्रं-प्रवेशद्वारं अन्तरं-अवसरो</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>३ अधर्म- द्वारे अदत्तादा- नस्वरूप सू० ९  ॥ ४२ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अदत्तादानस्य स्वरूपं</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [९]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[९]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१३]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>विधुरं-अपायो व्यसनं-राजादिकृताऽऽपत् एतेषां मार्गणं च उत्सवेषु मत्तानां च प्रमत्तानां च प्रसुप्तानां च वञ्चनं च-प्रतारणं आक्षेपणं च-चित्तव्यग्रतापादनं घातनं च-मारणमिति द्वन्द्वः तत एतत्परः-एतन्निष्ठः अनिभृतः-अनुपशान्तः परिणामो यस्यासौ छिद्रान्तरविधुरव्यसनमार्गणोत्सवमत्तप्रमत्तप्रसुप्तवञ्चनाक्षेपणघातनपरानिभृतपरिणामः स चासौ तस्करजनस्य तस्य बहुमतं यत्तत्तथा, वाचनान्तरे त्विदमेवं पश्यते-छिद्रविषमपापकं च-नित्यं छिद्रविषमयोः सम्बन्धीदं पापमित्यर्थः, अन्यदा हि तत्पापं प्रकर्तुमशक्यमिति भावः, अनिभृतपरिणामं-सङ्कष्टं तस्करजनबहुमतं चेति, अकरुणं-निर्दयं राजपुरुषरक्षितं तैर्निवारितमित्यर्थः सदा साधुगर्हणीयं प्रतीतं प्रियजनमित्रजनानां भेदं-वियोजनं विप्रीतिं च-विप्रियं करोति यत्तत्तथा, रागद्वेषबहुलं प्रतीतं, पुनश्च-पुनरपि 'उत्पूर'ति उत्पूरेण-प्राचुर्येण समरो-जनमरकयुक्तो यः सङ्ग्रामो-रणः स उत्पूरसमरसङ्ग्रामः स च डमरः-विदुरः कलिकलहश्च-राटीकलहो न तु रतिकलहः वेधश्च-अनुशयः एतेषां करणं-कारणं यत्तत्तथा, दुर्गतिविनिपातवर्द्धनं प्रतीतं भवे-संसारे पुनर्भवान्-पुनःपुनरुत्पादान् करोतीत्येवंशीलं यत्तत्तथा, चिरं परिचितं प्रतीतं अनुगतं-अव्यवच्छिन्नतयाऽनुवृत्तं दुरन्तं-दुष्टावसानं विपाकदारुणत्वात् तृतीयमधर्मद्वारं-पापोपाय इति । तदिद्यता यादृश इत्युक्तं, अथ यन्नामेत्यभिधातुमाह—</p> <p>तस्स य णामाणि गोत्राणि ह्येति तीसं, तंजहा—चोरिकं १ परहडं २ अदसं ३ कूरिकडं ४ परलाभो ५ असंजमो ६ परधणंमि गेही ७ लोलिकं ८ तकरत्तणंति य ९ अवहारो १० हत्थलहुत्तणं ११ पावकम्मकरणं</p> </div> <p>प्र. श्या. ८</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अदत्तादानस्य स्वरूपं अदत्तादानस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१०]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१०]</p> <p>दीप अनुक्रम [१४]</p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ४३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>१२ तेणिकं १३ हरणविष्पणासो १४ आदियणा १५ लुपणा धणाणं १६ अप्पञ्चओ १७ अवीलो १८ अक्- खेवो १९ खेवो २० विक्खेवो २१ कूडया २२ कुलमसी य २३ कंखा २४ लालप्पणपत्थणा य २५ आस- सणाय वसणं २६ इच्छामुच्छा य २७ तण्हागेहि २८ नियडिकम्मं २९ अपरच्छंतिविय ३० तस्स एयाणि ए- वमादीणि नामधेज्जाणि होंति तीसं अदिन्नादाणस्स पावकलिकलुसकम्मबहुलस्स अणेगाइं ( सू० १० )</p> <p>‘तस्से’त्यादि सुगमं, ‘तद्यथे’त्युपदर्शनार्थः, ‘चोरिकं’ति चोरणं चोरिका सैव चौरिक्यं १ परस्मात्सकाशा- द्धृतं परहृतं २ अदत्तं-अवितीर्णं ३ ‘क्रूरिकडं’ति क्रूरं चित्तं क्रूरो वा परिजनो येषामस्ति ते क्रूरिणस्तैः कृतं- अनुष्ठितं यत्तत्तथा, क्वचित्तु कुरुडुककृतमिति दृश्यते तत्र कुरुडुकाः-काङ्कडुकबीजप्रायाः अयोग्याः सद्गुणा- नामिति ४ परलाभः-परस्माद्द्रव्यागमः ५ असंघमः ६ परघने गृद्धिः ७ ‘लोलिक्क’स्ति लौल्यं ८ तस्करत्वमिति च ९ अपहारः १० ‘हत्थलत्तणं’ति परधनहरणकुत्सितो हस्तो यस्यास्ति स हस्तलस्तद्भावो हस्तलत्वं पाठा- न्तरेण हस्तलघुत्वमिति ११ पापकर्मकरणं १२ ‘तेणिकं’न्ति स्तेनिका स्तेयं १३ हरणेन-भोषणेन विप्रणाशः पर- द्रव्यस्य हरणविप्रणाशः १४ ‘आइयण’स्ति आदानं परधनस्येति गम्यते १५ लोपना-अवच्छेदनं धनानां-द्र- व्याणां परस्येति गम्यते १६ अप्रत्ययकारणत्वाद्प्रत्ययः १७ अवपीडनं परेषामित्यवपीडः १८ आक्षेपः परद्र- व्यस्येति गम्यते १९ क्षेपः परहस्तात् द्रव्यस्य प्रेरणं २० एवं विक्षेपोऽपि २१ कूटता-तुलादीनामन्यथात्वं २२ कुलमपी च कुलमालिन्यहेतुरितिकृत्वा २३ काङ्खा परद्रव्ये इति गम्यते २४ ‘लालप्पणपत्थणा य’स्ति लाल-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>३ अधर्म- द्वारे अदत्तादा- ननामानि सू० १०</p> <p align="center">॥ ४३ ॥</p> </div> </div> <p align="center">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अदत्तादानस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१०]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[१०]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१४]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>पनस्य-गर्हितलापस्य प्रार्थनेव प्रार्थना लालपनप्रार्थना, चौर्यं हि कुर्वन् गर्हितलपनानि तदपलापरूपाणि दीनवचनरूपाणि वा प्रार्थयत्येव, तत्र हि कृते तान्यवश्यं वक्तव्यानि भवन्तीति भावः २५ व्यसनं व्यसनहेतुत्वात् पाठान्तरेण ‘आससणाय वसणं’ति आशसनाय-विनाशाय व्यसनमिति २६ इच्छा च-परघनं प्रत्यभिलाषः मूर्च्छा-तत्रैव गाढाभिषुङ्गरूपा तद्धेतुकत्वादत्तग्रहणस्येति इच्छामूर्च्छा च तदुच्यते २७ तृष्णा च-प्राप्तद्रव्यस्याव्ययेच्छा गृद्धिश्च-अप्राप्तस्य प्राप्तिवाञ्छा तद्धेतुकं चादत्तादानमिति तृष्णा गृद्धिश्चोच्यते इति २८ निकृतेः-प्रायायाः कर्म निकृतिकर्म २९ अविद्यमानानि परेषामक्षीणि द्रष्टव्यतया यत्र तदपराक्षं असमक्षमित्यर्थः, इतिरूपदर्शने अपिचेति समुच्चये ३०, इह च कानिचित्पदानि सुगमत्वान्न व्याख्यातानि, ‘तस्स’त्ति यस्य स्वरूपं प्राग्वर्णितं तस्यादत्तादानस्येति सम्बन्धः, एतानि-अनन्तरोदितानि त्रिंशदिति योगः एवमादिकानि-एवंप्रकाराणि चानेकानीति सम्बन्धः, अनेकानीति क्वचिन्न दृश्यते, नामधेयानि-नामानि भवन्ति, किम्भूतस्य अदत्तादानस्य?-पापेन-अपुण्यकर्मरूपेण कलिना च-युद्धेन कलुषाणि-मलीमसानि यानि कर्माणि-भिन्नद्रोहादिव्यापाररूपाणि तैर्बहुलं-प्रचुरं यत् तानि वा बहुलानि-बहूनि यत्र तत्तथा तस्य । अथ ये अदत्तादानं कुर्वन्ति तानाह—</p> <p>तं पुण करेति चोरियं तकरा परदव्वहरा छेया कयकरणलद्धलक्खा साहसिया लहुस्सगा अतिमहिच्छलो-भगच्छा दहरओवीलका य गेहिया अहिमरा अणभंजकभग्गसंधिया रायदुट्टकारी य विसयनिच्छल्लोको-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>
	<p>अदत्तादानस्य त्रिंशत् नामानि</p>



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]



दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४४ ॥

वज्रा उहोहकगामघायपुरघायगपंधघायगआलीवगतिथभेया लहुहत्थसंपउत्ता जूङ्करा खंडरक्खत्थीचो-  
रपुरिसचोरसंधिच्छेया य गंधिभेदगपरधणहरणलोमावहारअक्खेवी हडकारका निम्महगगूढचोरकगोचोरग-  
अस्सचोरगदासिचोरा य एकचोरा ओकहकसंपदायकउच्छिपकसत्थघायकविलचोरी(कोली)कारका य निग्गा-  
हविप्पलुंपगा बहुविहतेणिकहरणवुद्धी, एते अन्ने य एवमादी परस्स दब्बा हि जे अविरया । विपुलवलप-  
रिग्गहा य बहवे रायाणो परधणंमि गिद्धा सए व दब्बे असंतुट्ठा परविसए अहिहणंति ते लुद्धा परधणस्स  
कज्जे चउरंगविभत्तवलसमग्गा निच्छियवरजोहजुद्धसद्धियअहमहमित्तिदप्पिएहिं सेन्नेहिं संपरिवुडा पउमस-  
गडसुइचक्कसागरगरुलवूहातिएहिं अणिएहिं उत्थरंता अभिभूय हरंति परधणाइं अवरे रणसीसलद्धलक्खा  
संगामंमि अतिवयंति सन्नद्धबद्धपरियरउप्पीलियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा माठिवरवम्मगुंडिया आविद्धजा-  
लिका कवयकंकडइया उरसिरमुहबद्धकंठतोणमाइतवरफलहरचितपहकरसरहसखरचावकरकरंछियसुनिसित-  
सरवरिसचडकरकमुयंतघणचंडवेगधारानिवायमग्गे अणेगधणुमंडलगसंधिताउच्छलियसत्तिकणगवामकरग-  
हियखेडगनिम्मलनिक्किट्टखग्गपहरंतकोंततोमरचक्कगयापरसुमुसललंगलसूलउलभिंडमालासन्वलपट्टिसच-  
म्मेट्टदुघणमोद्धियमोगरवरफलहजंतपत्थरदुहणतोणकुवेणीपीढकलियईलीपहरणमिलिमिलिमिलंतखिप्पंतवि-  
ज्जुज्जलविरचितसमप्पहणभतले फुडपहरणे महारणसंखभेरिवरसूरपउरपडुपहडाहयणिणायगंभीरणंदितपक्खु-  
भियविपुलघोसे ह्यगयरहजोहतुरितपसरितउद्धततमंधकारबहुले कातरनरणयणहिययवाउलकरे विलुलिय-

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ४४ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;">  <p style="text-align: center;"> उक्कडवरमउडतिरीडकुंडलोडुदामाडोविया पागडपडागउसियज्जयवेजयंतिचामरचलंतछसंधकारगम्भीरे  हयहेसियहस्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयपाइकहरहराइयअप्फाडियसीहनाया छेलियविघुहुकुट्टकंठगयसह-  भीमगज्जिए सयराहहसंतरुसंतकलकलरवे आसूणियवयणरुहे भीमदसणाधरोट्टगाढदट्टे सप्पहारणुज्जयकरे  अमरिसवसतिव्वरत्तनिहारितच्छे वेरदिट्टिकुद्धचिद्धियतिवलीकुडिलभिउडिकयनिलाडे वहपरिणयनरसहस्स-  विक्कमवियंभियबले वगंततुरगरहपहावियसमरभडा आवडियछेयलाघवपहारसाधिता समूसवियवाहुजुयलं मु-  क्कट्टहासपुकंतबोलबहुले फलफलगावरणगहियगयवरपत्थितदरियभडखलपरोप्परपलगजुद्धगव्वितविउसित-  वरासिरोसतुरियअभिमुहपरित्तच्छिन्नकरिकरविभंगितकरे अवड्डनिमुद्धभिन्नफालियपगलियरुहिरकतभूमिक-  हमचिलिचिल्लपहे कुच्छिदालियगलितरुलितनिभेळंतंतफरुफुरंतऽविगलमममाहयविकयगाढदिज्जपहारमुच्छित-  रुलंतवेंभलविलावकलुणे हयजोहभमंततुरगउदाममत्तकुंजरपरिसंकिंतजणनिव्वुकच्छिन्नधयभगरहवरनट्टसि-  रकरिकलेवराकिन्नपतितपहरणविकिन्नाभरणभूमिभागे नच्चंतकवंधपउरभयंकरवायसपरिलेंतगिद्धमंडलभमंत-  च्छायंधकारगंभीरे वसुवसुहविकंपितव्व पच्चक्खपिउवणं परमरुद्दवीहणगं दुप्पवेसतरगं अभिवयंति संगाम-  संकडं परधणं महंता अवरे पाइक्कचोरसंधा सेणावतिचोरवंधपागड्डिका य अडवीदेसदुग्गवासी कालहरितर-  त्तपीतसुक्किल्लअणेगसयच्चिंधपट्टवद्धा परविसए अभिहणंति लुद्धा धणस्स कजे रथणागरसागरं उम्भीसहस्स-  मालाउलाकुलवितोयपोतकलकल्लंतकलियं पायालसहस्सवायवसवेगसलिलउद्धम्ममाणदगरयरथंधकारं वर- </p>  </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International</small> <span style="margin-left: 200px;"><small>For Personal &amp; Private Use Only</small></span> <span style="float: right;"><small>www.jainelibrary.org</small></span> </p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४५ ॥

केणपउरधवलपुलंपुलसमुद्वियदृहासं मारुयविच्छुभमाणपाणियजलमालुप्पीलहुलियं अविय समंतओ खुभि-  
यलुलियखोखुभमाणपक्खलियचलियविपुलजलचक्खवालमहानईवेगतुरियआपूरमाणगंभीरविपुलआवत्तचव-  
लभममाणगुप्पमाणुच्छलंतपच्चोणियत्तपाणियपधावियखरफरुसपयंडवाउलियसलिलफुट्टंतवीतिकल्लोलसंकुलं  
महामगरमच्छकच्छभोहारगाहतिमिसुंसुमारसावयसमाहयसमुद्गायमाणकपूरघोरपउरं कायरजणहिययकंपणं  
घोरमारसंतं महभयं भयंकरं पतिभयं उत्तासणगं अणोरपारं आगासं चैव निरवलंबं उप्पाइयपवणधणित-  
नोल्लियउवरुवरितरंगदरियअतिवेगवेगचक्खुपहमुच्छरंतकच्छइगंभीरविपुलगज्जियगुंजियनिग्घायगरुयनिव-  
तितसुदीहनीहारिदूरसुच्चंतगंभीरधुगुधुगंतसहं पडिपहरुंभंतजक्खरक्खसकुहंडपिसायरुसियतजायउवसग्ग-  
सहस्ससंकुलं बहुप्पाइयभूयं विरचितबलिहोमधूवउवचारदिन्नरुधिरच्चणाकरणपयतजोगपययचरियं परिय-  
न्तजुगंतकालकप्पोवमं दुरंतमहानईनईवईमहाभीमदरिसणिजं दुरणुच्चरं विसमप्पवेसं दुक्खुत्तारं दुरासयं  
लवणसलिलपुण्णं असियसियसमूसियगेहि हत्थतरकेहिं वाहणेहिं अइवइत्ता समुद्दमउझे हणंति गंतूण जणस्स  
पोते परदव्वहरा नरा निरणुकंपा निरावयक्खा गामागरनगरखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमणिगमजणवते  
य धणसमिच्चे हणंति थिरहिययल्लिन्नलज्जा चंदिग्गहगोग्गहे य गेणहंति दारुणमती णिक्किवा णियं हणंति  
छिंदंति गेहसंधिं निक्खित्ताणि य हरंति धणधन्नदव्वजायाणि जणवयकुलाणं णिग्घिणमती परस्स दव्वाहिं  
जे अविरया, तहेव केई अदिज्जादाणं गवेसमाणा कालाकालेसु संचरंता चियकापज्जलियसरसदरदहक-

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ४५ ॥



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>द्वियकलेवरे रुहिरलित्तवयणअखतखातियपीतडाइणिभमंतभयकरं जंबुयक्खिक्खियंते घूयकयघोरसहे वे-  याल्लुट्टियनिसुद्धकहकहितपहसितबीहणकनिरभिरामे अतिदुब्धिभंगंधबीभच्छदरसणिजे सुसाणवणसुन्नघरले-  णअंतरावणगिरिकंदरविसमसावयसमाकुलासु वसहीसु किलिस्संता सीतातवसोसियसरीरा दहृच्छवी निर-  यतिरियभवसंकडदुक्खसंभारवेयणिजाणि पावकम्माणि संचिणंता दुल्लहभक्खन्नपाणभोयणा पिवासिया  झुंशिया किलंता मंसकुणिमकंदमूलजंकिचिकयाहारा उव्विगा उप्पुया असरणा अडवीवासं उवेति वाल-  सतसंकणिजं अयसकरा तकरा भयंकरा कास हरामोत्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेति गुज्झं बहुयस्स  जणस्स कज्जकरणेसु विग्घकरा मत्तपमत्तपसुत्तवीसत्थिहघाती वसणभ्भुदएसु हरणवुद्धी विगव्व रुहिर-  महिया परेति नरवतिमज्जायमतिकंता सज्जणजणदुगुंछिया सकम्मेहिं पावकम्मकारी असुभपरिणया य  दुक्खभागी निच्चाइलदुहमनिव्वुइमणा इह लोके चेव किलिस्संता परदव्वहरा नरा वसणसयसमावण्णा  ( सू० ११ )</p> <p>‘तं पुणे’त्यादि, तत् पुनः कुर्वन्ति चौर्यं ‘तस्कराः’ तदेव-चौर्यं कुर्वन्तीत्येवंशीलाः तस्कराः परद्रव्यहराः प्र-  तीतं छेकाः-निपुणाः कृतकरणा-बहुशो विहितचौरानुष्ठानाः ते च ते लब्धलक्षाश्च-अवसरज्ञाः कृतकरणल-  ब्धलक्षाः साहसिका-धैर्यवन्तः लघुस्वकाश्च-तुच्छात्मानः अतिमहेच्छाश्च लोभग्रस्ताश्चेति समासः ‘दहरउ-  वीलगा य’त्ति दहरेण-गलदहरेण वचनाटोपेनेत्यर्थः अपत्रीडयन्ति-गोपायन्तमात्मस्वरूपपरं विलज्जीकुर्वन्ति</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International <span style="float: right;">For Personal &amp; Private Use Only</span> <span style="float: right;">www.jainelibrary.org</span></p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४६ ॥

ये ते दूर्हरोपपीडकाः, मुष्णन्ति हि शठात्मानः तथाविधवचनाक्षेपप्रकटितस्वभावं मुग्धं जनमिति, अथवा दूर्हरेणोपपीडयन्ति-जातमनोबाधं कुर्वन्तीति दूर्हरोपपीडकाः ते च, गृद्धिं कुर्वन्तीति गृद्धिकाः अभिसुखं परं मारयन्ति ये तेऽभिमराः ऋणं-द्वेषं द्रव्यं भञ्जन्ति-न ददति ये ते ऋणभञ्जकाः भग्नाः-लोपिताः सन्धयः-विप्रतिपत्तौ संस्था यैस्ते भग्नसन्धिकाः ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः राजदुष्टं-कोशहरणादिकं कुर्वन्ति ये ते तथा ते च विषयात्-मण्डलात् ‘निच्छृद्’सि निर्द्वादिता ये ते तथा लोकबाह्याः-जनबहिष्कृतास्ततः कर्मधारयः उहोहकाश्च-घातका उहकाश्च वा-अटव्यादिदाहका ग्रामघातकाश्च पुरघातकाश्च पथिघातकाश्च आदीपिकाश्च-गृहादिप्रदीपनकारिणः तीर्थभेदाश्च-तीर्थमोचका इति द्वन्द्वः, लघुहस्तेन-हस्तलाघवेन सम्प्रयुक्ता ये ते तथा ‘जूर्हकर’सि द्यूतकराः ‘खण्डरक्षाः’ शुल्कपालाः कोटपाला वा स्त्रियाः सकाशात् स्त्रियमेव वा चोरयन्ति स्त्रीरूपा वा ये चौरास्ते स्त्रीचौराः एवं पुरुषचौरका अपि सन्धिच्छेदाश्च-क्षात्रखानका एतेषां द्वन्द्वस्ततस्ते च, ग्रन्थिभेदका इति व्यक्तं, परधनं हरन्ति ये ते परधनहरणाः लोमान्यवहरन्ति ये ते लोमावहाराः निःशूकतया भयेन परप्राणान् विनाश्यैव मुष्णन्ति ये ते लोमावहारा उच्यन्ते आक्षिपन्ति वशीकरणादिना ये ते ततो मुष्णन्ति ते आक्षेपिणः, एतेषां द्वन्द्वः, ‘हडकारग’सि हटेन कुर्वन्ति ये ते हडकारकाः पाठान्तरेण ‘परधणलोमावहारभक्खेवहडकारक’सि सर्वेऽप्येते चौरविशेषाः, निरन्तरं मृद्नन्ति ये ते निर्मर्दकाः गृहचौराः-प्रच्छन्नचौरा गोचौरा अश्वचौरका दासीचौराश्च प्रतीताः, एतेषां द्वन्द्वोऽतस्ते च, एकचौरा-ये

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सु० ११

॥ ४६ ॥

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

एकाकिनः सन्तो हरन्तीति 'उक्कहृग'स्ति अपकर्षका ये गेहाद् ग्रहणं निष्काशयन्ति चौरान् वा आकार्य पर-  
गृहाणि मोषयन्ति चौरपृष्ठवहा वा सम्प्रदायका ये चौराणां भक्तकादि प्रयच्छन्ति 'उच्छिपक'स्ति अवच्छि-  
म्पकाश्चौरविशेषा एव सार्थघातकाः प्रतीताः बिलकोलीकारकाः परव्यामोहनाय विस्वरवचनवादिनो विस्व-  
रवचनकारिणो वा एतेषां द्वन्द्वोऽतस्ते च, निर्गता ग्राहात्-ग्रहणाग्निग्राहाः राजादिना अवगृहीता इत्यर्थः,  
ते च ते विप्रलोपकाश्चेति समासः बहुविधेन 'तेणिक्क'स्ति स्तेयेन हरणबुद्धिर्येषां ते बहुविहतेणिक्कहरणबुद्धी  
पाठान्तरेण 'बहुविहतहवहरणबुद्धि'स्ति बहुविधा तथा-तेन प्रकारेणापहरणे बुद्धिर्येषां ते तथा, एते उक्त-  
रूपा अन्ये चैतेभ्यः एवंप्रकारा अदत्तमाददतीति प्रक्रमः, कथंभूतास्ते इत्याह-परस्य द्रव्याद्ये अविरता-अ-  
निवृत्ता इति । ये अदत्तादानं कुर्वन्ति ते उक्ताः, अधुना त एव यथा तत्कुर्वन्ति तदुच्यते-विपुलं बलं-सा-  
मर्थ्यं परिग्रहश्च-परिवारो येषां ते तथा ते च बहवो राजानः परधने गृह्णाः, इदमधिकं वाचनान्तरे पदत्रयं,  
तथा स्वके-द्रव्येऽसन्तुष्टाः परविषयान्-परदेशानभिग्नन्ति लुब्धा धनस्य कार्ये धनस्य कृते इत्यर्थः, चतुर्भिरङ्गैर्वि-  
भक्तं समासं वा यद्वलं-सैन्यं तेन समग्रा-युक्ता येते तथा निश्चितैः-निश्चयवद्भिर्वरयोधैः सह यद्युद्धं-सङ्ग्रामस्तत्र  
श्रद्धा सञ्जाता येषां ते तथा ते च ते अहमहमित्येवं दर्पिताश्च-दर्पवन्त इति समासस्तैरेवंविधैः भृत्यैः-पदा-  
तिभिः क्वचित्सैन्यैरिति पठ्यते संपरिवृताः-समेताः तथा पद्मशकटसूचीचक्रसागरगरुडव्यूहाचितैः, इह व्यू-  
हशब्दः प्रत्येकं सम्बध्यते, तत्र पद्माकारो व्यूहः पद्मव्यूहः-परेषामनभिभवनीयः सैन्यविन्यासविशेषः एव-



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४७ ॥

मन्येऽपि पञ्च, एतैराचितानि-रचितानि यानि तानि तथा तैः, कैः?—अनीकैः—सैन्यैः अथवा पद्मादिव्यूहा  
आदिर्घेषां गोमूत्रिकाव्यूहादीनां ये ते तथा तैरुपलक्षितैः, कैः?—अनीकैः, ‘उत्थरंत’स्ति आस्तृण्वन्तः आच्छा-  
द्यन्तः परानीकानीति गम्यं, अभिभूय-जित्वा तान्येव हरन्ति परधनानीति व्यक्तं अपरे-सैन्ययोद्धकेभ्यो  
नृपेभ्योऽन्ये स्वयंयोद्धारो राजानः रणशीर्षे-सङ्ग्रामशिरसि प्रकृष्टरणे लब्धो लक्ष्यो यैस्ते तथा ‘संगामं’ति  
द्वितीया सप्तम्यर्थेति कृत्वा सङ्ग्रामे-रणेऽतिपतन्ति-स्वयमेव प्रविशन्ति न सैन्यमेव योधयन्ति, किंभूताः?—  
सन्नद्धाः—सन्नहन्यादिना कृतसन्नाहाः बद्धः परिकरः—कवचो यैस्ते तथा उत्पीडितो-गाढं बद्धः चिह्नपट्टो-नेत्रा-  
दिचीवरात्मको मस्तके यैस्ते तथा तथा गृहीतान्यायुधानि-शस्त्राणि प्रहरणाय यैस्ते तथा, अथवा आयुध-  
प्रहरणानां क्षेप्याक्षेप्यताकृतो विशेषः, ततः सन्नद्धादीनां कर्मधारयः, पूर्वाक्तमेव विशेषणं प्रपञ्चयन्नाह-माढी  
—तनुत्राणविशेषस्तेन वरवर्मणा च-प्रधानतनुत्राणविशेषेणैव गुण्डिता-परिकरिता ये ते माढीवरवर्मगु-  
ण्डिताः पाठान्तरे ‘भादिगुडवम्मगुण्डिता’ तत्र गुडा-तनुत्राणविशेष एव शेषं तथैव आविद्धा-परिहिता  
जालिका-लोहकञ्चुको यैस्ते तथा कवचेन-तनुत्राणविशेषेणैव कण्टकिताः—कृतकवचा ये ते तथा उरसा-व-  
क्षसा सह शिरोमुखा-ऊर्ध्वमुखाः बद्धा-यन्त्रिताः कण्ठे-गले तोणाः—तोणीराः शरधयो यैस्ते उरःशिरोमुखबद्ध-  
कण्ठतोणाः तथा माइयस्ति-हस्तपासिका(शितानि)वरफलकानि-प्रधानफरका यैस्ते तथा तेषां सत्को रचितो-  
रणोचितरचनाविशेषेण परप्रयुक्तप्रहरणप्रहारप्रतिघाताय कृतः ‘पहकर’स्ति समुदायो यैस्ते तथा ततः पूर्वप-

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ४७ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>देन सह कर्मधारयोऽतस्तैः सरभसैः-सहषैः खरचापकरैः-निष्ठुरकोदण्डहस्तैर्धानुष्कैरित्यर्थः ये कराञ्छिताः-कराकृष्टाः सुनिशिताः-अतिनिशिताः शरा-बाणास्तेषां यो वर्षचटकरको-वृष्टिविस्तारो मुयंतत्ति-मुच्यमानः स एव घनस्य-मेघस्य चण्डवेगानां धाराणां निपातः तस्य मार्गो यः स तथा तत्र, 'मंते'त्ति पाठान्तरं, तत्र च मत्प्रत्ययान्तस्वात्, निपातवति सङ्गामेऽतिपतन्तीति प्रक्रमः, तथाऽनेकानि धनुंषि च मण्डलाग्राणि च-खड्गविशेषाः तथा सन्धिताः-क्षेपणायोद्गीर्णा उच्छलिता-ऊर्द्ध्वं गताः शक्तयश्च-त्रिशूलरूपाः कणकाश्च-बाणाः तथा वामकरगृहीतानि खेटकानि च-फलकानि निर्मला निकृष्टाः खड्गाश्च-उज्ज्वलविकोशीकृतकरवालाः तथा पहरन्तत्ति-प्रहारप्रवृत्तानि कुन्तानि च-शस्त्रविशेषाः तोमराश्च-बाणविशेषाश्चक्राणि च-अराणि गदाश्च-दण्डविशेषाः परशवश्च-कुठाराः सुशलानि च-प्रतीतानि लाङ्गलानि च-हलानि शूलानि च लघुडाश्च प्रतीताः भिण्डमालानि च-शस्त्रविशेषाः शब्बलाश्च-भङ्गाः पट्टिसाश्च अस्त्रविशेषाः चर्मैष्टाश्च-चर्मनद्धपाषाणाः द्रुघणाश्च-मुद्गरविशेषाः मौष्टिकाश्च-मुष्टिप्रमाणपाषाणाः मुद्गराश्च प्रतीताः वरपरिघाश्च-प्रबलार्गलाः यन्त्रप्रस्तराश्च-गोफणादिपाषाणाः द्रुहणाश्च-टक्कराः तोणाश्च-शरधयः कुवेण्यश्च-रुद्धिगम्याः पीठानि च-आसनानीति द्वन्द्वः एभिः प्रतीताप्रतीतैः प्रहरणविशेषैः कलितो-युक्तो यः स तथा ईलीभिः-करवालविशेषैः प्रहरणैश्च-तदन्यैः 'मिलिमिलिमिलंत'त्ति चिकिचिकायमानैः 'खिपंत'त्ति क्षिप्यमाणैर्विश्रुतः-क्षणप्रभायाः उज्ज्वलाया-निर्मलायाः विरचिता-विहिता समा-सदृशी प्रभा-दीप्तिर्यत्र तत्तथा तदेवंविधं न-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४८ ॥

भस्तलं यत्र स तथा तत्र सङ्ग्रामे, तथा 'स्फुटप्रहरणे' स्फुटानि-व्यक्तानि प्रहरणानि यत्र स तथा तत्र सङ्ग्रामे, तथा महारणस्य सम्बन्धीनि यानि शङ्खश्च भेरी च-दुन्दुभीः वरतूर्य-लोकप्रतीतं तेषां प्रचुराणां पटूनां-स्पष्ट-ध्वनीनां पटहानां च-पटहकानां आहतानां-आस्फालितानां निनादेन-ध्वनिना गम्भीरेण-बहलेन ये न-न्दिता-हृष्टा प्रक्षुभिताश्च-भीतास्तेषां विपुलो-विस्तीर्णो घोषो यत्र स तथा तत्र, ह्यगजरथयोद्धेभ्यः सका-शात् त्वरितं-शीघ्रं प्रसृतं-प्रसरमुपगतं यद्रजो-ध्वली तदेवोद्धततमान्धकारं-अतिशयप्रबलतमिस्रं तेन बहुलो यः स तथा तत्र, तथा कातरनराणां नयनयोर्हृदयस्य च 'वाउल'त्ति व्याकुलं क्षोभं करोतीत्येवंशीलो यः स तथा तत्र, तथा विलुलितानि-शिथिलतया चञ्चलानि यान्युत्कटवराणि-उन्नतप्रवराणि मुकुटानि-मस्तका-भरणविशेषास्तिरीटानि च-तान्येव शिखरत्रयोपेतानि कुण्डलानि च-कर्णाभरणानि उडुदामानि च-नक्षत्र-मालाभिधानाभरणविशेषास्तेषामाटोपः-स्फारता सा विद्यते यत्र स विलुलितोत्कटवरमुकुटतिरीटकुण्डलो-डुदामाटोपिक इति, तथा प्रकटा या पताका उच्छ्रिता-ऊर्ध्वकृता ये ध्वजा-गरुडादिध्वजा वैजयन्त्यश्च-वि-जयसूचिकाः पताका एव चामराणि च चलन्ति छत्राणि च तेषां सम्बन्धि यदन्धकारं तेन गम्भीरः-अल-ब्धमध्ये यः स तथा ततः कर्मधारयस्ततस्तत्र, तथा हयानां यत् हेषितं-शब्दविशेषः हस्तिनां च यद् गुलुगुला-यितं-शब्दविशेष एव तथा रथानां यत् 'घणघणाहय'त्ति घणघणेत्येवंरूपस्य शब्दस्य करणं तथा 'पाहक'त्ति पदातीनां यत् 'हरहराहय'त्ति हरहरेतिशब्दस्य करणं आस्फोटितं च-करास्फोटरूपं सिंहनादश्च-सिंहस्येव

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ४८ ॥



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्र. ज्या. ९

शब्दकरणं 'छेलिय'ति सेंटितं सीत्कारकरणं विद्युष्टं च-विरूपघोषकरणं उत्कृष्टं च-उत्कृष्टिनाद आनन्दम-  
हाध्वनिरित्यर्थः कण्ठकृतशब्दश्च-तथाविधो गलरवः त एव भीमगर्जितं-मेघध्वनिर्यत्र स तथा तत्र, तथा  
'सघराह'ति एकहेलया हसतां रुष्यतां वा कलकललक्षणो रवो यत्र स तथा आश्रुनितेन-ईषत्स्थूलीकृतेन  
वदनेन ये रौद्रा-भीषणास्ते तथा, तथा भीमं यथा भवतीत्येवं दशनैरधरोष्ठो गाहं दष्टो यैस्ते तथा, ततः कर्मधा-  
रयः, ततस्तेषां भटानां सत्प्रहारणे-सुष्ठु प्रहारकरणे उद्यताः-प्रयत्नप्रवृत्ताः करा यत्र स तथा तत्र, तथा अमर्ष-  
वशेन-कोपवशेन तीव्रं-अत्यर्थं रक्ते-लोहिते निर्हारिते-विस्फारिते अक्षिणी-लोचने यत्र स तथा, वैरप्रधाना  
दृष्टिः वैरदृष्टिस्तया वैरदृष्ट्या-वैरबुद्ध्या वैरभावेन ये क्रुद्धाश्चेष्टिताश्च तैस्त्रिवलीकुटिला-वलित्रयवक्रा भ्रुकुटिः  
-नयनललाटविकारविशेषः कृता ललाटे यत्र स तथा तत्र, वधपरिणतानां-मारणाध्यवसायवतां नरसहस्राणां  
विक्रमेण-पुरुषकारविशेषेण विजृम्भितं-विस्फुरितं बलं-शरीरसामर्थ्यं यत्र स तथा तत्र, तथा बल्गत्तुरङ्गैः  
रथैश्च प्रधाविता-वेगेन प्रवृत्ता ये समरभटाः-सङ्ग्रामयोद्धास्ते तथा, आपतिता-योद्धुमुद्यताः छेका-दक्षा ला-  
घवप्रहारेण-दक्षताप्रयुक्तघातेन साधिता-निर्मिता यैस्ते तथा, 'समूसविद्य'ति समुच्छ्रितं हर्षातिरेकादूर्ध्वी-  
कृतं बाहुयुगलं यत्र तत्तथा तद्यथा भवतीत्येवं मुक्तादहासाः-कृतमहाहासध्वनयः 'पुक्त'ति पूत्कुर्वन्तः पू-  
त्कारं कुर्वाणास्ततः कर्मधारयः ततस्तेषां यो बोलः-कलकलः स बहुलो यत्र स तथा तत्र, तथा 'फुरफल-  
गावरणगद्दिय'ति स्फुराश्च फलकानि च आवरणानि च-सन्नाहा गृहीतानि यैस्ते तथा 'गयवरपत्थित'ति

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ४९ ॥

गजवरान्-रिपुमतङ्गजान् प्रार्थयमाना-हन्तुमारोहुं वाँऽभिलषमाणास्तत्र शक्तास्तच्छीला वा ये ते तथा ततः  
कर्मधारयस्ततस्ते च ते दृसभटखलाश्च-दृषितयोधदुष्टा इति समासः, ते च ते परस्परप्रलम्बा-अन्योऽन्यं  
योद्धुमारब्धा इत्यर्थः ते च ते युद्धगर्विताश्च-योधनकलाविज्ञानगर्वितास्ते च ते विकोसितवरासिभिः-निष्क-  
र्षितवरकरवालैः रोषेण-कोपेन त्वरितं-शीघ्रं अभिमुखं-आभिमुख्येन प्रहरद्भिः छिन्नाः करिकरा यैस्ते तथा  
ते चेति समासस्तेषां 'वियंगिय'त्ति व्यङ्गिताः-खण्डिताः करा यत्र स तथा तत्र, तथा 'अवइद्ध'त्ति अप-  
विद्धाः-तोमरादिना सम्यग्विद्धा निशुद्धं भिन्ना-निर्भिन्नाः स्फाटिताश्च-विदारिता ये तेभ्यो यत् प्रगलितं रु-  
धिरं तेन कृतो भूमौ यः कर्दमस्तेन चिलीचिविलाः(ल्लाः)-चिलीनाः पन्थानो यत्र स तथा, कुक्षौ दारिताः कु-  
क्षिदारिताः गलितं रुधिरं श्रवन्ति हलन्ति वा-भूमौ लुठन्ति निर्भेलितानि-कुक्षितो बहिष्कृतानि अन्नाणि-  
उदरमध्यावयवविशेषाः येषां ते तथा, 'फुरफुरंतविगल'त्ति फुरफुरायमाणाश्च विकलाश्च-निरुद्धेन्द्रियवृत्तयो ये  
ते तथा मर्मणि आहता मर्माहताः विकृतो गाढो दत्तः प्रहारो येषां ते तथा अत एव मूर्च्छिताः सन्तो भूमौ  
लुठन्तः विह्वलाश्च-निस्सहाङ्गा ये ते तथा, ततः कुक्षिदारितादिपदानां कर्मधारयः, ततस्तेषां विलापः-शब्द-  
विशेषः करुणो-दयास्पदं यत्र स तथा तत्र, तथा हता-विनाशिताः घोधाः-अश्वारोहादयो येषां ते तथा ते  
भ्रमन्तो-यदृच्छया सञ्चरन्तस्तुरगाश्च उहाममत्तकुञ्जराश्च परिशङ्कितजनाश्च-भीतजना निवृक्छिन्नध्वजाः-  
निर्मूलनिकृत्तकेतवो भग्ना-दलिता रथवराश्च यत्र स तथा, नष्टशिरोभिः-छिन्नमस्तकैः करिकलेवरैः-दन्ति-

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ४९ ॥

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>शरीरैराकीर्णा-व्यासाः पतितप्रहरणाः-ध्वस्तायुधा विकीर्णाभरणा-विक्षिप्तालङ्कारा भूमेर्भागा-देशा यत्र स तथा ततः कर्मधारयः तत्र, तथा नृत्यन्ति कबन्धानि-शिरोरहितकडेवराणि प्रचुराणि यत्र स तथा भयङ्करवायसानां ‘परिलितगिद्ध’त्ति परिलीयमानगृद्धानां च यत् मण्डलं-चक्रवालं भ्राम्यत्-संचरत् तस्य या छाया तथा यदन्धकारं तेन गम्भीरो यः स तथा तत्र, सङ्ग्रामेऽपरे राजानः परधनगृद्धा अतिपतन्तीति प्रकृतं, अथ पूर्वोक्तमेवार्थं सङ्क्षिप्ततरेण वाक्येनाह-वसवो-देवा वसुधा च-पृथिवी च कम्पिता यैस्ते तथा ते इव राजान इति प्रक्रमः प्रत्यक्षमिव-साक्षादिव तद्धर्मयोगात् पितृवनं-इमशानं प्रत्यक्षपितृवनं ‘परमरुद्बीहणगं’ति अत्यर्थदारुणभयानकं दुष्प्रवेशतरकं-प्रवेष्टुमशक्यं सामान्यजनस्येति गम्यं अतिपतन्ति-प्रविशन्ति सङ्ग्रामसङ्कटं-सङ्ग्रामगहनं परधनं-परद्रव्यं ‘महंत’त्ति इच्छन्त इति, तथाऽपरे-राजभ्योऽन्ये पाइक्कचोरसंघाः-पदातिरूपचौरसमूहाः, तथा सेनापतयः, किंस्वरूपाः?-चौरवृन्दप्रकर्षकाश्च तत्प्रवर्तका इत्यर्थः, अटवीदेशे यानि दुर्गाणि-जलस्थलदुर्गरूपाणि तेषु वसन्ति ये ते तथा, कालहरितरक्तपीतशुक्लाः पञ्चवर्णा इतियावत् अनेकशतसङ्ख्याश्चिह्नपट्टा बद्धा यैस्ते तथा परविषयानभिघ्नन्ति, लुब्धा इति व्यक्तं, धनस्य कार्ये-धनकृते इत्यर्थः, तथा रत्नाकरभूतो यः सागरः स तथा तं चातिपत्याभिघ्नन्ति जनस्य पोतानिति सम्बन्धः, उर्मयो-वीचयस्तत्सहस्राणां मालाः-पङ्कयस्ताभिराकुलो यः स तथा, आकुला-जलाभावेन व्याकुलितचित्ता ये वितोयपोताः-चिगतजलयानपात्राः सांयात्रिकाः ‘कलकलित’त्ति कलकलायमानाः-कोलाहलबोलं कुर्वाणास्तैः</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only anelibrary.org</p>



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ५० ॥

कलितो यः स तथा, अनेनास्यापेयजलत्वमुक्तं, अथवा उर्मिसहस्रमालाभिः आकृलाकुलः-अतिव्याकुलो  
यः स तथा, तथा वियोगपोतैः-विगतसम्बन्धनबोधिस्यैः कलकलं कुर्वद्भिः कलितो यः स तथा ततः कर्मधार-  
योऽतस्तं, तथा पातालाः-पातालकलशास्तेषां यानि सहस्राणि तैर्वातवशाद्वेगेन यत्सलिलं-जलधिजलं 'उ-  
द्धममाणं'ति य उत्पाद्यमानं तस्य यदुदकरजः-तोयरेणुस्तदेव रजोऽन्धकारं-धूलीतमो यत्र स तथा तं, वरः  
फेनो-डिण्डीरः प्रचुरो धवलः 'पुलंपुल'ति अनवरतं यः समुत्थितो-जातः स एवाद्दहासो यत्र वरफेन एव  
वा प्रचुरादिविशेषणोऽद्दहासो यत्र स तथा तं, मारुतेन विक्षोभ्यमाणं पानीयं यत्र स तथा, जलमालानां-  
जलकल्लोलानामुत्पीलः-समूहो 'हुलिघ'ति शीघ्रो यत्र स तथा ततः कर्मधारयोऽतस्तं, अपिचेति समुच्चये,  
तथा समन्ततः-सर्वतः क्षुभितं-वायुप्रभृतिभिर्व्याकुलितं लुलितं-तीरभुवि लुठितं 'खोखु'भमाण'ति महा-  
मत्स्यादिभिर्भृशं व्याकुलीक्रियमाणं प्रस्वलितं-निर्गच्छत्पर्वतादिना स्खलितं चलितं-स्वस्थानगमनप्रवृत्तं  
विपुलं-विस्तीर्णं जलचक्रवालं-तोयमण्डलं यत्र स तथा, महानदीवेगैः-गङ्गानिम्नगाजवैः त्वरितं यथा भव-  
तीत्येवमापूर्यमाणो यः स तथा गम्भीरा-अलब्धमध्याः विपुला-विस्तीर्णाश्च ये आवर्त्ता-जलभ्रमणस्थान-  
रूपाः तेषु चपलं यथा भवतीत्येवं भ्रमन्ति-सञ्चरन्ति गुप्यन्ति-व्याकुलीभवन्ति उच्छलन्ति-उत्पतन्ति उच्च-  
लन्ति वा-ऊर्ध्वमुखानि चलन्ति प्रत्यवनिवृत्तानि वा-अधः पतितानि पानीयानि प्राणिनो वा यत्र स तथा  
अथवा जलचक्रवालान्तं नदीनां विशेषणमापूर्यमाणान्तं चावर्त्तानामिति, तथा प्रधाविताः-वेगितगतयः स्व-

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ५० ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>रपरूपाः-अतिकर्कशाः प्रचण्डाः-रौद्राः व्याकुलितसलिलाः-विलोलितजलाः स्फुटन्तो-विदीर्यमाणा ये वी-  चिरूपाः कल्लोला न तु वायुरूपास्तैः सङ्कुलो यः स तथा ततः कर्मधारयोऽतस्तं, तथा महामकरमत्स्यकच्छ-  पाश्च ‘ओहार’ति जलजन्तुविशेषास्ते च ग्राहतिमिसुंसुमाराश्च श्वापदाश्चेति द्वन्द्वस्तेषां समाहताश्च-परस्परे-  णोपहृताः ‘समुद्गायमाणक’ति उद्गावन्तश्च-प्रहाराय समुत्तिष्ठन्तो ये पूराः-सङ्घाः घोरा-रौद्रास्ते प्रचुरा यत्र  स तथा तं, कातरनरहृदयकम्पनमिति प्रतीतं, घोरं-रौद्रं यथा भवतीत्येवमारसन्तं-शब्दायमानं महाभयादी-  न्येकार्थानि ‘अणोरपारं’ति अनर्वाकपारमिव महत्त्वादनर्वाकपारं आकाशमिव निरालम्बं, न हि तत्र पतद्भिः  किञ्चिदालम्बनमवाप्यत इति भावः, औत्पातिकपचनेन-उत्पातजनितवायुना ‘धणिय’ति अत्यर्थं ये ‘नोल्लि-  य’ति नोदिताः प्रेरिता उपर्युपरि-निरन्तरं तरङ्गाः-कल्लोलास्तेषां ‘दरिघ’ति दस इव अतिवेगः-अतिक्रान्ता-  शेषवेगो यो वेगस्तेन लुप्ततृतीयैकवचनदर्शनाच्चक्षुःपथं-दृष्टिमार्गमास्तृणवन्तं-आच्छाद्यन्तं ‘कत्थइ’ति क्वचि-  देशे गम्भीरं विपुलं गर्जितं-मेघस्येव ध्वनिः गुञ्जितं च गुञ्जालक्षणातोयस्येव निर्घातश्च-गगने व्यन्तरकृतो  महाध्वनिः गुरुकनिपतितं च-विद्युदादिगुरुकद्रव्यनिपातजनितध्वनिर्घत्र स तथा, सुदीर्घनिर्हादी-अहस्वप्र-  तिरवो ‘हूरसुव्वंत’ति दूरे श्रूयमाणो गम्भीरो धुगधुगित्येवंरूपश्च शब्दो यत्र स तथा, ततः कर्मधारयस्ततस्तं,  प्रतिपथं-प्रतिमार्गं ‘रुंभंत’ति रुन्धानाः सञ्चरिष्णूनां मार्गं स्वलयन्तः यक्षराक्षसकूष्माण्डपिशाचाः-व्यन्त-  रविशेषास्तेषां यत्प्रतिगर्जितं उपसर्गसहस्राणि च पाठान्तरेण ‘रुसियतज्जायउवसग्गसहस्स’ति तत्र यक्षा-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५१ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>दयश्च रुषितास्तज्जातोपसर्गसहस्राणि च तैः सङ्कुलो यः स तथा तं, बहूनि उत्पातिकानि-उत्पातान् भूतः- प्राप्तो यः स तथा तं, वाचनान्तरे उपद्रवा अभिभूता यत्र स उपद्रवाभिभूतः, ततः प्रतिपथेत्यादिना कर्मधा- रयोऽतस्तं, तथा विरचितो बलिना-उपहारेण होमेन-अग्निकारिकया धूपेन च उपचारो-देवतापूजा यैस्ते तथा, तथा दत्तं-वितीर्णं रुधिरं यत्र तत्तथा तच्च तदर्चनाकरणं च-देवतापूजनं तत्र प्रयता ये ते तथा, तथा योगेषु- प्रवहणोचितव्यापारेषु प्रयता ये ते तथा, ततो विरचितेत्यादीनां कर्मधारयोऽतस्तैः सांयात्रिकैरिति गम्यते, चरितः-सेवितो यः स तथा तं, पर्यन्तयुगस्य-कलियुगस्य योऽन्तकालः-क्षयकालस्तेन कल्पा-कल्पनीया उपमा रौद्रत्वाद्यस्य स तथा तं, दुरन्तं-दुरवसानं महानदीनां-गङ्गादीनां नदीनां च-इतरासां पतिः-प्रभुर्यः स तथा महाभीमो दृश्यते यः स तथा ततः कर्मधारयोऽतस्तं दुःखेनानुचर्यते-सेव्यते यः स तथा तं, विषमप्र- वेशं दुःखोत्तारमिति च प्रतीतं दुःखेनाश्रीयत इति दुराश्रयस्तं लवणसलिलपूर्णमिति व्यक्तं, असिताः- कृष्णाः सिताः-सितपटाः समुच्छ्रितका-ऊर्द्धीकृता येषु तान्यसितसितसमुच्छ्रितकानि तैः, चौरप्रवहणेषु हि कृष्णा एव सितपटाः क्रियन्ते, दूरानुपलक्षणहेतोरित्यसितेत्युक्तं, ‘दच्छतरेहि’ति सांयात्रिकयानपात्रेभ्यः सकाशाक्षतरैर्वेगवद्भिरित्यर्थः, वहनैः-प्रवहणैः अतिपत्य-पूर्वोक्तविशेषणं सागरं प्रविश्य समुद्रमध्ये घ्नन्ति गत्वा जनस्य-सांयात्रिकलोकस्य पोतान् यानपात्राणि, तथा परद्रव्यहरणे ये निरनुकम्पा-निःशुकास्ते तथा, वाचनान्तरे परद्रव्यहरा नरा निरनुकम्पा-निःशुकास्ते ‘निरवयवख’ति परलोकं प्रति निरवकाङ्क्षा-निरपेक्षाः,</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>३ अधर्म- द्वारे अदत्तादा- नकारकाः सू० ११  ॥ ५१ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>ग्रामो-जनपदाश्रितः सन्निवेशविशेषः आकरो-लवणाशुत्पत्तिस्थानं नकरं-अकरदायिलोकं खेटं-धूलीप्राकारं कर्षटं-कुनगरं मडम्बं-सर्वतोऽनासन्नसंनिवेशान्तरं द्रोणमुखं-जलस्थलपयोपेतं पत्तनं-जलपथयुक्तं स्थलपथ-युक्तं वा रत्नभूमिरित्यन्ये आश्रमः-तापसादिनिवासः निगमो-वणिग्जननिवासो जनपदो-देश इति द्वन्द्वोऽ-तस्तांश्च धनसमृद्धान् गन्ति, तथा स्थिरहृदयाः-तत्रार्थे निश्चलचित्ताः छिन्नलज्जाश्च ये ते तथा, बन्दिग्रहगो-हांश्च गृह्णन्ति-कुर्वन्तीत्यर्थः, तथा दारुणमतयः निष्कृपा निजं गन्ति छिन्दन्ति गेहसन्धिमिति प्रतीतं, नि-क्षिप्तानि च-स्वस्थानन्यस्तानि हरन्ति धनधान्यद्रव्यजातानि-धनधान्यरूपद्रव्यप्रकारान्, केषामित्याह-ज-नपदकुलानां-लोकगृहाणां निर्घृणमतयः परस्य द्रव्याद् येऽविरताः, तथा तथैव-पूर्वोक्तप्रकारेण केचिददत्ता-दानं-अवितीर्णं द्रव्यं गवेषयन्तः कालाकालयोः-सञ्चरणस्योचितालुचितरूपयोः सञ्चरन्तो-भ्रमन्तः, ‘चिय-ग’त्ति चितिषु प्रतीतासु प्रञ्चलितानि-बहिदीप्तानि सरसानि-रुधिरादियुक्तानि दरदग्धानि-ईषद्भ्रसीकृ-तानि कृष्टानि-आकृष्टानि तथाविधप्रयोजनिभिः कडेवराणि-मृतशरीराणि यत्र तत्तथा तत्र श्मशाने क्लिश्य-माना अटवीं समुपयन्तीति सम्बन्धः, पुनः किम्भूते?-रुधिरलिसवदनानि अक्षतानि-समग्राणि मृतकानीति गम्यते खादितानि-भक्षितानि पीतानि च शोणितापेक्षया यकाभिः तास्तथा ताभिश्च डाकिनीभिः-शाकि-नीभिः भ्रमतां-तत्र सञ्चरतां भयङ्करं यत्तत् रुधिरलिसवदनाक्षतखादितपीतडाकिनीभ्रमद्भयंकरं, कचिदक्षत इत्येतस्य स्थाने ‘अद्र’त्ति पठ्यते तत्राद्राभिः-निर्भयाभिरिति व्याख्येयं ‘जंबुयखिखियंते’त्ति खीखीतिश-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[११]

दीप  
अनुक्रम  
[१५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ५२ ॥

व्दायमानाः शृगालाः (यत्र) ततः कर्मधारयोऽतस्तत्र, तथा घृककृतघोरशब्दे-कौशिकविहितरौद्रध्वाने वेता-  
लेभ्यः-विकृतपिशाचेभ्य उत्थितं-समुपजायन्तं निशुद्धं-शब्दान्तरामिश्रं 'कहकहेति'त्ति कहकहायमानं यत्  
प्रहसितं तेन 'बीहणगं'ति भयानकमत एव निरभिरामं च-अरमणीयं यत्तत्तथा तत्र, अतिबीभत्सदुरभिगन्धे  
इति व्यक्तं, पाठान्तरेणातिदुरभिगन्धबीभत्सदर्शनीये इति, कस्मिन्नेवंभूत इत्याह-इमशाने-पितृवने तथा वने  
-कानने यानि शून्यगृहाणि प्रतीतानि लघनानि-शिलामयगृहाणि अन्तरे-ग्रामादीनामर्धपथे आपणा-हृद्वा  
गिरिकन्दराश्च-गिरिगुहा इति द्वन्द्वस्ततस्ताश्च ता विषमश्वापदसमाकुलाश्चेति कर्मधारयोऽतस्तासु, काखेवं-  
विधास्वित्याह-वसतिषु-वासस्थानेषु क्लिश्यन्तः शीतातपशोषितशरीरा इति व्यक्तं, तथा दग्धच्छवयः-  
शीतादिभिरुपहतत्वचः तथा निरयतिर्यग्भवा एव यत्सङ्कटं-गहनं तत्र यानि दुःखानि निरयतिर्यग्भवेषु वा  
यानि सङ्कटदुःखानि-निरन्तरदुःखानि तेषां यः सम्भारो-बाहुल्यं तेन वेद्यन्ते-अनुभूयन्ते यानि तानि तथा  
तानि पापकर्माणि सञ्चिन्वन्तो-बध्नन्तः दुर्लभं-दुरापं भक्ष्याणां-मोदकादीनामन्नानां-ओदनादीनां पानानां  
च-मद्यजलादीनां भोजनं-प्राशनं येषां ते तथा, अत एव पिपासिताः-जातृषः 'भुञ्जिय'त्ति बुभुक्षिताः  
क्लान्ता-ग्लानीभूताः मांसं प्रतीतं 'कुण्मि'ति कुणपः-शवः कन्दमूलानि प्रतीतानि यत्किञ्चिच्च-यथाऽवासं  
वस्तु इति द्वन्द्वः एतानि कृतो-विहित आहारो-भोजनं यैस्ते तथा, उद्विग्ना-उद्वेगवन्त उत्सुता-उत्सुका अश-  
रणाः-अत्राणाः, किमित्याह-अटवीवासं-अरण्यवसनमुपयन्ति, किम्भूतं?-व्यालशतशङ्कनीयं-भुजङ्गादि-

३ अधर्म-  
द्वारे  
अदत्तादा-  
नकारकाः  
सू० ११

॥ ५२ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [११]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[११]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[१५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>भिर्भयङ्करमित्यर्थः, तथा अयशस्करास्तस्करा भयङ्कराः एतानि व्यक्तानि, कस्य हरामः-चोरयाम इति इदं-  विवक्षितं अद्य-अस्मिन्नहनि द्रव्यं-रिक्थं इति-एवंरूपं सामर्थ्यं-मन्त्रणं कुर्वन्ति गुह्यं-रहस्यं, तथा बहुकस्य  जनस्य कार्यकरणेषु-प्रयोजनविधानेषु विघ्नकरा-अन्तरायकारकाः मत्तप्रमत्तप्रसुप्तविश्वस्तान् छिद्रे-अवसरे  घ्नन्तीत्येवंशीला ये ते तथा व्यसनाभ्युदयेषु हरणबुद्धय इति व्यक्तं, किं वत्?-'विगच्छ'सि वृका इव नास्वर-  विशेषा इव 'रुहिरमहिय'सि लोहितेच्छवः 'परंति'सि सर्वतो भ्रमन्ति, पुनः कथम्भूताः?-नरपतिमर्धादाम-  तिक्रान्ता इति प्रतीतं सज्जनजनेन-विशिष्टलोकेन जुगुप्सिता-निन्दिता ये ते तथा, स्वकर्मभिः हेतुभूतैः पाप-  कर्मकारिणः-पापानुष्ठायिनः अशुभपरिणताश्च-अशुभपरिणामा दुःखभागिन इति प्रतीतं 'निचाविलदुहमनि-  व्युत्तिमण'सि नित्यं-सदा आविलं-सकालुष्यमाकुलं वा दुःखं-प्राणिनां दुःखहेतुः अनिवृत्ति-स्वास्थ्यरहितं  मनो येषां ते तथा, इहलोक एव क्लिश्यमानाः परद्रव्यहरा नरा व्यसनशतसमापन्ना एतानि व्यक्तानीति ।  अथ 'तहेवे'त्यादिना परधनहरणे फलद्वारमुच्यते—</p> <p>तहेव केइ परस्स दव्वं गवेसमाणा गहिता य हया य बद्धरुद्धा य तुरियं अतिधाडिया पुरवरं समप्पिया  चोरग्गहचारभडचाडुकराण तेहि य कप्पडप्पहारनिदयआरक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलच्छुच्छलणाहिं  विमणा चारगवसहिं पवेसिया निरयवसहिसरिसं तत्थवि गोमियप्पहारदूमणनिब्भच्छणकडुयवदणभेसणग-  भयाभिभूया अक्खित्तनियंसणा मलिणदंडिखंडनिवसणा उक्कोडालं चपासमग्गणपरायणेहिं [दुक्खसमुदी-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education Journal For Personal &amp; Private Use Only sanelibrary.org</p>



आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[१२]

दीप  
अनुक्रम  
[१६]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ५३ ॥

रणेहि] गोम्मियभडेहिं विविहेहिं बंधणेहिं, किं ते?, हडिनिगडवालरज्जुयकुदंडगवरत्तलोहसंकलहस्थंडु-  
यवज्जपट्टदामकणिकोडणेहिं अन्नेहि य एवमादिपिहिं गोम्मिकभंडोवकरणेहिं दुक्खसमुदीरणेहिं संको-  
डमोडणाहिं बज्झंति मंदपुष्पा संपुडकवाडलोहपंजरभूमिधरनिरोहकूवचारगकीलगजूयचक्कविततबंधणखंभा-  
लणउद्धचलणबंधणविहम्मणाहि य विहेडयन्ता अवकोडकगाढउरसिरवद्धउद्धपूरितफुरंतउरकडगमोडणामे-  
डणाहिं बद्धा य नीससंता सीसावेहउरुयावलचप्पडगसंधिबंधणतत्तसलागसूइयाकोडणाणि तच्छणविमा-  
णणाणि य खारकडुयतित्तनावणजायणाकारणसयाणि बहुयाणि पावियंता उरक्खोडीदिन्नगाढपेळणअ-  
ट्टिकसंभगसुपंसुलीगा गलकालकलोहदंडउरउदरवत्थिपरिपीलिता मच्छंतहिययसंचुणियंगमंगा आणत्ती-  
किंकरेहिं केति अविराहियवेरिपिहिं जमपुरिससन्निहेहिं पहया ते तत्थ मंदपुष्पा चडवेलावज्जपट्टपाराइं-  
छिवकसलतवरत्तनेत्तप्पहारसयतालियंगमंगा कियणा लंबंतचम्मवणवेयणविमुहियमणा घणकोट्टिमनियल-  
जुयलसंकोडियमोडिया य कीरंति निरुच्चारा एया अन्ना य एवमादीओ वेयणाओ पावा पावेंति  
अदन्तिदिया वसट्टा बहुमोहमोहिया परधणंमि लुद्धा फासिंदियविसयतिव्वगिद्धा इत्थिगयरुवसद्धरस-  
गंधइट्टरतिमहितभोगतण्हाइया य धणतोसगा गहिया य जे नरगणा पुणरवि ते कम्मदुव्वियद्धा उव-  
णीया रायकिंकराण तेसिं वहसत्थगपाढयाणं विलउलीकारकाणं लंचसयगेण्हाणं कूडकवडमायानिय-  
डिआयरणपणिहिवंचणविसारयाणं बहुविहअलियसतजंपकाणं परलोकपरग्गुहाणं निरयगतिगामियाणं तेहि

३ अधर्म-  
द्वारे  
चौरिका-  
फलं  
सू० १२

॥ ५३ ॥

<b>आगम (१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत सूत्रांक [१२]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप अनुक्रम [१६]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>य आणत्तजीयदंडा तुरियं उगघाडिया पुरवरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु वेत्तदंडलउ- डकट्टलेट्टुपत्थरपणालिपणोल्लिमुट्टिलयापादपण्हिजाणुकोप्परपहारसंभग्महियगत्ता अट्टारसकंमकारणा जाइ- यंगमंगा कलुणा सुक्कोट्टकंठगलकतालुजीहा जायंता पाणीयं विगयजीवियासा तण्हादिता वरागा तंपिय ण लभंति वज्झपुरिसेहिं धाडियंता तत्थ य खरफरुसपडहघट्टितकूडग्गहगाढरुट्टनिसट्टपरामुट्टा वज्झकरकु- डिजुयनियत्था सुरत्तकणवीरगहियविमुकुलकंठेगुणवज्झदूतआविद्धमल्लदामा मरणभयुप्पणसेदआयतणे- हुत्तुपियकिलिन्नगत्ता चुण्णगुंडियसरीररथरेणभरियकेसा कुसुंभगोक्किन्नमुद्धया छिन्नजीवियासा घुत्तंता वज्झयाण भीता तिलं तिलं चेव छिज्जमाणा सरीरविक्किन्तलोहिओलित्ता कागणिमंसाणि खावियंता पावा खरफरुसएहिं तालिज्जमाणदेहा वातिकनरनारिसंपरिवुडा पेच्छिज्जंता य नागरजणेण वज्झनेव- त्थिया पणेज्जंति नयरसज्जेण किवणकलुणा अत्ताणा असरणा अणाहा अबंधवा बंधुविप्पहीणा वि- पिक्खिता दिसोदिसिं मरणभयुव्विग्गा आघायणपडिदुवारसंपाविया अधन्ना सूलग्गविलग्गभिन्नदेहा, ते य तत्थ कीरंति परिकप्पियंगमंगा उल्लंविज्जंति रुक्खसालासु केइ कलुणाइं विलवमाणा अवरे चउरं- गघणियवद्धा पव्वयकडगा पमुच्चंते दूरपातवहुविसमपत्थरसहा अन्ने य गयचलणमलणयनिम्मदिया की- रंति पावकारी अट्टारसखंडिया य कीरंति मुंडपरसूहिं केइ उक्कत्तकन्नोट्टनासा उप्पाडियनयणदसणवस- णा जिब्भदियछिया छिन्नकन्नसिरा पणिज्जंते छिज्जन्ते य असिणा निव्विसया छिन्नहत्थपाया पमुच्चंते जाव-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education Journal For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

## “प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[१२]

दीप  
अनुक्रम  
[१६]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ५४ ॥

जीवबंधणा य कीरंति केइ परदव्वहरणलुद्धा कारगलनिथलजुयलरुद्धा चारगावहतसारा सयणविप्पमुक्का  
मित्तजणनिरिक्खिया निरासा बहुजणधिकारसद्वलजायिता [अलजाविया] अलजा अणुवद्धखुहा पारद्धसी-  
उण्हतणहवेयणदुग्घट्टिया विवन्नमुहविच्छविया विहलमतिलदुब्बला किलंता कासंता वाहिया य आमाभिभूय  
गत्ता परूढनहकेसमंसुरोमा छगमुत्तंमि णियगंमि खुत्ता तत्थेव मया अकामका बंधिऊण पादेसु कट्टिया खा-  
इयाए छूढा तत्थ य बगसुणगसियालकोलमज्जारचंडसंदंसगतुंडपक्खिगणविविहमुहसयलविलुत्तगत्ता कयवि-  
हंगा केइ किमिणा य कुहियदेहा अणिट्टवयणेहिं सप्पमाणा सुट्टु कयं जं मउत्ति पावो तुट्टेणं जणेण हम्म-  
माणा लजावणका य होति सयणस्सविय दीहकालं मया संता, पुणो परलोगसमावन्ना नरए गच्छंति निर-  
भिरामे अंगारपलित्तककप्पअच्चत्थसीतवेदणअस्साउदिन्नसयतदुक्खसयसमभिडुते ततोवि उव्वट्टिया समाणा  
पुणोवि पवज्जंति तिरियजोणं तहिंपि निरयोवमं अणुहवंति वेयणं, ते अणंतकालेण जति नाम कहिंवि  
मणुयभावं लभंति णेगेहिं णिरयगतिगमणतिरियभवसयसहस्सपारयट्टेहिं तत्थविय भवंतऽणारिया नीचकु-  
लसमुप्पणा आरियजणेवि लोगवद्धा तिरिक्खभूता य अकुसला कामभोगतिसिया जहिं निबंधंति निरय-  
वत्तणिभवप्पवंचकरणणोहिं पुणोवि संसार(रा)वत्तणेममूले धम्मसुतिविवजिया अणजा कूरा मिच्छत्तसु-  
त्तिपवन्ना य होति एगतदंडरुइणो वेहेता कोसिकारकीडोव्व अप्पगं अट्टकम्मतंतुघणबंधणेणं एवं नरगति-  
रियनरअमरगमणपेरंतचक्कवालं जम्मजरामरणकरणगम्भीरदुक्खपखुभियपउरसलिलं संजोगविओगवीची-

३ अधर्म-  
द्वारे  
चौरिका-  
फलं  
सू० १२

॥ ५४ ॥



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>चिंतापसंगपसरियवहबंधमहल्लविपुलकल्लोलकलुणखिलवितलोभकलकलितबोलबहुलं अवमाणफेणं तिब्बखि- सणपुलंपुलप्पभूयरोगवेयणंपराभवविणिवातफरुसधरिसणसमावडियकठिणकम्मपत्थरतरंरंरंतनिच्चमच्चुभ- यतोयपट्टं कसायपायालसंकुलं भवसयसहस्सजलसंचयं अणंतं उब्बेवणयं अणोरपारं महब्भयं भयंकरं पइभ- यंपरिमियमहिच्छकलुसमतिवाउवेगउद्धम्ममाणआसापिवासपायालकामरतिरागदोसबंधणबहुविहसंकप्प- विपुलदगरयरयंधकारं मोहमहावत्तभोगभममाणगुप्पमाणुच्छलंतबहुगब्भवासपच्चोणियत्तपाणियं पधावितव- सणसमावन्नरुन्नचंडमारुयसमाहयामणुन्नवीचीवाकुलितभग्गफुट्टंतनिट्टकल्लोलसंकुलजलं पमातबहुचंडदुट्टसा- वयसमाहयउद्धायमाणगपूरघोरविद्धंसणत्थबहुलं अण्णाणभमंतमच्छपरिहत्थं अनिहुत्तिंदियमहामगरतुरिय- चरियखोखुब्भमाणसंतावनिचयचलंतचवलचंचलअत्ताणऽसरणपुब्बकयकम्मसंचयोदिन्नवज्जवेइज्जमाणदुहस- यविपाकघुन्नंतजलसमूहं इट्ठिरससायगारवोहारगहियकम्मपडिबद्धसत्तकट्टिज्जमाणनिरयतलहुत्तसन्नविसन्नब- हुला अरइरइभयविसायसोगमिच्छत्तसेलसंकडं अणातिसंताणकम्मबंधणकिलेसचिक्खिलसुदुत्तारं अमरनरति- रियनिरयगतिगमणकुडिलपरियत्तविपुलवेलं हिंसालियअदत्तादाणमेहुणपरिगहारंभकरणकारावणाणुमोदण- अट्टविहअणिट्टकम्मपिंडितगुरुभारकंतदुग्गजलोधदूरपणोलिज्जमाणउम्मगनिमुग्गदुल्लभतलं सारीरमणोम- याणि दुक्खाणि उप्पियंता सातस्सायपरित्तावणमयं उब्बुडुनिबुडुयं करंता चउरंतमहंतमणवयगं रुद्धं संसार- सागरं अट्टियं अणालंबणमपतिठाणमप्पमेयं चुलसीतिजोणिसयसहस्सगुविलं अणालोकमंधकारं अणंतकालं</p> <p>प्र. न्या. १०</p> <p>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p> </div>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between; align-items: center;"> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५५ ॥</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; width: 70%; text-align: center;"> <p>निच्चं उत्तथसुण्णभयसण्णसंपउत्ता वसंति उव्विगावासवसहिं जहिं आउयं निबंधंति पावकम्मकारी बंधवज्जण- सयणमित्तपरिवज्जिया अणिट्ठा भवंति अणादेज्जदुव्विणीया कुठाणासणकुसेज्जकुभोयणा असुइणो कुसंधयण- कुप्पमाणकुसंठिया कुरुवा बहुकोहमाणमायालोभा बहुमोहा धम्मसन्नसम्मत्तपव्वट्ठा दारिदोवदवाभिभूया निच्चं परकम्मकारिणो जीवणत्थरहिया किविणा परपिंडतक्का दुक्खलज्जाहारा अरसविरसतुच्छकयकुच्छि- पूरा परस्स पेच्छंता रिद्धिसक्कारभोयणविसेससमुदयविहिं निंदंता अप्पकं कयंतं च परिवयंता इह य पुरेकडाइं कम्माइं पावगाइं विमणसो सोएण डज्जमाणा परिभूया होंति सत्तपरिवज्जिया य लोभासिप्पक- लासमयसत्थपरिवज्जिया जहाजायपसुभूया अवियत्ता णिच्चनीयकम्मोवजीविणो लोयकुच्छणिज्जा मोघमणो- रहा निरासन्नहुला आसापासपडिबद्धपाणा अत्थोपायाणकामसोक्खे य लोयसारे होंति अफलवंतका य सुहुविय उज्जमता तद्विस्सुज्जुत्तकम्मकयदुक्खसंठवियसित्थपिंडसंचयपक्खीणदव्वसारा निच्चं अधुवधणध- णकोसपरिभोगविवज्जिया रहियकामभोगपरिभोगसव्वसोक्खा परसिरिभोगोवभोगनिस्साणमग्गणपरायणा वरागा अकामिकाए विणेंति दुक्खं णेव सुहं णेव निव्वुत्तिं उवलभंति अच्चंतविपुलदुक्खसयसंपलित्ता परस्स दव्वेहिं जे अविरया, एसो सो अदिण्णादाणस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चति, न य अवेयइत्ता अत्थि उ मो- क्खोत्ति, एवमाहंसु णायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अदिण्णादाणस्स फल-</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p>॥ ५५ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>व्वागं एयं तं ततिर्यपि अदिन्नादाणं हरदहमरणभयकलुसतासणपरसंतिकभेज्जलोभमूलं एवं जाव चि- रपरिगतमणुगतं दुरंतं ॥ ततिर्यं अहम्मदारं समत्तं तिबेमि ॥ ३ ॥ (सू० १२)</p> <p>‘तथैव’ यथा पूर्वमभिहिताः केचित्-केचन परस्य द्रव्यं गवेषयन्त इति प्रतीतं, गृहीताश्च राजपुरुषैर्हताश्च यष्ट्यादिभिः बद्धा रुद्धाश्च-रज्ज्वादिभिः संयमिताः चारकादिनिरुद्धाश्च ‘तुरियं’ति त्वरितं शीघ्रं अतिघ्रा- डिताः-भ्रामिताः अतिवर्त्तिता वा-भ्रामिता एव पुरवरं-नगरं समर्पिताः-दौकिताः चौरग्राहाश्च चारक- टाश्च चाटुकराश्च ये ते तथा तैश्च चौरग्राहचारभट्टचाटुकरैश्चारकवसतिं प्रवेशिता इति सम्बन्धः, कर्पटप्रहा- राश्च-लकुटाकारवलितचीवरैस्ताडनानि निर्हया-निष्करुणा ये आरक्षिकाः तेषां सम्बन्धीनि यानि खरप- रुषवचनानि-अतिकर्कशभणितानि तानि च तर्जनानि च-वचनविशेषाः ‘गलच्छल्ल’त्ति गलग्रहणं तथा या उल्लच्छणत्ति-अपवर्त्तना अपप्रेरणा इत्यर्थः, तास्तथा, ताश्चेति पदचतुष्टयस्य द्वन्द्वः, ताभिर्विमनसो-विषण्णचे- तसः सन्तः चारकवसतिं-गुप्तिगृहं प्रवेशिताः, किंभूतां तां?-निरयवसतिसदृशीमिति व्यक्तं, तत्रापि-चारक- वसतौ ‘गोम्मिक’त्ति गौल्मिकस्य-गुप्तिपालस्य सम्बन्धिनो ये प्रहाराः-घाताः ‘दूमण’त्ति दवनानि उपतापना- नि निर्भर्त्सनानि-आक्रोशविशेषाः कटुकवचनानि च कटुकवचनैर्वा भेषणकानि च-भयजननानि तैरभि- भूता ये ते तथा, पाठान्तरेण एष्यो यद्भयं तेनाभिभूता ये ते तथा, आक्षिप्तनिवसना-आकृष्टपरिधानवस्त्राः मलिनं दण्डिखंडरूपं वसनं-वस्त्रं येषां ते तथा, उत्कोटालंचयोः-द्रव्यस्य बहुत्वेतरादिभिर्लोकैः प्रतीतभेदयोः</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>			
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <table style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५६ ॥</p> </td> <td style="width: 70%; padding: 5px;"> <p>पार्श्वाद्-गुप्तिगतनरसमीपाद् यन्मार्गणं-याचनं तत्परायणाः-तन्निष्ठा ये ते तथा तैः गौलिमकभट्टैः कर्तृभि- र्विविधैः बन्धनैः करणभूतैर्बध्यन्ते इति सम्बन्धः, 'किं ते'ति तद्यथा 'हङ्कि'ति काष्ठविशेषः निगडानि-लो- हमयानि बालरज्जुका-गवादिवालमयी रज्जुः कुदण्डकं-काष्ठमयं प्रान्तरज्जुपाशं वरत्रा-चर्ममयी महारज्जुः लोहसङ्कला-प्रतीता हस्तान्दुकं-लोहादिमयं हस्तयन्त्रणं वर्धपट्टः-चर्मपट्टिका दामकं-रज्जुमयपादसंयमनं निष्कोटनं च-बन्धनविशेष इति द्वन्द्वः ततस्तैरन्यैश्च-उक्तव्यतिरिक्तैरेवमादिकैः-एवंप्रकारैर्गौलिमकभाण्डोप- करणैः-गौसिकपरिच्छेदविशेषैर्दुःखसमुदीरणैः-असुखप्रवर्त्तकैः तथा सङ्कोटना-गात्रसङ्कोचनं मोटना च-गात्र- भङ्गना ताभ्यां, किमित्याह-बध्यन्ते, के इत्याह-मन्दपुण्याः, तथा सम्पुटं-काष्ठयन्त्रं कपाटं प्रतीतं लोहपञ्जरे भूमिगृहे च यो निरोधः-प्रवेशनं स तथा, कूपः-अन्धकूपादिः चारको-गुप्तिगृहं कीलकाः-प्रतीता यूपो-युगं चक्रं-रथाङ्गं विततबन्धनं-प्रमर्दितबाहुजङ्घाशिरसः संयन्त्रणं 'खंभालणं'ति स्तम्भालगनं स्तम्भालिङ्गनमि- त्यर्थः, ऊर्द्ध्वं चरणस्य यद्वन्धनं तत्तथा, एतेषां द्वन्द्वस्तत एतैर्यां विधर्मणाः-कदर्थनास्तास्तथा ताभिश्च, 'विहे- डयंत'ति विहेत्र्यमाना-बाध्यमानाः सङ्कोटितमोदिताः क्रियन्त इति सम्बन्धः, अवकोटकेन-कोटाया-ग्री- वाया अधोनयनेन गाढं-बाढं उरसि-हृदये शिरसि च-मस्तके ये बद्धास्ते तथा ते च ऊर्द्ध्वपूरिताः-श्वासपू- रितोर्द्ध्वाकायाः ऊर्ध्वा वा स्थिता धूल्या पूरिताः पाठान्तरे 'उद्धपुरीय'ति ऊर्द्ध्वपुरीततः-ऊर्द्ध्वगताः स्फुरद्- रःकटकाश्च-कम्पमानवक्षःस्थला इति द्वन्द्वः तेषां सतां यन्मोटनं-मर्दनं आग्नेडना च-विपर्यस्तीकरणं ते</p> </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p style="text-align: center;">॥ ५६ ॥</p> </td> </tr> </table> </div> <div style="display: flex; justify-content: space-between; font-size: small; margin-top: 5px;"> <span>Jain Education International</span> <span>For Personal &amp; Private Use Only</span> <span>www.jainelibrary.org</span> </div>	<p>प्रश्नव्याकर ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५६ ॥</p>	<p>पार्श्वाद्-गुप्तिगतनरसमीपाद् यन्मार्गणं-याचनं तत्परायणाः-तन्निष्ठा ये ते तथा तैः गौलिमकभट्टैः कर्तृभि- र्विविधैः बन्धनैः करणभूतैर्बध्यन्ते इति सम्बन्धः, 'किं ते'ति तद्यथा 'हङ्कि'ति काष्ठविशेषः निगडानि-लो- हमयानि बालरज्जुका-गवादिवालमयी रज्जुः कुदण्डकं-काष्ठमयं प्रान्तरज्जुपाशं वरत्रा-चर्ममयी महारज्जुः लोहसङ्कला-प्रतीता हस्तान्दुकं-लोहादिमयं हस्तयन्त्रणं वर्धपट्टः-चर्मपट्टिका दामकं-रज्जुमयपादसंयमनं निष्कोटनं च-बन्धनविशेष इति द्वन्द्वः ततस्तैरन्यैश्च-उक्तव्यतिरिक्तैरेवमादिकैः-एवंप्रकारैर्गौलिमकभाण्डोप- करणैः-गौसिकपरिच्छेदविशेषैर्दुःखसमुदीरणैः-असुखप्रवर्त्तकैः तथा सङ्कोटना-गात्रसङ्कोचनं मोटना च-गात्र- भङ्गना ताभ्यां, किमित्याह-बध्यन्ते, के इत्याह-मन्दपुण्याः, तथा सम्पुटं-काष्ठयन्त्रं कपाटं प्रतीतं लोहपञ्जरे भूमिगृहे च यो निरोधः-प्रवेशनं स तथा, कूपः-अन्धकूपादिः चारको-गुप्तिगृहं कीलकाः-प्रतीता यूपो-युगं चक्रं-रथाङ्गं विततबन्धनं-प्रमर्दितबाहुजङ्घाशिरसः संयन्त्रणं 'खंभालणं'ति स्तम्भालगनं स्तम्भालिङ्गनमि- त्यर्थः, ऊर्द्ध्वं चरणस्य यद्वन्धनं तत्तथा, एतेषां द्वन्द्वस्तत एतैर्यां विधर्मणाः-कदर्थनास्तास्तथा ताभिश्च, 'विहे- डयंत'ति विहेत्र्यमाना-बाध्यमानाः सङ्कोटितमोदिताः क्रियन्त इति सम्बन्धः, अवकोटकेन-कोटाया-ग्री- वाया अधोनयनेन गाढं-बाढं उरसि-हृदये शिरसि च-मस्तके ये बद्धास्ते तथा ते च ऊर्द्ध्वपूरिताः-श्वासपू- रितोर्द्ध्वाकायाः ऊर्ध्वा वा स्थिता धूल्या पूरिताः पाठान्तरे 'उद्धपुरीय'ति ऊर्द्ध्वपुरीततः-ऊर्द्ध्वगताः स्फुरद्- रःकटकाश्च-कम्पमानवक्षःस्थला इति द्वन्द्वः तेषां सतां यन्मोटनं-मर्दनं आग्नेडना च-विपर्यस्तीकरणं ते</p>	<p>३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p style="text-align: center;">॥ ५६ ॥</p>
<p>प्रश्नव्याकर ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५६ ॥</p>	<p>पार्श्वाद्-गुप्तिगतनरसमीपाद् यन्मार्गणं-याचनं तत्परायणाः-तन्निष्ठा ये ते तथा तैः गौलिमकभट्टैः कर्तृभि- र्विविधैः बन्धनैः करणभूतैर्बध्यन्ते इति सम्बन्धः, 'किं ते'ति तद्यथा 'हङ्कि'ति काष्ठविशेषः निगडानि-लो- हमयानि बालरज्जुका-गवादिवालमयी रज्जुः कुदण्डकं-काष्ठमयं प्रान्तरज्जुपाशं वरत्रा-चर्ममयी महारज्जुः लोहसङ्कला-प्रतीता हस्तान्दुकं-लोहादिमयं हस्तयन्त्रणं वर्धपट्टः-चर्मपट्टिका दामकं-रज्जुमयपादसंयमनं निष्कोटनं च-बन्धनविशेष इति द्वन्द्वः ततस्तैरन्यैश्च-उक्तव्यतिरिक्तैरेवमादिकैः-एवंप्रकारैर्गौलिमकभाण्डोप- करणैः-गौसिकपरिच्छेदविशेषैर्दुःखसमुदीरणैः-असुखप्रवर्त्तकैः तथा सङ्कोटना-गात्रसङ्कोचनं मोटना च-गात्र- भङ्गना ताभ्यां, किमित्याह-बध्यन्ते, के इत्याह-मन्दपुण्याः, तथा सम्पुटं-काष्ठयन्त्रं कपाटं प्रतीतं लोहपञ्जरे भूमिगृहे च यो निरोधः-प्रवेशनं स तथा, कूपः-अन्धकूपादिः चारको-गुप्तिगृहं कीलकाः-प्रतीता यूपो-युगं चक्रं-रथाङ्गं विततबन्धनं-प्रमर्दितबाहुजङ्घाशिरसः संयन्त्रणं 'खंभालणं'ति स्तम्भालगनं स्तम्भालिङ्गनमि- त्यर्थः, ऊर्द्ध्वं चरणस्य यद्वन्धनं तत्तथा, एतेषां द्वन्द्वस्तत एतैर्यां विधर्मणाः-कदर्थनास्तास्तथा ताभिश्च, 'विहे- डयंत'ति विहेत्र्यमाना-बाध्यमानाः सङ्कोटितमोदिताः क्रियन्त इति सम्बन्धः, अवकोटकेन-कोटाया-ग्री- वाया अधोनयनेन गाढं-बाढं उरसि-हृदये शिरसि च-मस्तके ये बद्धास्ते तथा ते च ऊर्द्ध्वपूरिताः-श्वासपू- रितोर्द्ध्वाकायाः ऊर्ध्वा वा स्थिता धूल्या पूरिताः पाठान्तरे 'उद्धपुरीय'ति ऊर्द्ध्वपुरीततः-ऊर्द्ध्वगताः स्फुरद्- रःकटकाश्च-कम्पमानवक्षःस्थला इति द्वन्द्वः तेषां सतां यन्मोटनं-मर्दनं आग्नेडना च-विपर्यस्तीकरणं ते</p>	<p>३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p style="text-align: center;">॥ ५६ ॥</p>		

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तथा ताभ्यां, विहेयमाना इति प्रकृतं, अथवा ‘स्फुरदुरःकटका’ इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्यस्ततश्च मोट-  नाम्नेडनाभ्यामित्येतदुत्तरत्र योज्यते, तथा बद्धाः सन्तो निःश्वसन्तो-निःश्वासान् विमुञ्चन्तः शीर्षावेष्टकश्च-  वर्धादिना शिरोवेष्टनं ‘ऊरुयाल’स्ति ऊरुयोः-जङ्घयोर्दोरो-दारणं ज्वालो वा ज्वालनं यः स तथा, पाठान्त-  रेण ‘उरुयावल’स्ति ऊरुकथोरावलनं ऊरुकावलः चप्पडकानां-काष्ठयन्त्रविशेषाणां सन्धिषु-जानुकूर्परा-  दिषु बन्धनं चर्पटकसन्धिबन्धनं तच्च तप्तानां शलाकानां-कीलरूपाणां शूचीनां च श्लक्षणाग्राणां यान्याकोट-  नानि-कुट्टनेनाङ्गे प्रवेशनानि, तथा तानि चेति द्वन्द्वोऽतस्तानि प्राप्यमाणा इति सम्बन्धः, तक्षणानि च-वा-  स्या काष्ठस्येव विमाननानि च-कदर्थनानि तानि च तथा क्षाराणि-तिलक्षारादीनि कटुकानि-मरीचादीनि  तित्तानि-निम्बादीनि तैर्यत् ‘नावण’स्ति तस्य दानं तदादीनि यानि यातनाकारणशतानि-कदर्थनाहेतुश-  तानि तानि बहुकानि प्राप्यमाणाः, तथा उरसि-वक्षसि ‘खोडि’स्ति महाकाष्ठं तस्याः दत्ताया-वितीर्णाया  निवेशिताया इत्यर्थः यद् ग्राहप्रेरणं तेनास्थिकानि-हड्डानि सम्भ्रानि ‘सपांसुलिग’स्ति सपार्श्वस्थीनि  येषां ते तथा, गल इव-बडिशमिव घातकत्वेन यः स गलः स चासौ कालकलोहदण्डश्च-कालायसयष्टिः  तेन उरसि-वक्षसि उदरे च-जठरे बस्तौ च-गुह्यदेशे पृष्ठौ च-पृष्ठे परिपीडिता ये ते तथा, ‘मच्छंत’स्ति मध्य-  मानं हृदयं येषां ते तथा, इह च थकारस्य छकारादेशः छान्दसत्वात्, यथा, ‘पुण्णस्स कच्छइ’ इत्यत्र पूर्णस्य  कथ्यत इति, ते च सञ्चूर्णिताङ्गोपाङ्गाश्चेति समासः, आज्ञसिक्किङ्करैः-यथादेशकारिकिं कुर्वाणैः केचित्-केचन</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>			
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <table border="0" style="width: 100%; border-collapse: collapse;"> <tr> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding-right: 10px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ५७ ॥</p> </td> <td style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>अविराधिता एव-अनपराद्धा एव वैरिका ये ते तथा तैर्यमपुरुषसन्निभैः प्रहता इति प्रकटं, ते अदत्तहारिणः तत्र-चारकबन्धने मन्दपुण्या-निर्भाग्याः चडवेला-चपेटाः वर्धपट्टः-चर्मविशेषपट्टिका पाराइति-लोहकुसीविशेषः छिवा-श्लक्ष्णकषः कषः-चर्मयष्टिका लता-कम्बा वरत्रा-चर्ममयी महारज्जुः वेत्रो-जलवंशः एभियं प्रहारास्तेषां यानि शतानि तैस्ताडितान्यङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, कृपणाः-दुःस्था लम्बमानचर्माणि यानि व्रणानि-क्षतानि तेषु या वेदना-पीडा तथा विमुखीकृतं-चौर्याद्विरञ्जितं मनो येषां ते तथा, घनकुट्टेन-अयोधनताडनेन निर्वृत्तं घनकुट्टिमं तेन निगडयुगलेन प्रतीतेन सङ्कोटिताः-सङ्कोचिताङ्गाः मोटिताश्च-भग्नाङ्गा ये ते तथा ते च क्रियन्ते-विधीयन्ते आज्ञसिकिङ्करैरिति प्रकृतं, किंभूताः?-निरुचाराः-निरुद्धपुरीषोत्सर्गाः अविद्यमानसञ्चरणा नष्टवचनोच्चारणा वा एता अन्याश्च एवमादिका-एवंप्रकाराः वेदनाः पापाः-पापफलभूताः पापकारिणो वा प्राप्नुवन्त्यदान्तेन्द्रियाः 'वसट्ट'ति वशेन-विषयपारतन्त्रयेण क्रताः-पीडिता वशात्ता बहुमोहमोहिताः परधने लुब्धा इति प्रतीतं, स्पर्शनेन्द्रियविषये-स्त्रीकडेवरादौ तीव्रं-अत्यर्थं गृद्धा-अध्युपपन्ना ये ते तथा, स्त्रीगता ये रूपशब्दरसगन्धास्तेषु इष्टा-अभिमता या रतिः तथा स्त्रीगत एव मोहितो-वाञ्छितो यो भोगो-निधुवनं तयोर्था तृष्णा-आकाङ्क्षा तथा अर्हिता-बाधिता ये ते तथा, ते च धनेन तुष्यन्तीति धनतोषकाः गृहीताश्च राजपुरुषैरिति गम्यं, ये केचन नरगणाः-चौरनरसमूहाः 'पुणरवि'ति एकदा ते गौल्मिकनराणां समर्पितास्तैश्च विविधबन्धनबद्धाः क्रियन्ते इत्युक्तं, ततः तेभ्यः सकाशात् पुनरपि ते 'कर्मदु-</p> </td> <td style="width: 15%; vertical-align: top; padding-left: 10px;"> <p>३ अधर्म-द्वारे चौरिका-फलं सू० १२</p> <p align="center">॥ ५७ ॥</p> </td> </tr> </table> </div> <p align="center">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>	<p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ५७ ॥</p>	<p>अविराधिता एव-अनपराद्धा एव वैरिका ये ते तथा तैर्यमपुरुषसन्निभैः प्रहता इति प्रकटं, ते अदत्तहारिणः तत्र-चारकबन्धने मन्दपुण्या-निर्भाग्याः चडवेला-चपेटाः वर्धपट्टः-चर्मविशेषपट्टिका पाराइति-लोहकुसीविशेषः छिवा-श्लक्ष्णकषः कषः-चर्मयष्टिका लता-कम्बा वरत्रा-चर्ममयी महारज्जुः वेत्रो-जलवंशः एभियं प्रहारास्तेषां यानि शतानि तैस्ताडितान्यङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, कृपणाः-दुःस्था लम्बमानचर्माणि यानि व्रणानि-क्षतानि तेषु या वेदना-पीडा तथा विमुखीकृतं-चौर्याद्विरञ्जितं मनो येषां ते तथा, घनकुट्टेन-अयोधनताडनेन निर्वृत्तं घनकुट्टिमं तेन निगडयुगलेन प्रतीतेन सङ्कोटिताः-सङ्कोचिताङ्गाः मोटिताश्च-भग्नाङ्गा ये ते तथा ते च क्रियन्ते-विधीयन्ते आज्ञसिकिङ्करैरिति प्रकृतं, किंभूताः?-निरुचाराः-निरुद्धपुरीषोत्सर्गाः अविद्यमानसञ्चरणा नष्टवचनोच्चारणा वा एता अन्याश्च एवमादिका-एवंप्रकाराः वेदनाः पापाः-पापफलभूताः पापकारिणो वा प्राप्नुवन्त्यदान्तेन्द्रियाः 'वसट्ट'ति वशेन-विषयपारतन्त्रयेण क्रताः-पीडिता वशात्ता बहुमोहमोहिताः परधने लुब्धा इति प्रतीतं, स्पर्शनेन्द्रियविषये-स्त्रीकडेवरादौ तीव्रं-अत्यर्थं गृद्धा-अध्युपपन्ना ये ते तथा, स्त्रीगता ये रूपशब्दरसगन्धास्तेषु इष्टा-अभिमता या रतिः तथा स्त्रीगत एव मोहितो-वाञ्छितो यो भोगो-निधुवनं तयोर्था तृष्णा-आकाङ्क्षा तथा अर्हिता-बाधिता ये ते तथा, ते च धनेन तुष्यन्तीति धनतोषकाः गृहीताश्च राजपुरुषैरिति गम्यं, ये केचन नरगणाः-चौरनरसमूहाः 'पुणरवि'ति एकदा ते गौल्मिकनराणां समर्पितास्तैश्च विविधबन्धनबद्धाः क्रियन्ते इत्युक्तं, ततः तेभ्यः सकाशात् पुनरपि ते 'कर्मदु-</p>	<p>३ अधर्म-द्वारे चौरिका-फलं सू० १२</p> <p align="center">॥ ५७ ॥</p>
<p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ५७ ॥</p>	<p>अविराधिता एव-अनपराद्धा एव वैरिका ये ते तथा तैर्यमपुरुषसन्निभैः प्रहता इति प्रकटं, ते अदत्तहारिणः तत्र-चारकबन्धने मन्दपुण्या-निर्भाग्याः चडवेला-चपेटाः वर्धपट्टः-चर्मविशेषपट्टिका पाराइति-लोहकुसीविशेषः छिवा-श्लक्ष्णकषः कषः-चर्मयष्टिका लता-कम्बा वरत्रा-चर्ममयी महारज्जुः वेत्रो-जलवंशः एभियं प्रहारास्तेषां यानि शतानि तैस्ताडितान्यङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, कृपणाः-दुःस्था लम्बमानचर्माणि यानि व्रणानि-क्षतानि तेषु या वेदना-पीडा तथा विमुखीकृतं-चौर्याद्विरञ्जितं मनो येषां ते तथा, घनकुट्टेन-अयोधनताडनेन निर्वृत्तं घनकुट्टिमं तेन निगडयुगलेन प्रतीतेन सङ्कोटिताः-सङ्कोचिताङ्गाः मोटिताश्च-भग्नाङ्गा ये ते तथा ते च क्रियन्ते-विधीयन्ते आज्ञसिकिङ्करैरिति प्रकृतं, किंभूताः?-निरुचाराः-निरुद्धपुरीषोत्सर्गाः अविद्यमानसञ्चरणा नष्टवचनोच्चारणा वा एता अन्याश्च एवमादिका-एवंप्रकाराः वेदनाः पापाः-पापफलभूताः पापकारिणो वा प्राप्नुवन्त्यदान्तेन्द्रियाः 'वसट्ट'ति वशेन-विषयपारतन्त्रयेण क्रताः-पीडिता वशात्ता बहुमोहमोहिताः परधने लुब्धा इति प्रतीतं, स्पर्शनेन्द्रियविषये-स्त्रीकडेवरादौ तीव्रं-अत्यर्थं गृद्धा-अध्युपपन्ना ये ते तथा, स्त्रीगता ये रूपशब्दरसगन्धास्तेषु इष्टा-अभिमता या रतिः तथा स्त्रीगत एव मोहितो-वाञ्छितो यो भोगो-निधुवनं तयोर्था तृष्णा-आकाङ्क्षा तथा अर्हिता-बाधिता ये ते तथा, ते च धनेन तुष्यन्तीति धनतोषकाः गृहीताश्च राजपुरुषैरिति गम्यं, ये केचन नरगणाः-चौरनरसमूहाः 'पुणरवि'ति एकदा ते गौल्मिकनराणां समर्पितास्तैश्च विविधबन्धनबद्धाः क्रियन्ते इत्युक्तं, ततः तेभ्यः सकाशात् पुनरपि ते 'कर्मदु-</p>	<p>३ अधर्म-द्वारे चौरिका-फलं सू० १२</p> <p align="center">॥ ५७ ॥</p>		



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>विदग्धाः’ कर्मसु-पापक्रियासु विषये फलपरिज्ञानं प्रति अविज्ञा उपनीता-दौकिताः राजकिङ्कराणां, किं- विधानां?—‘तेसिं’ति ये निर्दयादिधर्मयुक्तास्तेषां, तथा वधशास्त्रपाठकानां इति व्यक्तं, ‘विलउलीकारकाणां’ ति विटपोल्लककर्तृणां विलोकनाकारकाणां वा ‘लञ्चाशतग्राहकाणां’ तत्र लञ्चा-उत्कोटाविशेषस्तथा कूटं -मानादीनामन्यथाकरणं कपटं-वेषभाषावैपरीत्यकरणं माया-प्रतारणबुद्धिः निकृतिः-वञ्चनक्रिया मायाया वा प्रच्छादनार्था मायाक्रियैव एतासां यदाचरणं प्रणिधाना-तदेकाग्रचित्तप्रधानेन यद्वञ्चनं प्रणिधानं वा-गृह- पुरुषाणां यद्वञ्चनं तच्च तयोर्विशारदाः-पण्डिता ये ते तथा तेषां, बहुविधालीकशतजल्पकानां परलोकपरा- ञ्जुखानां निरयगतिगाभिकानामिति व्यक्तं, तैश्च राजकिङ्करैः आज्ञसं-आदिष्टं जीयन्ति-दुष्टनिग्रहविषयमाच- रितं दण्डश्च-प्रतीतः जीतदण्डो वा-रूढदण्डो जीवदण्डो वा-जीवितनिग्रहलक्षणो येषां ते तथा, स्वरितं- शीघ्रमुद्घाटिताः-प्रकाशिताः पुरवरे शृङ्गाटकादिषु, तत्र शृङ्गाटकं-सिद्धाटकं सिद्धाटकाकारं त्रिकोणं स्थान- मित्यर्थः त्रिकं-रथ्यात्रयमीलनस्थानं चतुष्कं-रथ्याचतुष्कमीलनस्थानं चत्वरं-अनेकरथ्यापतनस्थानं चतुर्मुखं -तथाविधदेवकुलिकादि महापथो-राजमार्गः पन्थाः-सामान्यमार्गः, किंविधाः सन्तः प्रकाशिता इत्याह?— वेत्रदण्डो लकुटः काष्ठं लेष्टुः प्रस्तरश्च प्रसिद्धाः ‘पणालि’त्ति प्रकृष्टा नाली-शरीरप्रमाणा दीर्घतरा यष्टिः ‘पणोल्लि’त्ति प्रणोदी प्राजनकदण्डः मृष्टिर्लता ( पादः ) पार्श्विणः पादपार्श्विणर्वा जानुकूर्परं च एतान्यपि प्रसि- द्धानि एभिर्यै प्रहारास्तैः सम्भ्रान्ति-आमर्द्दितानि मथितानि च-विलोडितानि गात्राणि येषां ते तथा, अ-</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेववृत्तिः ॥ ५८ ॥</p> <p>अष्टादशकर्मकारणात्-अष्टादशचौरप्रसूतिहेतुना, तत्र चौरस्य तत्प्रसूतीनां च लक्षणमिदं—“चौरः १ चौरापको २ मन्त्री ३, भेदज्ञः ४ काणकक्रयी ५ । अन्नदः ६ स्थानदश्चैव, चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥” तत्र काणकक्रयी-बहुमूल्यमपि अल्पमूल्येन चौराहतं काणकं-हीनं कृत्वा क्रीणातीत्येवंशीलः, “भलनं १ कुशलं २ तर्जा ३, राजभागो ४ अवलोकनम् ५ । अमार्गदर्शनं ६ शय्या ७ पदभङ्ग ८ स्तथैव च ॥ १ ॥ विश्रामः ९ पादपतन १० आसनं ११ गोपनं १२ तथा । खण्डस्य खादनं चैव १३, तथाऽन्यन्महाराजिकम् १४ ॥ २ ॥ पद्या १५ ऽश्रु १६ दक १७ रज्जूनां १८, प्रदानं ज्ञानपूर्वकम् । एताः प्रसूतयो ज्ञेया, अष्टादश मनीषिभिः ॥ ३ ॥” तत्र भलनं-न भेतव्यं भवता अहमेव त्वद्विषये भलिष्यामीत्यादिवाक्यैः चौर्यविषयं प्रोत्साहनं १, कुशलं मिलितानां सुखदुःखादितद्वार्त्ताप्रश्नः २, तर्जा-हस्तादिना चौर्यं प्रति प्रेषणादिसंज्ञाकरणं ३, राजभागो-राजाभाव्यद्रव्यापहवः ४, अवलोकनं-हरतां चौराणामुपेक्षावुद्ध्या दर्शनं ५, अमार्गदर्शनं चौरमार्गप्रच्छकानां मार्गान्तरकथनेन तदज्ञापनं ६ शय्या-शयनीयसमर्पणादि ७ पदभङ्गः पश्चाच्चतुष्पदप्रचारादिद्वारेण ८ विश्रामः-खगृह एव वासकाद्यनुज्ञा ९ पादपतनं प्रणामादिगौरवं १० आसनं-विष्टरदानं ११ गोपनं-चौरापहवः १२ खण्डखादनं-खण्डमण्डकादिभक्तप्रयोगः १३ महाराजिकं-लोकप्रसिद्धं १४ पद्याश्रुदकरज्जूनां प्रदानमिति प्रक्षालनाभ्यङ्गाभ्यां दूरमार्गागमजनितश्रमापनोदित्वेन पादेभ्यो हितं पद्यं-उष्णजलतैलादि तस्य १५ पाकाद्यर्थं चाग्नेः १६ पानाद्यर्थं च शीतोदकस्य १७ चौराहतचतुष्पदादिवन्धनाद्यर्थं च र-</p> <p style="text-align: right;">३ अधर्म-द्वारे चौरिका-फलं सू० १२ ॥ ५८ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>जवाश्च १८ प्रदानं-वितरणं ज्ञानपूर्वकं चेति सर्वत्र योज्यं, अज्ञानपूर्वकस्य निरपराधित्वादिति, तथा यातिता-  झोपाङ्गाः-कदर्थिताङ्गोपाङ्गाः तैः राजकिङ्करैरिति प्रकृतं, करुणाः शुष्कौष्ठकण्ठगलतालुगलजिह्वाः याचमानाः  पानीयं विगतजीविताशाः तृष्णार्दिता वराका इति स्फुटं, ‘तंपियं’सि तदपि पानीयमपि न लभन्ते, वध्येषु  नियुक्ता ये पुरुषा वध्या वा पुरुषा येषां ते वध्यपुरुषाः तैर्भ्राज्यमानाः-प्रेर्यमाणाः तत्र च-ध्राडने खरपरुषः-अ-  त्यर्थकठिनो यः पटहको-डिण्डिमकः तेन प्रचलनार्थं पृष्ठदेशे घट्टिताः-प्रेरिता ये ते तथा कूटे ग्रहः कूटग्रहस्ते-  नैव गाढरुष्टैर्निमृष्टं-अत्यर्थं परामृष्टा-गृहीता ये ते तथा, ततः कर्मधारयः, वध्यानां सम्बन्धि यत्करकुटीयुगं-  वस्त्रविशेषयुगलं तत्तथा तन्निवसिताः-परिहिता पाठान्तरे वध्याश्च करकुट्योः-हस्तलक्षणकुटीरकयोर्युगं-  युगलं निवसिताश्च ये ते तथा, सुरक्तकणवीरैः-कुसुमविशेषैर्ग्रथितं-गुम्फितं विमुकुलं-विकसितं कण्ठे गुण  इव कण्ठेगुणः कण्ठसूत्रसदृशमित्यर्थः वध्यदूत इव वध्यदूतः वध्यचिह्नमित्यर्थः आविद्धं-परिहितं मात्स्यदाम-  कुसुममाला येषां ते तथा, मरणभयादुत्पन्नो यः खेदः तेनायतं-आयामो यथा भवतीत्येवं स्नेहेन उलुपितानीव-  स्नेहितानीव क्लिन्नानीव आर्द्रीकृतानि गात्राणि येषां ते तथा, चूर्णेनाङ्गारादीनां गुण्डितं शरीरं येषां ते तथा,  रजसा-वातोत्खातेन रेणुना च-धूलिरूपेण भरिताश्च-भृताः केशा येषां ते तथा, कुसुम्भकेन-रागविशेषेण  उत्कीर्णा-गुण्डिता मूर्धजा येषां ते तथा, छिन्नजीविताशा इति प्रतीतं, धूर्णमानाः भयविह्वलत्वात् वध्याश्च  -हन्तव्याः प्राणप्रीताश्च-उच्छ्वासादिप्राणप्रियाः प्राणपीता वा-भक्षितप्राणा ये तथा, पाठान्तरेण ‘वज्रघाण</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याकर ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ५९ ॥</p> <p>भीयंति वधकेभ्यो भीता इत्यर्थः, ‘तिलं तिलं चेव छिज्जमाणा’ इति व्यक्तं, शरीराद्विकृतानि-छिन्नानि लोहि- तावलिप्तानि-रक्तलिप्तानि यानि काक्किणीमांसानि-श्लक्ष्णखण्डपिशितानि तानि तथा खाद्यमानाः पापाः- पापिनः खरकरशतैः-श्लक्ष्णपाषाणभृतचर्मकोशकविशेषशतैः स्फुटितवंशशतैर्वा ताड्यमानदेहा वातिकनरना- रीसम्परिवृताः-वातो येषामस्ति ते वातिका वातिका इव वातिका अनियन्त्रिता इत्यर्थः तैर्नरैर्नारीभिश्च समन्तात्परिवृता ये ते तथा, प्रेक्ष्यमाणाश्च नागरजनेनेति व्यक्तं, वध्यनेपथ्यं सञ्जातं येषां ते वध्यनेपथ्यताः प्रनीयन्ते-नीयन्ते नगरमध्येन-सन्निवेशमध्यभागेन कृपणानां मध्ये करुणाः कृपणकरुणाः अत्यन्तकरुणा इत्यर्थः अत्राणाः अनर्थप्रतिघातकाभावात् अशरणा अर्थप्रापकाभावात् अनाथाः योगक्षेमकारिविरहितत्वात् अबान्धवाः बान्धवानामनर्थकत्वात् बन्धुविप्रहीणाः बान्धवैः परित्यक्तत्वात् विप्रेक्षमाणाः-पश्यन्तः दिशो- दिशन्ति-एकस्या दिशोऽन्यां दिशं पुनस्तस्या अन्यां दिशमित्यर्थः, मरणभयेनोद्विग्ना ये ते तथा ‘आघाय- ण’ इति आघातनस्य वध्यभूमिमण्डलस्य प्रतिद्वारं-द्वारमेव सम्प्रापिता-नीता ये ते तथा, अधन्याः शूलाग्रे- शूलिकान्ते विलग्नः-अवस्थितो भिन्नो-विदारितो देहो येषां ते तथा, तत्रेति-आघातने क्रियन्ते-विधीयन्ते, तथा परिकल्पिताङ्गोपाङ्गाः-छिन्नावयवाः उल्लम्बन्ते वृक्षशाखासु केचित् करुणानि वचनानीति गम्यते विलपन्त इति, तथा अपरे चतुर्षु अङ्गेषु-हस्तपादलक्षणेषु धणियं-गाढं बद्धा ये ते तथा, पर्वतकटकात्-भृगोः प्रमुच्यन्ते-क्षिप्यन्ते दूरात् पातं-पतनं बहुविषमप्रस्तरेषु-अत्यन्तासमपाषाणेषु सहन्ते ये ते तथा, तथाऽन्ये</p> <p style="text-align: right;">३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p style="text-align: right;">॥ ५९ ॥</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b>  <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>च-अपरे गजचरणमलनेन निर्मर्दिता-दलिता ये ते तथा, ते क्रियन्ते पापकारिणः-चौर्यविधायिनः अष्टादशसु  स्थानेषु खण्डिताः ये ते तथा, ते च क्रियन्ते कैरित्याह-मुसुण्डपरशुभिः-मुण्ड[कुण्ड]कुठारैः, तीक्ष्णैर्हि तैः अ-  त्यन्तं वेदनोत्पद्यत इति मुण्ड इति विशेषणमिति, तथा केचित्-अन्ये उत्कृत्तकर्णोष्ठनाशाः-छिन्नश्रवणदश-  नच्छदघ्राणाः उत्पादितनयनदशनवृषणा इति प्रतीतं जिह्वा-रसना आच्छिता-आकृष्टा छिन्नौ कर्णौ शिरश्च  शिरा वा-नाड्यो येषां ते तथा प्रनीयन्ते आघातस्थानमिति गम्यते, छिद्यन्ते असिना-खड्गेन, तथा निर्विषया  -देशान्निष्कासिता छिन्नहस्तपादाश्च प्रमुच्यन्ते-राजकिङ्करैस्त्यज्यन्ते, छिन्नहस्तपादा देशान्निष्काल्यन्त इति  भावः, तथा यावज्जीवबन्धनाश्च क्रियन्ते केचिद्-अपरे, के इत्याह-परद्रव्यहरणलुब्धा इति प्रतीतं, कारार्गलया  -चारकपरिधेन निगलयुगलैश्च रुद्धा-नियन्त्रिता ये ते तथा, ते च केत्याह-‘चारगाए’ति चारके-गुप्तौ,  किंविधाः सन्त इत्याह-हृतसाराः-अपहृतद्रव्याः खजनविप्रमुक्ता मित्रजननिराकृता निराशाश्चेति प्रतीतं,  बहुजनधिकारशब्देन लज्जापिताः-प्रापितलज्जा ये ते तथा, अलज्जा-विगलितलज्जाः, अनुबद्धधुधा-सततवुभु-  क्षया प्रारब्धा-अभिभूताः अपराद्धा वा ये ते तथा शीतोष्णनृणावेदनया दुर्घटया-दुराच्छादया घटिताः-  स्पृष्टा ये ते तथा, विवर्णमुखं विरूपा च छवी-शरीरत्वक् येषां ते विवर्णमुखविच्छविकाः ततोऽनुबद्धेत्यादि-  पदानां कर्मधारयः, तथा विफला-अप्राप्तेप्सितार्थाः मलिनाः-मलीमसा दुर्बलाश्च-असमर्था ये ते तथा,  क्लान्ता-गलानाः तथा काशमाना-रोगविशेषात् कुत्सितशब्दं कुर्वाणाः व्याधिताश्च-सञ्जातकुष्ठादिरोगाः</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education Foundation For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६० ॥</p> <p>आमेन-अपकरसेनाभिभूतानि गात्राणि-अङ्गानि येषां ते तथा, प्ररूढानि-वृद्धिसुपगतानि बद्धत्वेनासं- स्कारात् नखकेशदमशुरोमाणि येषां ते तथा, तत्र केशाः-शिरोजाः इमश्रूणि-कूर्चरोमाणि शेषाणि तु रोमा- णीति, ‘छगमुत्तमि’स्ति पुरीषमूत्रे निजकेषु खुत्तत्ति-निमग्नाः तत्रैव-चारकबन्धने मृता अकामकाः-मरणेऽ- नभिलाषाः, ततश्च बद्धा पादयोराकृष्टाः खातिकायां ‘ब्रूढ’स्ति क्षिसाः, तत्र तु खातिकायां वृकशुनकशृगा- लकोलमार्जारवृन्दस्य संदंशकतुण्डपक्षिगणस्य च विविधमुखशतैर्विलुप्तानि गात्राणि येषां ते तथा, कृता- विहिता वृकादिभिरेव ‘विहंग’स्ति विभागाः स्वण्डशः कृता इत्यर्थः केचिद्-अन्ये ‘किमिणा य’स्ति कृमि- वन्तश्च कुथितदेहा इति प्रतीतं, अनिष्टवचनैः शाप्यमानाः-आक्रोद्यमानाः, कथमित्याह-सुष्टु कृतं तत्कद- र्थनमिति गम्यते यदिति यस्मात्कदर्थनान्मृतः पाप इति, अथवा सुष्टु कृतं-सुष्टु सम्पन्नं यन्मृत एष पाप इति, तथा तुष्टेन जनेन हन्यमाना लज्जामापयन्ति-प्रापयन्तीति लज्जापनास्त एव कुत्सिता लज्जापनका ल- ज्जावहा इत्यर्थः, ते च भवन्ति-जायन्ते न केवलमन्येषां? स्वजनस्यापि च दीर्घकालं यावदिति, तथा मृताः सन्तः पुनर्मरणानन्तरं परलोकसमापन्नाः-जन्मान्तरसमापन्नाः निरये गच्छन्ति निरभिरामे, कथम्भूते?- अङ्गाराश्च प्रतीताः प्रदीपकं च-प्रदीपनकं तत्कल्पः-तदुपमो यः अत्यर्थशीतवेदनश्चासातेन कर्मणा उदीर- णानि-उदीरितानि सततानि-अविच्छिन्नानि यानि दुःखशतानि तैः समभिभूतश्च-उपद्रुतो यः स तथा तत- स्ततोऽपि नरकादुद्धृताः सन्तः पुनरपि प्रपद्यन्ते तिर्यग्योनिं, तत्रापि नरयोपमामनुभवन्ति वेदनां ते-अनन्तरो-</p> <p>३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p>॥ ६० ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>द्विदादत्तग्राहिणः, अनन्तकालेन यदि नाम कथञ्चिन्मनुजभावं लभन्ते इति व्यक्तं, कथमित्याह-नैकेषु-बहुषु  निरयगतौ यानि गमनानि तिरश्चां च ये भवास्तेषां ये शतसहस्रसङ्ख्याः परिवर्त्तास्ते तथा तेष्वतिक्रान्तेषु  सत्स्विति गम्यते, तत्रापि च-मनुजत्वलाभे भवन्ति-जायन्ते अनार्याः-शक्यवनवर्बरादयः, किम्भूताः?-  नीचकुलसमुत्पन्नाः, तथा आर्यजनेऽपि-मगधादौ समुत्पन्ना इति शेषः लोकबाह्या-जनवर्जनीया भवन्तीति  गम्यं, तिर्यग्भूताश्च पशुकल्पा इत्यर्थः, कथमित्याह-अकुशलाः-तत्त्वेषु अनिपुणाः कामभोगतृषिता इति व्यक्तं,  ‘जहिं’ति नरकादिपरिवृत्तौ तत् मनुजत्वं लभते यत्र निवर्धन्ति-चिन्वन्ति निरयवर्त्तिन्ध्यां-नरकमार्गं  भवप्रपञ्चकरणेन-जन्मप्राचुर्यकरणेन ‘पणोल्लि’त्ति प्रणोदीनि तत्प्रवर्त्तकानि तेषां जीवानामिति हृदयं यानि  तानि तथा, अत्र द्वितीयावहुवचनलोपो द्रष्टव्यः, पुनरपि आवृत्त्या संसारो-भवो नेमत्ति-मूलं येषां तानि  तथा दुःखानीति भावः तेषां यानि मूलानि तानि तथा, कर्माणीत्यर्थः, तानि निवर्धन्तीति प्रकृतं, इह च मू-  लाइति वाच्ये मूल इत्युक्तं प्राकृतत्वेन लिङ्गव्यत्ययादिति, किम्भूतास्ते मनुजत्वे वर्त्तमाना भवन्तीत्याह-  धर्मश्रुतिविवर्जिताः धर्मशास्त्रविकला इत्यर्थः अनार्याः-आर्येतराः क्रूरा-जीवोपघातोपदेशकत्वात् क्षुद्रा तथा  मिथ्यात्वप्रधाना-विपरीततत्त्वोपदेशका श्रुतिः-सिद्धान्तस्तां प्रपन्नाः-अभ्युपगता ये ते तथा ते च भवन्तीति,  एकान्तदण्डरुचयः-सर्वथा हिंसनश्रद्धा इत्यर्थः वेष्टयन्ति कोशिकारकीट इवात्मानमिति प्रतीतं अष्टकर्मल-  क्षणैस्तन्तुभिर्यद् घनं बन्धनं तत्तथा तेन, एवमनेन आत्मनः कर्मभिर्बन्धनलक्षणप्रकारेण नरकतिर्यङ्गरामरेषु</p> </div> <p style="text-align: center;">प्र. ज्या. ११</p> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६१ ॥</p> <p>यद् गमनं तदेव पर्यन्तचक्रवालं-बाह्यपरिविषयस्य स तथा तं संसारसागरं वसन्तीति सम्बन्धः, किन्भूत- मित्याह-जन्मजरामरणान्येव कारणानि-साधनानि यस्य तत्तथा तच्च तद् गम्भीरदुःखं च तदेव प्रक्षुभितं- सञ्चलितं प्रचुरं सलिलं यत्र स तथा तं, संयोगवियोगा एव वीचयः-तरङ्गा यत्र स तथा, चिन्ताप्रसङ्गः-चि- न्तासातत्यं तदेव प्रसृतं-प्रसरो यस्य स तथा वधा-हननानि बन्धाः-संयमनानि तान्येव महान्तो दीर्घतया विपुलाश्च विस्तीर्णतया (महा) कल्लोला-महोर्मयो यत्र स तथा, करुणविलपिते लोभ एव कलकलायमानो यो बोलो-ध्वनिः स बहुलो यत्र स तथा, ततः संयोगादिपदानां कर्मधारयः अतस्तं, अपमानमेव-अपूजन- मेव फेनो यत्र स तथा, तीव्रखिसनं च-अत्यर्थं निन्दा पुलंपुला-प्रभृता अनवरतोद्भूता या रोगवेदनास्ताश्च परिभवविनिपातश्च-पराभिभवसम्पर्कः परुषघर्षणानि च-निष्ठुरवचननिर्भर्त्सनानि च समापतितानि-स- मापन्नानि येष्वस्तानि तथा तानि च तानि कठिनानि-कर्कशानि दुर्भेदानीत्यर्थः कर्माणि च-ज्ञानावरणादीनि क्रिया वा तान्येव ये प्रस्तराः-पाषाणास्तैः कृत्वा तरङ्गवत्-वीचिवच्चलत् नित्यं-ध्रुवं मृत्युभयमेव मृत्युश्च भयं चेति ते एव वा तोयपृष्ठं-जलोपरितनभागो यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः, अथवाऽपमानेन फेनेन फेनमिति तोयपृष्ठविशेषणमतो बहुव्रीहिरेवातस्तं, कषाया एव पातालाः-पातालकलशास्तैः सङ्कुलो यः स तथा तं, भवसहस्राण्येव जलसञ्चयः-तोयसमूहो यत्र स तथा तं, पूर्वं जननादिजन्यदुःखस्य सलिलतोक्ता इह तु भवनानां जननादिधर्मवतां जलविशेषसमुदायतोक्तेति न पुनरुक्तत्वं, अनन्तं-अक्षयं उद्वेजनकं-उ-</p> <p>३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२</p> <p>॥ ६१ ॥</p> <p>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p> </div>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>द्वेगकरं अनर्वाकपारं-विस्तीर्णस्वरूपं महाभयादिविशेषणत्रयमेकार्थं अपरिमिता-अपरिमाणा ये महेच्छा-          बृहदभिलाषा अविरतलोकास्तेषां कलुषा-अविशुद्धा या मतिः स एव वायुवेगस्तेन उद्भ्रममाणत्ति-उत्पा-          यमानं यत्तत्तथा तस्य, आशा-अप्राप्तार्थसम्भावना पिपासा च-प्राप्तार्थाकाङ्क्षास्ता एव पातालाः-पातालक-          लशाः पातालं वा-समुद्रजलतलं तेभ्यस्तस्माद्वा कामरतिः-शब्दादिष्वभिरतिः रागद्वेषबन्धनेन बहुविधस-          ङ्कल्पाश्चेति द्वन्द्वः, तल्लक्षणस्य विपुलस्योदकरजसः-उदकरेणोर्यो रयो-वेगस्तेनान्धकारो यः स तथा तं, कलु-          षमतिवातेनाशादिपातालादुत्पाद्यमानकामरत्याद्युदकरजोरयोऽन्धकारमित्यर्थः, मोह एव महावर्त्तो मोहम-          हावर्त्तस्तत्र भोगा एव-कामा एव भ्राम्यन्तो-मण्डलेन सञ्चरन्तो गुप्यन्तो-व्याकुलीभवन्तः उद्वलन्त-उच्छ-          लन्तो बहवः-प्रचुराः गर्भवासे-मध्यभागविस्तारे प्रत्यवनिवृत्ताश्च-उत्पत्य निपतिताः प्राणिनो यत्र जले त-          त्तथा, तथा प्रघावितानि-इतस्ततः प्रकर्षेण गतानि यानि व्यसनानि तानि समापन्नाः-प्राप्ता ये ते पाठान्तरेण          प्रवायिताः-पीडिता ये व्यसनसमापन्ना-व्यसननस्तेषां यद् रुदितं-प्रलपितं तदेव चण्डमारुतस्तेन समाहत-          ममनोज्ञं वीचिव्याकुलितं भङ्गैः-तरङ्गैः स्फुटन्-विदलन् अनिष्ठितैः कल्लोलैः-महोर्मिभिः सङ्कुलं च जलं-तोयं          यत्र स तथा तं, महामोहावर्त्तभोगरूपभ्राम्यदादिविशेषणप्राणिकं व्यसनसमापन्नरुदितलक्षणचण्डमारुतसमा-          हतादिविशेषणं जलं यत्रेत्यर्थः, प्रमादा-मद्यादयस्त एव बहवश्चण्डा-रौद्रा दुष्टाः-क्षुद्राः श्वापदा-व्याघ्रादयस्तैः          समाहता-अभिभूता ये ‘उद्घायमाण’त्ति उत्तिष्ठन्तो विविधचेष्टासु समुद्रपक्षे मत्स्यादयः संसारपक्षे पुरु-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६२ ॥</p> <p>षादयः तेषां यः पूरः-समूहस्तस्य ये घोरा-रौद्राः विध्वंसानर्थाः-विनाशलक्षणा अनथा-अपाधास्तैः बहुलो यः स तथा तं, अज्ञानान्येव भ्रमन्तो मत्स्याः ‘परिहृत्थ’त्ति दक्षा यत्र स तथा अनिभृतानि-अनुपशान्तानि यानीन्द्रियाणि अनिभृतेन्द्रिया वा ये देहिनस्तान्येव त एव वा महामकरास्तेषां यानि त्वरितानि-शीघ्राणि चरितानि-चेष्टनानि तैः ‘खोखुम्भमाण’त्ति भृशं क्षुभ्यमाणो यः स तथा, सन्तापः-एकत्र शोकादिकृतोऽन्यत्र वाडवाग्निकृतो नित्यं यत्र स सन्तापनित्यकः, तथा चलन् चपलः चञ्चलश्च यः स तथा, अतिचपल इत्यर्थः, स च अत्राणाशरणानां पूर्वकृतकर्मसञ्चयानां प्राणिनामिति गम्यं यद्दीर्घं वड्यं-पापं तस्य यो वेद्यमानो दुःखशतरूपो विपाकः स एव घूर्णश्च-भ्रमन् जलसमूहो यत्र स तथा, ततोऽज्ञानादिपदानां कर्मधारयोऽतस्तं, ऋद्विरससातलक्षणानि यानि गौरवाणि-अशुभाध्यवसायविशेषास्त एवापहारा-जलचरविशेषाः तैः गृहीता ये कर्मप्रतिबद्धाः सत्त्वाः संसारपक्षे ज्ञानावरणादिबद्धाः समुद्रपक्षे विचित्रचेष्टाप्रसक्ताः ‘कड्विज्रमाण’त्ति आकृष्यमाणा नरक एव तलं-पातालं ‘हुत्सं’ति तदभिमुखं सन्ना इति-सन्नकाः खिन्ना विषण्णाश्च-शोकितास्तैर्बहुलो यः स तथा, अरतिरतिभयानि प्रतीतानि विषादो-दैन्यं शोकः-तदेव प्रकर्षावस्थं मिथ्यात्वं-विपर्यास एतान्येव शैलाः-पर्वतास्तैः सङ्गतो यः स तथा अनादिः सन्तानो यस्य कर्मबन्धनस्य तत्तथा तच्च क्लेशाश्च-रागादयस्तल्लक्षणं यच्चिखिलं-कर्मस्तेन सुष्ठु दुरुत्तारो यः स तथा, ततः ऋद्धीत्यादिपदानां कर्मधारयोऽतस्तं, अमरनरतिर्यग्निरयगतिषु यद् गमनं सैव कुटिलपरिवर्त्ता-वक्रपरिवर्त्तना विपुला-</p> <p style="text-align: right;">३ अधर्म- द्वारे चौरिक- फलं सू० १२  ॥ ६२ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>च-विस्तीर्णा वेला-जलवृद्धिलक्षणा यत्र स तथा तं, हिंसाऽलीकादत्तादानमैथुनपरिग्रहलक्षणा ये आरम्भा- -व्यापारास्तेषां यानि करणकारणानुमोदनानि तैरष्टविधमनिष्टं यत् कर्म पिण्डितं-सञ्चितं तदेव गुरुभारस्ते- नाक्रान्ता ये ते तथा तैर्दुर्गाण्येव-व्यसनान्येव यो जलौघस्तेन दूरं-अत्यर्थं निबोत्थमानैः-निमज्जयमानैः ‘उम्म- ग्गनिमग्ग’त्ति उन्मग्गनिमग्गैः-ऊर्द्धाधोजलगमनानि कुर्वाणैर्दुर्लभं तलं-प्रतिष्ठानं यस्य स तथा तं, शरीरमनो- मयानि दुःखानि उत्पिबन्तः-आसादयन्तः सातं च-सुखं असातपरितापनं च-दुःखजनितोपतापः एतन्मयं- एतदात्मकं ‘उब्बुद्धुनिबुद्धुयं’ति उन्मग्गनिमग्गत्वं कुर्वन्तः, तत्र सातमुन्मग्गत्वमिव असातपरितापनं निमग्गत्व- मिवेति, चतुरन्तं-चतुर्विभागं दिग्भेदगतिभेदाभ्यां महान्तं प्रतीतं कर्मधारयोऽत्र दृश्यः अनवदग्रं-अनन्तं रुद्रं- -विस्तीर्णं संसारसागरमिति प्रतीतं, किम्भूतमित्याह-अस्थितानां-संयमाव्यवस्थितानां अविद्यमानमालम्बनं प्रतिष्ठानं च-त्राणकारणं यत्र स तथा तं, अप्रमेयं-असर्ववेदिनाऽपरिच्छेद्यं, चतुरशीतियोनिशतसहस्रगुणिलं, तत्र योनयो-जीवानामुत्पत्तिस्थानानि तेषां चासङ्ख्यातत्वेऽपि समवर्णगन्धरसरुपर्शानामेकत्वविवक्षणादुक्त- सङ्ख्याया अविरोधित्वं द्रष्टव्यं, तत्र गाथे—“पुढवि ७ दग्ग ७ अगणि ७ मारुय ७ एक्केक्क सत्त जोणिलक्खाओ । वणपत्तेय १० अण्णे १४ दस चोद्दस जोणिलक्खाओ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो चउरो चउरो य नार- यसुरेसु । तिरिएसु हुंति चउरो चोद्दस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥” अनालोकानां-अज्ञानानामन्धकारो यः स तथा तं, अनन्तकालं-अपर्यवसितकालं यावत् नित्यं-सर्वदा उत्रस्ता-उद्गतत्रासाः सुन्ना-इतिकर्त्तव्य-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="float: left; width: 15%; text-align: center;">प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः  ॥ ६३ ॥</p> <p style="float: right; width: 15%; text-align: center;">३ अधर्म- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२          ॥ ६३ ॥</p> <div style="clear: both;"></div> <p style="text-align: center;">तामूढा भयेन संज्ञाभिश्च-आहारमैथुनपरिग्रहादिभिः सम्प्रयुक्ता-युक्तास्ततः कर्मधारयः, वसन्ति-अध्यासते संसारसागरमिति प्रकृतं, इह च वसेन्निरुपसर्गस्यापि सकर्मकत्वं छान्दसत्वादिति, किम्भूतं संसारं?-उद्वि- ग्रानां वासस्य-वसनस्य वसतिः-स्थानं यः स तथा तं, तथा यत्र २ ग्रामकुलादौ आयुर्निबध्नन्ति पापका- रिणः-चौर्यविधायिनः तत्र तत्रेति गम्यते बान्धवजनादिवर्जिता भवन्तीति क्रियासम्बन्धः, बान्धवजनेन- आत्रादिना स्वजनेन-पुत्रादिना मित्रैश्च-सुहृद्भिः परिवर्जिता ये ते तथा, अनिष्टा जनस्येति गम्यते, भवन्ति- जायन्ते अनादेयदुर्विनीता इति प्रतीतं, कुस्थानासनकुशल्याश्च ते कुभोजनाश्चेति समासः ‘असुहृणो’त्ति अशुचयोऽशुचयो वा कुसंहननाः-सेवार्त्तादिसंहननयुक्ताः कुप्रमाणा-अतिदीर्घा अतिह्रस्वा वा कुसंस्थिता -हुण्डादिसंस्थाना इति पदत्रयस्य कर्मधारयः, कुरूपाः-कुत्सितवर्णाः, बहुक्रोधमानमायालोभा इति प्रतीतं, बहुमोहा-अतिकामाः अत्यर्थाज्ञाना वा, धर्मसंज्ञाया-धर्मबुद्धेः सम्यक्त्वाच्च ये परिभ्रष्टास्ते तथा, दारिद्र्यो- पद्रवाभिभूता नित्यं परकर्मकारिण इति प्रतीतं, जीव्यते येनार्थेन-द्रव्येण तद्रव्यरहिता ये ते तथा, कृपणा- रङ्गाः परिपिण्डतर्ककाः-परदत्तभोजनगवेषकाः दुःखलब्धाहारा इति व्यक्तं, अरसेन-हिङ्गवादिभिरसंस्कृ- तेन विरसेन-पुराणादिना तुच्छेन-अल्पेन भोजनेनेति गम्यते कृतः कुक्षिपूरो यैस्ते तथा, तथा परस्य सम्ब- न्धिनं प्रेक्षामाणाः-पश्यन्तः कमित्याह-ऋद्धिः-सम्पत् सत्कारः-पूजा भोजनं-अशनं एतेषां ये विशेषाः- प्रकाराः तेषां यः समुदयः-समुदायः उदयवर्त्तित्वं वा तस्य यो विधिः-विधानमनुष्ठानं स तथा, ततश्च नि-</p> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१२]  दीप अनुक्रम [१६]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>न्दन्तः-जुगुप्समाना अप्पगन्ति-आत्मानं कृतान्तं च-दैवं तथा परिवदन्तो-निन्दन्तः, कानीत्याह-‘इह य पुरेकडाहं कम्माहं पाधगाहं’ति इहैवमक्षरघटना-पुराकृतानि च-जन्मान्तरकृतानि कर्माणि इह-जन्मनि पापकानि-अशुभानि कचित्पापकारिण इति पाठः, विमनसो-दीनाः शोकेन दह्यमानाः परिभृता भवन्तीति सर्वत्र सम्बन्धनीयं, तथा सत्त्वपरिवर्जिताश्च ‘छोभ’सि निरसहायाः क्षोभणीया वा शिल्पं-चित्रादि कला-धनुर्वेदादिः समयशास्त्रं-जैनबौद्धादिसिद्धान्तशास्त्रं एभिः परिवर्जिता ये ते तथा, यथाजातपशुभृताः-शिक्षारक्षणादिवर्जितबलीवर्दादिसदृशाः निर्विज्ञानत्वादिसाधर्म्यात् ‘अचियत्त’सि अप्रतीत्युत्पादका नित्यं-सदा नीचानि-अधमजनोचितानि कर्माण्युपजीवन्ति-तैर्वृत्तिं कुर्वन्ति ये ते तथा, लोककुत्सनीया इति प्रतीतं, मोहाद् ये मनोरथा-अभिलाषास्तेषां ये निरासाः-क्षेपास्तैर्बहुला ये ते तथा अथवा मोघमनोरथा-निष्फलमनोरथा निराशबहुलाश्च-आशाभावप्रचुरा ये ते तथा, आशा-इच्छाविशेषः सैव पाशो-बन्धनं तेन प्रतिबद्धाः-संरुद्धा निर्यान्त इति गम्यं प्राणा येषां ते तथा, अर्थोपादानं-द्रव्यावर्जनं कामसौख्यं च प्रतीतं तत्र च लोकसारे-लोकप्रधाने भवन्ति-जायन्ते ‘अफलवन्तगा य’सि अफलवन्तः अप्राप्तिका इत्यर्थः, लोकसारता च तयोः प्रतीता, यथाहुः-“यस्यार्थास्तस्य मित्राणि, यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः । यस्यार्थाः स पुमान् लोके, यस्यार्थाः स च पण्डितः ॥ १ ॥” इति, “राज्ये सारं वसुधा वसुन्धरायां पुरं पुरे सौधम् । सौधे तल्पं तल्पे वराङ्गनाऽनङ्गसर्वस्व ॥ १ ॥” मिति, किम्भूता अपीत्याह-सुष्टुपि च उच्यच्छन्तः-अत्यर्थमपि च प्रयत-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [१२]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१२]</p> <p>दीप अनुक्रम [१६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p style="float: left; width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;">प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भवदेव० वृत्तिः ॥ १४ ॥</p> <p style="float: right; width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;">३ अध्याय- द्वारे चौरिका- फलं सू० १२  ॥ १४ ॥</p> <div style="clear: both;"></div> <p>मानाः, उक्तं च—“यद्यदारभते कर्म, नरो दुष्कर्मसञ्चयः । तत्तद्विफलतां याति, यथा बीजं महोषरे ॥ १ ॥” तद्विवसं-प्रतिदिनमुद्युक्तैः-उद्यतैः सद्भिः कर्मणा-व्यापारेण कृतेन यो दुःखेन-ऋष्टेन संस्थापितो-मीलितः सिक्थानां पिण्डस्तस्यापि सञ्चये पराः-प्रधाना ये ते तथा, क्षीणद्रव्यसारा इति व्यक्तं, नित्यं-सदा अभ्रुषा- अस्थिरा धनानां-गणिमादीनां धान्यानां-शाल्यादीनां कोशा-आश्रया येषां स्थिरत्वेऽपि तत्परिभोगेन वर्जिताश्च ये ते तथा, रहितं-त्यक्तं कामयोः-शब्दरूपयोः भोगानां च-गन्धरसस्पर्शानां परिभोगे-आसेवने यत्तत्सर्वसौख्यं-आनन्दो यैस्ते स तथा, परेषां यौ श्रिया भोगोपभोगौ तयोर्यन्निश्राणं-निश्रा तस्य मार्गण- परायणा-गवेषणपरा ये ते तथा, तत्र भोगोपभोगयोरयं विशेषः—‘सह भुज्जइत्ति भोगो सो पुण आहारपु- प्फमाहओ । उवभोगो उ पुणो पुण उवभुज्जइ वत्थनिलयाइ ॥ १ ॥’ त्ति [सकृद्भुज्यते इति भोगः स पुनरा- हारपुष्पादिकः । उपभोगस्तु पुनः पुनरुपभुज्यते वत्थनिलयादि ॥ १ ॥] वराकाः-तपस्विनः अकामिकया- अनिच्छया विनयन्ति-प्रेरयन्ति अतिवाहयन्तीत्यर्थः, किं तदित्याह-दुःखं-असुखं, नैव सुखं नैव निर्वृति- स्वास्थ्यमुपलभन्ते-प्राप्नुवन्ति अत्यन्तविपुलदुःखशतसम्प्रदीप्ताः, परस्य द्रव्येषु ये अविरता भवन्ति ते नैव सुखं लभते इति प्रस्तुतं । तदेवं यादृशं फलं ददातीत्यभिहितं, अधुनाऽध्ययनोपसंहारार्थमाह—‘एसो सो’ इत्यादि, सर्वं पूर्ववत् ॥ प्रश्नव्याकरणतृतीयाध्ययनविवरणं समाप्तमिति ॥ ३ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र प्रथमे श्रुतस्कन्धे तृतीयं अध्ययनं “अदत्तादान” परिसमाप्तं</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१३]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१३]</p> <p>दीप अनुक्रम [१७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p><b>अथ तुर्यमब्रह्माध्ययनम्</b></p> <hr/> <p>अथ तृतीयाध्ययनानन्तरं चतुर्थमारभ्यते, अस्य च सूत्रनिर्देशक्रमेण सम्बद्धस्य अदत्तादानं प्रायो अब्रह्मा- सक्तचित्तो विदधातीति तदनन्तरमब्रह्म प्ररूप्यते इत्येवंसम्बन्धस्यास्य यादृशाचर्यपञ्चकप्रतिबद्धस्य यादृशम- ब्रह्मेति द्वारार्थप्रतिपादनायेदं सूत्रम्—</p> <p>जंबू! अबंभं च चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पत्थणिज्जं पंकपणयपासजालभूयं थीपुरिसनपुंसवेद- च्चिंधं तवसंजमबंभचेरविग्घं भेदायतणबहुपमादमूलं कायरकापुरिससेवियं सुयणजणवज्जणिज्जं उहूनरयति- रियतिलोक्कपइट्ठाणं जरामरणरोगसोगबहुलं वधबंधविघातदुब्बिघायं दंसणचरित्तमोहस्स हेउभूयं चिरपरि- गयमणुगयं दुरंतं चउत्थं अधम्मदारं (सूत्रं १३)</p> <p>‘जंबू’ इत्यादि, जम्बूरिति शिष्यामन्त्रणं, अब्रह्म-अकुशलं कर्म तचेह मैथुनं विवक्षितमत्यन्ताकुशलत्वा- त्तस्य, आह च—“नवि किंचि अणुत्तायं पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं । मोत्तुं मेहुणमेगं न जं विणा रागदो- सेहिं ॥१॥” [नैव किञ्चिदनुज्ञातं नच प्रतिषिद्धं वापि जिनवरेन्द्रैः। सुक्त्वा मैथुनमेकं न यत् विना रागद्वेषाभ्यः ॥ १ ॥] चकारः पुनरर्थः, चतुर्थं सूत्रक्रमापेक्षया, सह देवमनुजासुरैर्यो लोकः स तथा तस्य प्रार्थनीयं-अभि-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अथ प्रथमे श्रुतस्कन्धे चतुर्थं अध्ययनं “अब्रह्मं” आरभ्यते “अब्रह्मं” - नामक चतुर्थं अधर्मद्वारं अब्रह्मनः स्वरूपं</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१३]</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [१३]</p> <p style="text-align: center;">दीप अनुक्रम [१७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६५ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>लषणीयं, यतः—“हरिहरहरिण्यगर्भप्रमुखे भुवने न कोऽप्यसौ सूरः। कुसुमविशिखस्य विशिखान् अस्वलयत् यो जिनादन्यः ॥१॥” पङ्को-महान् कर्दमः पनकः-स एव प्रतलः सूक्ष्मः पाशो-बन्धनविशेषो जालं-मतस्यबन्धनं एतद्भूतं-एतदुपमं कलङ्कनिमित्तत्वेन दुर्विमोचनत्वेन साधर्म्यात्, उक्तं च—“सन्मार्गं तावदास्ते प्रभवति पुरु- पस्तावदेवेन्द्रियाणां, लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव । भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथजुषो नीलपक्ष्माण एते, यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिवाणाः पतन्ति ॥ १ ॥” तथा स्त्रीपुरुषनपुंसकवे- दानां चिह्नं-लक्षणं यत्तत्तथा, तपःसंयमब्रह्मचर्यविघ्न इति व्यक्तं, तथा भेदस्य-चारित्रजीवितनाशस्यायत- नानि-आश्रया ये बहवः प्रमादा-मद्यविकथादयस्तेषां मूलं-कारणं यत्तत्तथा, आह च—“किं किं ण कुणइ किं किं न भासए चिंतएऽविय न किं किं? । पुरिसो विसयासत्तो विहलंघलिउच्च मज्जेण ॥ १ ॥” [ किं किं न करोति किं किं न भाषते चिन्तयत्यपि च न किं किम्? । पुरुषो विषयासत्तो मयेन मत्त इव ॥ १ ॥ ] का- तराः-परीषहभीरवः अत एव कापुरुषाः-कुत्सितनरास्तैः सेवितं यत्तत्तथा, सुजनानां-सर्वपापविरतानां यो जनः-समूहस्तस्य वर्जनीयं-परिहरणीयं च यत्तत्तथा, ऊर्द्धं च-ऊर्द्धलोको नरकश्च-अधोलोकस्तिर्यक्-तिर्य- ग्लोकः एतल्लक्षणं यत्रैलोक्यं तत्र प्रतिष्ठानं यस्य तत्तथा, जरामरणरोगशोकबहुलं, तत्रान्यत्र जन्मनि जरा- मरणादिकारणत्वात्, उच्यते च—“जो सेवइ किं लहई” (भ्रामं हारेइ दुबलो होइ । पावेइ वेमणस्सं दु- क्खाणि अ अत्तदोसेणं ॥ १ ॥) गाहा [ यः सेवते किं लभते स्थाम हारयति दुर्बलो भवति । प्राप्नोति वैम-</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे अब्रह्म- स्वरूपं सू० १३</p> <p style="text-align: center;">॥ ६५ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
अभ्रह्मनः स्वरूपं	

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१३]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१३]</p> <p>दीप अनुक्रम [१७]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>नस्यं दुःखानि चात्मदोषेण ॥ १ ॥] वधः-ताडनं बन्धः-संयमनं विघातो-मारणमेभिरपि दुष्करो विघातो यस्य तद्वन्धविघातदुर्विघातं, गाढरागाणां हि महापद्यप्यब्रह्मेच्छा नोपशाम्यन्ति, आह च—“कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलः, क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरककपालार्पितगलः । व्रणैः पूयक्लिन्नैः कृमिकुलचितैरावृततनुः, शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हन्त्येव मदनः ॥ १ ॥” दर्शनचारित्रमोहस्य हेतुभूतं-तन्निमित्तं, ननु चारित्रमोहस्य हेतुरिदमिति प्रतीतं, यदाह—“निव्वकसाओ बहुमोहपरिणओ रागदोससंजुत्तो । बंधइ चरित्तमोहं दुविहंपि चरित्तगुणघाई ॥ १ ॥” [तीव्रकषायो बहुमोहपरिणतो रागद्वेषसंयुक्तः बध्नान्ति चारित्रगुणघातिनं द्विविधमपि चारित्रमोहं ॥ १ ॥] द्विविधं-कषायनोकषायमोहनीयभेदात्, यत्पुनर्दर्शनमोहस्य हेतुभूतमिदमिति तन्न प्रतिपद्यामहे, तद्धेतुत्वेनाभणनात्, तथाहि-तद्धेतुप्रतिपादिका गाथैवं श्रूयते—‘अरिहंतसिद्धचेइअतवसुअगुरुसाहुसंघपडणीओ । बंधति दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेणं ॥ १ ॥’ [अर्हत्सिद्धचैत्यतपस्विश्रुतगुरुसाधुसंघप्रत्यनीकः । बध्नाति दर्शनमोहमनन्तसंसारिको येन ॥ १ ॥] भवतीतीह वाक्यशेषः, सत्यं, किन्तु स्वपक्षान्ब्रह्मासेवनेन या सङ्घप्रत्यनीकता तथा दर्शनमोहं बध्नतोऽब्रह्मचर्यं दर्शनमोहहेतुतां न व्यभिचरति, भण्यते च स्वपक्षान्ब्रह्मासेवकस्य मिथ्यात्वबन्धोऽन्यथा कथं दुर्लभबोधिरसाधुभिहितः, आह च—“संजइचउत्थभंगे चेइयदन्वे य पवयणुड्ढाहे । रिसिघाए य चउत्थे मूलग्गी बोहिलाभस्स ॥ १ ॥”त्ति, [ संयतीचतुर्थभङ्गे चैत्यद्रव्यभक्षणादौ च प्रवचनोड्ढाहे । ऋषिघाते च चतुर्थे मूलेऽग्निबोधि-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
<p>अब्रह्मनः स्वरूपं</p>	

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१३]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१३]</p> <p>दीप अनुक्रम [१७]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६६ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>लाभस्य ॥ १ ॥ ] चिरपरिचितं-अनादिकालासेवितं चिरपरिगतं वा पाठः अनुगतं-अनवच्छिन्नं दुरन्तं-दुष्ट- फलं चतुर्थमधर्मद्वारं-आश्रवद्वारमिति । अब्रह्मस्वरूपमुक्तं, अथ तदेकार्थिकद्वारमाह— तस्स य णामाणि गोत्राणि इमाणि ह्येति तीसं, तंजहा—अवंभं १ मेहुणं २ चरंतं ३ संसर्गि ४ सेवणा- धिकारो ५ संकप्पो ६ बाहणा पदाणं ७ दप्पो ८ मोहो ९ मणसंखेवो १० अणिगहो ११ बुग्गहो १२ विघाओ १३ विभंगो १४ विब्भमो १५ अधम्मो १६ असीलया १७ गामधम्मतित्ती १८ रती १९ राग- कामभोगमारो २१ वेरं २२ रहस्सं २३ गुज्झं २४ बहुमाणो २५ वंभचेरविग्घो २६ वावत्ति २७ विराहणा २८ पसंगो २९ कामगुणो ३० त्तिविय तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेज्जाणि ह्येति तीसं ( सूत्रं १४ ) ‘तस्से’त्यादि सुगमं, अब्रह्म-अकुशलानुष्ठानं १ ‘मैथुनं’ मिथुनस्य-युग्मस्य कर्म २ चतुर्थं आश्रवद्वारमिति गम्यते, पाठान्तरेण ‘चरंतं’ति चरत्-विश्वं व्याप्नुवत् ३ संसर्गिः-सम्पर्कः ततः, स्त्रीपुंससङ्गविशेषरूपत्वात् संसर्गजन्यत्वाद्वाऽस्य संसर्गिगरित्युच्यते, आह च—“नामापि स्त्रीति संह्रादि, विकरोत्येव मानसम् । किं पु- नर्दर्शनं तस्या, विलासोल्लासितध्रुवः? ॥ १ ॥” ४ सेवनानां-चौर्यादिप्रतिसेवनानामधिकारो-नियोगः सेवना- धिकारः, अब्रह्मप्रवृत्तो हि चौर्याद्यनर्थसेवास्वधिकृतो भवति, आह च—“सर्वेऽनर्था विधीयन्ते, नरैरर्थक- लालसैः । अर्थस्तु प्रार्थ्यते प्रायः, प्रेयसीप्रेमकामिभिः ॥ १ ॥” ५ सङ्कल्पो-विकल्पस्तत्प्रभवत्वादस्य सङ्कल्प इत्युक्तं, उक्तं च—“काम! जानामि ते रूपं, सङ्कल्पपात्किल जायसे । न त्वां सङ्कल्पयिष्यामि, ततो मे न भ-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे अब्रह्म- नामानि सू० १४</p> <p style="text-align: center;">॥ ६६ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अब्रह्मनः त्रिंशत् नामानि</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१४]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१४]</p> <p>दीप अनुक्रम [१८]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px 0;"> <p>विष्यसी ॥१॥” ति ६ बाधना बाधहेतुत्वात् केषामित्याह—‘पदानां’ संयमस्थानां प्रजानां वा-लोकानां, आह च—“यच्चेह लोकेऽद्यपरे नराणामुत्पद्यते दुःखमसद्यवेगम् । विकाशनीलोत्पलचारुनेत्रा, मुक्त्वा स्त्रियस्तत्र न हेतुरन्यः ॥ १ ॥” ७ दर्पणो-देहदृशता तज्जन्यत्वादस्य दर्पण इत्युच्यते, आह च—“रसा पगामं न निसेवि-यच्वा, पायं रसा दित्तिकरा हवन्ति । दित्तं च कामा समभिद्रवन्ति, द्रुमं जहा साउफलं तु पक्खी ॥ १ ॥” [रसाः प्रकामं न निषेवितव्याः प्रायो रसा दित्तिकरा भवन्ति । द्रुमं च कामाः समभिद्रवन्ति द्रुमं यथा खादु-फलं तु पक्षिणः ॥ १ ॥] अथवा दर्पणः-सौभाग्याद्यभिमानस्तत्प्रभवं चेदं, नहि प्रशमाहैन्याद्वा पुरुषस्यात्र प्रवृत्तिः सम्भवतीति दर्पण एवोच्यते, तदुक्तम्—“प्रशान्तबाहिचित्तस्य, सम्भवन्त्यखिलाः क्रियाः । मैथु-नव्यतिरेकिण्यो, यदि रागं न मैथुनम् ॥ १ ॥” ८ मोहो-मोहनं वेदरूपमोहनीयोदयसम्पाद्यत्वादस्याज्ञानरू-पत्वाद्वा मोह इत्युच्यते, आह च—“दृश्यं वस्तु परं न पश्यति जगन्धः पुरोऽवस्थितं, रागान्धस्तु यदस्ति तत्परिहरन् यन्नास्ति तत्पश्यति । कुन्देन्दीवरपूर्णचन्द्रकलशश्रीमल्लतापल्लवानारोप्याशुचिराशिषु प्रियतमागा-त्रेषु यन्मोदते ॥१॥” ९ मनःसंश्लोभः-चित्तचलनं तद्विनेदं न जायते इति तदेवोच्यते, उच्यते च—“निकृडक-डक्खकंङ्गपहारनिम्बिन्नजोगसन्नाहा । महरिसिजोहा जुवईण जंति सेवं विगयमोहा ॥१॥” [निकृष्टकटाक्ष-काण्डप्रहारनिम्बिन्नयोगसन्नाहाः । महर्षयो योद्धारो युवतीनां सेवां यान्ति विगतमोहाः ॥ १ ॥ उपशान्तमोहा अपि ] १० अनिग्रहः-अनिषेधो मनसो विषयेषु प्रवर्त्तमानस्येति गम्यते, एतत्प्रभवत्वाच्चास्यानिग्रह इत्युक्तं ११</p> </div> <p>प्र. व्या. १२</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p>
	<p>अब्रह्मनः त्रिंशत् नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१४]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१४]</p> <p>दीप अनुक्रम [१८]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>‘विग्रहो’त्ति विग्रहः—कलहः तद्धेतुत्वादस्य विग्रह इत्युच्यते, उक्तं च—“ये रामरावणादीनां, सङ्ग्रामा ग्र- स्तमानवाः । श्रूयन्ते स्त्रीनिमित्तेन, तेषु कामो निबन्धनम् ॥ १ ॥” अथवा ‘वुग्रहो’त्ति व्युग्रहो—विपरीतो- ऽभिनिवेशस्तत्प्रभवत्वाच्चास्य तथैवोच्यते, यतः कामिनामिदं स्वरूपम्—“दुःखात्मकेषु विषयेषु सुखाभिमानः, सौख्यात्मकेषु नियमादिषु दुःखबुद्धिः । उत्कीर्णवर्णपदपङ्क्तिरिवान्यरूपा, सारूप्यमेति विपरीतगतिप्रयोगात् ॥ १ ॥” १२ विघातो गुणानामिति गम्यते, यदाह—‘जइ ठाणी’ [ जइ मोणी जइ मुंडी वक्कली तवस्सी वा । पत्थंतो अ अबंभं बंभावि न रोयए मज्झं ॥ १ ॥ तो पठियं तो गुणियं तो मुणियं तो य चेइओ अप्पा । आवडियपेह्लियामंतिओऽवि जइ न कुणइ अकज्जं ॥ २ ॥ यदि कायोत्सर्गवान् यदि मौनी यदि मुण्डः व- ल्कली तपस्वी वा । प्रार्थयन् अब्रह्म ब्रह्मापि न रोचते मम ॥ १ ॥ तर्हि पठितं तर्हि गुणितं तर्हि मुणितं त- र्हि चेतित आत्मा ॥ आपत्तिप्रेरितोऽपि यदि न करोत्यकार्यम् ॥ २ ॥ ] गाथाद्वयं १३ विभङ्गो—विराधना गु- णानामेव १४ विभ्रमो—भ्रान्तत्वमनुपादेयेष्वपि विषयेषु परमार्थबुद्ध्या प्रवर्त्तनात् विभ्रमाणां वा—मदनवि- काराणामाश्रयत्वाद्भिभ्रम इति १५ अधर्मः अचारित्ररूपत्वात् १६ अशीलता—चारित्रवर्जितत्वम् १७ ग्राम- धर्माः—शब्दादयः कामगुणास्तेषां तप्तिः—गवेषणं पालनं वा ग्रामधर्मतप्तिः अब्रह्मपरो हि तां करोतीति अ- ब्रह्मापि तथोच्यते १८ रतिः—रतं निधुवनमित्यर्थः १९ रागो—रागानुभूतिरूपत्वाद्स्य क्वचिद्रागचिन्तेतिपाठः २० कामभोगैः सह मारो—मदनः मरणं वा कामभोगमारः २१ वैरं वैरहेतुत्वात् २२ रहस्यमेकान्तकृत्यत्वात्</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे अब्रह्म- नामानि सू० १४</p> <p style="text-align: center;">॥ ६७ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
	<p>अब्रह्मनः त्रिंशत् नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१४]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१४]</p> <p>दीप अनुक्रम [१८]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>२३ गुह्यं गोपनीयत्वात् २४ बहुमानः बहूनां मतत्वात् २६ ब्रह्मचर्यं-मैथुनविरमणं तस्य विप्रो-व्याघातो यः स तथा २६ व्यापत्तिः-अंशो गुणानामिति गम्यते २७ एवं विराधना २८ प्रसङ्गः-कामेषु प्रसजनमभिष्वङ्गः २९ कामगुणो-मकरकेतुकार्यं ३० इतिः-उपप्रदर्शनेऽपिचेति समुच्चये तस्य-अब्रह्मणः एतानि-उपदर्शितस्व- रूपाणि एवमादीनि-एवंप्रकाराणि नामधेयानि त्रिंशत् भवन्ति, काक्ताऽध्येयं, प्रकारान्तरेण पुनरन्यान्यपि भवन्तीति भावः । उक्तं यन्नामेति द्वारं, अथ ये तत् कुर्वन्तीति द्वारमुच्यते—</p> <p>तं च पुण निसेवंति सुरगणा सअच्छरा मोहमोहियमती असुरभुयगगरुलविज्जुजलणदीवउदहिदिसिपव- णथणिया अणवनिपणवंनियइसिवादियभूयवादियकंदियमहाकंदियकूहंडपयंगदेवा पिसायभूयजक्खरक्खस- किंनरकिंपुरिसमहोरगगंधवा ८ तिरियजोइसविमाणवासिमणुयगणा जलयरथलयरखहयरा य मोहपडि- बद्धचित्ता अवितण्हा कामभोगतिसिया तण्हाए बलवईए महईए समभिभूया गदिया य अतिमुच्छिया य अबंभे उस्सण्णा तामसेण भावेण अणुम्मुक्का दंसणचरित्तमोहस्स पंजरं पिव करंति अज्जोऽन्नं सेवमाणा, भुज्जो असुरसुरतिरियमणुअभोगरतिविहारसंपउत्ता य चक्कवट्टी सुरनरवतिसकया सुरवरुव्व देवलोए भरहणगणगरणियमजणवयपुरवरदोणमुहखेडकब्बडमडंबसंवाहपट्टणसहस्समंडियं धिमियमेयणियं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं नरसीहा नरवई नरिंदा नरवसभा मरुयवसभकप्पा अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणा सोमा रायवंसतिलगा रविससिसंखवरचक्कसोत्थियपडागजवमच्छकुम्भरहवरभगभवणविमाण-</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>
	<p>अब्रह्मणः त्रिंशत् नामानि</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६८ ॥</p> </div> <div style="flex-grow: 1; text-align: center;"> <p>तुरयतोरणगोपुरमणिरयणनंदियावत्तमुसलणंगलसुरइयवरकप्परुक्खमिगवतिभहासणसुरुविथूभवरमउडस- रियकुंडलकुंजरवरवसभदीवमंदिरगरुलद्धयइंदकेउदप्पणअट्टावयचाववाणनक्खत्तमेहमेहलवीणाजुगलत्तदा- मदाभिणिकमंडलुकमलघंटावरपोतसूइसागरकुमुदागरमगरहारगागरनेउरणगणगरवइरकिन्नरमयूरवररायहं- ससारसचकोरचक्रवागमिहुणचामरखेडगपव्वीसगविपंचिवरतालियंटसिरियाभिसेयमेइणिखगंगकुसविमलक- लसभिंगारवद्धमाणगपसत्थउत्तमविभत्तवरपुरिसलक्खणधरा वत्तीसं वररायसहस्साणुजायमग्गा चउस- ट्टिसहस्सपवरजुवतीण णयणकंता रत्ताभा पउमपम्हकोरंटगदामचंपकसुतयवरकणकमिहसवन्ना सुजायसव्वं- गसुंदरंगा महग्घवरपट्टणुग्गयविचित्तरागणपेणिणिम्मियदुगुल्लवरचीणपट्टकोसेज्जसोणीसुत्तकविभूसियंगा वरसुरभिगंधवरचुण्णवासवरकुसुमभरियसिरया कप्पियल्लेयायरियसुकयरइतमालकडंगयतुडियपवरभूसण- पिणद्धदेहा एकावलिकंठसुरइयवच्छा पालंउपलंउमाणसुकयपडउत्तरिज्जमुद्धियापिंगलंगुल्लिया उज्जलनेवत्थ- रइयचेल्लगविरायमाणा तेएण दिवाकरोव्व दित्ता सारयनवत्थणियमहुरगंभीरनिद्धघोसा उप्पन्नसमत्तरयण- चक्करयणप्पहाणा नवनिहिवइणो समिद्धकोसा चाउरंता चाउराहिं सेणाहिं समणुजातिज्जमाणमग्गा तुर- गवती गयवती रहवती नरवती विपुलकुलवीसुयजसा सारयससिसकलसोमवयणा सूरा तेलोक्कनिग्गयप- भावलद्धसद्दा समत्तभरहाहिवा नरिंदा ससेलवणकाणणं च हिमवंतसागरतं धीरा भूत्तुण भरहवासं जिय- सत्तू पवररायसीहा पुव्वकडतवप्पभावा निविट्ठसंचियसुहा अणेगवाससयमायुवंतो भज्जाहि य जणवय-</p> </div> <div style="border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः चक्रवर्त्ति- वर्णनं सू० १५  ॥ ६८ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्पहाणाहिं लालियंता अतुलसद्दफरिसरसरुवगंधे य अणुभवेत्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं ।</p> <p>तच्च पुनः-अब्रह्म निषेवन्ते सुरगणा-वैमानिकदेवसमूहाः साप्सरसः-सदेवीकाः देव्योऽपि सेवन्त इत्यर्थः, मोहेन मोहिता मतिर्येषां ते तथा, असुरा-असुरकुमाराः ‘भ्रुयग’त्ति नागकुमाराः गरुडाः-गरुडध्वजाः सुपर्ण-कुमाराः ‘विज्जु’त्ति विद्युत्कुमाराः ‘जलण’त्ति अग्निकुमाराः ‘दीव’त्ति द्वीपकुमाराः ‘उदहि’त्ति उदधिकुमाराः ‘दिसि’त्ति दिक्कुमाराः ‘पवण’त्ति वायुकुमाराः ‘थणिय’त्ति स्तनितकुमाराः एते दश भवनपतिभेदाः एतेषां द्वन्द्वः, अणपन्निकाः पणपन्निकाः ऋषिवादिकाः भूतवादिकाः ऋन्दिता महाऋन्दिताः कूष्माण्डाः पतङ्गा इत्यष्टौ व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्त्तिनो व्यन्तरजातिविशेषा एव एषामपि द्वन्द्वस्ते च ते देवाश्चेति कर्मधारयः तथा पिशाचादयोऽष्टौ व्यन्तरभेदाः प्रतीताः, ‘तिरियजोतिसविमाणवासि’त्ति तिरश्चि-तिर्यग्लोके यानि ज्योतिष्कविमानानि तेषु निवसन्ति ये ते तथा ज्योतिष्का इत्यर्थः मनुजा-मानवा एतेषां द्वन्द्वः ततस्तेषां ये गणाः-समूहास्ते तथा, जलचरादयः मोहप्रतिबद्धचित्ता इति प्रतीतं, अवितृष्णाः-प्राप्तेषु कामेषु अविगत-तृष्णा इत्यर्थः, कामभोगतृषिता-अप्राप्तकामभोगेच्छवः, एतदेव प्रपञ्चयन्नाह-तृष्णया-भोगाभिलाषेण बल-वत्या-तीव्रया महत्या-महाविषयया समभिभूताः-परिभूताः ग्रथिताश्च-विषयैः सह सन्दर्भिताः अतिमू-च्छिताश्च-विषयदोषदर्शनं प्रत्यतिमूढतामुपगताः अब्रह्मणि अवसन्नाः-पङ्क इव निमग्ना तामसेन भावेन-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px 0;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ६९ ॥</p> <p>अज्ञानपरिणामेनानुमुक्ता-अविमुक्ताः तथा दर्शनचारित्रमोहस्य-द्विरूपमोहनीयकर्मणः बन्धनमिति गम्यते पञ्जरमिव-आत्मशकुनेर्बन्धनस्थानमिव कुर्वन्ति-विद्धति सुरादय इति प्रकृतं, कथं?—‘अन्योऽन्यस्य’ परस्परस्यासेवनया-अब्रह्माश्रितभोगेन, क्वचित्पाठः ‘अण्णोऽण्णं सेवमाणंति कण्ठ्यश्च, पूर्वोक्तप्रपञ्चार्थमेवाह-भूयः-पुनरपीदं विशेषेणाभिधीयते-असुरसुरतिर्यङ्गानुस्येभ्यो ये भोगाः-शब्दादयस्तेषु या रतिः-आसक्तिस्तप्रधाना ये विहाराः-विचित्रक्रीडाः तैः सम्प्रयुक्ता ये ते तथा, ते च के ते इत्याह-चक्रवर्त्तिनः-राजातिशयाः ससागरां भुक्त्वा वसुधां मण्डलिकत्वं च भुक्त्वा भरतवर्षं चक्रवर्त्तित्वेऽतुलशब्दादींश्चानुभूयोपनमन्ति मरणधर्मं अविदृप्ताः कामानामिति सम्बन्धः, किंविधास्ते इत्याह-सुरनरपतिभिः-सुरेश्वरनेश्वरैः सत्कृताः-पूजिताः ये ते तथा, के इवानुभूयेत्याह-सुरवरा इव-देवप्रवरा इव, क?—देवलोके-स्वर्गे, तथा भरतस्य-भारतवर्षस्य सम्बन्धिनानां नगानां-पर्वतानां नगराणां-करविरहितस्थानानां निगमानां-वणिग्जनप्रधानस्थानानां जनपदानां-देशानां पुरवराणां-राजधानीरूपाणां द्रोणमुखानां-जलस्थलपथयुक्तानां खेटानां-धूलीप्राकाराणां कर्बटानां-कुनगराणां मडम्बानां-दूरस्थितसन्निवेशान्तराणां संवाहानां-रक्षार्थं धान्यादिसंवहनोचितदुर्गविशेषरूपाणां पत्तनानां च-जलपथस्थलपथयोरेकतरयुक्तानां सहस्रैर्मण्डिता या सा तथा तां, स्तिमितमैदिनीकां-निर्भयत्वेन स्थिरविश्वम्भराश्रितजनां एकमेव छत्रं यत्र एकराजत्वात्सा एकछत्रा तां ससागरां तां भुक्त्वा-पालयित्वा वसुधां-पृथ्वीं भरतार्द्रादिरूपां माण्डलिकत्वे, एतच्च पदद्वयमुत्तरत्र ‘हिमवन्त-</p> <p style="text-align: right;">४ अधर्म- द्वारे मैथुनासे- विनः चक्रवर्त्ति- वर्णनं सू० १५  ॥ ६९ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>सागरतं धीरो भोक्तृण भरहवासमिति समस्तभरतक्षेत्रभोक्तृत्वापेक्षया भणनादवसीयते, नरसिंहाः शूर- त्वात् नरपतयः तस्त्वामित्वात् नरेन्द्राः तेषां मध्ये ईश्वरत्वात् नरवृषभा गुणैः प्रधानत्वात् मरुद्वृषभकल्पाः- देवनाथभूताः मरुजवृषभकल्पा वा-मरुदेशोत्पन्नगवयभूता अङ्गीकृतकार्यभारनिर्वाहकत्वात् अभ्यधिकं- अत्यर्थं राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमानाः सौम्या-अदारुणा नीरुजा वा राजवंशतिलकाः-तन्मण्डनभूताः, तथा रविशङ्खादीनि वरपुरुषलक्षणानि ये धारयन्ति ते तथा, तत्र रविः शशी शङ्खो वरचक्रं स्वस्तिकं पताका यवो मत्स्यश्च प्रतीताः कूर्मकः-कच्छपः रथवरः-प्रतीतः भगो-योनिः भवनं-भवनपतिदेवावासो विमानं-वैमा- निकनिवासः तुरगस्तोरणं गोपुरं च प्रसिद्धानि मणिः-चन्द्रकान्तादि रत्नं-कर्कतनादि नन्द्यावर्त्तो-नवक्रोणः स्वस्तिकविशेषः मुशलं लाङ्गलं च प्रसिद्धे सुरचितः-सुष्टुकृतः सुरतिदो वा-सुखकरो यो वरः कल्पवृक्षः- कल्पद्रुमः स तथा सृगपतिः-सिंहो भद्रासनं-सिंहासनं सुरूची रुढिगम्या आभरणविशेष इति केचित् स्तूपः-प्रतीतः वरमुकुटं-प्रवरशेखरः ‘सरिय’न्ति मुक्तावली कुण्डलं-कर्णाभरणं कुञ्जरो वरवृषभश्च प्रतीतौ द्वीपो-जलभृतो भूदेशो मन्दरो-मेरुः मन्दिरं वा गृहं गरुडः-सुपर्णः ध्वजः-केतुः इन्द्रकेतुः-इन्द्रयष्टिः दर्पण- आदर्शः अष्टापदं-चूतफलकं कैलाशः पर्वतविशेषो वा चापं च-धनुः बाणो-मार्गणः नक्षत्रं मेघश्च प्रतीतौ मेखला-काञ्ची वीणा-प्रतीता युगं-यूपः छत्रं-प्रतीतं दाम-माला दाक्षिणी-लोकरुढिगम्या कमण्डलुः-कु- ण्डिका कमलं घण्टा च प्रतीते वरपोतो-बोधित्थः शूची-प्रतीता सागरः-समुद्रः कुमुदाकरः-कुमुदखण्डः</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेववृत्तिः ॥ ७० ॥</p> <p>मकरो-जलचरविशेषः हारः-प्रतीतः ‘गागर’स्ति स्त्रीपरिधानविशेषः नूपुरं-पादाभरणं नगः-पर्वतो नगरं-प्रतीतं वैरं-वज्रं किन्नरो-वाद्यविशेषो देवविशेषो वा मयूरवरराजहंससारसचकोरचक्रवाकमिथुनानि प्रसिद्धानि चामरं-प्रकीर्णकं खेटकं-फलकं पञ्चीसकं विपञ्ची वाद्यविशेषौ वरतालवृन्तं-व्यञ्जनविशेषः श्रीकाभिषेको-लक्ष्म्यभिषेचनं मेदिनी-पृथ्वी खड्गः-असि अङ्कुशश्च-सृणिर्विमलकलशो भृङ्गारश्च भाजनविशेषः वर्द्धमानकं-शरावं पुरुषारूढः पुरुषो वा एतेषां द्वन्द्वः तत एतानि प्रशस्तानि-माङ्गल्यानि उत्तमानि-प्रधानानि विभक्तानि च-विविक्तानि यानि वरपुरुषाणां लक्षणानि तानि धारयन्ति ये ते तथा, तथा द्वात्रिंशता राजवराणां सहस्रैरनुयातः-अनुगतो मार्गो येषां ते तथा, चतुःषष्टिः सहस्राणि यासां तास्तथा ताश्च ताः प्रवरयुवतयश्च-तरुण्य इति समासः तासां नयनकान्ताः-लोचनाभिरामाः परिणयनभर्तारो वा रक्ता-लोहिता आभा-प्रभा येषां ते रक्ताभाः ‘पउमपम्ह’स्ति पद्मगर्भाः कोरण्टकदाम-कोरण्टकाभिधानपुष्पस्रक् चम्पकः-कुसुमविशेषः सुतसवरकनकस्य यो निकषो-रेखा स तथा तत एतेषामिव वर्णो येषां ते तथा, सुजातानि-सुनिष्पन्नानि सर्वाण्यङ्गानि-अवयवा यत्र तदेवंविधं सुन्दरमङ्गं-शरीरं येषां ते तथा महार्घाणि-महामूल्यानि वरपत्तनोद्गतानि-प्रवरक्षेत्रविशेषोत्पन्नानि विचित्ररागाणि-विविधरागरञ्जितानि एणी-हरिणी प्रेणी च-तद्विशेष एव तच्चर्मनिर्मितानि यानि वस्त्राणि तानि एणीप्रेणीनिर्मितानि उच्यन्ते, श्रूयन्ते च निषीथे ‘कालसृगाणि नीलसृगाणि चे’त्यादिभिर्वचनैर्मृगचर्मवस्त्राणीति, तथा दुकूलानीति दुकूलो-वृक्षविशेषस्तस्य बल्कं गृहीत्वा</p> <p>४ अधर्मद्वारे मैथुनासेविनः चक्रवर्त्तिवर्णनं सू० १५</p> <p>॥ ७० ॥</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>उदूखले जलेन सह कुट्टयित्वा बुसीकृत्य सूत्रीकृत्य च वृथन्ते यानि तानि दुकूलानि वरचीनानीति-दुकूल- वृक्षवल्कस्यैव यानि अभ्यन्तरहीरैर्निष्पाद्यन्ते सूक्ष्मतराणि च भवति तानि चीनदेशोत्पन्नानि वा चीना- न्युच्यन्ते, पटसूत्रमयानि-पट्टानि कौशेयकानि-कौशेयककारोद्भवानि बस्त्राणि श्रोणीसूत्रकं-कटीसूत्रकं एभि- र्विभूषितान्यङ्गानि येषां ते तथा, वाचनान्तरे निर्मितस्थाने क्षौमिक इति पठ्यते, तत्र क्षौमिकाणि-कार्पा- सिकानि वृक्षेभ्यो निर्गतानीत्यन्ये अतसीमयानीत्यपरे, तथा वरसुरभिगन्धाः-प्रधानमनोज्ञपुटपाकलक्षणा गन्धाः तथा वरचूर्णरूपा वासास्ताडिता इत्यर्थः वरकुसुमानि च प्रतीतानि तेषां भरितानि-भृतानि शि- रांसि-मस्तकानि येषां ते तथा, कल्पितानि-ईप्सितानि छेकाचार्येण-निपुणशिल्पिना सुकृतानि-सुष्टु विहि- तानि रतिदानि-सुखकारीणि माला-आभरणविशेषः कटकानि-कङ्कणानि पाठान्तरेण कुण्डलानि-प्रती- तानि अङ्गदानि-बाह्याभरणविशेषाः तुटिका-बाहुरक्षिकाः प्रवरभूषणानि च-मुकुटादीनि मालादीन्येव वा प्रवरभूषणानि पिनडानि-बद्धानि देहे येषां ते तथा, एकावली-विचित्रमणिका एकसरिका कण्ठे-गले सुर- चिता वक्षसि-हृदये येषां ते तथा, प्रलम्बो-दीर्घः प्रलम्बमानो-लम्बमानः सुकृतः-सुरचितः पटशाटकः-उत्त- रीयं उपरिकायवस्त्रं यैस्ते तथा मुद्रिकाभिः-अङ्गुलीयकैः पिङ्गलाः-पिङ्गाः अङ्गुल्यो येषां ते तथा, ततः कर्म- धारयः, उज्ज्वलं नेपथ्यं-वेषो रचितं रतिदं वा ‘चिह्नगं’ति लीनं दीप्यमानं वा विराजमानं-शोभमानं येषां तेन वा विराजमाना ये ते तथा, तेजसा दिवाकर इव दीप्ता इति प्रतीतं, शारदं-शरत्कालीनं यत् नवं-उत्प-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b>  <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७१ ॥</p> <p>यमानावस्थं न तु विरामावस्थं स्तनितं-मेघगर्जितं तद्वन्मधुरो गम्भीरः स्निग्धश्च घोषो येषां ते तथा, वाच- नान्तरे 'सागरनवे'त्यादि दृश्यते, उत्पन्नसमस्तरत्नाश्च ते चक्ररत्नप्रधानाश्चेति विग्रहः, रत्नानि च तेषां चतु- र्दश, तद्यथा—'सेणावह १ गाहावह २ पुरोहित्य ३ तुरग ४ वहुह ५ गय ६ इत्थी ७ । चक्रं ८ छत्तं ९ चम्मं १० मणि ११ कागणि १२ खग्ग १३ दंडो य १४ ॥ १ ॥” नवनिधिपतयः, निधयश्चैवम्—“नेसप्यं १ पंडु २ पिंगलय ३ सव्वरयणे ४ तथा महापउमे ५ । काले य ६ महाकाले ७ माणवग महानिही ८ संखे ९ ॥ १ ॥” समृद्धकोशा इति प्रतीतं, चत्वारोऽन्ता-भूविभागाः पूर्वसमुद्रादिरूपा येषां ते तथा ते एव चातुरन्ताः, तथा चतुर्भिरंशैः-हस्त्यश्वरथपदातिलक्षणैरुपेताश्चातुर्यस्ताभिः सेनाभिः समनुयायमानमार्गाः-समनुगम्यमान- पथाः, एतदेव दर्शयति—तुरगपतय इत्यादि, विपुलकुलाश्च ते विश्रुतयशसश्च-प्रतीतख्यातय इति विग्रहः, शारदशशी यः सकलः-पूर्णस्तद्वत्सौम्यं वदनं येषां ते तथा, शूराः-शौण्डीरास्त्रैलोक्यनिर्गतप्रभावाश्च ते लब्धशब्दाश्च-प्रासख्यातय इति विग्रहः, समस्तभरताधिपा नरेन्द्रा इति प्रतीतं, सह शैलैः-पर्वतैः वनैः-नग- रविप्रकृष्टैः काननैश्च-नगरासन्नैर्यत्तत्तथा हिमवत्सागरान्तं धीरा भुक्त्वा भरतवर्षं जितशत्रवः प्रवरराजसिंहाः पूर्वकृततपःप्रभावा इति प्रतीतं, निर्विष्टं-परिभुक्तं सञ्चितं-पोषितं सुखं यैस्ते तथा, अनेकवर्षशतायुष्मन्तः भार्याभिश्च जनपदप्रधानाभिर्लाल्यमानाः-विलास्यमानाः अतुला-निरुपमा ये शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्ते</p> <p style="text-align: right;">४ अधर्म- द्वारे मैथुनासे विनः चक्रवर्ति- वर्णनं सू० १५  ॥ ७१ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१५...]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तथा तांश्चानुभूय, तेऽपि आसतामपरे, उपनमन्ति-प्राप्नुवन्ति मरणधर्म-मृत्युलक्षणं जीवपर्यायं अवितृसाः- अतृसाः कामानां-अब्रह्माङ्गानाम् ।</p> <p>भुज्जो भुज्जो बलदेववासुदेवा य पवरपुरिसा महाबलपरक्कमा महाधणुवियट्टका महासत्तसागरा दुद्धरा धणुद्धरा नरवसभा रामकेसवा भायरो सपरिसा वसुदेवसमुद्दविजयमादियदसाराणं पज्जुन्नपतिवसंब- अनिरुद्धनिसहउम्भुयसारणयसुमुहदुम्मुहादीण जायवाणं अद्दुट्टाणवि कुमारकोडीणं हिययदयिया दे- वीए रोहिणीए देवीए देवकीए य आणंदहिययभावनंदणकरा सोलसरायवरसहस्साणुजातमग्गा सोलस- देवीसहस्सवरणयणहिययदइया णाणामणिकणगरयणमोत्तियपवालधणधन्नसंचयरिद्धिसमिद्धकोसा हय- गयरहसहस्ससामी गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंबाहसहस्सधिमियणिब्बुयपमुदितजण- विविहसासनिप्फज्जमाणमेइणिसरसरियतलागसेलकाणणआरामुज्जाणमणाभिरामपरिमंडियस्स दाहिणहुवेय- ट्टुगिरिविभत्तस्स लवणजलहिपरिगयस्स छविवहकालगुणकामजुत्तस्स अद्धभरहस्स सामिका धीरकित्तिपु- रिसा ओहवला अइवला अनिहया अपराजियसत्तुमहणरिपुसहस्समाणमहणा साणुक्कोसा अमच्छरी अ- चवला अचंडा मितमंजुलपलावा हसियगंभीरमहुरभणिया अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खणवंजणगु- णोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकंतपियदंसणा अमरिसणा पयं- डडंडप्पयारगंभीरदरिसणिज्जा तालद्धउव्विद्धगरुलकेऊ बलवगगज्जंतदरितदप्पितमुट्टियचाणूरमूरगा रिद्ध-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="324 375 526 1077" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७२ ॥</p> </div> <div data-bbox="526 375 1792 1077" style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>वसभघातिणो केसरिमुहविष्फाडगा दरितनागदम्पमहणा जमलज्जुणभंजगा महासउणिपूतणारिवू कंसमउ- डमोडगा जरासिंधमाणमहणा तेहि य अविरलसमसहियचंडमंडलसमप्पभेहिं सूरमिरीयकवयं विणि- म्मुयंतेहिं सपतिदंडेहिं आयवत्तेहिं धरिज्जंतेहिं विरायंता ताहि य पवरगिरिकुहरविहरणसमुट्टियाहिं निरु- वहयचमरपच्छिमसरीरसंजाताहिं अमइलसियकमलविमुकुलुज्जलितरयतगिरिसिहरविमलससिकिरणसरिस- कलहोयनिम्मलाहिं पवणाहयचवलचलियसललियपणच्चियवीइपसरियखीरोदगपवरसागरुप्पूरचंचलाहिं माणससरपसरपरिचियावासविसदवेसाहिं कणगगिरिसिहरसंसिताहिं उवाउप्पातचवलजयिणसिग्घवेगाहिं हंसवधूयाहिं चेव कलिया नाणामणिकणगमहरिहतवणिज्जुलविचित्तडंडाहिं सललियाहिं नरवतिसिरि- समुदयप्पगासणकरीहिं वरपट्टणग्गयाहिं समिद्धरायकुलसेवियाहिं कालागुरुपवरकुंदुरुकतुरुकधूववसवास- विसदगंधुद्धूयाभिरामाहिं चिलिकाहिं उभयोपासंपि चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं सुहसीतलवातवीति- यंगं अजिता अजितरहा हलमुसलकणगपाणी संखचक्कगयसत्तिणंदगधरा पवरुज्जलसुकतविमलकोधूभति- रीडधारी कुंडलउज्जोवियाणणा पुंडरीयणयणा एगावलीकंठरतियवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा स- व्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतवियसंतचित्तवणमालरतियवच्छा अट्टसयविभत्तलक्खणपसत्थमुंदरवि- राइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्रमविलसियगती कडिसुत्तगनीलपीतकोसिज्जवाससा पवरदित्ततेया सा- रयनवथणियमहरगंभीरनिद्धघोसा नरसीहा सीहविक्रमगई अत्थमियपवररायसीहा सोमा वारवइपुन्नचंदा</p> </div> <div data-bbox="1792 375 2004 1077" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः बलदेव- वासुदेव- वर्णनं सू० १५</p> <p style="text-align: center;">॥ ७२ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">पुष्पकयतवप्पभावा निविट्टसंचियसुहा अणेगवाससयमातुवंतो भज्जाहि य जणवयप्पहाणाहिं लालियंता अतुलसहफरिसरसरूवगंधे अणुभवेत्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं ॥</p> <p>भूय इति निपातस्तथाऽर्थः बलदेववासुदेवाश्च उपनमन्ति मरणधम्मं अवितृप्ताः कामानामिति सम्बन्धः, कि- म्भृतास्ते?—प्रवरपुरुषा इति प्रतीतं, कथमेवं ते?, यतो ‘महाबलपराक्रमाः’ तत्र बलं—शारीरः प्राणः पराक्रमस्तु —साधिताभिमतफलः पुरुषकारः, अत एव महाधनुर्विकर्षका इति प्रतीतं, महासत्त्वस्य—सत्साहसस्य सागरा इव सागरा ये ते तथा दुर्द्धराः—प्रतिस्पर्द्धिनामनिवार्याः धनुर्धराः—प्रधानधानुष्किका नरवृषभाः—नराणां प्रधानाः ‘रामकेसव’त्ति इह येष्विति शेषो दृश्यः ततश्च येषु बलदेववासुदेवेषु मध्येऽस्यामवसर्पिण्यां नवमस्थानव- र्त्तिनौ बहुजनप्रतीताद्भुतभूतजनचरितौ ‘अत्थमिया’ इत्यनेन ‘तेवि उवणमन्ति मरणधम्म’मित्यनेन च वक्ष्य- माणपदेन योगः कार्यः, प्रथमाद्विवचनान्तता च सर्वपदानां व्याख्येया ‘वारवइपुण्णचंदा’ इति पदं यावत्, अथवा बलदेवादीनेव नामान्तरेणाह—‘रामकेसव’त्ति नामान्तरेण रामकेशवाः, अथ कीटशास्ते इत्याह— भ्रातरौ द्वन्द्वापेक्षया सपरिषदः—सपरिवाराः तथा वसुदेवसमुद्रविजयौ आदी येषां ते वसुदेवसमुद्रविजया- दिकास्ते च ते दशार्हाश्चेति समासस्तेषां हृदयदयिता इति योगः, एषां च समुद्रविजय आद्यो वसुदेवश्च द- शमः, आह च—“समुद्रविजयोऽक्षोभ्यः, स्तिमितः सागरस्तथा । हिमवानचलश्चैव, धरणः पूरणस्तथा ॥ १ ॥ अभिचन्द्रश्च नवमो, वसुदेवश्च वीर्यवान् ॥” इति, तथा प्रद्युम्नप्रतिवशम्भानिरुद्धनिषधौल्मुकसारणगजसुमु-</p> </div> <p>प्र. व्या. १३</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b>  <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>खटुमुखादीनां यदोरपत्यानां अधुष्टानामपि-अर्द्धाधिकतिसृणामपि कुमारकोटीनां हृदयदयिता-वल्लभाः, इदं चान्तिमवलदेवाद्याश्रितमपि विशेषणं समुदायविशेषणतया अवसेयं, यथा 'राजताः सौवर्णाश्च कुलप-र्वता भवन्ती'त्यत्र सौवर्णा इति मेरुविशेषणमपि पर्वतानां, एवमुत्तरत्रापीति, तथा देव्या रोहिण्या-राम-मानुर्देव्या देवक्याश्च-कृष्णमातुः आनन्दलक्षणो यो हृदयभावस्तस्य नन्दनकरा-वृद्धिकरा ये ते तथा, षोड-शराजवरसहस्रानुयातमार्गाः, षोडशानां देवीसहस्राणां वरनयनानां हृदयदयिता-वल्लभा ये ते तथा, इदं च विशेषणं वासुदेवापेक्षमेव, तथा नानामणिकनकरत्नमौक्तिकप्रवालधनधान्यानां ये सञ्चयास्तल्लक्षणा या ऋद्धिः-लक्ष्मीस्तया समृद्धो-वृद्धिमुपगतः कोशः-भाण्डागारं येषां ते तथा, तत्र मणयः-चन्द्रकान्ताद्याः र-त्नानि-कंकतनादीनि प्रवालानि-विट्टुमाणि धनं-गणिमादि चतुर्विधमिति, तथा हयगजरथसहस्रस्वामिन इति प्रतीतं, ग्रामाकरनगरखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमसंवाहानां व्याख्यातरूपाणां सहस्राणि यत्र भ-रतार्द्धे स्तिमितनिर्वृत्तप्रमुदितजनाः-स्थिरस्वस्थप्रमोदवल्लोका विविधशस्यैः-नानाविधधान्यैर्निष्पद्यमाना-जा-यमाना मेदिनी च-भूमिर्घत्र सरोभिः-जलाशयविशेषैः सरिद्धिश्च-नदीभिः तडागैः-प्रतीतैः शैलैः-गिरिभिः काननैः-सामान्यवृक्षोपेतनगरासन्नवनविशेषैः आरामैः-दम्पतिरतिस्थानलतागृहोपेतवनविशेषैः उद्यानैश्च-पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलवहुजनभोग्यवनविशेषैः मनोऽभिरामैः परिमण्डितं च यद्भरतार्द्धे तत्तथा तस्य, तथा दक्षिणार्द्धे च तद्विजयार्धगिरिविभक्तं चेति विग्रहस्तस्य, तथा लवणजलेन-लवणसमुद्रेण परिगतं-वेष्टितं देशतो यत्तत्तथा</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः वलदेव- वासुदेव- वर्णनं सू० १५</p> <p style="text-align: center;">॥ ७३ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तस्य, तथा षड्विधस्य कालस्य-ऋतुषट्करूपस्य ये गुणाः-कार्याणि तैः क्रमेण-परिपाठ्या युक्तं-सङ्गतं यत्तत्तथा तस्य, कस्येत्याह-अर्द्धभरतस्य-भरतार्द्धस्य, किं?-स्वामिका-नाथाः, तथा धीराणां सतां या कीर्त्तिस्तत्प्रधानाः पुरुषा धीरकीर्त्तिपुरुषाः ओघेन-प्रवाहेणात्रिच्छिन्नं बलं-प्राणो येषां ते तथा, पुरुषान्तरबलान्यतिक्रान्ता अतिबलाः, न निहता अनिहता अपराजितान्-अपरिभूतान् शत्रून् मर्दयन्ति ये ते तथा, अत एव रिपुसहस्रमानमथना इति व्यक्तं, सानुक्रोशाः-सद्यः अमत्सरिणः-परगुणग्राहिणः अचपलाः-कायिकादिचापल्यरहिताः अचण्डाः-कारणाविकलकोपविकलाः मितः-परिमितो मञ्जुलो-मधुरः प्रलापो-जल्पो येषां ते तथा, हसितं गम्भीरमनदृहासं मधुरं च भणितं येषां ते तथा, पाठान्तरेण मधुरपरिपूर्णसत्यवचनाः, अभ्युपगतवत्सला इति प्रतीतं, 'सरण'त्ति शरणदायकत्वात् शरण्याः, तथा लक्षणं-पुरुषलक्षणशास्त्राभिहितं यथा-“अस्थिष्वर्थाः सुखं मांसे, त्वचि भोगाः स्त्रियोऽक्षिषु । गतौ यानं खरे चाज्ञा, सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ १ ॥” इत्यादि, मानोन्मानादिकं-वक्ष्यमाणं व्यञ्जनं-तिलकमषादि तयोर्गुणः-प्रशस्तत्वं तेनोपेता ये ते तथा, लक्षणव्यञ्जनस्वरूपमिदं-“माणुम्माणपमाणादि लक्षणं वंजणं तु मसमाई । सहजं च लक्षणं वंजणं तु पच्छा समुप्पणं ॥ १ ॥” [ मानोन्मानप्रमाणादि लक्षणं व्यञ्जनं तु मषादि । सहजं वा लक्षणं व्यञ्जनं तु पश्चात् समुत्पन्नं ॥ १ ॥ ] इति, तथा मानोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णानि सुजातानि सर्वाण्यङ्गानि-अवयवा यत्र तदेवंविधं सुन्दरमङ्गं-शरीरं येषां ते तथा, तत्र मानं-जलद्रोणप्रमाणता, सा चैवं-जलभृतकुण्डे प्रमातव्ये पुरुषे उपवेशिते</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याकर- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७४ ॥</p> <p>यज्जलं ततो निर्गच्छति तद्यदि द्रोणप्रमाणं भवति तदा स पुरुषो मानोपपन्न इत्युच्यते, उन्मानं तु तुलारोपित- स्यार्द्धभारप्रमाणता, प्रमाणं पुनरात्माङ्गुलेनाष्टोत्तरशताङ्गुलोच्छ्रयता, उक्तं च—“जलद्रोण १ अर्द्धभारं २ समुहाइं समूसिओ व जो णव उ । माणुम्माणपमाणं तिविहं खलु लक्ष्णं एयं ॥१॥”ति, [जलद्रोणोऽर्द्धभारः खमुखानि नव तु समुच्छितो यश्च । मानोन्मानप्रमाणानि त्रिविधं खलु लक्षणमेतत् ॥ १ ॥] मुखस्य द्वा- दशाङ्गुलायामत्वात् नवभिर्मुखैरष्टोत्तरमङ्गुलशतं भवतीति, शशिवत्सौम्य आकारः कान्तं-कमनीयं प्रियं -प्रेमावहं दर्शनं येषां ते तथा ‘अमरिसण’ति अमर्षणा अपराधासहिष्णवः अमसृणा वा-कार्येष्वनलसाः प्रचण्डः प्रकाण्डो वा दुःसाध्यसाधकत्वाद् दण्डप्रचारः-सैन्यविचरणं दण्डप्रकारो वा-आज्ञाविशेषो येषां ते तथा गम्भीराः अलक्ष्यमाणान्तर्वृत्तित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीयाः, ततः कर्मधारयः, तालो-वृक्षवि- शेषो ध्वजः-केतुर्येषां ते तथा उद्विद्धः-उच्छ्रितः गरुडः केतुर्येषां ते तथा ततो द्वन्द्वस्ततस्ते क्रमेण रामकेशवाः ‘बलवग’ति बलवन्तं गर्जन्तं-कोऽस्माकं प्रतिमल्ल? इत्येवंशब्दायमानं दृष्टानामपि मध्ये दर्पितं-सञ्जातदर्पणं मौष्टिकं-मौष्टिकाभिधानं मल्लं चाणूरं-चाणूराभिधानं मल्लमेव कंसराजसम्बन्धिनं मूरयन्ति-चूर्णयन्ति ये ते तथा, तत्र किल मल्लयुद्धे कृष्णवधार्थं कंसनारब्धे बलदेवेन मुष्टिकमल्लो वासुदेवेन चाणूरमल्लो मारित इति, एवमन्यान्यपीतः कानिचिद्विशेषणानि अन्तिमौ बलदेववासुदेवावाश्रित्याधीतानि, रिष्टवृषभघातिनः-कंस- राजसत्करिष्ठाभिधानदृष्टदुष्टमहावृषभमारकाः केसरिमुखविस्फाटकाः इदं च विशेषणं प्रथमवासुदेवमा-</p> <p>४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः बलदेव- वासुदेव- वर्णनं सू० १५  ॥ ७४ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>श्रित्वाधीतं, स हि किल त्रिपृष्ठाभिधानजनपदोपद्रवकारिणं विषमगिरिगुहावासिनं महाकेसरिणं उत्तराध- रोष्ठग्रहणेन विदारयामासेति, इदं च विशेषणं द्वितीयव्याख्यायामेव घटते, प्रथमव्याख्यानपक्षे पुनरेवं पाठः, 'केसिमुहविष्काडगं'ति तत्र केदयभिधानः कंसकसत्को दृष्टोऽश्वस्तन्मुखं च कृष्णः कूर्परप्रक्षेपेण विदारित- वानिति, दृसनागदर्पमथना इदं च कृष्णमाश्रित्वाधीतं, स हि किल यमुनाहृदवासिनं घोरविषं महानागं पद्मग्रहणार्थं हृदेऽवतीर्य निर्मथितवान्, यमलार्जुनभञ्जका इदमपि तमेवाश्रित्वाधीतं, स हि पितृवैरिणौ वि- द्याधरौ रथारूढस्य गच्छतो मारणार्थं पथि विकुर्वितयमलार्जुनवृक्षरूपौ सरथस्य मध्येन गच्छतश्रूर्णनप्रवृत्तौ ह- तवान्, महाशकुनिपूतनारिपवः इदमपि तथैव कृष्णपितृवैरिण्योर्महाशकुनिपूतनाभिधानयोर्विद्याधरयोषितोः विकुर्वितगन्त्रीरूपयोः गन्त्रीसमारोपितचालावस्थकृष्णयोः कृष्णपक्षपातिदेवतया विनिपातितत्वात्, कंसमुकुट- मोटका इदमपि तथैव, यतः कृष्णेन मल्लयुद्धे विनिपातितचाणूरमलेन कंसाभिधानो मधुराराजोऽमर्षादुद्गीर्ण- खड्गो युयुत्सुर्मुकुटदेशे गृहीत्वा सिंहासनात् भुवि समाकृष्य विनिपातितः, तथा जरासन्धमानमथनाः इदमपि तथैव, यतः कृष्णो राजगृहनगरनायकं जरासन्धाभिधानं नवमप्रतिवासुदेवं कंसमारणप्रकुपितं महासङ्ग्रामप्र- वृत्तं विनिपातितवान्, तथा 'तेहि य'ति तैश्चातिशयवद्विरातपत्रैर्विराजमाना इति सम्बन्धः, अविरलानि घन- शलाकावत्त्वेन समानि तुल्यशलाकतया सहितानि-संहितानि अनिम्नानि उन्नतशलाकायोगात् चन्द्रमण्डल- समप्रभाणि च शशधरविम्बवत् प्रभान्ति-वृत्ततया शोभन्ते यानि तानि तथा तैः, सूरमरीचयः-आदित्यकि-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७५ ॥</p> <p>रणाः त इव ये मरीचयः ते आदित्यमरीचयः तेषां कवचमिव कवचं-परिकरः परितो भावात् तं विनिर्मुञ्चद्भिः वि किरद्भिः, पाठान्तरे शुचिभिर्मरीचिकवचं विनिर्मुञ्चद्भिः, वाचनान्तरे पुनरातपत्रवर्णक एवं दृश्यते-‘अब्भपडल- पिंगलुज्जलेहिं’ अभ्रपटलानीवाभ्रपटलानि वृहच्छायाहेतुत्वात् विङ्गलानि च-कपिशानि सौवर्णशलाकामयत्वा- दुज्ज्वलानि च-निर्मलानि यानि तानि तथा तैः ‘अविरलसमसहियचंदमंडलसमप्पहेहिं मंगलसयभक्तिच्छेय- चित्तियखिखिणिमणिहेमजालविरइयपरिगयपेरंतकणयचंठियपयलियखिणिखिणितसुमडुरसुइसुहसदालसो- हिएहिं’ मङ्गलाभिः-मङ्गल्याभिः शतभक्तिभिः-शतसङ्ख्यविच्छत्तिभिः छेकेन-निपुणशिल्पिना चित्रितानि- यानि तानि तथा किङ्किणीभिः-क्षुद्रघण्टिकाभिः मणिहेमजालेन च-रत्नकनकजालकेन विरचितेन विशिष्ट- रतिदेन वा परिगतानि-समन्ताद्रेष्टितानि यानि तानि तथा पर्यन्तेषु-प्रान्तेषु कनकघण्टिकाभिः प्रचलि- ताभिः-कम्पमानाभिः खिणिखिणायमानाभिः सुमधुरः श्रुतिमुखश्च यः शब्दस्तद्वृत्तीभिश्च यानि शोभितानि तानि तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, ततस्तैः, ‘सपयरगमुत्तदामलम्बन्तभूसणेहिं’ सप्रतरकाणि-आभर- णविशेषयुक्तानि यानि मुक्तादामानि-मुक्ताफलमालाः लम्बनानि-प्रलम्बमानानि तानि भूषणानि येषां तानि तथा तैः ‘नरिंदवामप्पमाणरुंदपरिमंडलेहिं’ नरेन्द्राणां-तेषामेव राज्ञां वामप्रमाणेन-प्रसारितभुजयुगल- मानेन रुद्राणि-विस्तीर्णानि परिमण्डलानि च-वृत्तानि यानि तानि तथा तैः ‘सीयायववायवरिसविसदोस- णासएहिं’ शीतातपवातवर्षविषदोषाणां नाशकैः ‘तमरयमलबहुलपडलधाडणपहाकरेहिं’ तमः-अन्धकारं</p> <p style="text-align: right;">४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः बलदेव- वासुदेव- वर्णनं सू० १५ ॥ ७५ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>रजो-रेणुर्मलः-प्रतीतः एतेषां बहुलं-घनं यत्पटलं-वृन्दं तस्य ध्राडनी-नाशनी या प्रभा-कान्तिस्तत्कराणि- तत्कारीणि यानि तानि तथा तैः ‘मुद्गसुहसिवच्छायसमणुवद्वेहिं’ मूर्धसुखा-शिरःसुखकरी शिवा-निरुपद्रवा या छाया-आतपवारणलक्षणा तथा समनुबद्धानि-अनवच्छिन्नानि यानि तानि तथा तैः ‘वेरुलियदंडसज्जि- एहिं’ वैडूर्यमयदण्डेषु सज्जितानि-चितानितानि यानि तानि तथा तैः ‘वयरामयवत्थिण्डणजोइयअडसह- स्सवरकंचणसलागनिम्मिएहिं’ वज्रमययां वस्तौ-शलाकानिवेशनस्थाने निपुणेन शिल्पिना योजिता-निवे- शिताः ‘अट्टसहस्स’त्ति अष्टोत्तरसहस्रसङ्ख्या याः (वर)काञ्चनशलाकास्ताभिर्निर्मितानि-घटितानि यानि तानि तथा तैः, ‘सुविमलययसुदुच्छइएहिं’ सुष्टु विमलेन रजतेन-रौप्येण सुष्टु छदितानि-छादितानि यानि तानि तथा तैः ‘णिउणोवियमिसिमिसितमणिरथणसूरमंडलवितिमिरकरनिग्गयपडिहयणुणरविपच्चोवयंतचं- चलमरीचकययं विणिम्मुयंतेहिं’ निपुणैः-कुशलैः शिल्पिभिर्निपुणं वा यथा भवत्येवं ओपितानि-परिकर्मि- तानि मिसिमिसायमानानि-चिकचिकायमानानि यानि मणयश्च रत्नानि च तेषां सम्बन्धि यत् मरीचिकव- चमिति सम्बन्धः, किम्भूतं?-सूरमण्डलस्य-आदित्यमण्डलस्य वितिमिरा-विहृतान्धकारा ये कराः-किरणा निर्गता-अवपतिताः ते प्रतिहताः-प्रतिस्खलिताः सन्तः प्रत्यवपतन्तः-प्रतिनिवर्त्तमाना यतः तत्तथा तच्च तच्च- श्चलमरीचिकवचं चेति समासः तद् विनिर्मुञ्चद्विरित्यधिकृतवाचनातोऽर्गलं, सप्रतिदण्डैरिति गुरुत्वादेकद- ण्डेन धारयितुमशक्यत्वेन प्रतिदण्डोपेतैः आतपत्रैर्ध्रियमाणैर्विराजमाना इति व्यक्तं, तथा ‘ताहि य’त्ति तै-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education For Personal &amp; Private Use Only</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७६ ॥</p> <p>श्चातिशयवद्विश्रामरैः कलिता इति सम्बन्धः, किम्भूतैः?—प्रवरगिरेर्यत्कुहरं तत्र यद्विहरणं—विचरणं गवा- मिति गम्यते तत्र समुद्धृतानि—उत्क्षिप्तानि कण्टकशाखिलगनभयात् यानि तानि तथा तैश्चामरैरिति प्रकृ- तं, सूत्रे तु चामरशब्दस्य स्त्रीलिङ्गत्वेन विवक्षितत्वात् स्त्रीलिङ्गनिर्देशः कृत इति, निरुपहतं—नीरोगं यच्चमरी- णां—गोविशेषाणां पश्चिमशरीरं—देहपश्चाद्भागः तत्र सञ्जातानि यानि तानि तथा तैः ‘अमइल’त्ति अमलिनं पाठान्तरेणाऽऽमलितं—आमृदितं यत् सितकमलं—पुण्डरीकं विमुकुलं च—विकसितं उज्ज्वलितं च—दीप्तं यद्रजत- गिरिशिखरं विमलाश्च ये शशिनः किरणास्तत्सदृशानि वर्णतो यानि तानि तथा, कलधौतवद्—रजतव- शिर्मलानि यानि तानि तथा, ततः कर्मधारयस्ततस्तैः, एवनाहतो—वायुताडितः सन् चपलं यथा भवत्येवं च- लितः सललितं प्रवृत्त इव सललितप्रवृत्तः वीचिभिः प्रसृतक्षीरोदकप्रवरसागरस्य य उत्पूरो—जलप्लवः स तथा तद्वच्चञ्चलानि यानि तानि तथा तैः, चामराण्येव हंसवधूभिः उपमयन्नाह—मानसाभिधानस्य सरसः प्रसरे—विस्तारे परिचितः—अभ्यस्त आवासो—निवासो विशदश्च—धवलो वेषो—नेपथ्यमाकारो यासां तास्तथा ताभिः, कनकगिरिशिखरसंश्रिताभिरिति व्यक्तं, अवपानोत्पातयोः—अधोगमनोर्ध्वगमनयोः ‘चवलजङ्घण’त्ति चपलवस्त्वन्तरजयी शीघ्रो वेगो यासां तास्तथा ताभिर्हंसवधूभिरिव—हंसिकाभिरिव कलिताः—युक्ता वासुदेव- बलदेवा इति प्रक्रमः, पुनरपि किम्भूतैः चामरैः?—नानामणयः—चन्द्रकान्ताद्याः कनकं च—पीतवर्णं सुवर्णं महान् अर्हः—अर्घो यस्य तन्महार्हं तपनीयं—रक्तवर्णं सुवर्णं एतेषामुज्ज्वलविचित्रा दण्डा येषां तानि तथा तैः, इह च</p> <p>४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः बलदेव- वासुदेव- वर्णनं सू० १५</p> <p>॥ ७६ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>हंसवधूनां विशद्वेषताभणनेन कनकगिरिशिखरसंश्रितत्वभणनेनोत्पातनिपातभणनेन च मणिकनकदण्डा- श्रितधवलचञ्चामरोपमानतोक्तेति, सललितैः-लालित्ययुक्तैः नरपतिश्रीसमुदयप्रकाशनकरैः, राजलक्ष्मीस- मुदायो हि तैर्लक्ष्यते, वरपत्तनोद्गतैः, पत्तनविशेषनिर्मितं हि शिल्पिविशेषात् प्रधानं भवति, अथवा वरप- त्तनाद्-वराच्छादनकोशकादुद्गतानि-निर्गतानि यानि तानि तथा तैः, समृद्धराजकुलसेवितैः, असमृद्ध- राजकुलस्य तु तद्योग्यतापि न भवति, कालागुरुः-कृष्णागुरुः प्रवरकुन्दरुक्मं-प्रधानचीडा तुरुक्मं-सि- ल्हकं एतल्लक्षणो यो धूपस्तद्वशेन यो वासो-वासना तेन विशदः-स्पष्टो गन्धो-गुणविशेषः उद्भूत-उद्भूतोऽ- भिरामो-रम्यो येषां तानि तथा तैः, ‘चिल्लिकाहिं’ति लीनैः दीप्यमानैर्वा ‘उभयोपासं’पि’ति उभयोरपि पा- श्वयोः ‘चामराहिं उक्त्स्वप्पमाणाहिं’ति प्रकीर्णकैरुत्क्षिप्यमाणैरित्यर्थः, कलिता इति प्रकृतं, तथा सुखशी- लवातेन चामराणामेव वीजितानि अङ्गानि येषां ते तथा, अजिता अजितरथा इति प्रतीतं, हलं मुशलं च प्र- तीते, कणकाश्च-बाणाः पाणौ हस्ते येषां ते तथा, इदं च बलदेवापेक्षया विशेषणं, शङ्खः-पाञ्चजन्याभिधानः चक्रं-सुदर्शनं गदा च-कौमोदकी नामा शक्तिश्च-त्रिशूलविशेषः नन्दकश्च-नन्दकाभिधानः खड्गः एतान् धारयन्ति ये ते तथा, इदं च विशेषणं वासुदेवाश्रयं, प्रवरोऽवलो-वरशुक्लः सुकृतः-सुरचितो विमलो-नि- र्मलः कौस्तुभो-वक्षोमणिस्तिरीटं च-मुकुटं धारयन्ति ये ते तथा, कुण्डलोद्योतितानना इति व्यक्तं, पुण्ड- रीकं-सितपद्मं तद्वद्वयने येषां ते तथा, एकावली कण्ठे रचिता वक्षसि-हृदये येषां ते तथा, श्रीवत्सः प्रतीतः</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याकरण- श्रीअ- भयदेव- वृत्तिः ॥ ७७ ॥</p> <p style="text-align: center;">स एव शोभनं लाञ्छनं येषां ते तथा, वरयशस इति व्यक्तं, सर्वर्तुकैः सुरभिभिः कुसुमैः सुरचिता प्रलम्बा शोभमाना विक्रसन्ती चित्रा च वनमाला-मालाविशेषो रचिता रतिदा वा वक्षसि येषां ते तथा, अष्टशतेन विभक्तलक्षणानां-विविक्तस्वस्तिकादिचिह्नानां प्रशस्तानि सुन्दराणि विराजितानि च अङ्गोपाङ्गानि येषां ते तथा, मत्स्य गजवराणामिन्द्रस्य-सर्वगजप्रधानस्य यो ललितो-विलासवान् विक्रमः-चङ्क्रमणं तद्द्विद्विलासिता-सञ्जातविलासा गतिर्येषां ते तथा, ‘कडीसुत्तग’स्ति कटीसूत्रप्रधानानि नीलानि पीतानि च कौशेयकानि-वस्त्रविशेषरूपाणि वासांसि येषां ते तथा, तत्र नीलकौशेया बलदेवाः पीतकौशेयाश्च वासुदेवा इति, प्रवरदी-सनेजस इति व्यक्तं, शारदं यन्नवं स्तनितं-मेघगर्जितं तद्वन्मधुरो गम्भीरः स्तिग्धो घोषो येषां ते तथा, नर-सिंहा इति प्रतीतं, सिंहस्येव विक्रमश्च गतिश्च येषां ते तथा, ‘अत्यमिघ’स्ति प्रथमव्याख्यापक्षे येषु बलदेवा-दिषु मध्ये अस्तमितौ-अस्तं गतौ रामकेशवाविति प्रकृतं, किंविधौ?-प्रवरराजसिंहौ, द्वितीयव्याख्याने तु अस्तमिताः प्रवरराजसिंहा येष्यस्तेऽस्तमितप्रवरराजसिंहाः, दीर्घत्वं च प्राकृतशैलीवशात्, सौम्या इति व्यक्तं, द्वारावती नगरी तस्या आनन्दकल्पेन पूर्णचन्द्रा इव पूर्णचन्द्रा ये ते तथा ‘पुञ्जकडतवप्पभावा निवि-डसंचितसुहा’ इत्यादि तु चक्रवर्त्तिवर्णनवदवगन्तव्यं, यावद् ‘अवितत्ता कामाणं’ति ॥</p> <p style="text-align: center;">भुज्जो मंडलियनरवरेंदा सबला सअंतेउरा सपरिसा सपुरोहियामच्चदंडनायकसेणावतिमंतनीतिकुसला ना- गामणिरयणविपुलधणधन्नसंचयनिहीसमिद्धकोसा रज्जसिरिं विपुलमणुभवित्ता विक्रोसंता बलेण मत्ता तेवि</p> <p style="text-align: center;">॥ ७७ ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">४ अधर्म- द्वारे मैथुनसे- विनः बलदेव- वासुदेव- वर्णनं सू० १५</p>
	<p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>उवणमंति मरणधम्मं अवितत्ता कामाणं । भुज्जो उत्तरकुरुदेवकुरुवणविवरपादचारिणो नरगणा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा भोगसस्सिरीया पसत्थसोमपडिपुण्णरूवदरसणिज्जा सुजातसच्चंगसुंदरंगा रत्तुप्पलपत्तकं-  तकरचरणकोमलतला सुपइद्वियकुम्मचारुचलणा अणुपुव्वसुसंहयंगुलीया उन्नयतणुतंबनिद्धनखा संठित-  सुसिलिद्वगूढगोफा एणीकुरुविंदवत्तवट्टाणुपुव्विजंघा समुगनिसग्गूढजाणू वरवारणमत्ततुल्लविक्रमविलासि-  तगती वरतुरगसुजायगुञ्जदेसा आइन्नहयव्व निरुवलेवा पमुइयवरतुरगसीहअतिरेगवद्वियकडी गंगावत्त-  दाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणवोहियविकोसायंतपम्हगंभीरविगडनाभी साहत्तसोणंदमुसलदप्पणनिगरि-  यवरकणगच्छरुसरिसवरवइरवलियमज्झा उज्जुगसमसहियजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसूमालमउयरो-  मराई झसविहगसुजातपीणकुच्छी झसोदरा पम्हविगडनाभा संनतपासा संगयपासा सुंदरपासा सुजातपासा  मितमाइयपीणरइयपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी कणगसिलातलपसत्थसम-  तलउवइयविच्छिन्नपिहुलवच्छा जुयसंनिभपीणरइयपीवरपउट्टसंठियसुसिलिद्वविसिद्वलद्वसुनिचितघणधिरसुव-  द्धसंधी पुरवरवरफलिहवद्वियभुया भुयईसरविपुलभोगआयाणफलिउच्छूढदीहबाहू रत्ततलोवतियमउयमंस-  लसुजायलक्खणपसत्थअच्छिद्वजालपाणी पीवरसुजायकोमलवरंगुली तंबतलिणसुइरुइलनिद्धनक्खा निद्ध-  पाणिलेहा चंदपाणिलेहा सूरपाणिलेहा संखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोवत्थियपाणिलेहा रविससिसं-  खवरचक्कदिसासोवत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा वरमहिसवराहसीहसहूलसिंहनागवरपडिपुन्नविउलखंधा</p> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education Digital Journal For Personal &amp; Private Use Only Digital Library.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between; align-items: center;"> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७८ ॥</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; width: 70%; text-align: center;"> <p>चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसग्गीवा अवद्वियसुविभत्तचित्तमंसू उवचियमंसलपसत्थसहूलविपुलहणुया  ओयवियसिलप्पवालविंबफलसंनिभाधरोट्टा पंडुरससिसकलविमलसंखगोखीरफेणकुंददगरयमुणालियाधवल-  दंतसेढी अखंडदंता अप्फुडियदंता अचिरलदंता सुणिद्धदंता सुजायदंता एगदंतसेढिव्व अणेगदंता हुयवहनि-  द्धंतधोयतत्तवणिज्जरत्तला तालुजीहा गरुलायतउज्जुतुंगनासा अवदालियपोंडरीयनयणा कोकासियधवल-  पत्तलच्छा आणामियचावरुड्लकिण्हभराजिसंठियसंगयाययसुजायभुमगा अलीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा  पीणमंसलकवोलदेसभागा अचिरुग्गयवालचंदसंठियमहानिडाला उडुवतिरिव पडिपुन्नसोमवयणा छत्तागारु-  त्तमंगदेसा घणनिचियसुवद्धलक्खणुन्नयकूडागारनिभर्पिंडियग्गसिरा हुयवहनिद्धंतधोयतत्तवणिज्जरत्तके-  संतकेसभूमी सामलीपोंडघणनिचियछोडियमिउविसत्तपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधिसुंदरभुयमोयगभिंगनीलक-  ज्जलपहट्टभमरणनिद्धनिगुरुंबनिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरया सुजातसुविभत्तसंगयंगा लक्खणवंज-  णगुणोववेया पसत्थवत्तीसलक्खणधरा हंससररा कुंचसररा दुंदुभिसररा सीहसररा उज्ज(ओघ)सररा मेघ-  सररा सुसररा सुसरनिग्घोसा वज्जरिसहनारायसंघयणा समचउरंससंठाणसंठिया छायाउज्जोवियंगमंगा पस-  त्थच्छवी निरातंका कंकग्गहणी कवोतपरिणामा सगुणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणया पउमुप्पलसरिसगंधुस्ताससुर-  भिवयणा अणुलोमवाउवेगा अवदायनिद्धकाला विग्गहियउन्नयकुच्छी अमयरसफलाहारा तिगाउयंसमू-  सिया तिपलिओवमट्टितीका तिन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालयित्ता तेवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरु- त्तरवर्णनं सू० १५</p> <p>॥ ७८ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>कामाणं । पमयावि य तेसिं होंति सोम्मा सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता अतिकंतविस- प्पमाणमउयसुकुमालकुम्मसंठियसिलिद्वचलणा उज्जुमउयपीवरसुसाहतंगुलीओ अब्भुन्नतरतिततलिणतंबसु- इनिद्धनखा रोमरहियवट्टसंठियअजहन्नपसत्थलक्खणअकोप्पजंघजुयला सुणिम्मित्तसुनिगूढजाणूमंसलपसत्थ- सुवद्धसंधी कयलीखंभातिरेकसंठियनिव्वणसुकुमालमउयकोमलअविरलसमसहितसुजायवट्टपीवरनिरन्तरोरु अट्टावयवीइपट्टसंठियपसत्थविच्छिन्नपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुवद्धजहणवरधा- रिणीओ वज्जविराइयपसत्थलक्खणनिरोदरीओ तिवलिवलियतणुनमियमज्झियाओ उज्जुयसमसहियजच्चतणु- कसिणनिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउयसुविभत्तरोमरातीओ गंगावत्तगपदाहिणावत्ततरंगभंगरविकिरणतरुण- बोधितआकोसायंतपउमगंभीरविगडनाभा अणुब्भडपसत्थसुजातपीणकुच्छी सन्नतपासा सुजातपासा सं- गतपासा मियमायियपीणरतितपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवहयगायलट्टी कंचणकलस- पमाणसमसहियलट्टचुचूयआमेलगजमलजुयलवट्टियपओहराओ भुयंगअणुपुव्वतणुयगोपुच्छवट्टसमसहि- यनमियआदेज्जलडहबाहा तंबनहा मंसलग्गहत्था कोमलपीवरवरंगुलीया निद्धपाणिलेहा ससिसूरसंखच- क्कवरसोत्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहा पीणुण्णयकक्खलवत्थिप्पदेसपडिपुज्जगलकवोला चउरंगुलसुप्पमा- णकंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुया दालिमपुप्फप्पगासपीवरपलंबकुंचितवराधरा सुंदरोत्तरोट्टा दधिदगरयकुंदचंदवासंतिमडलअच्छिद्विमलदसणा रत्तुप्पलपउमपत्तसुकुमालतालुजीहा कणवीरमुडलऽकु-</p> <p>प्र. न्या. १४</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p> </div>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ७९ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>डिलऽबुभ्रयउज्जुतुंगनासा सारदनवकमलकुमुतकुवल्यदलनिगरसरिसलक्खणपसत्थअजिम्हकंतनयणा आ- नामियचावरुइलकिण्हभराइसंगयसुजायतणुकसिणनिद्धुमगा अह्णीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पी- णमट्टगंडलेहा चउरंगुलविसालसमनिडाला कोमुदिरयणिकरविमलपडिपुन्नसोमवदणा छत्तुन्नयउत्तमंगा अकविलसुसिणिद्धदीहसिरया छत्तज्झयजूवथूभदामिणिकमंडलुकलसवाविसोत्थियपडागजवमच्छकुम्मरथव- रमकरज्झयअंकथालअंकुसअट्टावयसुपइट्टअमरसिरियाभिसेयतोरणमेइणिउदधिवरपवरभवणगिरिवरारायस- सललियगयउसभसीहचामरपसत्थवत्तीसलक्खणधरीओ हंससरिथगतीओ कोइलमहुरगिराओ कंता स- व्वस्स अणुमयाओ ववगयवलिपलितवंगदुव्वन्नवाघिदोहग्गसोयमुक्काओ उच्चत्तेण य नराण थोवूणमू- सियाओ सिंगरागारचारुवेसाओ सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणा लावन्नरुवजोव्वणगुणोव्वेया नंदण- वणविवरचारिणीओ व्व अच्छराओ उत्तरकुहमाणुसच्छराओ अच्छेरगपेच्छणिजियाओ तिन्नि य पलि- ओवमाइं परमाउं पालयित्ता ताओऽवि उवणमंति मरणधम्मं अवितित्ता कामाणं ( सू० १५ )</p> <p>‘भुज्जो’ति भूयस्तथा इत्यर्थः, माण्डलिका नरेन्द्रा-मण्डलाधिपतयः सबलाः सान्तःपुराः सपरिषद् इति व्यक्तं, सह पुरोहितेन-शान्तिकर्मकारिणा अमात्यैः-राज्यचिन्तकैः दण्डनायकैः-प्रतिनियतकटकनायकैः सेनापति- भिः-सकलानीकनायकैर्ये ते तथा ते च ते-मन्त्रे मन्त्रणे नीतौ च-सामादिकायां कुशलाश्चेति समासः, नानाप्र- कारैर्मणिरत्नानां विपुलधनधान्यानां च सश्रयैर्निधिभिश्च समृद्धः-परिपूर्णः कोशो येषां ते तथा राजश्रियं वि-</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरु- त्तरवर्णनं सू० १५</p> <p>॥ ७९ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>पुलामनुभूय विश्रोशन्तः-परानाकोशन्तः विगतकोशान्ता वा बलेन मत्ता इति व्यक्तं तेऽपि च एवंविधा अपि उपनमन्ति मरणधर्ममवितृप्ताः कामानामिति । ‘भुज्जो’ति तथा उत्तरकुरुदेवकुरूणां यानि वनविवराणि तेषु पादैः-वाहनाभावाचरणैर्विचरन्ति ये ते तथा नरगणाः-नृसमूहाः भोगैरुत्तमाः भोगोत्तमः भोगसूचकानि लक्षणानि-स्वस्तिकादीनि धारयन्तीति भोगलक्षणधराः भोगैः सश्रीकाः-सशोभाः भोगसश्रीकाः, प्रशस्तं सौम्यं प्रतिपूर्णं रूपं-आकृतिर्येषां तेऽत एव दर्शनीयाश्च-दर्शनार्हाश्च ये ते तथा, सुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गा इति पूर्ववत्, रक्तोत्पलपत्रवत् कान्तानि करचरणानां कोमलानि च तलानि-अधोभागा येषां ते तथा, सुप्रतिष्ठिताः-सप्रतिष्ठावन्तः कूर्मवत्-कच्छपवच्चारवश्चरणा येषां ते तथा, अनुपूर्वेण-परिपाठ्या वर्द्धमाना हीयमाना वा इति गम्यते सुसंहता-अविरला अङ्गुल्यः-पादाग्रावयवा येषां ते तथा, वाचनान्तरे आनुपूर्व्यसुजातपीवराङ्गुलीकाः प्रतीतं च, उन्नताः-तुङ्गाः तनवः-प्रतलाः ताम्रा-अरुणाः स्निग्धाः-कान्तिमन्तो नखा येषां ते तथा, संस्थितौ-संस्थानविशेषवन्तौ सुश्लिष्टौ-सुघटनौ गूढौ-मांसलत्वाद्नुपलक्ष्यौ गुल्फौ-घुण्टकौ येषां ते तथा, एणी-हरिणी तस्याश्चेह जङ्घा ग्राह्या कुरुविन्दः-तृणविशेषः वृत्तं च-सूत्रावलनकं एतानीव वृत्ते-वर्तुले आनुपूर्व्येण स्थूलस्थूले चेति गम्यं जङ्घे-प्रसृते येषां ते तथा, अथवा एण्यः-स्नायवः कुरुविन्दाः-कुटलिकास्तत्त्वगवत् वृत्ता आनुपूर्व्येण जङ्घा येषां ते तथा, ‘समुग्ग’ति समुद्भक्तत्पिधानयोः सन्धिः तद्वन्निसर्गगूढौ-स्वभावतो मांसलत्वाद्नुन्नते जानुनी-अष्टीवती येषां ते तथा, पाठान्तरेण समुद्भवत् निमुग्गे-निमग्ने अनुन्नते</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education Digital Library For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याकरण- श्रीअ- भयदेव- वृत्तिः ॥ ८० ॥</p> <p style="text-align: center;">इत्यर्थः गृहे-मांसलत्वादनूपलक्ष्ये जानुनी येषां ते तथा, वरवारणस्य-गजन्द्रस्य मत्तस्य तुल्यः-सदृशो वि-  क्रमः-पराक्रमो विलासिता-सञ्जातविलासा च गतिर्येषां ते तथा, वरतुरगस्येव सुजातः सुगुप्तत्वेन गुह्यदे-  शो-लिङ्गलक्षणोऽवयवो येषां ते तथा आकीर्णहृद्य इव-जात्याश्व इव निरुपलेपाः-तथाविधमलविकलाः, प्रमुदितो  -हृष्टो यो वरतुरगः सिंहश्च ताभ्यां सकाशादतिरेकेण-अतिशयेन वर्तिता-वर्तुला कटिर्येषां ते तथा, गङ्गा-  वर्त्तक इव दक्षिणावर्त्तरङ्गभङ्गुरा रविकिरणैर्बोधितं-विकासितं ‘विकोसायंत’ति विगतकोशं कृतं यत्पद्मं-  पङ्कजं तद्वद् गम्भीरा विकटा च नाभिर्येषां ते तथा, ‘साहय’ति संहितं-सङ्घिसं यत्सोणदं-त्रिकाष्ठिका मु-  शलं प्रतीतं दर्पणः-दर्पणगण्डो विवक्षितो ‘निगरिय’ति सर्वथा शोधितं यद्वरकनकं तस्य यः तसरुः-खड्गा-  दिमुष्टिः स चेति द्वन्द्वस्तैः सदृशो यः वरवज्रवत् वलितः-क्षामो मध्यो-मध्यभागो येषां ते तथा, ऋजुकाणां  -अवक्राणां समानां आयामादिप्रमाणतः ‘सहिय’ति संहतानां-अविरलानां जात्यानां-स्वाभाविकानां त-  नूनां-सूक्ष्माणां कृष्णानां-असितानां स्निग्धानां-कान्तानां आदेयानां-सौभाग्यवतां लडहानां-मनोज्ञानां  सुकुमारमृदूनां-कोमलकोमलानां रमणीयानां च रोम्णां-तनूरुहाणां राजिः-आवली येषां ते तथा, श्लेषवि-  हगयोरिव-मत्स्यपक्षिणोरिव सुजातौ-सुष्टु भूतौ पीनौ-उपचितौ कुक्षी-जठरदेशौ येषां ते तथा, श्लेषोदरा  इति प्रतीतं, ‘पम्हविगडनाभ’ति पद्मवद्विकटा नाभिर्येषां ते तथा, इदं च विशेषणं न पुनरुक्तं, पूर्वोक्तस्य  नाभिविशेषणस्य बाहुल्येन पाठादिति, सन्नतौ-अधोनमन्तौ पार्श्वौ प्रतीतौ येषां ते तथा, सङ्गतपार्श्वौः,</p> <p style="text-align: right;">॥ ८० ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरु- त्तरवर्णनं सू० १५</p> <p style="text-align: center;">॥ ८० ॥</p> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>अत एव सुन्दरपार्श्वः सुजातपार्श्वः पार्श्वगुणोपेतपार्श्व इत्यर्थः, ‘मियमाइय’त्ति मितौ-परिमितौ मात्रिकौ-मात्रोपेतौ एकार्थपदद्वययोगात् अतीवमात्रान्वितौ नोचितप्रमाणाभ्यूनाधिकौ पीनौ-उपचितौ रतिदौ-रमणीयौ पार्श्वौ येषां ते तथा, ‘अकरंडुय’त्ति मांसोपचितत्वात् अविद्यमानपृष्ठिपार्श्वस्थिक मिवकनकरुचकं-काञ्चनकान्ति निर्मलं-विमलं सुजातं-सुनिष्पन्नं निरुपहतं-रोगादिभिरनुपद्रुतं देहं-शरीरं धारयन्ति ये ते तथा, कनकशिलातलमिव प्रशस्तं समतलं-अविषमरूपं उपचितं-मांसलं विस्तीर्णपृथुलं-अतिविस्तीर्णं वक्षो-हृदयं येषां ते तथा, युगसन्निभौ-यूपसदृशौ पीनौ-मांसलौ रतिदौ-रमणीयौ पीवरौ-महान्तौ प्रकोष्ठौ-कलाचिकादेशौ, तथा संस्थिताः-संस्थानविशेषवन्तः सुश्लिष्टाः-सुघटना लष्टा-मनोज्ञाः सुनिचिताः-सुष्टु निबिडा घनाः-बहुप्रदेशाः स्थिरा-नासुविघटाः सुबद्धाः-स्नायुभिः सुष्टु बद्धाः सन्धयश्च-अस्थिसन्धानानि येषां ते तथा, पुरवरस्य वरपरिघवद्-द्वारार्गलावद्वर्त्तितौ-वृत्तौ भुजौ-बाहू येषां ते तथा, भुजगेश्वरो-भुजङ्गराजस्तस्य विपुलो-महान् यो भोगः-शरीरं तद्वत् आदीयत इत्यादानः-आदेयो रम्यो यः परिघा-अर्गला ‘उच्छ्रद्ध’त्ति स्वस्थानाद् अवक्षिप्तो-निष्काशितः तद्वच्च दीर्घौ बाहू येषां ते तथा, रक्ततलौ-लोहिताधोभागौ, ‘उवचिय’त्ति औपचयिकौ-उपचयनिर्वृत्तौ औपयिकौ वा-उचितौ मृदुकौ-कोमलौ मांसलौ-मांसवन्तौ सुजातौ-सुनिष्पन्नौ लक्षणप्रशस्तौ-प्रशस्तस्वस्तिकादिचिह्नौ अच्छिद्रजालौ-अविरलाङ्गुलिसमुदायौ पाणी-हस्तौ येषां ते तथा पीवरा-उपचिताः सुजाताः-सुनिष्पन्नाः कोमला वराः अङ्गुल्यः-करशाखा येषां ते तथा, ताम्रा</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८१ ॥</p> <p style="text-align: center;">-अरुणाः तलिनाः-प्रतलाः शुचयः-पवित्राः रुचिरा-दीप्ताः स्निग्धा-अरुक्षा नखा-हस्तनखरा येषां ते तथा, स्निग्धपाणिरखा इति कण्ठ्यं, चन्द्र इव पाणिरखा येषां ते तथा, एवमन्यान्यपि चत्वारि पदानि नवरं दिक्- प्रधानः स्वस्तिको दिक्स्वस्तिको दक्षिणावर्त्त इत्यर्थः, रविशशिशङ्खवरचक्रदिकस्वस्तिकरूपा विभक्ता-वि- विक्ताः सुविरचिताः-सुकृताः पाणिषु रेखा येषां ते तथा, वरमहिषवराहशार्दूलकषभनागवरप्रतिपूर्णविपु- लस्कन्धा इति कण्ठ्यं, नवरं वराहः-शूकरः शार्दूलः-व्याघ्र कषभो-वृषभो नागवरो-गजवरः, चत्वार्यङ्गुलानि सुष्ठु प्रमाणं यस्याः कम्बुवरेण च-प्रधानशङ्खेन सदृशी उन्नतत्ववलियोगाभ्यां समाना ग्रीवा-कण्ठो येषां ते तथा, अवस्थितानि-न हीयमानानि वर्द्धमानानि च सुविभक्तानि-विविक्तानि चित्राणि च-शोभया अद्भुत- भूतानि श्मश्रूणि-कूर्चकेशा येषां ते तथा, उपचितं-मांसलं प्रशस्तं शार्दूलस्येव विपुलं च हनु-चिबुकं येषां ते तथा, ‘ओषधियं’ति परिकर्मितं यच्छिलाप्रवालं-विद्रुमं विम्बफलं च-गोलहाफलं तत्सन्निभः-तत्सदृशो रक्तत्वेनाधरोष्ठः-अधस्तनदन्तच्छदो येषां ते तथा, पाण्डुरं यच्छशिसकलं-चन्द्रखण्डं तद्भद्रं विमलं शङ्ख- वद् गोक्षीरफेनवत् कुन्दंस्ति कुन्दपुष्पवत् द्करजोवत् मृणालिकावच्च-पद्मिनीमूलवद्भवला दन्तश्रेणी- दशनपङ्क्तिर्येषां ते तथा, अखण्डदन्ताः-परिपूर्णदशनाः अस्फुटितदन्ताः-राजीरहितदन्ताः अविरलदन्ताः- घनदन्ताः सुस्निग्धदन्ताः-अरुक्षदन्ताः सुजातदन्ताः-सुनिष्पन्नदन्ताः, एको दन्तो यस्यां सा एकदन्ता सा श्रेणी येषां ते तथा, दन्तानामतिघनत्वादेकदन्तेव दन्तश्रेणिस्तेषामिति भावः, अनेकदन्ता द्वात्रिंशदन्ता</p> <p style="text-align: center;">॥ ८१ ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरु- त्तरवर्णनं सू० १५</p> <p style="text-align: center;">॥ ८१ ॥</p> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>इति भावः, हुतवहेन-अग्निना निर्धमनं-निर्दग्धं धौतं-प्रक्षालितमलं यत्तपनीयं-सुवर्णविशेषः तद्वद्रक्ततलं-लोहितरूपं तालु च-काकुदं जिह्वा च-रसना येषां ते तथा, गरुडस्येव-सुपर्णस्येव आयता-दीर्घा ऋज्वी-सरला तुङ्गा-उन्नता नासा-घोणो येषां ते तथा, अवदालितं-सञ्जातावदलनं विकसितं यत्पुण्डरीकं-शतपद्मं तद्वन्नयने-लोचने येषां ते तथा ‘कोकासिय’त्ति विकसिते प्रायः प्रमुदितत्वात्तेषां धवले-सिते पत्रले-पद्मवती अक्षिणी-लोचने येषां ते तथा, आनामितं-ईषन्नामितं यच्चापं-धनुस्तद्वद्विचिरे-शोभने कृष्णाभ्रराजिसंस्थिते-कालमेघलेखासंस्थाने सङ्गते-उचिते आयते-दीर्घे सुजाते-सुनिष्पन्ने भ्रुवौ येषां ते तथा, आलीनौ नतु टप्परौ प्रमाणयुक्तौ-उपपन्नप्रमाणौ श्रवणौ-कर्णौ येषां ते तथा अत एव सुश्रवणाः सुष्टु वा श्रवणं-शब्दोपलम्भो येषां ते तथा, पीनौ-मांसलौ कपोललक्षणौ देशभागौ-वदनस्यावयवौ येषां ते तथा, अचिरोद्गतस्येवात एव बालचन्द्रस्य-अभिनवशशिनः संस्थितं-संस्थानं यस्य तत्तथा तदेवंविधं महद्-विस्तीर्णं ‘निडाल’त्ति ललाटं-भालं येषां ते तथा, उडुपतिरिव-चन्द्र इव प्रतिपूर्णं सौम्यं च वदनं येषां ते तथा, तथा छत्राकारोत्तमाङ्ग-देशा इति कण्ठ्यं, घनो-लोहमुद्गरस्तद्वन्निचितं निबिडं घनं वा-अतिशयेन निचितं घननिचितं सुबद्धं स्नायुभिः लक्षणोन्नतं-महालक्षणं कूटागारनिभं-सशिखरभवनतुल्यं पिण्डिकेव वर्चुलत्वेन पिण्डिकायमानं अग्रशिरः-शिरोऽग्रं येषां ते तथा, हुतवहेन निर्धमनं धौतं तसं च यत्तपनीयं-रक्तवर्णं सुवर्णं तद्वद्रक्ता-लोहिता ‘केसंत’त्ति मध्यकेशा केशभूमिः-मस्तकत्वग् येषां ते तथा, शाल्मली-वृक्षविशेषस्तस्य यत्पौण्डं-फलं घन-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education Portal For Personal &amp; Private Use Only panelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याक- २० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८२ ॥</p> <p>नित्तितं-अत्यर्थं निबिड छोटितं च-घट्टितं तद्वन्मृदवः-सुकुमाराः विशदाः-विस्पष्टाः प्रशस्ता-मङ्गल्याः सूक्ष्माः-श्लक्ष्णाः लक्षणाः-लक्षणवन्तः सुगन्धयः-सङ्गन्धाः सुन्दराः-शोभनाः भुजमोचको-रत्नविशेषस्तद्वत् भृङ्गः-कीटविशेषस्तद्वन्नीलो-रत्नविशेषः स इव कज्जलमिव प्रहृष्टभ्रमरगणः-प्रमुदितमधुकरनिकरः स इव च खिगधाः-कालकान्तयः निकुरुम्बाः-समूहरूपाः निचिता-अविकीर्णाः कुञ्चिताः-वक्राः प्रदक्षिणाव- र्त्ताश्च-अवामवृत्तयो मूर्धनि-शिरसि शिरसिजाः-केशा येषां ते तथा, सुजातसुविभक्तसङ्गताङ्गा इति कण्ठ्यं, लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता इति प्राग्वत्, प्रशस्तद्वात्रिंशलक्षणधरा इति कण्ठ्यं, हंसस्येव खरः-शब्दः षड्जादिर्वा येषां ते तथा, एवमन्यान्यपि, नवरं ओघेन-अविच्छेदेनाविदुदितत्वेन खरो येषां ते तथा, तथा सुष्ठु खरस्य-शब्दस्य निर्दोषो-निर्हादो येषां ते तथा, वाचनान्तरे सिंहघोषादिकानि विशेषणानि पठ्यन्ते, तत्र घण्टाशब्दानुप्रवृत्तरणितमिव यः शब्दः स घोष उच्यते, वज्रर्षभनाराचाभिधानं संहननं-अस्थिस- ञ्चयरूपं येषां ते तथा, तत्र—“रिसहो उ होइ पट्टो वज्रं पुण कीलिया विघाणाहि। उभओ मकडबन्धो नारायं तं विघाणाहि ॥ १ ॥ [ ऋषभस्तु भवति पट्टो वज्रं पुनः कीलिकां विजानीहि । उभयतो मकडबन्धो यस्तं ना- राचं विजानीहि ॥ १ ॥ ] समचतुरस्राभिधानेन संस्थानेन संस्थिता ये ते तथा, तत्र समचतुरस्रत्वमूर्ध्वका- याधःकाययोः समग्रखलक्षणतया तुल्यत्वमिति, छाद्ययोद्योतिताङ्गोपाङ्गा इति कण्ठ्यं, ‘पसत्थच्छवि’त्ति प्रशस्तत्वचः निरातङ्काः-नीरोगाः कङ्कस्येव-पक्षिविशेषस्येव ग्रहणी-गुदाशयो नीरोगवर्चस्कतया येषां ते</p> <p style="text-align: right;">४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरु- त्तरवर्णनं सू० १५</p> <p style="text-align: right;">॥ ८२ ॥</p> </div>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तथा, कपोतस्येव-पक्षिविशेषस्येव परिणामः-आहारपरिणतिर्येषां ते तथा, कपोतानां हि पाषाणा अपि जीर्यन्त इति श्रुतिः, शकुनेरिव-पक्षिण इव 'पोसं'ति अपानं येषां ते तथा, पुरीषोत्सर्गं निर्लेपापाना इत्यर्थः, वृष्टं चान्तराणि च-पार्श्वदेशः ऊरु च परिणताः-सुजाता येषां ते तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, पद्मं च-कमलं उत्पलं च-नीलोत्पलं तत्सदृशो गन्धो यस्य स तथा तेन श्वासेन सुरभि वदनं येषां ते तथा, अनुलोमः-अनुकूलो मनोज्ञ इत्यर्थः वायुवेगः-शरीरसमीरणजवो येषां ते तथा, अवदाताः-गौराः स्निग्धाः कालाश्च-श्यामाश्च इति द्वन्द्वः, वैग्रहिकौ-शरीरानुरूपौ उन्नतौ पीनौ कुक्षी-उदरदेशौ येषां ते तथा, अमृतस्येव रसो येषां ते तथा तानि फलान्याहारो येषां ते तथा, त्रिगव्यूतसमुच्छ्रिता इत्यादि कण्ठ्यं । प्रमदा अपि च-स्त्रियोऽपि तेषां-मिथुनकराणां भवन्ति सौम्याः-अरौद्राः सुजातानि सर्वाण्यङ्गानि सुन्दराणि च यासां तास्तथा, प्रधानमहेलागुणैर्युक्ता इति कण्ठ्यं, अतिकान्तौ-अतिकमनीयौ 'विसप्पमाणं'ति विशिष्टस्वप्रमाणौ अथवा विसर्पन्तावपि-सञ्चरन्तावपि मृदूनां मध्ये सुकुमालौ कूर्मसंस्थितौ-उन्नतत्वेन कच्छप-संस्थितौ श्लिष्टौ-मनोज्ञौ चलनौ-पादौ यासां तास्तथा, ऋजवः-सरला मृदवः-कोमलाः पीवराः-उपचिताः सुसंहताः-अविरलाः अङ्गुल्यः-पादाङ्गुलयो यासां तास्तथा, अभ्युन्नता-उन्नता रतिदाः-सुखदाः अथवा रचिता इव रचिताः तलिनाः-प्रतलाः ताम्रा-आरक्ताः शुचयः-पवित्राः स्निग्धाः-कान्ता नखा यासां तास्तथा, रोमरहितं-निर्लोमकं वृत्तसंस्थितं-वर्तुलसंस्थानं अजघन्यप्रशस्तलक्षणं-प्रचुरमङ्गल्यचिह्नं 'अकोप्प'त्ति अद्वेष्यं</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only Jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>रम्यं जङ्घायुगलं यासां तास्तथा, सुनिर्मितौ-सुन्यस्तौ सुनिगूढौ-अनुपलक्ष्यौ जानुनोः-अष्टीवतोर्मांसलौ- मांसोपचितौ प्रशस्तौ-माङ्गल्यौ सुबद्धौ स्नायुभिः सन्धी-सन्धाने यासां तास्तथा, कदलीस्तम्भात्-मोचा- काण्डात् सकाशाद् अतिरेकेण-अतिशयेन संस्थितं-संस्थानं ययोस्ते कदलीस्तम्भातिरेकसंस्थिते निर्व्रणे- व्रणरहिते सुकुमालमृदुकोमले-अत्यर्थकोमले अविरले-परस्परासन्ने समे-प्रमाणतस्तुल्ये सहिते-युक्ते लक्ष- णैरिति गम्यते सहिके वा-क्षमे सुजाते-सुनिष्पन्ने वृत्ते-वर्तुले पीवरे-सोपचये निरन्तरे-परस्परं निर्विशेषे ऊरू-उपरितनजङ्घे यासां तास्तथा, अष्टापदस्य-द्युतविशेषस्य वीचय इव वीचयः-तरङ्गाकारा रेखास्तत्प्रधानं पृष्ठमिव पृष्ठं-फलकं अष्टापदवीचिपृष्ठं तद्वत्संस्थिता-तत्संस्थाना प्रशस्ता-विस्तीर्णा पृथुला-अतिविस्तीर्णा श्रोणिः-कटी यासां तास्तथा, वदनायामस्य-मुखदीर्घत्वस्य यत्प्रमाणं ततो द्विगुणितं-द्विगुणं चतुर्विंशत्यङ्गुलमि- त्यर्थः विशालं-विस्तीर्णं मांसलसुबद्धं-उपचिताश्लथं जघनवरं-प्रधानकटीपूर्वभागं धारयन्ति यास्तास्तथा, वज्र- वत् विराजिताः क्षाममध्यत्वेन वज्रविराजिताः प्रशस्तलक्षणा निरुदराश्च-तुच्छोदरा यास्तास्तथा, तिसृभिर्वलि- भिर्वलितः-सञ्जातवलिकस्तनुः-कृशः नमितो-नतो मध्यो-मध्यभागो यासां तास्तथा, ऋजुकानां-अवक्राणां समानां-तुल्यानां संहितानां-अविरलानां जात्यानां-स्वभावजानां तनूनां-सूक्ष्माणं कृष्णानां-कालानां स्निग्धानां-कान्तानां आदेयानां-रम्याणां लडहानां-ललितानां सुकुमालमृदूनां-अतिमृदूनां सुविभक्तानां -विविक्तानां रोम्णां राजिः-पद्धतिः यासां तास्तथा, गङ्गावर्त्तक इव प्रदक्षिणावर्त्ता तरङ्गवङ्गला यस्यां सा</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरू- त्तरवर्णनं सू० १५</p> <p style="text-align: center;">॥ ८३ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तथा सा च रविकिरणैस्तरुणैर्बोधितं आकोशायमानं-विमुकुलीभवत् यत्पद्मं तद्वत् गम्भीरा विकटा च नाभिर्यासां तास्तथा, अनुद्गतौ-अनुल्बणौ प्रशस्तौ-सुजातौ पीनौ च-उपचितौ कुक्षी यासां तास्तथा, सन्न-तपार्श्वदिशेषणानि पूर्ववत् अकरंडुका-अनुपलक्ष्यपृष्ठास्थिका कनकरुचकवत्-सुवर्णरुचिवन्निर्मला सु-जाता निरुपहता च गात्रयष्टिर्यासां तास्तथा, काञ्चनकलशयोरिव प्रमाणं ययोस्तौ तथा तौ समौ-तुल्यौ संहितौ-संहतौ लष्टुचुकामेलकौ-शोभनस्तनमुखशेखरौ यमलौ-समश्रेणीकौ ‘युगल’त्ति युगलरूपौ वर्त्तितौ-वृत्तौ पयोधरौ-स्तनौ यासां तास्तथा, भुजङ्गवत्-नागवदानुपूर्व्येण-क्रमेण तनूकौ-श्लक्ष्णौ गोपुच्छवद्वृत्तौ समौ-तुल्यौ संहितौ-मध्यकायापेक्षया विरलौ नमितौ-नम्रौ आदेयौ-सुभगौ लडही-ललितौ वाहू-सुजौ यासां तास्तथा, ताम्रनखाः मांसलाग्रहस्ताः कोमलपीवरवराङ्गुलीकाः लिग्धपाणिरेखाः शशिसूरशङ्खचक्र-वरस्वस्तिकविभक्तसुविरचितपाणिरेखाश्चेति कण्ठ्यानि, पीनोन्नते कक्षे-भुजमूले वस्तिप्रदेशश्च-गुह्यदेशो यासां परिपूर्णः गलकपोलश्च यासां तास्तथा, चतुरङ्गुलसुप्रमाणा कम्बुवरसदृशी-वरशङ्खतुल्या ग्रीवा यासां तास्तथा, मांसलसंस्थितप्रशस्तहनुकाः, हनु-चिबुकं, शेषं कण्ठ्यं, दाडिमपुष्पप्रकाशो रक्त इत्यर्थः, पीवरः-उपचितः प्रलम्बः-ईषल्लम्बमानः कुञ्चितः-आकुञ्चितो वरः-प्रधानोऽधरः-अधस्तनो दशनच्छदो यासां तास्तथा, सुन्दरोत्तरोष्ठा इति कण्ठ्यं, दधिवत् दकरजोवत् कुन्दवचंद्रवत् वासन्तिका-वनस्पतिविशेषस्तस्या मुकुलं-कोरकं तद्वच्च अच्छिद्रा-अविरला निर्मला दशना-दन्ता यासां तास्तथा, रक्तोत्पलवद्रक्ते पद्मपत्रवच्च सुकुमाले</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b>
प्रत सूत्रांक [१५]  दीप अनुक्रम [१९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८४ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>तालुजिह्वे यासां तास्तथा, करवीरमुकुलमिवाकुटिला-अवक्रा कचिदभ्युन्नता-अग्रे उच्चा ऋजुः-सरला तुङ्गा च -उच्चा तदन्यत्र नासा-घोणो यासां तास्तथा, शरदि भवं शारदं नवकमलं च-आदित्यबोध्यं कुमुदं च- चन्द्रविकाश्यं कुवलयं च-नीलोत्पलं पद्मं एषां यो दलनिकरस्तत्सदृशे लक्षणप्रशस्ते अजिह्वे-अमन्दे कान्ते नयने यासां तास्तथा, आनामितचापवद्गुचिरे कृष्णाभ्रराज्या सङ्गते-अनुगते सदृश्यावित्यर्थः सुजाते तनु कृष्णे स्निग्धे च भ्रुवौ यासां तास्तथा, आलीनप्रमाणयुक्तश्रवणाः सुश्रवणा इति च प्राग्वत्, पीना-उपचिता मृष्टा-शुद्धा गण्डरेखा-कपोलपाली यासां तास्तथा, चतुरङ्गुलं-चतुरङ्गुलमानं विशालं-विस्तीर्णं समं-अवि- षमं ललाटं यासां तास्तथा, कौमुदी-कार्तिकी तस्या यो रजनीकरः-चन्द्रस्तद्वद्विमलं परिपूर्णं सौम्यं च वदनं यासां तास्तथा, छत्रोन्नतोत्तमाङ्गाः अकपिलमुस्निग्धदीर्घशिरोजा इति कण्ठ्यं, छत्रं १ ध्वजः २ यूपः ३ स्तूपः ४ एतान्यन्यान्यपि प्रायः प्रसिद्धानि 'दामणि'स्ति रुढिगम्यं ४ कमण्डलु ६ कलशो ७ वापी ८ स्वस्तिकः ९ पताका १० यवो ११ मत्स्यः १२ कूर्मः-कच्छपः १३ रथवरो १४ मकरध्वजः-कामदेवः १५ अंको-रुढिगम्यः १६ स्थालं १७ अङ्कुशः १८ अष्टापदं-यूतफलकं १९ सुप्रतिष्ठकं-स्थापनकं २० (अमरः) भयूरः अमरो वा २१ श्रियाऽभिषेको-लक्ष्म्यभिषेकः २२ तोरणं २३ मेदिनी २४ उदधिः २५ वरप्रवरभवनं-वराणां प्रवरगेहं २६ गिरिवरः २७ वरादर्शः-वरदर्पणः २८ सललिताश्च-लीलावन्तो ये गजाः २९ ऋषभः ३० सिंह ३१ स्था चामरं ३२ एतानि प्रशस्तानि द्वात्रिंशल्लक्षणानि धारयन्ति यास्तास्तथा, हंससदृशगतयः कोकिलमधुरगि-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे माण्डलि- कदेवकुरू- त्तरवर्णनं सू० १५  ॥ ८४ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [...१५]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१५]</p> <p>दीप अनुक्रम [१९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>रश्चेति कण्ठ्यं, कान्ताः-कमनीयाः सर्वस्य जनस्य अनुमताः-अभिमताः व्यपगतवलीपलितव्यङ्गा दुर्वर्णव्याधिदौर्भाग्यशोकसुक्ताश्च यास्तास्तथा, उच्चत्वे नराणां स्तोकोनमुच्छ्रिताः किञ्चिद्व्यूनत्रिगव्यूनोच्छ्रिता इत्यर्थः शृङ्गारस्य-रसविशेषस्य अगारमिवागारं चारुवेषाश्च-सुनेपथ्याः, तथा सुन्दराणि स्तनजघनवदनकरचरणनयनानि यासां तास्तथा, लावण्येन-स्पृहणीयतया रूपेण-आकारविशेषेण नवयौवनेन गुणैश्चोपपेता यास्तास्तथा, नन्दवनविवरचारिण्य इव अप्सरसो-देव्यः तत्र नन्दनवनं-मेरोर्द्वितीयवनं, उत्तरकुरुषु मानुष्यरूपा अप्सरसो यास्तास्तथा, आश्चर्य-अद्भुतमिति प्रेक्ष्यन्ते यास्तास्तथा, ‘निन्नी’त्यादि ‘कामाणं’ति यावत्कण्ठ्यं, उक्तं च—“निर्यञ्चो मानवा देवाः, केचित् कान्तानुचिन्तनम् । मरणेऽपि न मुञ्चन्ति, सद्योगं योगिनो यथा ॥ १ ॥” तदेवमेतावता ग्रन्थेनाब्रह्मकारिणो दर्शिताः । अथ यथा तत्क्रियते तत्फलं च, तदेवं द्वारद्वयं युगपद् दर्शयितुमाह—</p> <p>मेहुणसन्नसंपगिद्धा य मोहभरिया सत्थेहिं हणति एकमेकं विसयविस उदीरएसु, अवरे परदारेहिं हम्मंति विसुगिया धणनासं सयणविष्णुसासं च पाउणति, परस्त दाराओ जे अविरया मेहुणसन्नसंपगिद्धा य मोहभरिया अस्सा हत्थी गचा च महिसा मिना य भारेलि एकमेकं, मणुयगणा वानरा य पक्खी य विरुञ्जंति, मिक्काणि खिप्पं भवंलि सत्तु समये धम्ममे गणे स भिंदंति पारदारी, धम्मगुणरया य वंभयारी खणेण बहोद्वए चरिक्काओ जसमन्तो सुववया य पावेलि अन्नसक्किं रोगत्ता वाहिया पवह्णिति रोयवाही, दुवे य</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१६]  दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८५ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>लोया दुआराहगा भवंति-इहलोए चेव परलोए परस्स दाराओ जे अविरया, तहेव केइ परस्स दारं गवेस- माणा गहिया हया य बद्धरुद्धा य एवं जाव गच्छंति विपुलमोहाभिभूयसन्ना, मेहुणमूलं च सुव्वए तत्थ तत्थ वत्तपुव्वा संगामा जणक्खयकरा सीयाए दोवईए कए रुपिणीए पउमावईए ताराए कंचणाए रत्तसुभदाए अहिल्लियाए सुवज्जगुलियाए किन्नरीए सुखुवविज्जुमतीए रोहिणीए य, अच्चेसु य एवमादि- एसु बहवो महिलाकएसु सुव्वंति अइकंता संगामा गामधम्ममूला इहलोए ताव नट्टा परलोएवि य णट्टा महया मोहतिमिसंधकारे घोरे तसथावरसुहुमवादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तसाहारणसरीरपत्तेयसरीरेसु य अंडज- पोतजजराउथरसज्जसंसेइमसंमुच्छिमउब्भियउववादिएसु य नरगतिरियदेवमाणुसेसु जरामरणरोगसोगव- हुले पलिओवमसागरोवमाइं अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति जीवा मोहवमसंनेविट्ठा । एसो सो अवंभस्स फलविवागो इहलोइओ पारलोइओ य अप्पसुहो बहुदुक्खो महव्वभओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चती, न य अवेदइत्ता अत्थि हु मो- क्खोत्ति, एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ वीरवरनामधेज्जो कहेसी य अवंभस्स फलविवागं एयं तं अवंभेपि चउत्थं सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स पत्थणिज्जं एव चिरपरिचियमणुगयं दुरंतं चउत्थं अधम्म- दारं समत्तंति वेमि ४ ॥ ( सू० १६ )</p> <p>‘मेहुणे’त्यादि, एतद्विभागश्च स्वयमूह्यः, तत्र मैथुनसंज्ञायां सम्प्रगृह्या-आसक्ता ये ते तथा, मोहस्य-अ-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारं मैथुनफलं सू० १६  ॥ ८५ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१६]  दीप अनुक्रम [२०]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>ज्ञानस्य कामस्य वा भृता मोहभृताः शस्त्रैः घ्नन्ति ‘एकमेकं’ति परस्परेण ‘विसयविस’त्ति सप्तम्याः षष्ठ्यर्थ- त्वाद्धिषयविषयस्य ‘उर्हरएसु’त्ति उदीरकेषु-प्रवर्त्तकेषु अपरे-केचन ‘परदारेहि’न्ति परदारेषु प्रवृत्ता इति गम्यन्ते ‘हम्मत’त्ति हन्यन्ते परैः ‘विसुणिय’त्ति विशेषेण श्रुताः-विज्ञाताः सन्तो धननाशं स्वजनविप्रणाशं च ‘पाउणंति’ प्राप्नुवन्ति, राज्ञः सकाशादिति गम्यन्ते, ‘परस्स दाराओ जे अविरय’त्ति परस्य दारेभ्यो येऽ- विरताः, तथा मैथुनसंज्ञासम्प्रगृह्याश्च मोहभृताः अश्वा हस्तिनो गावश्च महिषा मृगाश्च मारयन्ति ‘एकमे- कं’ति परस्परं तथा मनुजगणाः वानराश्च पक्षिणश्च विरुध्यन्ते-विरुद्धा भवन्ति, एतदेवाह-मित्राणि क्षिप्रं भवन्ति शत्रवः, आह च—“सन्तापफलयुक्तस्य, नृणां प्रेमवतामपि । बद्धमूलस्य मूलं हि, महद्वैरतरोः स्त्रियः ॥ १ ॥” समयान्-सिद्धान्तार्थान् धर्मान्-समाचारान् गणांश्च-एकसमाचारजनसमूहान् भिन्दन्ति- व्यभिचरन्ति परदारिणः-परकलत्रासक्ताः, उक्तं च—“धर्मं शीलं कुलाचारं, शौर्यं स्नेहं च मानवाः । ता- वदेव ह्यपेक्षन्ते, यावन्न स्त्रीवशो भवेत् ॥ १ ॥” धर्मगुणरताश्च ब्रह्मचारिणः क्षणेन-मुहूर्त्तैर्नैव ‘उलोदए’त्ति अपवर्त्तन्ते चरित्रात्-संयमात् मैथुनसंज्ञासम्प्रगृह्या इति वर्त्तते, आह च—“श्लथसद्भावनाधर्मा, स्त्रीवि- लासशिलीमुखैः । मुनियोद्धो हतोऽधस्तान्निपतेत्शीलकुञ्जरात् ॥ १ ॥” ‘जसमंत’त्ति यशस्विनः सुव्रताश्च प्रा- प्नुवन्त्यकीर्त्ति, आह च—“अकीर्त्तिकारणं योषित्, योषिट्वैरस्य कारणम् । संसारकारणं योषित्, योषितं वर्जयेत् ततः ॥ १ ॥” कचिद्दशःकीर्त्तिमिति पाठः, तत्र सर्वदिग्गामि यशः एकदिग्गामिनी कीर्त्तिरिति</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१६]</p> <p>दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- २० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८६ ॥</p> <p>विशेषः, यशसा सह कीर्तिरिति समासः तन्निषेधस्त्वयशःकीर्तिस्तां, रोगार्त्ताः-ज्वरादिपीडिता व्याघिताश्च -कुष्ठाद्यभिभूता प्रवर्द्धयन्ति-वृद्धिं नयन्ति रोगव्याधीन् परदारैभ्योऽविरता इति सम्बन्धः, आह च-“वर्जये- द्विदलं शूली, कुष्ठी मांसं ज्वरी घृतम् । द्रवद्रव्यमतीसारी, नेत्ररोगी च मैथुनम् ॥ १ ॥” तथा “व्रणैः श्वयथुरा- यासात्स च रोगश्च जागरात् । तौ च रुक्तं ( भङ्गो ) दिवास्वापात्, ते च मृत्युश्च मैथुना ॥ २ ॥” दिति, द्वावपि लोकौ-जन्मनी दुराराधौ भवतः, तावेवोच्येते-इहलोकः परलोकश्च, केषामित्याह-परस्य दारेभ्यः-कलत्राद् ये अविरताः-अनिवृत्ताः, आह च-परदारानिवृत्तानामिहाकीर्तिर्विडम्बना । परत्र दुर्गतिप्राप्तिर्दौर्भाग्यं प- ण्डता तथा ॥१॥” तथैव किंचेत्यर्थः केचित् परस्य दारान् गवेषयन्तः गृहीताश्च हताश्च बद्धरुद्धाश्च एवं ‘जाव गच्छन्ति’ति इह यावत्करणात् तृतीयाध्ययनाधीतो ‘गहिया य हया य बद्धरुद्धा य’ इत्यादि ‘नरये गच्छन्ति निरभिरामे’ इत्येतन्दतः सुबहुग्रन्थः सूचितः, स च सव्याख्यानस्तत एवावधार्यः, किम्भूतास्ते नरयं गच्छन्ति ? -विपुलेन मोहेन-अज्ञानेन मदनेन वाऽभिभूता-विजिता संज्ञा-संज्ञानं येषां ते तथा, तथा मैथुनं मूलं यत्र वर्त्तते तन्मैथुनमूलं क्रियाविशेषणमिदं, चः पुनरर्थः, श्रूयन्ते-आकर्षयन्ते तत्र तत्र-तेषु तेषु शास्त्रेषु वृत्ता-जाताः पूर्व-पूर्वकाले वृत्तपूर्वाः सङ्ग्रामाः बहुजनक्षयकरा रामरावणादीनां कामलालसानां, किमर्थमित्याह-शीताया द्रौपद्याश्च कृते-निमित्तं, तत्र शीता जनकाभिधानस्य मिथिलानगरीराजस्य दुहिता वैदेहीनाम्न्यास्तद्ग- र्थायाः देहजा भामण्डलस्य सहजातस्य भगिनी विद्याधरोपनीतं देवताधिष्ठितं धनुः स्वयंवरमण्डपे नानाखे-</p> <p style="text-align: right;">४ अधर्म- द्वारे मैथुनफलं सू० १६</p> <p style="text-align: right;">॥ ८६ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
प्रत सूत्रांक [१६]  दीप अनुक्रम [२०]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>चरनाकिनिकरसमक्षं अयोध्याभिधाननगरीनिवासिनो दशरथाभिधानस्य नरनायकस्य सुतेन रामदेवेन पद्मापरनाम्ना बलदेवेन लक्ष्मणाभिधानवासुदेवज्येष्ठभ्रात्रा स्वप्रभावेनोपशान्ताधिष्ठातृदेवतमारोपितगुणं विधाय प्राप्तसाधुवादेन महाबलेन परिणीता, ततो दशरथराजे प्रवित्रजिषौ रामदेवाय राज्यदानार्थमभ्युत्थिते भरताभिधाने च रामदेवस्य मात्रान्तरसम्बन्धिनि भ्रातरि प्रव्रजितुकामे भरतमात्रा पूर्वप्रतिपन्नवरयाचनोपायेन राज्ये भरताय दापिते बन्धुस्नेहाच्चाप्रतिपद्यमाने राज्यं भरतपितृवचनसत्यतार्थं भरतस्य राज्यप्रतिपत्त्यर्थं वनवासमुपाश्रितेन सलक्ष्मणेन रामेण सह वनवासमधिष्ठिता, ततश्च लक्ष्मणेन कौतुकेन तत्र दण्डकारण्ये सञ्चरता आकाशस्थं खड्गरत्नमादाय कौतुकेनेव वंशजालिच्छेदे कृते छिन्ने च तन्मध्यवर्त्तिनि विद्यासाधनपरायणे रावणभागिनेये खरदूषणचन्द्रनखासुते संबुक्काभिधाने विद्याधरकुमारे दृष्ट्वा च तं पश्चात्तापमुपगतेन लक्ष्मणेनागत्य भ्रातुर्निवेदितेऽस्मिन् व्यतिकरे एतद्व्यतिकरदर्शनकुपितायां चन्द्रनखायां पुना रामलक्ष्मणयोर्दर्शनात् सञ्जातकामायां कृतकन्यारूपायां तत्प्रार्थनापरायां ताभ्यामनिष्टायां च पुत्रमारणादिव्यतिकरे च तथा शोकरोषाभ्यां खरदूषणस्य निवेदिते तेन च वैरनिर्यातनोद्यतेन सह लक्ष्मणे योद्धुमारब्धे ज्ञातभागिनेयमरणादिव्यतिकरेण लङ्कानगरीत आकाशेन गच्छन्ता रावणेन दृष्ट्वा दृष्ट्वा च तां तेन कुसुमशायकशरप्रसरविधुरितान्तःकरणेनागणितकुलमालिन्येन अपहसितविवेकरत्नेन विमुक्तधर्मसंज्ञेन अनाकलिता-नर्थपरम्परेण विमुक्तपरलोकचिन्तेन जातशीतापहारबुद्धिना विद्यानुभावोपलब्धरामलक्ष्मणस्वरूपेण विज्ञात-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१६]</p> <p>दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ८७ ॥</p> <p>तत्सत्कसिंहनादसङ्केतकरणेन लक्ष्मणसङ्ग्रामस्थाने गत्वा मुक्ते सिंहनादे चलिते तदभिमुखे रामे एकाकिनी सती अपहृता झिगिति नीता च लङ्कायां विमुक्ता गृहोद्याने प्रार्थिता च दशकन्धरेणानुकूलप्रतिकूलवारिभर्ब-हृशो न च तमिष्टवती, रामेण च सुग्रीवभामण्डलहनुमदादिविद्याधरवृन्दसहायेन महारणविमर्हं विधाय नाना-विधानरेश्वरान्निहल्य दशवदनं च विनिपाल्य नीता स्वगृहमिति । तथा द्रौपद्याः कृते सङ्ग्रामोऽभवत्, तथाहि-काम्पिल्यपुरे द्रुपदो नाम राजा बभूव, चुलनी च भार्या, तयोः सुता द्रौपदी धृष्टार्जुनस्य कनिष्ठा स्वयंवरम-ण्डपविधिना हस्तिनागपुरनायकपाण्डुराजपुत्रैर्युधिष्ठिरादिभिः परिणीता, अन्यदा पाण्डुराजस्य कुन्तीभा-र्यया पाण्डवैर्द्रुपद्या च परिवृतस्य सभार्या नारदमुनिर्गगनादवततार अभ्युत्थितश्च सपरिवारेण पाण्डुना द्रौपद्या तु श्रमणोपासिकात्वेन मिथ्यादृष्टिर्मुनिरयमिति कृत्वा नाभ्युत्थितश्च ततोऽसौ तं प्रति द्वेषमागमत्, अन्यदा चासौ धातकीवण्डे पूर्वभरतेऽमरकङ्काभिधानराजधान्याः पद्मनाभस्य नृपतेः सभायामवततार, तेन च कृताभ्युत्थानादिप्रतिपत्तिकः सन् पृष्टः-किमस्त्यन्यस्यापि कस्यचिदस्मदन्तःपुरनारीजनसमानो ना-रीजनः?, स पुनरुवाच-द्रौपद्याः पादाङ्गुष्ठस्यापि समानो न रम्यतयाऽयमिति श्रुत्वा चैतज्जातानुरागोऽसौ तस्यां पूर्वसङ्गतिकदेवतासामर्थ्येन तामपहृतवान्, सा च तं प्रार्थनपरं परिपालय मां षणमासान् यावदिति प्रतिपाद्य षष्ठभक्तैरात्मानं भावयन्ती तस्यै, ततो हस्तिनागपुरादायातया पाण्डवमात्रा द्वारिकावत्यां कृष्णाय तदपहारे निवेदिते कृष्णेन च नारदमुनेः सकाशात् पद्मनाभराजमन्दिरे दृष्टैव मया द्रौपदीति तद्वात्सायां</p> <p>४ अधर्म-द्वारे सीताद्रौप-दीदृष्टान्तौ सू० १६</p> <p>॥ ८७ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१६]  दीप अनुक्रम [२०]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>लब्धाया लवणसमुद्राधिपतिं सुस्थितदेवमष्टमभक्तेनाराध्य कृष्णः समुद्रमध्येन तेन वितीर्णमार्गः पञ्चभिः पाण्डवैः सरथैः सहामरकङ्काराजधान्या बहिरुद्याने जगाम, सारथिप्रेषणेन पद्मनाभमादर्पितवान्, सोऽपि सबलो योद्धुं निर्जगाम, पाण्डवेषु तेन पुनर्महायुद्धेन निर्मथितमानेषु कृतेषु कृष्णः स्वयं युद्धाय तेन सहोपतस्यौ, ततः केशवः पाञ्चजन्यशङ्खनादेन तत्सैन्यत्रिभागं निर्मथितवान् त्रिभागं च शार्ङ्गगण्डीवदण्डप्रत्यश्चाटङ्कारेण त्रिभागावशेषबले च पद्मनाभे प्राणभयान्नगरीप्रविष्टे कृतनरसिंहरूपेण जनार्दनेन पाददर्दरककरणतः सम्भ्रमप्रकारगोपुराद्यालका पर्यस्तभवनशिखरा राजधानी कृता, ततस्तेन भयभीतेनागत्य प्रणम्य च द्रौपदी तस्य समर्पिता, स च तां पाण्डवानां समर्पितवान्, तैः सहैव च स्वक्षेत्रमाजगामेति । तथा रुक्मिण्याः कृते सङ्ग्रामोऽभूत्, तथाहि-कुण्डिन्यां नगर्यां भीष्मनरपतेः पुत्रस्य रुक्मिणो नृपस्य भगिनी रुक्मिणी कन्या बभूव, इतश्च द्वारिकायां कृष्णवासुदेवस्य भार्या सत्यभामा, तद्गृहे च नारदः कदाचिद्वततार, तथा तु व्यग्रतया न सम्यगुपचरितः, ततः कुपितोऽसौ तां प्रति सापत्न्यमस्याः करोमीति विभाव्य कुण्डिनीं नगरीमुपगतः, रुक्मिण्या च प्रणतः सन् कृष्णस्य महादेवी भवेत्याशिषमवादीत्, कृष्णगुणांश्च तत्पुरतो व्यावर्णयन् तं प्रति तां सानुरागामकरोत्, तद्रूपं च चित्रपटे विलिख्य कृष्णस्य तदुपदर्श्य तां प्रति तमपि साभिलाषमकार्षीत्, ततः कृष्णो रुक्मिणं तां याचितवान्, रुक्मिणोऽपि न दत्तवान्, शिशुपालाभिधानं च महाबलं राजसुनुमानीय विवाहमारम्भितवान्, रुक्मिणीसत्कया पितृवसा च कृष्णस्य रुक्मिण्यपहरणार्थो</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१६]</p> <p>दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p style="float: left; width: 15%;"><b>प्रश्नव्याक २० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८८ ॥</b></p> <p style="float: right; width: 15%;"><b>४ अधर्म- द्वारे रुक्मिणी- पद्मावती- दृष्टान्तौ सू० १६  ॥ ८८ ॥</b></p> <div style="clear: both;"></div> <p style="text-align: center;">लेखो दत्तः, ततश्च रामकेशवौ तां नगरीमागतौ, रुक्मिणी च पितृष्वस्त्रा सह चेदिकापरिवृता देवतार्चन- व्याजेनोद्यानमागता, कृष्णेन रथमारोपिता, ततस्तौ द्वारिकाभिमुखौ तां गृहीत्वा प्रचलितौ, प्रकृतं च चेदि- काभिः निर्गतौ सदृशौ चतुरङ्गसैन्यसमग्रौ रुक्मिणीव्यावर्त्तनार्थं रुक्मिशिशुपालमहाराजौ, ततो विनि- वृत्त्य हलिना हलमुशलाभ्यां दिव्यास्त्राभ्यां चूर्णितं तद्वलं विमुक्तौ कृच्छ्रजीवितौ शिशुपालरुक्मिणाविति । तथा पद्मावतीकृते सङ्ग्रामोऽभूत्, तत्र अरिष्ठनगरे राममातुलस्य हिरण्यनाभाभिधाननराधिपस्य दुहिता प- द्मावती बभूव, तस्याश्च स्वयंवरमुपश्रुत्य रामकेशवावन्धे च राजकुमारास्तत्राजग्मुः, ततश्च ‘पूण्ड्र भाङ्गिजे विहीर्ये सो तत्थ रामगोविन्दे । रेवगनामो जेड्डो भाया य हिरण्यनाभस्स ॥ १ ॥ पिउणा सह पन्वइओ सो तत्थ नमिजिणस्स गयमोहो । तस्स य रेवयनामा रामा सीमा य बंधुमई ॥ २ ॥ दुहियाओ पढमं चिय दि- न्नाओ आसि तेण रामस्स । तत्थ य सयंवरमी सव्वेसिं नरवरिंदाणं ॥ ३ ॥ पुरओच्चिय तं गेणहइ आहव- कुसलाण कन्नगं कण्हो । जायं च पत्थिवेहिं जुड्डं सह जायवाणऽउलं ॥४॥ सव्वत्तो विह्विओ मुहुत्तमित्तेण सव्वनरनाहो । रामो कन्नचउक्कं हरीवि पउमावईकन्नं ॥ ५ ॥ गहिउं ताहिं समेया समागया नियपुरवरे स- व्वेत्ति । [पूजयति भागिनेयौ विधिना स तत्र रामगोविन्दौ । रैवतनामा ज्येष्ठो भ्राता च हिरण्यनाभस्य ॥ १ ॥ पित्रा सह प्रव्रजितः स तत्र नमिजिनस्य ( तीर्थे ) गतमोहः । तस्य च रैवतनाम्नी रामा सीमा च बन्धुमती ॥ २ ॥ दुहितरः प्रथममेव दत्ता आसन् रामाय । तत्र च स्वयंवरे सर्वेषां नरवरेन्द्राणाम् ॥ ३ ॥ पुरत एव</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
प्रत सूत्रांक [१६]  दीप अनुक्रम [२०]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>तां गृह्णाति युद्धकुशलानां कन्यकां कृष्णः । जातं च पार्थिवैर्युद्धं सह यादवानामतुलं ॥ ४ ॥ सर्वतो वि- द्रुतो मुहुर्त्तमात्रेण सर्वनरनाथः । रामः कन्यकाचतुष्कं हरिरपि पद्मावतीकन्यां ॥ ५ ॥ गृहीत्वा ताभिः समेताः समागता निजपुरवरे सर्वे ॥] तारायाः कृते सङ्ग्रामोऽभवत्, तथाहि-किंकिन्धपुरे वालिसुग्रीवाभि- धानावादित्यरथाभिधानस्य विद्याधरस्य सुतौ वानरविद्यावन्तौ विद्याधरौ बभूवतुः, तत्र ‘अभिमाणेण य वाली दाऊणियरस्स तं नियं रज्जं । सिद्धो कयपञ्चज्जो सुग्रीवो कुणइ पुण रज्जं ॥१॥” [अभिमानेन च वाली दत्त्वेतरस्मै तद् निजं राज्यं । सिद्धः कृतप्रव्रज्यः सुग्रीवः पुनः करोति राज्यम् ॥ १ ] तस्य भार्या ताराभि- धाना बभूव, ततः कश्चित् खेचराधिपः साहसगत्यभिधानः तारापरिभोगलालसः सुग्रीवरूपं विधायान्तःपुरं प्रविवेश, तथा च चिह्नैः प्रत्यभिज्ञाय निवेदितौ जम्बुवदादिमन्त्रिमण्डलस्य, तच्च सुग्रीवद्वयमुपलभ्य किमिदमा- श्चर्यमिति विस्मयं जगाम, ततश्च—“निद्राडिघा य दोन्निधि पुराउ ते मंतिवैग्गवयणेण । जुज्झंति मच्छरेण य चलितो ण एस अलियसुग्रीवो ॥ १ ॥ [निर्घाटितौ च द्वावपि पुराद् मन्त्रिवर्गवचनेन । युध्यतो मत्सरेण च चलितो नैषोऽलीकसुग्रीवः ॥ १ ॥] ततश्चासौ सत्यसुग्रीवो हनुमदभिधानस्य महाविद्याधरराजस्य गत्वा निवेदयति स्म, स त्वागत्य तयोर्विशेषमजानन्नकृतोपकार एव स्वपुरमगमत्, ततश्च लक्ष्मणविनाशित- खरदूषणसम्बन्धिनि पाताललङ्कापुरे राज्यावस्थं रामदेवमाकलय्य शरणं प्रपन्नः, ततस्तेन सह गतः सलक्ष्मणो रामः किंकिन्धपुरे स्थितो बहिः कृतश्च सुग्रीवेण बाहुशब्दस्तमुपश्रुत्य समागतोऽसावलीकसुग्रीवो रथारूढो</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [१६]</p> <p style="text-align: center;">दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ८९ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>रणरसिकः सन्, तयोर्विशेषमजानंस्तद्वलं रामश्च स्थित उदासीनतया, कदर्थितः सुग्रीव इतरेण, रामस्य गत्वा निवेदितं सुग्रीवेण-देव! तव पश्यतोऽप्यहं कदर्थितस्तेन, रामेणोक्तं-कृतचिह्नः पुनर्युद्धस्व, ततोऽसौ पुनर्युध्यमानो रामेण शरप्रहारेण पञ्चत्वमापादितः, सुग्रीवश्च तारया सह भोगान् बुभुजे इति । काञ्चनासं-विधानक्रमप्रतीतमिति न लिखितं । तथा रक्तसुभद्रायाः कृते सङ्ग्रामोऽभूत्, तत्र सुभद्राकृष्णवासुदेवस्य भगिनी, सा च पाण्डुपुत्रेऽर्जुने रक्तेतिकृत्वा रक्तसुभद्रोक्ता, सा च रक्ता सत्यर्जुनसमीपमुपगता, कृष्णेन च तद्विनिवर्त्तनाय बलं प्रेषितं अर्जुनेन च तयोल्लासितरणरसेन तद्विजित्य सा परिणीता, कालेन च तस्या जातोऽभिमन्युनामा महाबलः पुत्र इति । अहिज्ञिका अप्रतीता । तथा सुवर्णगुलिकायाः कृते सङ्ग्रामोऽभूत्, तथाहि-सिन्धुसौवीरेषु जनपदेषु विदर्भकनगरे उदायनस्य राज्ञः प्रभावत्या देव्याः सत्का देवदत्ताभिधाना दास्यभवत्, सा च देवनिर्मितां गोशीर्षचन्दनमयीं श्रीमन्महावीरप्रतिमां राजमन्दिरान्तर्वर्त्तिचैत्यभवन-व्यवस्थितां प्रतिचरति स्म, तद्वन्दनार्थं च श्रावकः कोऽपि देशान् सञ्चरन् समायातः, तत्र चागतोऽसौ रोगेणापदुशरीरो जातः तथा च सम्यक् प्रतिचरितः तुष्टेन च तेन सर्वकामिकमाराधितदेवतावितीर्णं गुटिकाशतमदायि, तथा चाहं कुब्जा विरूपा सुरूपा भूयासमिति मनसि विभाव्यैका गुटिका भक्षिता, तत्प्र-भावात् सा सुवर्णवर्णा जातेति सुवर्णगुलिकेति नाम्ना प्रसिद्धिमुपगता, ततोऽसौ चिन्तितवती-जाता मे रूपसम्पद्, एतया च किं भर्तृविहीनया?, तत्र तावदयं राजा पितृतुल्यो न कामयितव्यः, शेषास्तु पुरुषमा-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ अधर्म- द्वारे तारारक्त- सुभद्रासु- वर्णगुलि- कादृष्टा- न्ताः सू० १६</p> <p style="text-align: center;">॥ ८९ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</b></p>
प्रत सूत्रांक [१६]  दीप अनुक्रम [२०]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>त्रमतः किन्तैः?, ततः उज्जयिन्याः पतिं चण्डप्रद्योतराजं मन्त्रस्याधाय गुटिका भक्षिता, ततोऽसौ देवतानुभावात्तां विज्ञाय तदानयनाय हस्तिरत्नमारूढ.तत्रायातः, आकारिता च तेन सा, तयोक्तम्-आगच्छामि यदि प्रतिमां नयसि, तेनोक्तं-तर्हि श्वो नेष्यामि, ततोऽसौ खनगरीं गत्वा तद्रूपां प्रतिमां कारयित्वा तामादाय तथैव रात्रावायातः, स्वकीयप्रतिमां देवतानिर्मितप्रतिमास्थाने विमुच्य तां सुवर्णगुलिकां च गृहीत्वा गतः, प्रभाते च चण्डप्रद्योतगन्धहस्तिविमुक्तमूत्रपुरीषगन्धेन विमदान् स्वहस्तिनो विज्ञाय ज्ञातचण्डप्रद्योतागमोऽवगतप्रतिमासुवर्णगुलिकानयनोऽसावुदायनराजः परं कोपमुपगतो दशभिर्महाबलै राजभिः सहोज्जयिनीं प्रति प्रस्थितः, अन्तरा पिपासाबाधितसैन्यत्रिपुष्करकरणेन देवतया निस्तारितसैन्योऽक्षेपेणोज्जयिन्या बहिः प्राप्तः, रथारूढश्च धनुर्वेदकुशलतया सन्नद्धहस्तिरत्नारूढं चण्डप्रद्योतं प्रजिहीर्षुर्मण्डल्या भ्रमन्तं चलनतलशरव्यधितहस्तिनो भुवि निपातनेन वशीकृतवान्, दासीपतिरिति ललाटपट्टे मयूरपिच्छेनाङ्कितवानिति । किन्नरी सुरूपविद्युन्मती चाप्रतीता । तथा रोहिणीकृते सङ्ग्रामोऽभूत्, तथाहि-अरिष्टपुरे नगरे रुधिरो नाम राजा मित्रा नाम देवी तत्पुत्रो हिरण्यनाभः दुहिता च रोहिणी, तस्या विवाहार्थं रुधिरेण स्वयंवरो घोषितः मिलिताश्च जरासन्धप्रभृतयः समुद्रविजयादयो नराधिपतयः उपविष्टाश्च यथायथं रोहिणी च धात्र्या क्रमेणोपदर्शितेषु राजसु रागमकुर्वती तूर्यवाद्कानां मध्ये व्यवस्थितेन समुद्रविजयादीनामनुजेन देशान्तरसञ्चारिणा तत्रायातेन वसुदेवेन राजसूनुना पाणत्रिकाकारं विभ्रता-मुग्धमृगनयनयुगले! शीघ्रमिहागच्छ मैव</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१६]</p> <p>दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">चिरयस्व । कुलविक्रमगुणशालिनि ! त्वदर्थमहमागतो यदिह ॥ १ ॥ इत्यक्षरानुकारिध्वनौ प्रवादिते पणवे समुत्फुल्ललोचना सञ्जातानुरागा सरभसमुपश्रुत्य स्वहस्तेन वसुदेवस्य गले मालामवलम्बितवती, ततस्ते रा- जान ईर्ष्याशल्यवितुद्यमानमानसा वसुदेवेन सार्द्धं सङ्ग्रामायोपतस्थुः, तेन च रणरङ्गरामिकेन सर्वान् विभि- र्जित्य रोहिणीं परिणीता, जातश्च तस्या रामाभिधानो बलदेवः सूनुरिति । अन्येषु च एवमादिकेषु-एवंप्रका- रेषु बहवः सङ्ग्रामा इति सम्बन्धः महिलाकृतेषु-स्त्रीप्रयोजनेषु श्रूयन्ते अतिक्रान्ताः-अतीताः सङ्ग्रामाः ग्रा- मधर्ममूलाः-विषयहेतवः, ते चाब्रह्मसेविन इहलोके तावन्नष्टाः परदाराभिगमनेनाकीर्त्तिप्राप्तेः तथा परलोके- ऽपि च नष्टाः, किम्भूता इत्याह-‘महयामोहतमिसंधयारे’त्ति महामोह एव तमिस्रान्धकारं-अत्यन्ततमो यत्र स तथा तत्र घोरे-दारुणे, केषु जीवस्थानेषु नष्टा इत्याह-त्रसस्यावरसूक्ष्मबादरेषु समयप्रसिद्धेषु पर्यासका- पर्यासकसाधारणशरीरप्रत्येकशरीरेषु च समयप्रसिद्धेष्वेव तथा अण्डजाः-पक्षिमत्स्यादयः पोतमिव-वस्त्रमिव जरायुवर्जितत्वेन पोतादिव वा-बोधित्थादिव जाताः पोतजा-हस्त्यादयः ते च जरायुः-गर्भवेष्टनं तत्र जाताः जरायुजाः- मनुष्यादयः ते च रसे-तीमनारनालादौ जाता रसजाः ते च संखेदेन निर्वृत्ताः संखेदिमा-यूका- मत्कुणादयः ते च सम्मूर्च्छेन निर्वृत्ताः सम्मूर्च्छिमाः-दुर्दुरादयस्ते च उद्भिद्य भुवं जाता उद्भिज्जाः-खञ्जन- कादयः ते च उपपाते भवा औपपातिका-देवनारकास्ते चेति द्वन्द्वोऽतस्तेषु च, एतानेव सङ्ग्रहेणाह-नरक- तिर्यग्देवमनुष्येषु जरामरणरोगशोकबहुले परलोके चेति प्रकृतं, कियन्तं कालं यावत्ते तत्र नष्टा भवन्ती-</p> </div> <p style="text-align: right;">४ अधर्म- द्वारे रोहिणी- दृष्टान्ताः सू० १६</p> <p style="text-align: right;">॥ १० ॥</p> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [१६]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१६]</p> <p>दीप अनुक्रम [२०]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>तुच्यते-पल्योपमसागरोपमाणि बहूनीति गम्यते, तथा अनादिकमनवदग्रं अनन्तं, एतदेवाह—‘दीहम- द्वंति दीर्घाद्धं-दीर्घकालं दीर्घाध्वं वा-दीर्घमार्गं चातुरंतं-चतुर्गतिकं संसारकान्तारं अनुपरिवर्त्तन्ते जीवा महामोहवशेन सन्निविष्टा अब्रह्मणि ये ते तथा, ‘एसो’ इत्यादि पूर्ववदिति ॥ चतुर्थमध्ययनं विवरणतः स- माप्तमिति ॥</p> <p>-----</p> <p><b>अथ पञ्चमाश्रवाध्ययनम् ।</b></p> <p>अथ पञ्चमं व्याख्यायते-अस्य चैवं पूर्वेण सहाभिसम्बन्धः-अनन्तराध्ययने अब्रह्मस्वरूपमुक्तं, तच्च परि- ग्रहे सत्येव भवतीति परिग्रहस्वरूपमत्रोच्यते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदं परिग्रहस्वरूपप्रतिपादनप्रस्तावनापर- मादिसूत्रम्—</p> <p>जंबू! इत्तो परिग्रहो पंचमो उ नियमा णाणामणिकणगरयणमहरिहपरिमलसपुत्तदारपरिजणदासीदासभ- यगपेसहयगयगोमहिसउट्टखरअयगवेलगसीयासगडरहजाणजुगसंदणसयणासणवाहणकुवियधणधन्नपाण- भोयणाच्छायणगंधमल्लभायणभवणविहिं चैव बहुविहीयं भरहं णगणगरणियमजणवयपुरवरदोणमुहखे- डकब्बडमडंवंसंवाहपट्टणसहस्सपरिमंडियं थिमियमेइणीयं एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं अपरिमिय-</p> </div> <p>प्र. व्या. १६</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र प्रथमे श्रुतस्कन्धे चतुर्थं अध्ययनं “अब्रह्मं” परिसमाप्तं अथ प्रथमे श्रुतस्कन्धे पंचमं अध्ययनं “परिग्रह” आरभ्यते “परिग्रहः” - नामक पंचमं अधर्मद्वारं परिग्रहस्य स्वरूपं</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१७]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१७]</p> <p>दीप अनुक्रम [२१]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="324 454 459 678" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९१ ॥</p> </div> <div data-bbox="515 454 1803 1037" style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>मणंततण्हमणुगयमहिच्छसारनिरयमूलो लोभकलिकसायमहकखंधो चिंतासयनिचिथविपुलसालो गारव- पविरल्लियगविडवो नियडितयापत्तपल्लवधरो पुप्फफलं जस्स कामभोगा आयासविसूरणाकलहपकंपि- यगसिहरो नरवतिसंपूजितो बहुजणस्स हिययदइओ इमस्स मोक्खवरमोत्तिमग्गस्स फलिहभूओ चरिमं अहम्मदारं ( सू० १७ )</p> <p>‘जंबू’इत्यादि, जम्बूरिति शिष्यामन्नणं, ‘एत्तो’त्ति इतश्चतुर्थाश्रवद्वारादनन्तरं परिग्रहणं परिगृह्यत इति वा परिग्रहः, इह च परिग्रहशब्दोपादानेऽपि वक्ष्यमाणविशेषणान्यथानुपपत्त्या परिग्रहतस्वरिति द्रष्टव्यं, प- ञ्चमस्तु-पञ्चमः पुनराश्रवो भवतीति गम्यते, पञ्चमत्वं चास्य सूत्रक्रमाश्रयणात्, नियमात्-निश्चयेन नान्यः पञ्चमत्वमाश्रवाणां मध्ये लभते, कथंभूतोऽसावित्याह—‘नानामणी’त्यादि, तत्र नानामण्यादिविधिं भारतं वसुधां च भुक्त्वापि या अपरिमिताऽनन्ता तृष्णा अनुगता च महेच्छा सैव मूलं यस्य परिग्रहतरोः स त- थेति सम्बन्धः, तत्र नानाविधा ये मणयः-चन्द्रकान्ताद्याः कनकं च-सुवर्णं रत्नानि च-ककैतनादीनि महा- हर्षपरिमलाः-महार्हसुगन्धद्रव्यामोदा ये सपुत्रदाराः-सुतयुक्तकलत्राणि ते च परिजनश्च-परिवारः दासी- दासाश्च-चेटीचेटाः भृतकाश्च-कर्मकराः प्रेष्याश्च-प्रयोजनेषु प्रेषणीयाः ह्यगजगोमहिषउष्ट्रखरअजगवेल- काश्च प्रतीताः शिबिकाश्च-कूटाच्छादितजम्पानविशेषाः शकटानि च-गन्धयः रथाश्च-प्रतीताः यानानि च- गञ्जीविशेषाः युग्यानि च-वाहनानि गोल्लदेशप्रसिद्धजम्पानविशेषाः स्यन्दनाश्च-रथविशेषाः शयनासनानि</p> </div> <div data-bbox="1848 454 1982 678" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- स्वरूपं सू० १७</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">॥ ९१ ॥</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>परिग्रहस्य स्वरूपं</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१७]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१७]</p> <p>दीप अनुक्रम [२१]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>च प्रतीतानि वाहनानि च-यानपात्राणि 'कुविष'त्ति कुप्यानि च गृहोपस्कराः खट्वा-तूल्यादयः धनानि च- गणिमादीनि धान्यपानभोजनाच्छादनगन्धमाल्यभाजनभवनानि च प्रतीतानीति द्वन्द्वस्तस्तेषां विधिः-कार्यं साध्यमिति तत्पुरुषः अतस्तं चैव बहुविधिकं-अनेकप्रकारं, तथा भरतं-क्षेत्रविशेषं नगाः-पर्वताः नगराणि- करवर्जितानि निगमा-वणिजां स्थानानि जनपदा-देशाः पुरवराणि-नगरैकदेशभूतानि द्रोणमुखानि-जल- स्थलपथोपेतानि खेटानि-धूलीप्राकारोपेतानि कर्बटानि-कुनगराणि मडम्बानि-दूरस्थवसिमान्तराणि सं- वाहाः- स्यापन्यः पत्तनानि-जलस्थलपथयोरन्यतरयुक्तानि तेषां यानि सहस्राणि तैर्मण्डितं यत्तत्तथा, स्ति- मितमेदिनीकं-निर्भयमेदिनीनिवासिजनं एकच्छत्रं एकराजकमित्यर्थः ससागरं समुद्रान्तमित्यर्थः भुक्त्वा- परिभुज्य तथा वसुधां-पृथिवीं भरतैकदेशभूतां च भुक्त्वा एतद्भोगेऽपीत्यर्थः 'अपरिमितमणंतपहमणुग- यमहेच्छसारनिरयमूलो'त्ति अपरिमितानन्ता-अत्यन्तानन्ता तृष्णा-प्राप्तार्थसंरक्षणरूपा या चानुगता-स- न्तता महती चेच्छा-अप्राप्तार्थाभिलाषरूपा ते एव साराणि-अक्षय्याणि निरयानि-निर्गतशुभफलानि मू- लानि-जटा यस्य परिग्रहतरोः अथवा अपरिमिताऽनन्ततृष्णया या अनुगता महेच्छा सारा निरया च-नरक- हेतुर्विशिष्टवेगा वा सैव मूलं यस्य स तथा, इह च मकारौ प्राकृतशैलीप्रभवौ एवंविधसमासश्चेति, लोभः प्रतीतः कलिः-सङ्ग्रामः कषायाः-क्रोधमानमाया एत एव महान् स्कन्धो यस्य स तथा, इह च कषायग्रहणे- ऽपि यल्लोभग्रहणं तत्तस्य प्रधानत्वापेक्षं, तथा चिन्ताश्च-चिन्तनानि आयासाश्च-मनःप्रभृतीनां खेदाः त</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>परिग्रहस्य स्वरूपं</p>

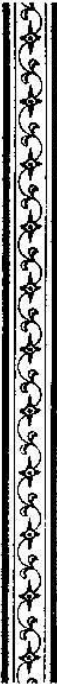



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१७]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१७]  दीप अनुक्रम [२१]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याकर र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९२ ॥</p> <p>एव पाठान्तरेण चिन्ताशतान्येव निचिता-निरन्तरा विपुलाः-विस्तीर्णा शालाः-शाखा यस्य स तथा, तथा 'गारव'त्ति गौरवाणि-ऋद्ध्यादिष्वद्वारकरणानि तान्येव 'पविरल्लिय'त्ति विस्तारवत् अग्रविटपं-शाखामध्य-भागार्थं विस्ताराग्रं वा यस्य स तथा, पाठान्तरे गौरवप्रविरेल्लिताग्रशिखरः, तथा 'नियडितयापत्तपल्लवधरो' निकृतयः-अत्युपचारकरणेन वञ्चनानि मायाकर्माच्छादनार्थानि वा मायान्तराणि ता एव त्वक्पत्रपल्लवा-स्तान् धारयति यः स तथा, पल्लवाश्चेह कोमलं पत्रं, तथा पुष्पं फलं 'जस्स कामभोग'त्ति प्रतीतमेव, तथा 'आयासविसूरणाकलहपकंपिथग्गसिहरो' आयासः-शरीरखेदः विसूरणा-चित्तखेदः कलहो-वचनभण्डनं एत एव प्रकम्पितं-प्रकम्पमानमग्रशिखरं-शिखराग्रं यस्य स तथा, नरपतिसंपूजितो बहुजनस्य हृदयदधित इति च प्रतीतं, अस्य-प्रत्यक्षस्य मोक्षवरस्य-भावमोक्षस्य मुक्तिरेव-निर्लोभतैव मार्गः-उपायो मोक्षवरमुक्ति-मार्गः तस्य परिघभूतः-अर्गलोपमो मोक्षविघातक इतियावत् चरममधर्मद्वारं व्यक्तं । अनेन च यादृश इति-द्वारमुक्तं, अथ यन्नामेत्युच्यते—</p> <p>तस्स य नामाणि इमाणि गोण्णाणि हौंति तीसं, तंजहा-परिगहो १ संचयो २ चयो ३ उवचओ ४ निहाणं ५ संभारो ६ संकरो ७ आयरो ८ पिंडो ९ दव्वसारो १० तहा महिच्छा ११ पडिबंधो १२ लोहप्पा १३ महद्दी १४ उवकरणं १५ संरक्खणा य १६ भारो १७ संपाउप्पायको १८ कलिकरंडो १९ पवित्थरो २० अणत्थो २१ संथवो २२ अगुत्ती २३ आयासो २४ अविओगो २५ अमुत्ती २६ तण्हा २७</p> <p style="text-align: right;">॥ ९२ ॥</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p> </div> <p>५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- नामानि सू० १८</p>
	<p>परिग्रहस्य स्वरूपं परिग्रहस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१८]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१८]</p> <p>दीप अनुक्रम [२२]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>अणत्थको २८ आसत्ती २९ असंतोसोत्तिविय ३०, तस्स एयाणि एवमादीणि नामधेजाणि होति तीसं (सू० १८)</p> <p>तस्य च नामानीमानि गौणानि भवन्ति त्रिंशत्, तद्यथा-परिग्रह्यत इति परिग्रहः-शरीरोपध्यादिः परिग्रहणं वा परिग्रहः-स्वीकारः १ संचीयत इति सञ्चयनं वा सञ्चयः २ एवं चयः ३ उपचयो ४ निधानं ५ सम्भ्रयते-धार्यते सम्भरणं वा-धारणं सम्भारः ६ सङ्कीर्यते सङ्करणं वा-सम्पिण्डनं सङ्करः ७ एवमादरः ८ पिण्डः पिण्डनीयं पिण्डनं वा ९ द्रव्यसारो-द्रव्यलक्षणसारः १० तथा महेच्छा-अपरिमितवाञ्छा ११ प्रतिबन्धः-अभिष्वङ्गः १२ लोभात्मा-लोभस्वभावः १३ महती इच्छा, क्वचित् ‘महती’ति पाठः तत्र ‘अर्हं गतौ याचने चे’ति वचनादर्दिः-याज्जा महती-ज्ञानोपष्टम्भादिकारणविकलत्वादपरिमाणा अर्दिर्महादिः १४ उपकरणं-उपधिः १५ संरक्षणा-अभिष्वङ्गवशाच्छरीरादिरक्षणं १६ भारो-गुरुताकरणं १७ सम्पातानां-अनर्थमलीकानामुत्पादकः संपातोत्पादकः १८ कलीनां-कलहानां करण्ड इव-भाजनविशेष इव कलिकरंडः १९ प्रविस्तारो-धनधान्यादिविस्तारः २० अनर्थः-अनर्थहेतुत्वात् २१ संस्तवः-परिचयः स चाभिष्वङ्गहेतुत्वात्परिग्रहः २२ अगुप्तिः-इच्छाया अगोपनं २३ आयासः-खेदः तद्धेतुत्वात्परिग्रहोऽप्यायास उक्तः, आह च-“बह्वंधनमारण [सेहणाउ काओ परिग्गहे नत्थि? । तं जइ परिग्गहुच्चिय जइधम्मो तो नणु पवंचो ॥ १ ॥] [बधबन्धनमारणशिक्षणाः काः परिग्रहे न सन्ति? । तथापि यदि परिग्रह एव तर्हि यतिधर्मो ननु प्रपञ्चः ॥ १ ॥]</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>परिग्रहस्य त्रिंशत् नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१८]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१८]  दीप अनुक्रम [२२]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="347 459 470 678" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९३ ॥</p> </div> <div data-bbox="519 459 1798 1034" style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>गाहा” अवियोगो-धनादेरत्यजनं २६ अमुक्तिः-सलोभता २६ तृष्णा-धनाद्याकाङ्क्षा २७ अनर्थकः-परमार्थ- वृत्त्या निरर्थकः २८ आसक्तिः-धनादावासङ्गः २९ असन्तोषः ३० इत्यपि च तस्य-परिग्रहस्य एतानि-प्रत्य- क्षाणि एवमादीनि-उक्तप्रकारवन्ति नामधेयानि भवन्ति त्रिंशदिति । अथ ये परिग्रहं कुर्वन्ति तानाह— तं च पुण परिग्रहं ममायंति लोभघत्था भवणवरविमाणवासिणो परिग्रहरुती परिग्रहे विविहकरणबुद्धी देवनिकाया य असुरभुयगगरुलविज्जुजलणदीवउदहिदिसिपवणथणियअणवंनियपणवंनियइसिवातियभूतवाइ- यकंदियमहाकंदियकुहंडपतंगदेवा पिसायभूयजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसमहोरगगंधवा य तिरियवासी पंचविहा जोइसिया य देवा बहस्सतीचंदसूरसुक्कसनिच्छरा राहुधूमकेउबुधा य अंगारका य तत्तवणिज्ज- कणयवण्णा जे य गहा जोइसम्मि चारं चरंति केऊ य गतिरतीया अट्टावीसतिविहा य नक्खत्तदेवगणा नाणासंठाणसंठियाओ य तारगाओ ठियलेस्सा चारिणो य अविस्साममंडलगती उवरिचरा उट्टलोगवासी दुविहा वेमाणिया य देवा सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिंदबंभलोगलंतकमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआर- णअच्चुया कप्पवरविमाणवासिणो सुरगणा गेवेज्जा अणुत्तरा दुविहा कप्पातीया विमाणवासी महिह्विका उत्तमा सुरवरा एवं च ते चउव्विहा सपरिसावि देवा ममायंति भवणवाहणजाणविमाणसयणासणाणि य नाणावि- हवत्थभूसणा पवरपहरणाणि य नाणामणिपंचवन्नदिव्वं च भायणविहिं नाणाविहकामरूवे वेउव्वितअच्छर- गणसंघाते दीवसमुहे दिसाओ विदिसाओ चेतियाणि वणसंडे पव्वते य गामनगराणि य आरामुज्जाणकाण-</p> </div> <div data-bbox="1848 459 1971 986" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- कारकाः परिग्रह- फलं च सू० १९- २०  ॥ ९३ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>परिग्रहस्य त्रिंशत् नामानि</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;">  <p style="text-align: center;">           पाणि य क्वसरतलागवाविदीहियदेवकुलसभप्पववसहिमाइयाइं बहुकाइं कित्तणाणि य परिगेहिहत्ता परि-            ग्गहं विपुलदव्वसारं देवावि सइंदगा न तित्तिं न तुट्ठिं उवलभंति अच्चंतविपुललोभाभिभूतसत्ता वासहरइ-            व्खुगारवट्टपव्वयकुंडलरुचगवरमाणुसोत्तरकालोदधिलवणसलिलदहपतिरतिकरअंजणकसेलदहिमुहवपातु-            प्पायकंचणकचित्तविचित्तजमकवरसिहरकूडवासी वक्खारअकम्मभूमिसु सुविभत्तभागदेसासु कम्मभूमिसु,            जेऽवि य नरा चाउरंतचक्कवट्ठी वासुदेवा बलदेवा मंडलीया इस्सरा तलवरा सेणावती इव्भा सेट्ठी रट्ठिया            पुरोहिया कुमारा दंडणायगा माडंबिया सत्थवाहा कोडुंविया अमच्चा एए अत्ते य एवमाती परिग्गहं संचि-            णंति अणंतं असरणं दुरंतं अधुवमणिच्चं असासयं पावकम्मनेम्मं अवकिरियव्वं विणासमूलं वह्वंधपरिकि-            लेसबहुलं अणंतसंकिलेसकारणं, ते तं धणकणगरयणनिचयं पिंडिता चेव लोभघत्था संसारं अतिवयंति            सव्वदुक्खसंनिलयणं, परिग्गहस्स य अट्टाए सिप्पसयं सिक्खए बहुजणो कलाओ य वावत्तरिं सुनिपुणाओ            लेहाइयाओ सउणरुयावसाणाओ गणियप्पहाणाओ चउसट्ठिं च महिलागुणे रतिजणणे सिप्पसेवं असिमसि-            किसिवाणिज्जं ववहारं अत्थइसत्थच्छरुप्पवा(ग)यं विविहाओ य जोगजुंजणाओ अत्तेसु एवमादिएसु बह-            सु कारणसएसु जावज्जीवं नडिज्जए संचिणंति मंदबुद्धी परिग्गहस्सेव य अट्टाए करंति पाणाण वहकरणं            अलियनियडिसाइसंपओगे परदव्वअभिजा सपरदारअभिगमणासेवणाए आयासविसूरणं कलहभंडणवे-            राणि य अवमाणणविमाणणाओ इच्छामहिच्छप्पिवाससतततिसिया तण्हगेहिलोभघत्था अत्ताणा अणिग्ग-         </p>  </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International</small> <span style="margin-left: 200px;"><small>For Personal &amp; Private Use Only</small></span> <span style="float: right;"><small>www.jainelibrary.org</small></span> </p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between; align-items: center;"> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- २० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९४ ॥</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; width: 70%; text-align: center;"> <p>हिया करेति कोहमाणमायालोभे अकित्तणिज्जे परिग्गहे चेव होंति नियमा सल्ला दंडा य गारवा य कसाया सन्ना य कामगुणअण्हगा य इंदियलेसाओ सयणसंपओगा सच्चित्ताचित्तमीसगाइं दब्बाइं अणंतकाइं इच्छंति परिघेत्तुं सदेवमणुयांसुरम्मि लोए लोभपरिग्गहो जिणवरेहिं भणिओ नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि सब्बजीवाणं सब्बलोए (सू० १९) परलोगम्मि य नट्ठा तमं पविट्ठा महयामोहमोहियमती तिमिसंधकारे तसथावरसुहुमबादरेसु पज्जत्तमपज्जत्तग एवं जाव परियट्ठंति दीहमद्धं जीवा लोभवससंनिविट्ठा । एसो सो परिग्गहस्स फलविवाओ इहलोइओ परलोइओ अप्पसुहो बहुदुक्खो महब्भओ बहुरयप्पगाढो दारुणो कक्कसो असाओ वाससहस्सेहिं मुच्चइ, न अवेत्तित्ता अत्थि हु मोक्खोत्ति, एवमाहंसु नायकुलनंदणो महप्पा जिणो उ धीरवरनामधेज्जो कहेसी य परिग्गहस्स फलविवागं । एसो सो परिग्गहो पंचमो उ नियमा नाणामणिकणगरयणमहरिह एवं जाव इमस्स मोक्खवरमोत्तिमग्गस्स फलिहभूयो चरिमं अधम्मदारं समत्तं ॥ (सू० २०)</p> <p>तं च पुनः परिग्रहं ‘ममायंति’स्ति ममेत्येवं मूर्च्छावशात् कुर्वन्ति ममायन्ते-स्त्रीकुर्वन्ति, शब्दादेराकृतिगणत्वाच्चायः, लोभग्रस्ता भवनवरविमानवासिन इति च व्यक्तं, परिग्रहरुचयः सन् परिग्रहो रोचते येषां ते इत्यर्थः, परिग्रहे विविधकरणबुद्धयः-असन्तं परिग्रहं विविधं चिकीर्षव इत्यर्थः, देवनिकायाश्च वक्ष्यमाणा ममायन्त इति प्रकृतं, असुराः-असुरकुमाराः भुजगाः-नागकुमाराः गरुडाः-गरुडध्वजत्वात् सुपर्णकुमाराः</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- कारकाः परिग्रह- फलं च सू० १९- २०  ॥ ९४ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>‘विज्जु’त्ति विद्युत्कुमाराः ‘जलण’त्ति अग्निकुमाराः ‘दीव’त्ति द्वीपकुमाराः ‘उदहि’त्ति उदधिकुमाराः ‘पव- ण’त्ति वायुकुमाराः ‘दिसि’त्ति दिक्कुमाराः ‘धणिय’त्ति स्तनितकुमाराः एते भवनपतिभेदाः, अणपन्निकाः १ पणपन्निकाः २ ऋषिवादिकाः ३ भूतवादिकाः ४ क्रन्दिता ५ महाक्रन्दिताः ६ कूष्माण्डाः ७ पतका देवाः ८ एते व्यन्तरनिकायोपरिवर्त्तिनो व्यन्तरप्रकारा अष्टौ निकायाः, एतेषां चासुरादीनां द्वन्द्वः, तथा पिशाचाद- योऽष्टौ व्यन्तरभेदाः, तथा तिर्यग्वासिन इति व्यन्तराणां वा विशेषणं, तथा पञ्चविधा ज्योतिष्काश्च देवाः चन्द्रादयः प्रसिद्धा एव तथा बृहस्पतिचन्द्रसूर्यशुक्रशनैश्चराः राहुधूमकेतुबुधाश्च अङ्गारकाश्च एते ग्रहविशेषाः प्रतीता एव तप्तपनीयकनकवर्णाः-निर्धर्मातेन रक्तवर्णेन च हेम्ना तुल्यवर्णा इत्यर्थः, ‘जे य गह’त्ति ये चान्ये उक्तव्यतिरिक्ता ग्रहा व्यालकादयो ज्योतिषे-ज्योतिश्चक्रे चारं-चरणं चरन्ति-आचरन्ति केतवश्च- ज्योतिष्कविशेषाः, किम्भूताः?-गतिरतयः तथा अष्टाविंशतिविधाश्च नक्षत्रदेवगणाः-अभिजिदादयः तथा नानासंस्थानसंस्थिताश्च तारकाः स्थितलेदयाः-अवस्थितलेदयाः अवस्थितदीप्तयो मनुष्यक्षेत्राद्बहि- र्व्यवस्थितत्वात्तासां तथा ‘चारिणो य’त्ति चारिण्यश्च मनुष्यक्षेत्रान्तः सञ्चरिष्णवः, कथम्भूताश्चारिण्यः?- अविश्रामाः-अविश्रान्ता मण्डलेन-चक्रवालेन गतिर्यासां ता अविश्राममण्डलगतयः उपरिचराः-तिर्यग्लो- कस्योपरितनभागवत्तिन्यः, तथा ऊर्ध्वलोकवासिनो द्विविधा वैमानिकाश्च देवाः कल्पोपपन्नकल्पातीतभेदात्, तत्र कल्पोपपन्ना द्वादशधा, तानाह—‘सोहम्मी’त्यादि कण्ठ्यं, द्विविधाश्च कल्पातीताः, एतदेवाह—‘गेविज्जे’</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)  श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९५ ॥</p> <p>त्यादि कण्ठ्यं च, प्रकृतं निगमयन्नाह—‘एवं च ते’ इत्यादि कण्ठ्यं । यत्तन्ममायन्ते तदाह—‘भवने’त्यादि  ‘सइंद्रग’स्ति एतदन्तं कण्ठ्यं च, नवरं भवनानि-भवनपतिगृहाणि गृहाण्येव वा वाहनानि-गजादीनि याना-  नि-शकटविशेषाः विमानानि-ज्योतिष्कवैमानिकदेवसम्बन्धिगृहाणि यानविमानानि च-पुष्पकपालकादीनि  नानामणीनां सम्बन्धी पञ्चवर्णो दिव्यश्च यः स नानामणिपञ्चवर्णदिव्यस्तं च भाजनविधि-भाजनजातं तथा  नानाविधानि कामेन-स्वेच्छया रूपाणि येषां ते तथा विकुर्विता-वस्त्रादिभिः कृतविभूषा येऽप्सरोगणानां  सङ्घातास्ते तथा, ततः कर्मधारयोऽतस्तान्नानाविधकामरूपविकुर्विताप्सरोगणसंघातान्, ‘चेइयाणि’स्ति चैत्य-  वृक्षान् आरामादीनां विशेषः प्राग्बद्वगन्तव्यः ‘कित्तणाहं’ति कीर्त्त्यते-संशब्द्यते यैः कारयिता तानि कीर्त्त-  नानि-देवकुलादीन्येव तानि च ममायन्ते इति प्रकृतं, ततश्च परिग्रह्य परिग्रहं, किम्भूतमित्याह-विपुलद्र-  व्यसारं-प्रभूतवस्तुप्रधानं ‘देवावि सइंद्रग’स्ति सइन्द्रका अपि देवाः, इन्द्रा देवाश्च किल महर्द्धयो वाञ्छिता-  र्थप्राप्तिसमर्था दीर्घायुषश्च भवन्ति न च ते तथाविधा अपि सन्तस्तुष्ट्यादिकं लभन्ते कुतः पुनरितरे इति  प्रतिपादनार्थं देवावि सइंद्रगा इत्युक्तमिति, ‘न तित्तिं न तुष्टिं उवलमंति’स्ति तृप्ति-इच्छाविनिवृत्तिं तुष्टि-  तोषमानन्दं न लभन्ते अपरापरविशेषप्राप्त्याकाङ्क्षाबाधितत्वात्, किम्भूतास्ते इत्याह-अत्यन्तविपुलोभाभि-  भूता संज्ञा-संज्ञानं येषां ते तथा, वर्षधरेषु-हिमवदादिषु पर्वतेषु इषुकारेषु-धातकीखण्डपुष्करवरद्वीपार्द्धयोः  पूर्वापरार्द्धकारिषु दक्षिणोत्तरायतेषु पर्वतविशेषेषु वृत्तपर्वतेषु-शब्दापातिविकटापाल्यादिषु वर्तुलविजयार्द्ध-</p> <p>५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- कारकाः परिग्रह- फलं च सू० १९- २०  ॥ ९५ ॥</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center; color: red;">श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>पर्वतेषु कुण्डले-जम्बूद्वीपादेकादशकुण्डलाभिधानद्वीपान्तर्वर्त्तिनि कुण्डलाकारपर्वते रुचकवरे-जम्बूद्वीपात्र- योदशरुचकवराभिधानद्वीपान्तर्वर्त्तिनि मण्डलाकारपर्वते तथा मानुषोत्तरे-मनुष्यक्षेत्रावारके मण्डलाकारप- र्वते कालोदधौ-द्वितीयसमुद्रे ‘लवण’त्ति लवणसमुद्रे ‘सलिल’त्ति सलिलासु गङ्गादिमहानदीषु हृदपतिषु-नद- प्रधानेषु पद्ममहापद्मादिषु महाहृदेषु रतिकरेषु-नन्दीश्वराभिधानाष्टमद्वीपचक्रवालविदिकचतुष्टयव्यवस्थितेषु चतुर्षु झल्लरीसंस्थितेषु पर्वतेषु अञ्जनकेषु-नन्दीश्वरचक्रवालमध्यवर्त्तिषु पर्वतेषु दधिमुखेषु-अञ्जनकचतुष्टय- पार्श्ववर्त्तिपुष्करिणीषोडशमध्यभागवर्त्तिषु षोडशखेव पर्वतेषु अवपाताः-येषु वैमानिका देवा अवपतन्ति अवपत्य च मनुष्यक्षेत्रादावागच्छन्ति उत्पाताश्च-येभ्यो भवनपतय उत्पत्य मनुष्यक्षेत्रं समागच्छन्ति ते चानेके तिगिच्छिकूटादयस्तेषु काञ्चनेषु-उत्तरकुरुमध्ये देवकुरुमध्ये च प्रत्येकं पञ्चानां महाहृदानां प्रत्येकमुभ- योः पार्श्वयोः दशसु दशसु सर्वात्रेण द्विशतीपरिमाणेषु काञ्चनमयपर्वतेषु ‘चित्तविचित्त’त्ति निषधाभिधानव- र्षधरप्रत्यासन्नयोः शीतोदाभिधानमहानद्युभयतटवर्त्तिनोश्चित्रविचित्रकूटाभिधानयोः पर्वतयोः ‘जमगवर’त्ति नीलवद्वर्षधरप्रत्यासन्नयोः शीताभिधानमहानद्युभयतटवर्त्तिनोर्यमकवराभिधानपर्वतयोः शिखरेषु-समुद्रम- ध्यवर्त्तिगोस्तृपादिपर्वतेषु कूटेषु च-नन्दनवनकूटादिषु वस्तुं शीलं येषां ते वर्षधरादिवासिनो देवा न ल- भन्ते तृप्तिमिति प्रक्रमः, तथा—‘वक्खारअकम्मभूमिसु’त्ति वक्षस्काराः-चित्रकूटादयो विजयविभागकारिणः अकर्मभूमयः-हैमवतादिकभोगभूमयः तासु ये वर्त्तन्त इति गम्यते, तथा सुविभक्तभागा देशा-जनपदा यासु</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९६ ॥</p> <p>तासु कर्मभूमिषु-कृष्यादिकर्मस्थानभूतासु भरतादिकासु पञ्चदशपरिमाणसु, किमित्याह-येऽपि च नराश्च- तुरन्तचक्रवर्त्तिनो वासुदेवा बलदेवाः प्रतीताः माण्डलिका-महाराजा ईश्वरा-युवराजादयः भोगिका इत्यन्ये तलवराः-कृतपट्टबन्धाः राजस्थानीयाः सेनापतयः-सैन्यनायका इभ्या-यावतो द्रव्यस्योत्करेणान्तरितो हस्ती न दृश्यते तावद्द्रव्यपतयः श्रेष्ठिनः-श्रीदेवतालङ्कृतशिरोवेष्टनकवन्तो वणिग्नायकाः राष्ट्रिका-राष्ट्रचिन्तानि- युक्तकाः पुरोहिताः-शान्तिकर्मकारिणः कुमारा-राज्यार्हाः दण्डनायकाः-तन्त्रपालाः माडम्बिकाः-प्रत्यन्तरा- जानः सार्थवाहाः-प्रतीताः कौटुम्बिका-ग्राममहत्तराः सन्तो ये सेवका अमात्या-राजचिन्तका एते च उक्त- लक्षणाः अन्ये चैवमादयः परिग्रहं सञ्चिन्वन्ति-पिण्डयन्ति, किम्भूतं?-अनन्तं अपरिमाणत्वात् अशरणं आ- पद्भ्यो रक्षणासमर्थत्वात् दुरन्तं पर्यवसानदारुणत्वात् अधुवं नावश्यं भाविनमादित्योदयवत् अनित्यं-न नित्य- मस्थिरत्वात् अशाश्वतं प्रतिक्षणं विशाररुत्वात् ‘पापकर्मनेम्म’न्ति पापकर्मणां-ज्ञानावरणादीनां मूलं ‘अव- किरियञ्च’न्ति जिनागमाञ्जनाञ्जितबुद्धिचक्षुषामवकरणीयं-विक्षेपणीयं त्याज्यमितियावत् विशालमूलं वध- बन्धपरिक्लेशबहुलं अनन्तक्लेशकारणमिति च कण्ठ्यं, नवरं सङ्क्लेशः-चित्ताविशुद्धिः, ते देवादयः तं धनकन- करत्ननिचयं पिण्डयन्तश्चैव लोभग्रस्ता संसारमतिपतन्ति अतिव्रजन्ति वा इति व्यक्तं, किम्भूतं?-सर्वदुः- खानि सन्निलीयन्ते-आश्रितानि भवन्ति यत्र स तथा तं सर्वदुःखसन्निलयनमिति । अथ यथा परिग्रहः क्रियते तदाह-परिग्रहस्यैव चार्थाय शिल्पशतं शिक्षते बहुजन इति कण्ठ्यं, किन्तु शिल्प-आचार्योपदेश-</p> <p align="right">५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- कारकाः परिग्रह- फलं च सू० १९- २०  ॥ ९६ ॥</p> </div> <p align="center">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>प्राप्यं चित्रादि कलाश्च-द्विसप्ततिः सुनिपुणा लेखादिकाः शकुनरुतावसानाः-शकुनरुतपर्यवसानाः गणित-प्रधाना इति व्यक्तं, तथा चतुःषष्टिं च महिलागुणान्, आलिङ्गनादीनामष्टानां क्रियाविशेषाणां वात्स्यायना-भिहितानां प्रत्येकमष्टभेदत्वाच्चतुःषष्टिर्महिलागुणा भवन्तीति, गीतनृत्यादयो वा स्त्रीजनोचिता वात्स्यायना-भिहिताश्चतुःषष्टिरेवेति, तांश्च किंविधानं?—रतिजननानिति प्रतीतं, तथा ‘सिप्पसेवं’ति शिल्पेन सेवा-वृत्त्यर्थिना राजादीनामवलगनं शिल्पसेवा तां शिक्षते इति सम्बन्धः, तथा ‘असिमसिकिसिवाणिज्जं’ति ‘असि’ति खड्गाभ्यासं ‘मसि’ति मषीकृत्यमक्षरलिपिविज्ञानं कृषि-क्षेत्रकर्षणकर्म वाणिज्यं-वणिग्व्यवहारं तथा व्यवहारं-विवादच्छेदनं ‘अत्थसत्थईसत्थच्छरूपगयं’ति अर्थशास्त्रं-अर्थोपायप्रतिपादनं शास्त्रं राजनीत्यादि ‘ईसत्थं’ति इषुशास्त्रं धनुर्वेदं त्सरुप्रगतं-श्रुरिकादिमुष्टिग्रहणोपायजातं विविधांश्च योगयोजनान्-बहुप्रकारांश्च वशीकरणादियोगान् परिग्रहाय शिक्षत इति प्रतीतं, तथा अन्येषु एवमादिकेषु-एवंप्रकारेषु बहुषु कारणशतेषु-परिग्रहोपादानहेतुशतेषु अधिकरणभूतेषु प्रवर्त्तमाना इति गम्यं, यावज्जीवं-आजन्म ‘नडिज्जए’ति बहुवचनार्थत्वादेकवचनस्य नट्यन्ते-विनट्यन्ते, तथा सञ्चिन्वन्ति अबुद्धयो मन्दबुद्धयो वा दुष्ट-बुद्धियुक्ताः परिग्रहमिति प्रस्तुतं, तथा परिग्रहस्यैव चार्थाय कुर्वन्ति प्राणानां-जीवानां वधकरणं-हनन-क्रिया, तथा ‘अलीकनिकृतिसातिसम्प्रयोगान्’ तत्रालीकं-मृषावादः निकृतिः-अत्यन्तादरकरणेन परवञ्चनं सातिसम्प्रयोगो-विगुणद्रव्यस्य द्रव्यान्तरमीलनेन गुणोत्कर्षभ्रमोत्पादनं ‘परद्व्वाभिज्ज’ति परधनलोभं</p> </div> <p style="text-align: center;">. १७</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९७ ॥</p> <p style="text-align: center;">परद्रव्याभिधानं वा, प्रथमान्तत्वं च प्राकृतत्वात्, तथा ‘सपरदारगमणंसेवणाए आयासविसूरणं’ति खदा- रगमने आयासं-शरीरमनोव्यायामं कुर्वन्तीति प्रकृतं, परदारसेवनायां च विसूरणं-अप्राप्तौ मनःखेदं प- रस्य वा मनःपीडां कुर्वन्तीति, ‘कलहभण्डनवैराणि च’ तत्र कलहो-वाचिकः भण्डनं-कायिकं वैरं-अनुश- यानुबन्धः, ‘अपमानविमाननाः’ तत्रापमाननानि-विनयभ्रंशाः विमाननाः-कदर्थनाः, किंभूताः सन्तः कुर्व- न्तीत्याह—‘इच्छमहिच्छपिवाससथयतिसिय’त्ति इच्छा-अभिलाषमात्रं महेच्छा-महाभिलाषश्चक्रवर्त्यादीना- मिव ते एव पिपासा-पानेच्छा तथा सततं-संनतं कृषिता ये ते तथा, तथा ‘तणहमेहिलोभघत्था’ तृष्णा- द्रव्याव्ययेच्छा गृद्धिः-अप्राप्तार्थाकाङ्क्षा लोभः-चित्तविमोहनं तैर्यस्ता-अभिव्यासा ये ते तथा ‘अत्तणा अणि- गहिय’त्ति आत्मना अनिगृहीता अनिगृहीतात्मान इत्यर्थः कुर्वन्ति क्रोधमानमायालोभानिति कण्ठ्यं, अकी- र्त्तनीयान्-निन्दितान्, तथा परिग्रह एव च भवन्ति नियमाच्छल्यानि-मायादीनि त्रीणि दण्डाश्च-दुष्प्रणि- हितमनोवाक्कायलक्षणाः गौरवाणि च-ऋद्धिरससातगौरवरूपाणि कषायाः संज्ञाश्च प्रतीताः, ‘कामगुणअ- पहगा य’त्ति कामगुणाः-शब्दादयः पञ्च त एव आश्रवाः-आश्रवद्वाराणि च ते च ‘इंदियलेसाओ’त्ति इन्द्रि- याणि असंवृतानि लेश्याश्चाप्रशस्ता भवन्तीत्यर्थः, तथा ‘सयणसंपओग’त्ति स्वजनसंपयोगान् इच्छन्तीति सम्बन्धः, सचित्ताचित्तमिश्रकाणि द्रव्याणि अनन्तकानि इच्छन्ति परिग्रहीतुं, तथा सदेवमनुजासुरलोके लोभात्परिग्रहो लोभपरिग्रहो नतु धर्मार्थपरिग्रहो जिनवरैर्भणितः यदुत नास्ति ईदृशः परिग्रहादन्यः पाश</p> <p style="text-align: right;">५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- कारकाः परिग्रह- फलं च सू० १९- २०  ॥ ९७ ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>इव पाशो-बन्धनं प्रतिबन्धः-प्रतिबन्धस्थानमभिष्वङ्गाश्रय इत्यर्थः, तथा अस्ति सर्वजीवानां सर्वलोके परिग्रह इति गम्यं, अविरतिद्वारेण सूक्ष्माणामपि परिग्रहसंज्ञासद्भावादिति । यथा कुर्वन्तीत्युक्तं, अथ यादृशं फलं परिग्रहो ददाति तदुच्यते—‘परलोकमि यंस्ति परलोके च—जन्मान्तरविषये चशब्दादिहलोके च नष्टाः सुगतिनाशात् सत्पथभ्रंशाच्च ‘तमं पविट्ट’स्ति अज्ञानमग्राः ‘महयामोहमोहियमइ’स्ति प्राकृतत्वान्महामोहेन-प्रकृष्टोदयचारित्रमोहनीयेन मोहितमतयः, किम्भूत इत्याह-तमिस्रा-रजनी तद्वदज्ञानादन्धकारो यः स तमिस्रान्धकारस्तत्र, केषु जीवस्थानेषु नष्टा इत्याह-त्रसस्थावरसूक्ष्मवादरेषु ‘पञ्जत्तग’ इह एवं यावत्करणादिदं दृश्यं ‘पञ्जत्तमपञ्जत्तगसाहारणपत्तेयसरीरेसु य अण्डजपोतजजरायुजरसजसंसेइमसंमुच्छिमउभिमतउववाइएसु य नरगतिरियदेवप्रणुसेसु जरामरणरोगसोगबहुलेसु पलिओवमसागरोवमाणि अणाइयं अणवयगं दीइमदं चाउरंतसंसारकंतर’मिति, अस्य च व्याख्या चतुर्थाध्ययनवदवसेया, के एवं फलभुजो भवन्तीत्याह-जीवा ‘लोभवससन्निविष्टा’ लोभवशेन परिग्रहे सन्निविष्टा अभिनिविष्टा इत्यर्थः, ‘एसो सो’ इत्याद्यध्ययननिगमनं व्याख्या चास्य पूर्ववदिति । अधुनाऽऽश्रवपञ्चकनिगमनाय गाथाकदम्बकमाह-<span style="color: red;">★</span>‘एएहिं’ गाथा, एतैः-अनन्तरोपवर्णितस्वरूपैः पञ्चभिः असंवैः-प्राणातिपातादिभिराश्रवैः रज इव रजो-जीवस्वरूपोपरञ्जनात्कर्म ज्ञानावरणादि ‘अचिणित्तु’ आचित्य आत्मप्रदेशैः सहोपचित्य ‘अनुसमयं’ प्रतिक्षणं चतुर्विधा-चतुःप्रकारा देवादिभेदेन गतिः-गतिनामकर्मोदयसम्पाद्यो जीवपर्यायः पर्यन्तो-विभागो यस्य स तथा तं</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
<span style="color: red;">★</span>	<p>“एएहिं” अत्र गाथा-पंचकस्य मया पृथक् क्रमांक दत्त । [मेरे सभी सम्पादनो में यहाँ स्वतंत्ररूपसे भिन्न क्रम देकर ये पांच गाथा रक्खी गई हैं।]</p>





<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [१], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [१९-२०] + वृत्तिः गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [१९-२०]  + वृत्तिः गाथाः  दीप अनुक्रम [२३-२९]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः  ॥ ९८ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>‘अनुपरिवर्त्तन्ते’ परिभ्रमन्ति ‘संसारं’ भवमिति ॥ १ ॥ ‘सव्वगई’ गाहा, सर्वगतीनां-देवादिसम्बन्धिनीनां प्र- स्कन्दा-गमनानि सर्वगतिप्रस्कन्दास्तान् करिष्यन्ति अनन्तकान्-अनन्तान् अकृतपुण्याः-अविहिताश्रव- निरोधलक्षणपवित्रानुष्ठानाः ये च न शृण्वन्ति धर्म-श्रुतरूपं श्रुत्वा च ये प्रमाद्यन्ति-श्लथयन्ति श्रुतार्थ-सं- वरात्मकं नानुतिष्ठन्तीत्यर्थः ॥ २ ॥ ‘अणुसिद्धि’ गाहा अनुशिष्टमपि-गुरुणोपदिष्टमपि बहुविधं-बहुप्रकारं धर्ममिति सम्बन्धः, पाठान्तरेण अनुशिष्टाः-अनुशासिताः बहुविधं यथा भवति मिथ्यादृष्टयो नरा अ- बुद्धयो बद्धनिकाचितकर्माणः, तत्र बद्धं-प्रदेशेषु संश्लेषितं निकाचितं-दृढतरं बद्धं उपशमनादिकरणानामवि- षयीकृतमिति भावः, शृण्वन्ति केवलमनुवृत्त्यादिना धर्म-श्रुतरूपं न च-न पुनः कुर्वन्ति-अनुतिष्ठन्तीति ॥ ३ ॥ ‘किं सक्ता’ गाहा, किं शक्यं कर्तुं?, न शक्यमित्यर्थः, जे इति पादपूरणे यत्-यस्मान्नेच्छथ-नेप्सथ औ- षधं सुधा-प्रत्युपकारानपेक्षतया दीयमानमिति गम्यं, पातुं-आपातुं, किंरूपमौषधमित्याह-जिनवचनं गुण- मधुरं विरेचनं-त्यागकारि सर्वदुःखानाम् ॥ ४ ॥ पञ्चैव-प्राणातिपाताद्याश्रवद्वाराणि उज्झित्वा-त्यक्त्वा पञ्चैव प्राणातिपातविरमणादिसंवरान् रक्षित्वा-पालयित्वा भावेन-अन्नःकरणवृत्त्या कर्मरजोविप्रमुक्ता इति प्रतीतं, सिद्धानां मध्ये वरा सिद्धिवरा-सकलकर्मक्षयलभ्या भावसिद्धिरित्यर्थः तां अत एव अनुत्तरां-सर्वोत्तमां यान्ति-गच्छन्ति ॥ ५ ॥ इति प्रश्नव्याकरणे पञ्चमाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥ ५ ॥ तत्समाप्तौ चाश्रवाध्ययनानां विवरणं समाप्तम् ॥ ५ ॥</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>५ अधर्म- द्वारे परिग्रह- कारकाः परिग्रह- फलं च सू० १९- २०  ॥ ९८ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र प्रथमे श्रुतस्कन्धे पंचमं अध्ययनं परिसमाप्तं तत्समाप्ते प्रथम-श्रुतस्कन्धोऽपि परिसमाप्तः</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;"> <p><b>अथ प्रथमं संवराध्ययनमादितः षष्ठम् ॥</b></p> <p>उक्ता आश्रवाः अथ तत्प्रतिपक्षभूतानां संवराणां प्रथममहिंसालक्षणं संवरमभिधातुकामस्तत्प्रस्तावनार्थं शिष्यमामण्येदमाह—</p> <p>जंबू!—एत्तो संवरदाराइं पंच वोच्छामि आणुपुव्वीए । जह भणियाणि भगवया सव्वदुहविमोक्खण- द्वए ॥ १ ॥ पढमं होइ अहिंसा वितियं सच्चवयणंति पन्नत्तं । दत्तमणुन्नाय संवरो य वंभचेरमपरिगहत्तं च ॥ २ ॥ तत्थ पढमं अहिंसा तसथावरसव्वभूयखेमकरी । तीसे सभावणाओ किंची वोच्छं गुणुद्देसं ॥ ३ ॥ ताणि उ इमाणि सुव्वय! महव्वयाइं लोकहियसव्वयाइं सुयसागरदेसियाइं तवसंजममहव्वयाइं सीलगुणवरव्वयाइं सच्चज्जव्वयाइं नरगतिरियमणुयदेवगतिविज्जकाइं सव्वजिणसासणगाइं कम्मरयवि- दारगाइं भवसयविणासणकाइं दुहसयविमोयणकाइं सुहसयपवत्तणकाइं कापुरिसदुरुत्तराइं सप्पुरिसनिसेवि- याइं निव्वाणगमणसगण्णायकाइं संवरदाराइं पंच कहियाणि उ भगवया ॥ तत्थ पढमं अहिंसा जा सा सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स भवति दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा निव्वाणं १ निव्वुई २ समाही ३ सत्ती ४ कित्ती ५ कंती ६ रती य ७ विरती य ८ सुयंगतित्ती ९—१० दया ११ विमुत्ती १२ खन्ती १३ सम्म- त्ताराहणा १४ महंती १५ बोही १६ बुद्धी १७ धिती १८ समिद्धी १९ रिद्धि २० विद्धी २१ ठिती २२</p> </div> <p>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>◆ अत्र द्वितियो श्रुतस्कन्धो आरब्धः ◆</p> <p>अथ द्वितिये श्रुतस्कन्धे प्रथमं अध्ययनं “अहिंसा” आरभ्यते “अहिंसा” - नामक प्रथमं संवर-द्वारं “अहिंसा” स्वरूपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ९९ ॥</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; width: 70%; text-align: center;"> <p>पुट्टी २३ नंदा २४ भद्रा २५ विसुद्धी २६ लज्जी २७ विसिद्धविट्टी २८ कल्लार्ण २९ मंगल ३० पमोओ ३१ विभूती ३२ रक्खा ३३ सिद्धावासो ३४ अणासवो ३५ केवलीण ठाणं ३६ सिधं ३७ समिई ३८ सील ३९ संजमो ४० सि य सीलपरिधरो ४१ संवरो ४२ य गुत्ती ४३ धवसाओ ४४ उस्सओ ४५ ज्जी ४६ आ- यतणं ४७ जतण ४८ मप्पमातो ४९ अस्सासो ५० वीसासो ५१ अभओ ५२ सव्वस्सवि अमाघाओ ५३ चोक्ख ५४ पविच्चा ५५ सूती ५६ पूया ५७ विमल ५८ पभासा ५९ य निम्मलतर ६० सि एधमादीणि निययगुणनिम्मियाइं पज्जवनामाणि होति अहिंसाए भगवतीए ( सूत्रे २१ ) एसा सा भगवती अहिंसा जा सा भीयाण विव सरणं पक्खीणं पिव गमणं तिसियाणं पिव सलिलं खुहियाणं पिव असणं समुद्दमज्जे व पोत्तवहणं चउप्पयाणं व आसमपयं दुहट्टियाणं च ओत्तहिवलं अडवीमज्जे विसत्थगमणं एत्तो विसिद्धतरिका अहिंसा जा सा पुढविजलअगणिमारुक्खणस्सइवीजहरितजलचरथलचरखहचरतसथावरसव्वभूयखेमकरी एसा भगवती अहिंसा जा सा अपरिमियनाणदंसणधरेहिं सीलगुणविणयतवसंघमनायकेहिं तित्थंकरेहिं सव्वज- गजीववच्छलेहिं तिलोगमहिंएहिं जिणचंदेहिं सुद्धु दिट्ठा ओहिजिणेहिं विण्णाया उज्जुमतीहिं विदिट्ठा विपुल- मतीहिं विविदिता पुव्वधरेहिं अधीत्ता वेउव्वीहिं पत्तिन्ना आभिणिन्नोहियनाणीहिं सुयमाणीहिं मणपज्जव- नाणीहिं केवलनाणीहिं आमोसहिपत्तेहिं खेलोसहिपत्तेहिं जल्लोसहिपत्तेहिं विप्पोसहिपत्तेहिं सव्वोसहिपत्तेहिं वीजबुद्धीहिं कुट्टबुद्धीहिं पदाणुसारीहिं संभिन्नसोतेहिं सुयधरेहिं मणबलिंएहिं वयबलिंएहिं कायबलिंएहिं</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>१ संवर द्वारे अहिंसा- नामानि अहिंसा- कारकाः सू० २१- २२  ॥ ९९ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>“अहिंसा” स्वरूपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;">  <p style="text-align: center;">           नाणवलिएहिं दंसणवलिएहिं चरित्तवलिएहिं खीरासवेहिं मधुआसवेहिं सपियासधेहिं अक्खीणमहाणसिएहिं            चारणेहिं विजाहारेहिं चउत्थभत्तिएहिं एवं जाव छम्मासमसिएहिं उक्खित्तचरएहिं निक्खित्तचरएहिं अंत-            चरएहिं पंतचरएहिं ल्हहचरएहिं समुदाणचरएहिं अन्नइलाएहिं मोणचरएहिं संसडुकप्पिएहिं तज्जायसंसडु-            कप्पिएहिं उवमिहिएहिं सुद्धेसणिएहिं संखादत्तिएहिं दिट्ठलाभिएहिं अदिट्ठलाभिएहिं पुट्टलाभिएहिं आर्य-            विलिएहिं पुरिमड्डिएहिं एक्कासणिएहिं मिच्चित्तिएहिं भिन्नपिंडवाइएहिं परिमियपिंडवाइएहिं अंतहारेहिं पं-            ताहारेहिं अरसाहारेहिं खिरसाहारेहिं ल्हहाहारेहिं तुच्छाहारेहिं अंतजीविहिं पंतजीविहिं ल्हहजीविहिं तुच्छ-            जीवीहिं उवसंतजीवीहिं पसंतजीविहिं विवित्तजीवीहिं अखीरमहुसप्पिएहिं अमज्जमसासिएहिं ठाणाइएहिं            पडिमंठाईहिं ठाणुक्कडिएहिं वीरासणिएहिं णेसजिएहिं डंडाइएहिं लगेडसाईहिं एगवासिगेहिं आयावएहिं            अप्पावएहिं अणिट्ठुभएहिं अकंडुयएहिं धुतकेसंमुलोमनखेहिं सव्वगायपडिकम्मविप्पमुक्केहिं समणुचि-            न्ना सुयधरविदितत्थकायबुद्धीहिं धीरमतिबुद्धिणो य जे ते आसीविसउगतेयकप्पा निच्छयववसायपज्जत्त-            कयमतीया णिच्चं सज्जायज्जाणअणुबद्धधम्मज्जाणा पंचमहव्वयचरित्तजुत्ता समिता समितिसु समितपावा            छव्विहजगवच्छला निच्चमप्पमत्ता एएहिं अन्नेहिं य जा सा अणुपालिया भगवती इमं च पुट्टविदगअग-            णिमारुयतरुगणतसथावरसव्वभूयसंयमदयद्वयाते सुद्धं उच्चं गवेसियव्वं अकतमकारिमणाहयमणुदिट्ठं अकी-            यकडं नवहिं य कोडिहिं सुपरिसुद्धं देसहिं य दोसेहिं विप्पमुक्कं उगमउप्पायणेसणासुद्धं ववगयचुयचावियचं-         </p>  </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International</small>      <small>For Personal &amp; Private Use Only</small>      <small>www.jainelibrary.org</small> </p>
	<p>“अहिंसा” स्वरुपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between; align-items: center;"> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०० ॥</p> </div> <div style="flex-grow: 1; text-align: center;"> <p>त्तदेहं च फासुयं च न निसज्जकहापओयणक्खासुओवणीयंति न तिगिच्छामंतमूलभेसज्जकज्जेहं न लक्ख- णुप्पायसुमिणजोइसनिमित्तकहक्कप्पउत्तं नवि उंभणाए नवि रक्खणाते नवि सासणाते नवि दंभणरक्खण- सासणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि वंदणाते नवि माणणाते नवि पूयणाते नवि वंदणमाणणपूयणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि हीलणाते नवि निंदणाते नवि गरहणाते नवि हीलणनिंदणगरहणाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि भेसणाते नवि तज्जणाते नवि तालणाते नवि भेसणतज्जणतालनाते भिक्खं गवेसियव्वं नवि गारवेणं नवि कु- हणाते नवि वणीमयाते नवि गारवकुहवणीमयाए भिक्खं गवेसियव्वं नवि मित्तयाए नवि पत्थणाए नवि सेवणाए नवि मित्तपत्थणसेवणाते भिक्खं गवेसियव्वं अन्नाए अगढिए अदुट्ठे अदीणे अविमणे अकलुणे अविसाती अपरितंतजोगी जयणघडणकरणचरियविणयगुणजोगसंपउत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते निरते, इमं च णं सव्वजीवरक्खणदयट्ठाते पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पच्चाभावियं आगमेसिभइं सुद्धं नेया- उयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाण विउसमणं ( सू० २२ ) तस्स इमा पंच भावणातो पढमस्स वयस्स होति पाणातिवायचेरमणपरिरक्खणट्ठयाए पढमं ठाणगमणगुणजोगजुंजणजुगंतरनिवातियाए दिट्ठिए ईरियव्वं कीडपयंगतसथावरदयावरेण निच्चं पुप्फफलतयपवालकंदमूलदगमट्ठियवीजहरियपरिवज्जिएण संमं, एवं खलु सव्वपाणा न हीलियव्वा न निंदियव्वा न गरहियव्वा न हिंसियव्वा न छिंदियव्वा न भिंदियव्वा न वहेयव्वा न भयं दुक्खं च किंचि लब्भा पावेउं एवं ईरियासमित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असब-</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>१ संवर द्वारे अहिंसा- कारकाः सू० २२  ॥ १०० ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;">  <p style="text-align: center;">           लमसंकिलिद्वनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, वितीयं च मणेण पावणं पावकं अहम्मियं दारुणं निस्संसं वहबंधपरिकिलेसबहुलं भयमरणपरिकिलेससंकिलिद्वं न कयावि मणेण पावतेणं पावगं किंचिवि-            ज्ञायव्वं एवं मणसमित्तिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा असवलमसंकिलिद्वनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, ततियं च वतीते पावियाते पावकं न किंचिवि भासियव्वं एवं वतिसमित्तिजोगेण भावितो            भवति अंतरप्पा असवलमसंकिलिद्वनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसओ संजओ सुसाहू, चउत्थं आहारएसणाए सुद्धं उच्छं गवेसियव्वं अन्नाए अगहिते अदुट्टे अदीणे अकलुणे अविसादी अपरितंतजोगी जयणघडणकरण-            चरियविणयगुणजोगसंपओगजुत्ते भिक्खू भिक्खेसणाते जुत्ते समुदाणेऊण भिक्खचरियं उच्छं घेत्तूण आग-            तो गुरुजणस्स पासं गमणागमणातिचारे पडिक्कमणपडिक्कंते आलोयणदायणं च दाऊण गुरुजणस्स गुरुसं-            दिद्वस्स वा जहोवएसं निरइयारं च अप्पमत्तो, पुणरवि अणेसणाते पयतो पडिक्कमित्ता पसंते आसीणसुहनि-            सत्ते मुहुत्तमेत्तं च ज्ञाणसुहजोगनाणसञ्जायगोवियमणे धम्ममणे अविमणे सुहमणे अविग्गहमणे समाहियमणे            सद्धासंवेगनिज्जरमणे पवतणवच्छलभावियमणे उट्टेऊण य पहट्टतुट्टे जहारायणियं निमंतइत्ता य साहवे भावओ            य विइण्णे य गुरुजणेणं उपविट्टे संपमज्जिऊण ससीसं कायं तथा करतलं अमुच्छित्ते अगिद्धे अगट्टिए अग-            हिते अणज्झोववण्णे अणाइले अलुद्धे अणत्तट्टित्ते असुरसुरं अचवचवं अदुत्तमविलंबियं अपरिसाडिं आलोय-            भायणे जयं पयत्तेण ववगयसंजोगमणिंगालं च विगयधूमं अक्खोवजणाणुलेवणभूयं संजमजायामायानिमित्तं         </p>  </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International</small> <span style="margin-left: 200px;"><small>For Personal &amp; Private Use Only</small></span> <span style="float: right;"><small>www.jainelibrary.org</small></span> </p>



<p>आगम (१०)</p>	<p><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="353 451 470 678" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०१ ॥</p> </div> <div data-bbox="593 451 1724 941" style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>संजमभारवहणद्वयाए भुंजेजा पाणधारणद्वयाए संजएण समिये एवं आहारसमित्तजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिद्वनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजए सुसाहू, पंचमं आदाननिकखेवण-समिई पीढफलगसिजासंधारगवत्थपत्तकंबलदंडगरयहरणचोलपट्टगमुहपोत्तिगपायपुञ्छणोदी एयंपि संजम-स्स उववूहणद्वयाए वातातवदंसमसगसीयपरिरक्खणद्वयाए उवगरणं रागदोसरहितं परिहरितव्वं संजमेणं निच्चं पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए अहो य राओ य अप्पमत्तेण होइ सययं निक्खियव्वं च गिण्हियव्वं च भा-यणभंडोवहिउवगरणं एवं आयाणभंडनिकखेवणासमित्तजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा असबलमसंकिलिद्वनिव्वणचरित्तभावणाए अहिंसए संजते सुसाहू, एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होति सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मणव्वयणकायपरिरक्खणएहिं णिच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धित्तमया म-त्तिमया अणासवो अकलुसो अच्छिदो असंकिलिट्ठो सुद्धो संव्वजिणमणुत्तातो, एवं पढमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तिरियं किट्टियं आराहियं आणाते अणुपालियं भवति, एयं नायमुणिणा भगवया पन्नक्खियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं सुदेसितं पसत्थं पढमं संवरदारं समत्तं तिबेभि ॥ १ ॥ (सू० २३)</p> </div> <div data-bbox="1848 451 1964 654" style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>१ संवर द्वारे प्रथमव्रत भावनाः सू० २३</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">‘जंबु’सि हे जम्बू! ‘एत्तो’ गाहा इत-आश्रवद्वारभणनामत्तरं संवरणं संवरः-कर्मणामनुपादानं तस्य द्वा-राणीव द्वाराणि-उपायाः संवरद्वाराणि पञ्च वक्ष्यामि-भणिष्यामि आनुपूर्व्या-प्राणातिपातविरमणादिक्रमेण</p> <p style="text-align: center;">॥ १०१ ॥</p>
	<p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>यथा भगिनानि भगवता-श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिना, अविपर्ययमात्रेणेह साधर्म्यं न तु युगपत्संकल- संशयव्यवच्छेदसर्वस्वभाषानुगामिभाषादिभिरतिशयैरिति, सर्वदुःखविमोक्षणार्थमिति ॥ १ ॥ ‘पदमं’ गाथा, प्रथमं संवरद्वारं भवति अहिंसा द्वितीयं सत्यवचनमित्येवंभूतनामकं प्रज्ञसं-प्ररूपितं दत्तं-वितीर्णमशानादि अनुज्ञातं-भोग्यतयैव वितीर्णं पीठफलकावग्रहादि न त्वशानादिवहत्तं ग्राह्यमिति शेषः, ‘संवरो’त्ति दत्ता- नुज्ञातग्रहणलक्षणस्तृतीयः संवर इत्यर्थः, इदं च संवरशब्दे विना गाथापश्चाद् प्रसिद्धलक्षणं भवति, न च संवरशब्दवर्जिता काचिद्वाचनोपलभ्यते, तथा ब्रह्मचर्यं अपरिग्रहत्वं च चतुर्थपञ्चमी संवराविति ॥ २ ॥ ‘तत्थ’ गाथा, तत्र-तेषु पञ्चतु मध्ये प्रथमं संवरद्वारमहिंसा ‘तसयावरसंभवभूयंस्वैमकरि’त्ति त्रसस्थावराणां सर्वेषां भूतानां क्षेमकरणशीला तस्या अहिंसायाः संभावनायास्तु-भावनापञ्चकोपेताया एव ‘किंचि’त्ति किञ्चनल्पं वक्ष्ये गुणोद्देशं-गुणदेशमिति । सम्प्रति सविशेषगमनन्तरोदितमेवार्थं गद्येनाह-‘ताणि उ’त्ति यानि संवरशब्देनाभिहितानि तानि पुनरिमानि-वक्ष्यमाणानि, हे सुव्रत!-शोभनव्रत! जंबूनामन्! महा- न्ति-करणत्रययोगत्रयेण यावज्जीवतया सर्वविषयनिवृत्तिरूपत्वात् अणुव्रतापेक्षया बृहन्ति व्रतानि-नियमा महाव्रतानि ‘लोए धिइअव्वयाइ’ति लोके धृतिदानि-जीवलोकचित्तस्वास्थ्यकारीणि व्रतानि यानि तानि तथा, वाचनान्तरे-‘लोयहिइसव्वयाइ’ति तत्र लोकाय हितं सर्वं ददति यानि तानि, श्रुतसागरे देशितानि यानि तानि तथा, तथा तपः-अनशानादि पूर्वकर्मनिर्जरणफलं संयमः-पृथिव्यादिसंरक्षणलक्षणोऽभिनवक-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>“अहिंसा” स्वरूपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०२ ॥</p> <p>मानुपादानफलस्तद्रूपाणि व्रतानि तपःसंयमयोर्वा नास्ति व्ययः-क्षयो येषु तानि तपःसंयमाव्ययानि, तथा शीलं-समाधानं गुणाश्च-विनयादयः तैर्वराणि-प्रधानानि यानि व्रतानि तानि शीलगुणवरव्रतानि शीलगुणवराव्ययानि वा अथवा शीलस्य गुणवराणां च-वरगुणानां व्रजः-समुदायो येषु तानि शीलगुणवरव्रजानि, तथा सत्यं-मृषावादवर्जनं आर्जवं-मायावर्जनं तत्प्रधानानि व्रतानि यानि तानि तथा सत्यार्जवाव्ययानि वा, तथा नरकतिर्यग्मनुजदेवगतीर्विवर्जयन्ति-मोक्षप्रापकतया व्यवच्छेदयन्ति यानि तानि तथा, सर्वैर्जनैः शिष्यन्ते-प्रतिपाद्यन्ते यानि तानि सर्वजिनशासनानि तान्येव कप्रत्यये सर्वजिनशासनकानि, कर्मरजो विदारयन्ति-स्फोटयन्ति यानि तानि तथा, भवशतविनाशनकानि अत एव दुःखशतविमोचनकानि सुखशतप्रवर्त्तकानीति च कण्ठ्यं, कापुरुषैः दुःखेनोत्तीर्यन्ते-निष्ठां नीयन्त इति कापुरुषदुरुत्तराणि, सत्पुरुषनिषेवितानि, वाचनान्तरे ‘सत्पुरुषप्रसतीरियाइं’ति सत्पुरुषप्रसतीराणीत्यर्थः, इह च पुरुषग्रहः स्त्रीणामुपलक्षणमिति न तन्निषेधोऽत्र प्रतिपत्तव्यः, बहु चेह वाच्यं तच्च ग्रन्थान्तरेभ्योऽवसेयं, ‘गिन्वाणगमणमगगसगगपणापगाइं’ति निर्वाणगमने मार्ग इव मार्गो यानि तानि तथा स्वर्गं च देहिनं प्रणयन्ति-नयन्ति यानि तानि तथा, क्वचित् ‘सगगपयाणगाइं’ति पाठः तत्र स्वर्गं गन्तव्ये प्रयाणकानीव-गमनानीव यानि तानि स्वर्गप्रयाणकानि, ततः कर्मधारयः, अथ महाव्रतसंज्ञितानां संवरद्वाराणां परिमाणमाह-संवरद्वाराणि पञ्च, एतेषामेव शिष्टप्रणेतृकत्वमाह-कथितानि तु भगवता-अभिहितानि पुनरेतानि भगवता-श्रीमन्महावीरेण अतः श्रद्धेयानि भ-</p> <p style="text-align: right;">१ संवर द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३</p> <p style="text-align: right;">॥ १०२ ॥</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
	<p>“अहिंसा” स्वरूपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>



आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>वन्तीति भाव इति प्रथमसंवरध्ययनप्रस्तावना । अथ प्रथमसंवरनिरूपणायाह—‘तत्थे’त्यादि, तत्र-तेषु प- ञ्चसु संवरद्वारेषु मध्ये प्रथमं-आद्यं संवरद्वारमहिंसा, किंभूता?—या सा सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य भवति, ‘दीवो’त्ति द्वीपो दीपो वा यथाऽगाधजलधिमध्यमग्नानां स्वैरं श्वापदकदम्बकदर्थितानां महोर्मिमालामध्य- मानगात्राणां त्राणं भवति द्वीपः प्राणिनां एवमियमहिंसा संसारसागरमध्यमधिगतानां व्यसनशतश्वापद- पीडितानां संयोगवियोगवीचिविधुराणां त्राणं भवति, तस्याः संसारसागरोत्तारहेतुत्वात् इति अहिंसा द्वीप उक्तः, यथा वा दीपोऽन्धकारनिराकृतदृक्प्रसराणां हेयोपादेयार्थहानोपादानविमूढमनसां तिमिरनिकरनि- राकरणेन प्रवृत्त्यादिकारणं भवत्येवमहिंसा ज्ञानावरणादिकर्मतमिस्रस्त्रसंसेनेन विशुद्धबुद्धिप्रभापटलप्रवर्त्तनेन प्रवृत्त्यादिकारणत्वाद्द्वीप उक्ता, तथा त्राणं स्वपरेषामापदः संरक्षणात् तथा शरणं तथैव सम्पदः सम्पादक- त्वात् गम्यते-श्रेयोऽर्थभिराश्रीयते इति गतिः प्रतिष्ठन्ति-आसते सर्वगुणाः सुखानि वा यस्यां सा प्रतिष्ठा तथा निर्वाणं-मोक्षस्तद्धेतुत्वात् निर्वाणं तथा निर्वृत्तिः-स्वास्थ्यं समाधिः-समता शक्तिः शक्तिहेतुत्वात् शान्तिर्वा-द्रोहचिरतिः कीर्तिः ख्यातिहेतुत्वात् कान्तिः कमनीयताकारणत्वात् रतिश्च रतिहेतुत्वात् विर- तिश्च-निवृत्तिः पापात् श्रुतं-श्रुतज्ञानमङ्गल-कारणं यस्याः सा श्रुताङ्गा, आह च—“पढमं नाणं तओ दए”- त्यादि, तृप्तिहेतुत्वात्तृप्तिः, ततः कर्मधारयः, १०, तथा दया-देहिरक्षा तथा विमुच्यते प्राणी सकलबन्धनेभ्यो यया सा विमुक्तिः तथा क्षान्तिः-क्रोधनिग्रहस्तज्जन्यत्वाद्दहिंसाऽपि क्षान्तिरुक्ता सम्यक्त्वं-सम्यग्बोधिरूपमा-</p> </div> <p style="text-align: center;">१८</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>“अहिंसा” स्वरूपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>राध्यते यथा सा सम्यक्त्वाराधना ‘महंति’त्ति सर्वधर्मानुष्ठानाना बृहती, आह च—“एकं चिय एत्थ वयं नि- दिदं जिणवरं हिं सव्वेहिं । पाणातिवायविरमणमवसेसा तस्स रक्खट्ठा ॥ १ ॥” [ एकमेवात्र व्रतं निर्दिष्टं जिनवरैः सर्वैः । प्राणातिपातविरमणमवशेषाणि तस्य रक्षार्थम् ॥ १ ॥ ] बोधिः—सर्वज्ञधर्मप्राप्तिः अहिंसारूप- त्वाच्च तस्याः अहिंसा बोधिरुक्ता, अथवा अहिंसा—अनुकम्पा सा च बोधिकारणमिति बोधिरेवोच्यते, बोधि- कारणत्वं चानुकम्पायाः ‘अणुकंपसकामणिज्जरबालतवे दाणविणयविन्भंगे । संजोगविप्पजोगे वसणूसवइ- हिसिक्कारे’ ॥ १ ॥ [ अनुकम्पाऽकामनिर्जराबालतपोदानविनयविभङ्गाः । संयोगविप्रयोगौ व्यसनोत्सवद्विस- त्काराः ॥ १ ॥ ] इति वचनादिति, तथा बुद्धिसाफल्यकारणत्वाद्बुद्धिः, यदाह—“बावत्तरिकलाकुसला पंडि- यपुरिसा अपंडिया चेव । सव्वकलाणं पवरं जे धम्मकलं न याणंति ॥ १ ॥” [ द्वासप्ततिकलाकुशलाः पण्डि- तपुरुषाः अपण्डिताश्चैव । सर्वकलानां प्रवरां ये न धर्मकलां जानन्ति ॥ १ ॥ ] धर्मश्चाहिंसैव, धृतिः—चित्तदाह्यं तत्परिपालनीयत्वादस्या धृतिरेवोच्यते, समृद्धिहेतुत्वेन समृद्धिरेवोच्यते, एवं ऋद्धिः २०, वृद्धिः, तथा साद्य- पर्यवसितमुक्तिस्थितेहेतुत्वात्स्थितिः, तथा पुष्टिः पुण्योपचयकारणत्वात्, आह च—“पुष्टिः पुण्योपचयः” नन्द- यति—समृद्धिं नयतीति नन्दा, भदन्ते—कल्याणीकरोति देहिनमिति भद्रा, विशुद्धिः पापक्षयोपायत्वेन जीवनिर्मलतास्वरूपत्वात्, आह च—“शुद्धिः पापक्षयेण [जीव]निर्मलता” तथा केवलज्ञानादिलब्धिनिमित्त- त्वाल्लब्धिः, विशिष्टदृष्टिः—प्रधानं दर्शनं मतमित्यर्थः, तदन्यदर्शनस्याप्राधान्याद्, आह च—किं तीएपढियाए ?</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ संवर द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १०३ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>“अहिंसा” स्वरूपम् एवं षष्ठी-नामानि</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>पयकोडीए पलालभूयाए । जत्थेत्तियं न नायं परस्स पीडा न कायच्चा ॥ १ ॥’ [किं तथा पठितया पदकोश्या पलालभूतया । यत्रेयत् न ज्ञातं परस्य पीडा न कर्त्तव्या ॥१॥ ] कल्याणं कल्याणप्रापकत्वात् मङ्गलं दुरितोपशान्तिहेतुत्वात् ३०, प्रमोदः प्रमोदोत्पादकत्वात् विभूतिः सर्वविभूतिनिबन्धनत्वात् रक्षा जीवरक्षणस्वभावत्वात् सिद्धावासः मोक्षवासनिबन्धनत्वात् अनाश्रवः कम्मबन्धनिरोधोपायत्वात् केवलिनां स्थानं केवलिनामहिंसायां व्यवस्थितत्वात् ‘सिवसमितिशीलसंजमोत्ति य’ शिवहेतुत्वेन शिवं समितिः-सम्यक्प्रवृत्तिस्तद्रूपत्वादहिंसा समितिः शीलं-समाधानं तद्रूपत्वाच्छीलं संयमो-हिंसात् उपरमः इति-उपप्रदर्शने चः समुच्चये ४०, ‘शीलपरिघरो’त्ति शीलपरिग्रहं-चारित्रस्थानं संवरश्च प्रतीतः गुप्तिः-अशुभानां मनःप्रभृतीनां निरोधः विशिष्टोऽवसायो-निश्चयो व्यवसायः उच्छ्रयश्च-भावोन्नतत्वं यज्ञो-भावतो देवपूजा आयतनं-गुणानामाश्रयः यजनं-अभयस्य दानं यतनं वा-प्राणिरक्षणं प्रयत्नः-अप्रमादः प्रमादवर्जनं आश्वासः-आश्वासनं प्राणिनामेव ५० विश्वासो-विश्रंभः ‘अभउ’त्ति अभयं सर्वस्यापीति प्राणिगणस्य ‘अमाघातः’ अमारिः चोक्षपवित्रा एकार्थशब्दद्वयोपादानात् अतिशयपवित्रा शुचिः-भावशौचरूपा, आह च-“सत्यं शौचं तपः शौचं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः । सर्वभूतदया शौचं, जलशौचं च पञ्चमम् ॥ १ ॥” इति, पूता-पवित्रा पूजा वा भावतो देवताया अर्चनं विमलः प्रभासा च तन्निबन्धनत्वात् ‘निम्मलघर’त्ति निर्मलं जीवं करोति या सा तथा अतिशयेन वा निम्मला निर्मलतरा ६०, इतिः नास्नां समाप्तौ, एवमादीनि-एवंप्रकाराणि निजकगुणनिर्मितानि यथार्थानीत्यर्थः,</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०४ ॥</p> <p style="text-align: center;">अत एवाह-पर्यायनामानि-तत्तद्दर्माश्रिताभिधानानि भवन्त्यर्हिंसायाः भगवत्या इति पूजावचनं, एषा भग- वत्यर्हिंसा या सा भीतानामिव शरणमित्यत्राश्वासिका देहिनामिति गम्यं, ‘पक्खीणंपिच गमणं’ति पक्षिणा- मिव विहायोगमनं हिता देहिनामिति गम्यं, एवमन्यान्यपि षट् पदानि व्याख्येयानि, किं भीतादीनां शर- णादिसमैव सा?, नेत्याह—‘एत्तो’त्ति एतेभ्यः-अनन्तरोदितेभ्यः शरणादिभ्यो विशिष्टतरिका-प्रधानतरा अर्हिंसा हिततयेति गम्यते, शरणादितो हितमनैकान्तिकमनात्यन्तिकं च भवति अर्हिंसातस्तु तद्विपरीतं मोक्षावासिरिति, तथा ‘जा सा’ इत्यादि याऽसौ पृथिव्यादीनि च पञ्च प्रतीतानि बीजहरितानि च-वनस्प- तिविशेषाः आहारार्थत्वेन प्रधानतया शेषवनस्पतेर्भेदेनोक्ताः जलचरादीनि च प्रतीतानि यानि असंस्थाव- राणि सर्वभूतानि तेषां क्षेमङ्करी या सा तथा, एषा-एषैव भगवती अर्हिंसा नान्या, यथा लौकिकैः क- ल्पिता—‘कुलानि तारयेत् सप्त, यत्र गौर्वितृषीभवेत् । सर्वथा सर्वयत्नेन, श्रुयिष्ठमुदकं कुरु ॥ १ ॥’ इह गो- विषये या दया सा किल तन्मतेनार्हिंसा, अस्यां च पृथिव्युदकपूतरकादीनां हिंसाऽप्यस्तीत्येवंरूपा न सम्यगर्हिंसेति ॥ अथ यैरियमुपलब्धा सेविता च तानाह—‘जा से’त्यादि अपरिमितज्ञानदर्शनधरैरिति कण्ठ्यं, शीलं-समाधानं तदेव गुणः शीलगुणः तं विनयतपःसंयमाश्च नयन्ति-प्रकर्षं प्रापयन्ति ये ते तथा तैस्तीर्थकरैः-द्वादशाङ्गप्रणायकैः सर्वजगद्रत्नसलैः त्रिलोकमहितैरिति च कण्ठ्यं, कैरेवंविधैः किमित्याह-जिन- चन्द्रैः-कारुणिकानिशाकरैः सुष्ठु दृष्टा-केवलावलोकनेन कारणतः स्वरूपतः कार्यतश्च सम्यग्विनिश्चिता, तत्र गुरु-</p> <p style="text-align: center;">१ संवर द्वारे अर्हिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १०४ ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>पदेशकर्मक्षयोपशमादि बाह्याभ्यन्तरं कारणमस्याः, प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणलक्षणहिंसाप्रतिपक्षः स्वरूपं स्वर्गापवर्गप्राप्तिलक्षणं च कार्यमिति, तथा अवधिजिना-विशिष्टावधिज्ञानिनस्तैरपि विज्ञाता-ज्ञपरिज्ञया बुद्ध्या प्रत्याख्यानपरिज्ञया च सेविता, ऋज्वी-मनोमात्रग्राहिणी “रिजु सामन्नं तम्मत्तग्राहिणी रिजुमई मणोनाणं । पायं विसेसविमुहं घडमेत्तं चिंतियं मुणति ॥ १ ॥” त्ति [ऋजुः सामान्यं तन्मात्रग्राहिणी ऋजुमतिर्मनोज्ञानं । प्रायो विशेषविमुखं घटमात्रं चिन्तितं जानाति ॥ १ ॥] वचनात् मतिः-मनःपर्यायज्ञानविशेषो येषां ते ऋजु-मतयस्तैरपि दृष्टा-अवलोकिता विपुलमतयो-मनोविशेषग्राहिमनःपर्यायज्ञानिनः, उक्तं च—“विउलं वत्थु-विसेसणमाणं तग्गाहिणी मई विउला । चिंतियमणुसरइ घडं पसंगओ पज्जवसएहिं ॥ १ ॥” [विपुलं वस्तु-विशेषणमानं तद्ग्राहिणी मतिर्विपुला । चिन्तितमनुसरति घटं प्रसङ्गतः पर्यवशतैः ॥ १ ॥] तैरपि विदिता-ज्ञाता पूर्वधरैरधीता-श्रुतनिबद्धा सती पठिता, ‘वेउव्वीहिं पइन्न’त्ति विकुर्विभिः-वैक्रियकारिभिः प्रतीर्णा-निस्तीर्णा आजन्म पालितेत्यर्थः, ‘आभिणिवोहियणाणीही’त्यादि ‘समणुचिन्ने’त्येतदन्तं सुगमं, नवरं ‘आमोसहि-पत्तेहिं’ति आमर्शः-संस्पर्शः स एवौषधिरिवौषधिः-सर्वरोगापहारित्वात्तपश्चरणप्रभवो लब्धिविशेषः तां प्राप्ता ये ते तथा तैः, एचमुत्तरत्तापि, नवरं खेलो-निष्ठीवनं जल्लः-शरीरमलः ‘विप्पोसहि’त्ति विगुषो-मूत्र-पुरीषावयवाः अथवा वित्ति-विद् विष्ठा पत्ति-प्रश्रवणं मूत्रं, शेषं तथैव, ‘सव्वोसहि’त्ति सर्व एवानन्तरो-दिता आमर्शादयोऽन्ये च बहव औषधयः सवौषधयः, बीजकल्पा बुद्धिर्येषां ते बीजबुद्धयः-अर्थमात्रमवाप्य</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०५ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>नानार्थसमूहाभ्यूहिका बुद्धियेषां ते इत्यर्थः, कोष्ठ इव बुद्धियेषां ते कोष्ठबुद्धयः सकृज्ज्ञाताविनष्टबुद्धय इ- त्यर्थः, पदेनैकेन पदशतान्यनुसरन्ति पदानुसारिणः, इह गाथा भवन्ति—“संफरिसणमामोसो मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा । अन्ने विडत्ति विट्ठा भासंति य पत्ति पासवणं ॥ १ ॥ एए अन्ने य बहू जेसिं सव्वे य सुर- भओऽवयवा । रोगोवसमसमत्था ते होंति तओसहिप्पत्ता ॥ २ ॥ जो मुत्तपण्ण बहू सुयमणुभावइ पया- णुसारी सो । जो अत्थपण्णत्थं अणुसरइ स वीयबुद्धीओ ॥ ३ ॥ कोट्टयधन्नमुनिग्गल मुत्तत्था कोट्टबुद्धीया” तथा सम्भिन्नं-सर्वतः सर्वशरीरावयवैः शृण्वन्तीति सम्भिन्नश्रोतारः अथवा संभिन्नानि-प्रत्येकं ग्राहकत्वेन शब्दादिविषयैः व्याप्तानि श्रोतांसि-इन्द्रियाणि येषां ते संभिन्नश्रोतसः सामस्येन वा भिन्नान्-परस्पर- भेदेन शब्दान् शृण्वन्तीति सम्भिन्नश्रोतारस्तैः, इह गाथा—“जो सुणइ सव्वओ मुणइ सव्वविसए व स- व्वसोएहिं । सुणइ बहुए व सहे भन्नइ संभिन्नसोओ सो ॥ १ ॥” मनोबलिकैः-निश्चलमनोभिः वाग्ब- लिकैः-दृढप्रतिज्ञैः कायबलिकैः-परीषहापीडितशरीरैः ज्ञानादिबलिकैः-दृढज्ञानादिभिः क्षीरमिव मधुरं वच- नमाश्रवन्ति-क्षरन्ति ये ते क्षीराश्रवा-लब्धिविशेषवन्तस्तैः, एवमन्यदपि पदद्वयं, इह गाथाद्धं—“खीरमहु- सप्पिसाओवमा उ वयणे तदासवा हुंति ।” महानसं-रसवतीस्थानमुपचाराद्रसवत्यपि अक्षीणं महानसं येषां ते अक्षीणमहानसिकाः, स्वार्थानीतभक्तेन लक्ष्मपि तृप्तितो भोजयतां यावदात्मना न तद्भुक्तं तावन्न क्षीयते तद्येषां ते इति भावना, अतस्तैः, तथाऽतिशयचरणाच्चारणा-विशिष्टाकाशगमनलब्धियुक्ताः ते च</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ संवर द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १०५ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>जङ्घाचारणा विद्याचारणाश्चेति, इह गाथाः—“अहसयचरणसमत्था जंघाविज्जाहि चारणा मुणओ । जंघाहि जाइ पढमो णिस्सं काउं रविकरेचि ॥ १ ॥ एगुप्पाएण गओ रुयगवरंमि उ ततो पडिनियत्तो । वीएणं णंदीसरमिहं तओ एइ तइएणं ॥ २ ॥ पढमेण पंडगवणं विइउप्पाएण णंदणं एइ । तइउप्पाएण तओ इह जंघाचारणो एइ ॥ ३ ॥ पढमेण माणुसोत्तरणगं स णंदीसरं विइएणं । एइ तओ तइएणं कयचेइयवंदणो इहइ ॥ ४ ॥ पढमेण णंदणवणे वीउप्पाएण पंडगवणम्मि । एइ इहं तइएणं जो विज्जाचारणो होइ ॥ ५ ॥” [ अतिशयचरणसमर्था जङ्घाविद्याभ्यां चारणाः मुनयः । जङ्घाभ्यां याति प्रथमः निश्रां कृत्वा रविकिरणानपि ॥ १ ॥ एकोत्पोतेन गतो रुचकवरे ततः प्रतिनिवृत्तो द्वितीयेन नन्दीश्वरमिहैति ततस्तृतीयेन ॥ २ ॥ प्रथमेन पाण्डुकवचनं द्वितीयोत्पातेन नन्दनमायाति । तृतीयोत्पातेन तत इह जङ्घाचारण आयाति ॥ ३ ॥ प्रथमेन मानुषोत्तरणगं स नन्दीश्वरं द्वितीयेन कृतचैत्यवन्दनस्ततस्तृतीयेन आयातीह ॥ ४ ॥ प्रथमेन नन्दनवने द्वितीयोत्पातेन पाण्डुकवने । तृतीयेनायातीह यो विद्याचारणो भवति ॥ ५ ॥ ] ‘चउत्थभत्तिएहिं’ इह एवं यावत्करणत् ‘छट्टभत्तिएहिं अट्टमभत्तिएहिं एवं दुसमदुवालसचोइससोलसअट्टमासमासदोमासतिमासचउमास पंचमासा’ इति द्रष्टव्यं, उत्क्षिप्तं-पाकपिठराहुद्धृतमेव चरन्ति-गवेषयन्ति ये ते उत्क्षिप्तचरकाः, एवं सर्वत्र, नवरं निक्षिप्तं-पाकस्थालीस्थं अन्तं-वल्लचणकादि प्रान्तं-तदेव भुक्तावशेषं पर्युषितं वा रूक्षं-निःस्नेहं समुदानं-भैक्ष्यं ‘अन्नतिलाएहिं’ति दोषान्नभोजिभिः ‘मौनचरकैः’ वाच्यमैः, संसृष्टेन हस्तेन भाजनेन च</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअ-भयदेव० वृत्तिः ॥ १०६ ॥</p> <p>दीयमानमन्नादि ग्राह्यमित्येवंरूपः कल्पः-समाचारो येषां ते संसृष्टकल्पिकास्तैः, यत्प्रकारं देयं द्रव्यं तज्जातेन-तत्प्रकारेण द्रव्येण ये संसृष्टे हस्तभाजने ताभ्यां दीयमानं ग्राह्यमित्येवंरूपः कल्पः-समाचारो येषां ते तज्जातसंसृष्टकल्पिकास्तैः, उपनिधिना-प्रत्यासत्त्या चरन्ति-प्रत्यासन्नमेव गृह्णन्ति ये ते औपनिधिकाः तैः ‘शुद्धैषणिकाः’ शङ्कितादिदोषपरिहारचारिणस्तैः सङ्ख्याप्रधानाभिः पञ्चपादिपरिमाणवतीभिर्दत्तिभिः-सकृद्भक्तादिपात्रपातलक्षणाभिश्चरन्ति ये ते सङ्ख्यादत्तिकास्तैः, दत्तिलक्षणं चैतत्—‘दत्तीओ जत्सिए वारे, खिवई होति तत्तिया । अब्बोच्छिन्ननिपायाओ, दत्ती होति दवेतरा ॥ १ ॥ [ दत्तयो यावतो वारान् क्षिपति भवन्ति तावत्यः । अब्बवच्छिन्ननिपातात् दत्तिर्भवति दवेतरयोः ॥ १ ॥ ] दृष्टिलाभिकाः-ये दृश्यमानस्थानादानीतं गृह्णन्ति, अदृष्टिलाभिका ये अदृष्टपूर्वेण दीयमानं गृह्णन्ति, पृष्टलाभिका ये कल्पते इदं इदं च भवते साधो! इत्येवं प्रश्नपूर्वकमेव लब्धं गृह्णन्ति, भिन्नस्यैव-स्फोटितस्यैव पिण्डस्य-ओदनादिपिण्डस्य पातः-पात्रक्षेपो येषां ग्राह्यतयाऽस्ति ते भिन्नपिण्डपातिकाः तैः, परिमितपिण्डपातिकैः-परिमितगृहप्रवेशादिना वृत्तिसङ्क्षेपवद्भिः, ‘अंताहारे’त्यादि अन्तादीनि पदानि प्राग्वदेव नवरं पूर्वत्र चरणं गवेषणमात्रमुक्तमिह त्वाहारो-भोजनं जीवनं तु-तथैवाजन्मापि प्रवृत्तिरिति विशेषोऽवसेयः, तथा अरसं-हिङ्गवादिभिरसंस्कृतं विरसं-पुराणत्वात् गतरसं तथा तुच्छं-अल्पं, तथा उपशान्तजीविभिः अन्तर्दृश्यपेक्षया प्रशान्तजीविभिः बहिर्दृश्यपेक्षया, विविक्तैः-दोषविकलैर्भक्तादिभिर्जीवन्ति ये ते विविक्तजीविनस्तैः, अक्षीरमधुस-</p> <p align="right">१ संवर द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १०६ ॥</p> </div> <p align="center">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम (१०)	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>र्षिष्वकैः-दुग्धक्षौद्रघृतवर्जकैः [ अमध्यमांसाशिभिः ] ‘ठाणाइएहिं’ति स्थानं-ऊर्ध्वस्थानं निषीदनस्थानं त्वगव- र्त्तनस्थानं तदभिग्रहविशेषेणाददति-विदधति ये ते तथा तैः, एतदेव प्रपञ्चयति—‘प्रतिमास्थागिभिः’ प्रति- मया-कायोत्सर्गेण भिक्षुप्रतिमया वा मासिक्यादिकया तिष्ठन्ति ये ते तथा तैः, स्थानमुत्कटुकं येषां ते स्था- नोत्कटुकास्तैः वीरासनं-भून्यस्तपादस्य सिंहासनोपवेशनमिव तदस्ति येषां ते वीरासनिकास्तैः निषद्या- समपुतोपवेशनादिका तथा चरन्तीति नैषधिकास्तैः, दण्डस्येवायतं संस्थानं येषामस्ति ते दण्डायतिकास्तैः, लगंडं-दुःसंस्थितं काष्ठं तद्वच्चिरःपाष्णीनां भूलग्नेन शेरते ये ते लगण्डशायिनस्तैः, उक्तं च—“वीरासनं तु सीहासणे व्व जह मुक्कजाणुग [ मुत्कलपादः &gt; णिविद्धो । दंडगलगंडउवमा आयत कुज्जे य दोणहंपि ॥१॥” [ दण्डे आयतः लगण्डे कुब्जः ] एक एव पार्श्वो भूम्या सम्बध्यते येषां न द्वितीयेन पार्श्वेन भवन्तीत्येकपा- र्श्विकास्तैः, आतापनैः-आतापनाकारिभिरिति, आतापना च त्रिविधा, यत आह—“आयावणा उ तिविहा उक्कोसा मज्झिमा जहन्ना य । उक्कोसा उ णिवन्ना णिसन्न मज्झा ठिय जहन्ना ॥ १ ॥” [ आतापना तु त्रिविधा उत्कृष्टा मध्यमा जघन्या च । उत्कृष्टा तु सुप्तस्य मध्यमा निषण्णस्य स्थितस्य जघन्या ] अप्रावृतैः- प्रावरण- वर्जितैः ‘अनिद्भएहिं’ति अनिष्टीवकैर्मुखश्लेष्मणोऽपरिष्ठापकैः ‘अकण्डूयकैः’ अकण्डूयनकारकैः ‘धृतकेश- श्मश्रुरोमनखैः’ धृताः-संस्कारापेक्षया त्यक्ताः केशाः-शिरोजाः श्मश्रूणि-कूर्चाः केशाः रोमाणि-कक्षादिलो- मानि नखाश्च प्रसिद्धा यैस्ते तथा तैः सर्वगात्रप्रतिकर्मविप्रमुक्तैः अभ्यङ्गादिवर्जनात् ‘समणुच्चिन्न’न्ति सम-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>नुचीर्णा आसेचितेत्यर्थः, तथा श्रुतधराः-सूत्रधराः विदितोऽर्थकायः-अर्थराशिः श्रुताभिधेयो यथा सा तथा सा विदितार्थकाया बुद्धिः-मतिर्येषां ते तथा ततः कर्मधारयः श्रुतधरविदितार्थकायबुद्धयस्तै समनुपालितेति सम्बन्धः, तथा धीरा-स्थिरा अक्षोभा वा मतिः-अवग्रहादिका बुद्धिश्च-उत्पत्तिकयादिका येषां ते तथा, ते च ये ते इत्युद्देशः, आशीर्विषा-नागास्ते च ते उग्रतेजसश्च-तीव्रप्रभावास्तीव्रविषा इत्यर्थः तत्कल्पाः-तत्स-दृशाः शापेनोपघातकारित्वात्, तथा निश्चयो-वस्तुनिर्णय व्यवसायः-पुरुषकारस्तयोः पर्याप्तयोः-परिपूर्णयोः कृता-विहिता मतिः-बुद्धियैस्ते तथा, पाठान्तरेण निश्चयव्यवसायौ विनीतौ-आत्मनि प्रापितो यैः पर्याप्ता च-कृता मतिर्यैस्ते तथा, नित्यं-सदा स्वाध्यायो-वाचनादिध्यानं च-चित्तनिरोधरूपं येषां ते तथा, ध्यान-विशेषोपदर्शनार्थमाह-अनुबद्धं-सततं धर्मध्यानं-आज्ञाविचयादिलक्षणं येषां तेऽनुबद्धधर्मध्यानाः ततः कर्मधारयः, पञ्चमहाव्रतरूपं यच्चरित्रं तेन युक्ता ये ते तथा, समिताः-सम्यक्प्रवृत्ताः समितिष्वीर्यासमि-त्यादिषु शमितपापाः-क्षपितकिल्बिषाः षड्विधजगद्गतसलाः-षड्जीवनिकायहिताः ‘निच्चमप्पमत्ता’ इति कण्ठ्यं ‘एएहि अंत्ति ये ते पूर्वोक्तगुणा एतैश्चान्यैश्चानुकूललक्षणैर्गुणवद्भिर्याऽसावनुपालिता भगवती अ-हिंसा प्रथमं संवरद्वारमिति हृदयं । अथाहिंसापालनोद्यतस्य यद्विधेयं तदुच्यते—‘इमं चे’त्यादि, अयं च व-क्ष्यमाणविशेषण उच्छो गवेषणीय इति सम्बन्धः, किमर्थमत आह-पृथिव्युदकाग्निमारुततरुगणत्रसस्थावर-सर्वभूतेषु विषये या संयमदया-संयमात्मिका घृणा न तु मिथ्यादशामिव बन्धात्मिका तदर्थ-तद्भेतोः शुद्धः-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ संवर द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १०७ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>अनवद्यः उञ्छो-भैक्ष्यं गवेषयितव्यः-अन्वेषणीयः, इह चोञ्छशब्दस्य पुंलिङ्गत्वेऽपि प्राकृतत्वात् नपुंसकलिङ्गनिर्देशो न दोषायेति, उञ्छमेव विशेषयन्नाह—‘अक्रय’मित्यादि, अकृतः साध्वर्थं दायकेन पाकतो न विहितः ‘अकारिय’स्ति न चान्यैः कारितः ‘अणाहृय’स्ति अनाहृतो गृहस्थेन साधारणमन्त्रणपूर्वकं दीयमानः ‘अनुदिष्टो’ यावन्तिकादिभेदवर्जितः ‘अकीयकडं’ति न क्रीयते-न क्रयेण साध्वर्थं कृतः अक्रीतकृतः, एतदेव प्रपञ्चयति-नवभिश्च कोटिभिः सुपरिशुद्धः, ताश्चेमाः-न हंति १ न घातयति २ व्रन्तं नानुजानाति ३ न पचति ४ न पाचयति ५ पचन्तं नानुजानाति ६ न क्रीणाति ७ न क्रापयति ८ क्रीणन्तं नानुजानाति ९, तथा दशभिर्दोषैर्विप्रमुक्तः, ते चामी—‘संकिय १ मन्त्रिखय २ निन्त्रिखत्त ३ पिहिय ४ साहरिय ५ दायगु ६ म्मीसे ७ । अपरिणय ८ लिप्त ९ छदिय १० एसणदोसा दस हवन्ति ॥ १ ॥’ [शङ्कितः अक्षितः निक्षितः पिहितः संहतः दायकदुष्टः उन्मिश्रः । अपरिणतो लिप्तः छर्दितः एषणादोषा दश भवन्ति ॥ १ ॥] ‘उग्गमुष्पायणेसणासुद्धं’ति उद्गमरूपा च या एषणा-गवेषणा तथा शुद्धो यः स तथा, तत्रोद्गमः षोडशविधः, आह च—“आहाकम्मु १ हेसिय २, पूहकम्मे य ३ मीसजाए य ४ । ठवणा ५ पाहुडियाए ६, पाओयर ७ कीय ८ पामिचे ९ ॥ १ ॥ परिणट्टिए १० अभिहडे ११, उन्मिन्न १२ मालोहडे इय १३ । अच्छिजे १४ अणिसिद्धे १५, अज्झोयरए १६ य सोलसमे ॥ २ ॥” [आधाकर्मिक औद्देशिकः पूतिकर्मा च मिश्रजातश्च । स्थापना प्राभृतिका प्रादुष्करणं क्रीतः प्रामिल्यः ॥ १ ॥ परिवर्त्तितः अभ्याहृतः उद्भिन्नः मालापहत इति ।</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between; align-items: center;"> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०८ ॥</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; width: 70%; text-align: center;"> <p>आच्छिद्य अनिमृष्टः अध्ववपूरकश्च षोडशः ॥ २ ॥ ] उत्पादनाऽपि षोडशविधैव, आह च—“धाई १ दृइ २ निमित्ते ३ आजीव ४ वणीमगे ५ तिगिच्छा य ६ । कोहे ७ माणे ८ माया ९ लोभे य १० ह्वंति दस एए ॥ १ ॥ पुर्वि पच्छा संथव ११-१२ विजा १३ मं ते य १४ चुणजोगे य १५ । उप्पायणाय दोसा सोलसमे मूल- कम्मे य १६ ॥ २ ॥” [धात्री दृती निमित्तं आजीवः वनीपकः चिकित्सा च । क्रोधो मानो माया लोभश्च भवन्ति दशैते ॥ १ ॥ पूर्वपश्चात्संस्तवो विद्या मन्त्रः चूर्णयोगश्च उत्पादनायाश्च दोषाः षोडशो मूलकर्म च ॥ २ ॥ ] ‘ववगयचुयचइयचत्तदेह’त्ति व्यपगताः—स्वयं पृथग्भूताः देववस्तुसम्भवा आगन्तुका वा कृम्या- दयः च्युता-मृताः स्वतः परतो वा देयवस्त्वात्मकाः पृथिवीकायिकादयः ‘चइय’त्ति त्याजिताः देयद्रव्यात् पृथक्कारिताः दायकेन ‘चत्त’त्ति स्वयमेव दायकेन त्यक्ताः देयद्रव्यात् पृथक्कृता देहाः—अभेदविवक्षया दे- हिनो यस्माद्बुद्ध्यात् स तथा स च, किमुक्तं भवति?—प्राशुकश्च—प्रगतप्राणिकः, वृद्धव्याख्या पुनरेवम्—वि- गतः—ओघतः चेतनापर्यायादचेतनत्वं प्राप्तः च्युतो—जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टः च्यावितः—ताभ्य एव आयुः- क्षयेण भ्रंशितः त्यक्तदेहः—परित्यक्तजीवसंसर्गसमुत्थशक्तिजनिताहारादिपरिणामप्रभवोपचय इति, उत्पा- दनादोषविवर्जितत्वं प्रपञ्चयन्नाह—‘ण णिसज्ज क्हापओयणक्खासुओणीयं’ न-नैव निषय-गोचरगत आ- सने उपविश्य कथाप्रयोजनं—धर्मकथाव्यापारं यत्करोति तन्निषयकथाप्रयोजनं तस्मात् आख्याश्रुताच्च—आ- ख्यानकप्रतिबद्धश्रुतात् दायकावर्जनार्थं नटेनेव प्रयुक्तात् यदुपनीतं—दायकेन दानार्थमुपहितं तत्तथा, भैक्षं</p> </div> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; width: 15%;"> <p>१ संवर द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १०८ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<p>आगम (१०)</p>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>गवेषयितव्यमिति सम्बन्धः, न-नैव चिकित्सा च-रोगप्रतीकारो मन्त्रश्च-चेटिकादिदेवाधिष्ठिताक्षरानुपूर्वी मूलं-कृताञ्जल्याद्यौषधिमूलं भैषजं च-द्रव्यसंयोगरूपं हेतुः-कारणं लाभापेक्षया यस्य भैक्षस्य तत्तथा न-नैव लक्षणं-शब्दप्रमाणस्त्रीपुरुषवास्त्वादिलक्षणं उत्पाताः-प्रकृतिविकाराः रक्तवृष्ट्यादयः स्वप्नो-निद्राविकारः ज्योतिषं-नक्षत्रचन्द्रयोगादिज्ञानोपायशास्त्रं निमित्तं-चूडामण्याद्युपदेशेनातीतादिभावसंवादनं कथा-अर्थ- कथादिका कुहकं-परेषां विस्मयोत्पादनप्रयोगः एभिराक्षिप्तेन यत्प्रयुक्तं-दानाय दायकेन व्यापारितं भैक्षं तत्तथा, तथा नापि दम्भनया-दम्भेन मायाप्रयोगेण नापि रक्षणया दायकस्य पुत्रतर्णकगृहादीनां नापि शासनया-शिक्षणया नाप्युक्तत्रयसमुदायेनेत्याह—‘नवी’त्यादि भैक्षं-भिक्षासमूहो गवेषयितव्यं-अन्वेष- णीयं, नापि वन्दनेन-स्तवनेन यथा—‘सो एसो जस्स गुणा वियरंति अवारिया दसदिसासु । इहरा कहासु सुव्वसि पच्चक्खं अज्ज दिट्ठोऽसि ॥ १ ॥’ [ एष स प्रत्यक्षः यस्य गुणा अवारिता दशसु दिक्षु प्रसरन्ति । अन्यथा कथासु श्रूयते अद्य प्रत्यक्षं दृष्टोऽसि ॥ १ ॥ ] नापि माननया-आसनदानादिप्रतिपत्त्या नापि पूज- नया-तीर्थनिर्मात्यदानमस्तकगन्धक्षेपमुखवस्त्रिकानमस्कारमालिकादानादिलक्षणया नाप्युक्तत्रययोगेनेत्याह —‘नवी’त्यादि, तथा नापि हीलनया-जात्युद्घटनतः नापि निन्दनया-देवदायकदोषोद्घटनेन नापि गर्ह- णया-लोकसमक्षदायकादिनिन्दया, नाप्येतन्नितयेनेत्याह—‘नवी’त्यादि, नापि भेषणया-अदित्सतो भयो- त्पादनेन नापि तर्जनया-तर्जनीचालनेन ज्ञास्यसि रे दुष्ट! इत्यादिभणनरूपया नापि ताडनया-चपेटादिदा-</p> <p>१९</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<p>आगम (१०)</p>	<p>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</p> <p>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px 0;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १०९ ॥</p> <p>नतः, नाप्युक्तत्रययोगेनेत्याह—‘नवी’त्यादि, नापि गौरवेण-गर्वेण राजपूजितोऽहमित्याद्यभिमानेन नापि कु- धनतया-दारिक्रयभावेन प्राकृतत्वेन वा क्रोधनतया नापि वनीपकतया-रङ्गवल्लीव्याकरणेन नाप्युक्तत्रय- मीलनेनेत्याह—‘नवी’त्यादि, नापि मित्रतया-मित्रभावमुपगम्येत्यर्थः नापि प्रार्थनया-यात्रया अपि तु साधु- रूपसन्दर्शनेन, आह च—“पडिरूवेण एसित्ता, मियं कालेण भक्खए ।” [ साधुरूपेणैषयित्वा मितं कालेन भक्षयेत् ] नापि सेवनया-स्वामिनो भृत्यवत्, नापि युगपदुक्तत्रयमीलनकेनेत्याह—‘नवी’त्यादि, यद्येवमेव च न गवेषयति भैक्षं भिक्षुस्तरिं तद्गवेषणायां किंविधोऽसौ भवेदित्याह-अज्ञातः-स्वयं स्वजनादिसम्बन्धाक- थनेन गृहस्थैरपरिज्ञातस्वजनादिभावः तथा ‘अगदिण’स्ति अग्रथितः परिज्ञानेऽपि तेषु तेन सम्बन्धिनाऽप्र- तिबद्धः आहारे वाऽगृह्यः ‘अदुहे’स्ति आहारे दायके वाऽद्विष्टः अदुष्टो वा ‘अदीण’स्ति अद्रीणः-अक्षुभितः अविमना-न विगतमानसः अलाभादिदोषात् अकरुणो-न दयास्थानं न्यगृह्णित्वात् अविषादी-अविषाद- वान् अदीन इत्यर्थः अपरितान्ताः-अश्रान्ताः योगा-मनःप्रभृतयः सद्नुष्ठानेषु यस्य सोऽपरितान्तयोगी अत एव यतनं-प्राप्तेषु संयमयोगेषु प्रयत्न उद्यमः घटनं च-अप्राप्तसंयमयोगप्राप्तये यत्न एव ते कुरुते यः स यतन- घटनकरणः तथा चरितः-सेवितो विनयो येन स चरितविनयः, तथा गुणयोगेन-क्षमादिगुणसम्बन्धेन स- म्प्रयुक्तो यः स तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, भिक्षुर्भिक्षैषणायां निरतो भवेदिति गम्यते, ‘इमं च’स्ति इदं पुनः पूर्वोक्तगुणभैक्षादिप्रतिपादनपरं प्रवचनमिति योगः सर्वजगज्जीवरक्षणरूपा या दया तदर्थं प्रावचनं</p> </div> <p style="text-align: right;">१ संवर- द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३</p> <p style="text-align: right;">॥ १०९ ॥</p> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>—प्रवचनं शासनं भगवता श्रीमन्महावीरेण सुकथितं न्यायाबाधितत्वेन आत्मनां-जीवानां हितं आत्महितं ‘पेक्षाभावियं’ति प्रेत्य-जन्मान्तरे भवति-शुद्धफलतया परिणमतीत्येवंशीलं प्रेत्यभाविकं आगमिष्यति काले भद्रं-कल्याणं यतस्तदागमिष्यद्भद्रं शुद्धं-निर्दोषं ‘नेआउयं’ति नैयायिकं न्यायवृत्ति अकुटिलं-मोक्षं प्रति ऋजु अनुत्तरं सर्वेषां दुःखानां-असुखानां पापानां च तत्कारणानां व्यपशमनं-उपशमकारकं यत्तत्तथा । अथ यदुक्तं ‘तीसे सभावणाए उ किंचि वोच्छं गुणुहेसं’ति तत्र का भावनाः?, अस्यां जिज्ञासायामाह— ‘तस्से’त्यादि तस्य-प्रथमस्य व्रतस्य भवन्तीति घटना, इमाः-वक्ष्यमाणप्रत्यक्षाः पञ्च भावनाः, भाव्यते-वा- स्यते व्रतेनात्मा यकाभिस्ता भावनाः-ईर्यासमित्यादयः, किमर्था भवन्तीत्याह—‘पाणा’ इत्यादि, प्रथमव्रतस्य यत्प्राणानिपातविरमणलक्षणं स्वरूपं तस्य परिरक्षणार्थाय ‘पढमं’ति प्रथमं भावनावस्तिवति गम्पते, स्थाने गमने च गुणयोगं-स्वपरप्रवचनोपघातवर्जनलक्षणगुणसम्बन्धं योजयति-करोति या सा तथा, युगान्तरे- यूपप्रमाणभूभागे निपतति या सा युगान्तरनिपातिका ततः कर्मधारयस्ततस्तया दृष्ट्या-चक्षुषा ‘इरियव्वं’ति -ईरितव्यं-गन्तव्यं, केनेत्याह-कीटपतङ्गादयस्त्रसाश्च स्थावराश्च कीटपतङ्गत्रसस्थावरास्तेषु दयापरो यस्तेन, मित्यं पुष्पफलत्वक्प्रवालकन्दमूलदकवृत्तिकाबीजहरितपरिवर्जकेन सम्यगिति प्रतीतं नवरं प्रवालः-पल्ल- वाङ्कुरः दकं-उदकमिति, अथेर्यासमित्या प्रवर्त्तमानस्य यत्स्यात्तदाह—‘एवं खलु’ति एवं च ईर्यासमित्या प्रवर्त्तमानस्येत्यर्थः सर्वे प्राणा सर्वे जीवा न हीलयितव्या-अवज्ञातव्या भवन्ति, संरक्षणप्रयतत्वात् न तानव-</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२१-२३]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३०-३५]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ११० ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>ज्ञाविषयीकरोतीत्यर्थः, तथा न निन्दितव्या न गर्हितव्या भवन्ति सर्वथा पीडादर्जनोद्यतत्वेन गौरव्याणामिव दर्शनात्, निन्दा च-स्वसमक्षा गर्हा च-परसमक्षा, तथा न हिंसितव्याः पादाक्रमणेन मारणतः, एवं न छेत्तव्या द्विधाकरणतो न भेस्तव्याः स्फोटनतः ‘न वहेयव्व’सि न व्यथनीयाः परितापनात् न भयं-भीतिं दुःखं च शारीरादि किञ्चिदल्पमपि लभ्या-योग्याः प्रापयितुं जे इति निपातो वाक्यालङ्कारे एवं-अनेन न्यायेन ईर्ष्यासमितियोगेन-ईर्ष्यासमितिव्यापारेण भावितो-वासितो भवत्यन्तरात्मा-जीवः, किञ्चिद् इत्याह-अशबलेन-मालिन्यमात्ररहितेन असङ्क्लिष्टेन-विशुद्ध्यमानपरिणामयता निर्वणेन-अक्षतेनाखण्डेनेतियावत् चारित्र्येण-सामायिकादिना भावना-वासना यस्य सोऽशबलासङ्क्लिष्टनिर्वणचारित्र्यभावनाकः अथवा अशबलासङ्क्लिष्टनिर्वणचारित्र्यभावनया हेतुभूतया अहिंसकः-अवधकः संयतो-सृषावादाद्युपरतिमान् सुसाधुः-मोक्षसाधक इति । ‘बिद्ध्यं च’सि द्वितीयं पुनर्भावनावस्तु मनःसमितिः, तत्र मनसा पापं न ध्यातव्यं, एतदेवाह-मनसा पापकेन, पापकमिति काकाऽध्येयं, तत्रश्च पापकेन-दुष्टेन सता मनसा यत् पापकं-अशुभं तत्, न कदाचिन्मनसा पापेन पापकं किञ्चिद् ध्यातव्यमिति वक्ष्यमाणवाक्येन सम्बन्धः, पुनः किम्भूतं पापकमित्याह-अधार्मिकाणामिदमाधार्मिकं तच्च तद्दारुणं चेति आधार्मिकदारुणं वृशंसं-शुकावर्जितं वधेन-हननेन बन्धेन-संयमनेन परिक्लेशेन च-परितापनेन हिंसागतेन बहुलं-प्रचुरं यत्तत्तथा, जराभरणपरिक्लेशफलभूतैः वाचनान्तरे अभयमरणपरिक्लेशैः सङ्क्लिष्टं-अशुभं यत्तत्तथा, न कदाचित्कचनापि काले ‘भणेण पावयं’ति पापकेनेदं मनसा</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ संवर- द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ ११० ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२१-२३]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३०-३५]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>‘पावगं’ति प्राणातिपातादिकं पापं किञ्चिद्-अल्पमपि ध्यातव्यं-एकाग्रतया चिन्तनीयं, एवं-अनेन प्रकारेण मनःसमितियोगेन-चित्तसत्प्रवृत्तिलक्षणव्यापारेण भावितो-वासितो भवन्त्यन्तरात्मा-जीवः, किञ्चिद् इत्याह-अशबलासङ्क्लिष्टनिर्वणचारित्रभावनाकः अशबलासङ्क्लिष्टनिर्वणचारित्रभावनाया वा अहिंसकः संयतः सुसाधुरिति प्राग्वत् । ‘तइयं च’ति तृतीयं पुनर्भावनावस्तु वचनसमितिः यत्र वाचा पापं न भणितव्यमिति, एतदेवाह-‘वईए पाविधाए’ इति काकाऽध्येतव्यं, एतद्व्याख्यानं च प्राग्वत् । चतुर्थं भावनावस्तु आहारसमितिरिति, तामेवाह-‘आहारएसणाए सुद्धं उच्छं गवेसियच्चं’ति व्यक्तं, इदमेव भावयितुमाह-अज्ञातः-श्रीमत्प्रजितादित्वेन दायकजनेनानवगतः अकथितः स्वयमेव यथाऽहं श्रीमत्प्रजितादिरिति अशिष्टः-अप्रतिपादितः परेण वाचनान्तरे ‘अन्नाए अगदिए अदुद्वे’ति दृश्यते ‘अहीणे’त्यादि तु पूर्ववत्, भिक्षुः-भिक्षेणया युक्तः ‘समुदाणेऊण’ति अटित्वा भिक्षाचर्या-गोचरं उच्छमिवोच्छं-अल्पाल्पं गृहीतं भैक्ष्यं गृहीत्वा आगतो गुरुजनस्य पार्श्व-समीपं गमनागमनातिचाराणां प्रतिक्रमणेन ईर्यापथिकादण्डकेनेत्यर्थः प्रतिक्रान्तं येन स तथा ‘आलोयणदायणं च’ति आलोचनं-यथागृहीतभक्तपाननिवेदनं तयोरेवोपदर्शनं च ‘दाउण’ति कृत्वा ‘गुरुजणस्स’ति गुरोर्गुरुसन्दिष्टस्य वा वृषभस्य ‘जहोवएसं’ति उपदेशानतिक्रमेण निरतिचारं च-दोषवर्जनेन अप्रमत्तः पुनरपि च अनेषणायाः-अपरिज्ञातानालोचितदोषरूपायाः प्रयतो-पलवान् प्रतिक्रम्य कायोत्सर्गकरणेनेति भावः प्रशान्तः-उपशान्तोऽनुत्सुकः आसीन-उपविष्टः स एव विशेष-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२१-२३]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३०-३५]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १११ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>व्यते-सुखनिषण्णः-अनावाधवृत्त्योपविष्टः, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, मुहूर्त्तमात्रं च कालं ध्यानेन-धर्मा- दिना शुभयोगेन-संयमव्यापारेण गुरुविनयकरणादिना ज्ञानेन-ग्रन्थानुप्रेक्षणरूपेण स्वाध्यायेन च-अधीत- गुणनरूपेण गोपितं-विषयान्तरगमने निरुद्धं मनो येन स तथा अत एव धर्मे-श्रुतचारित्ररूपे मनो यस्य स तथा अत एव अविमनाः-अशून्यचित्तः शुभमनाः-असङ्क्लिष्टचेताः ‘अविग्रहमणे’ति अविग्रहमनाः- अकलहचेताः अव्युद्ग्रहमना वा-अविद्यमानासदभिनिवेशः ‘समाहितमणे’ति समं-तुल्यं रागद्वेषानाकलितं आहितं-उपनीतमात्मनि मनो येन स समाहितमनाः समेन वा-उपशमेन अधिकं मनो यस्य समाधिकमनाः समाहितं वा-स्वस्थं मनो यस्य समाहितमनाः श्रद्धा च-तत्त्वश्रद्धानं संयमयोगविषयो वा निजोऽभिलाषः संवेगश्च-मोक्षमार्गाभिलाषः संसारभयं वा निर्जरा च-कर्मक्षपणं मनसि यस्य स श्रद्धासंवेगनिर्जरमनाः, प्रवचनवात्सल्यभावितमना इति कण्ठ्यं, उत्थाय च प्रहृष्टनुष्टः-अतिशयप्रमुदितः यथारालिकं-यथाज्येष्ठं निमज्ज्य च साधून-साधर्मिकान् भावतश्च-भक्त्या ‘विद्विष्ये यं’ति वितीर्णं च भुङ्क्त्व त्वमिदमशनादीत्येवं अनु- ज्ञाते च सति भक्तादौ गुरुजनेन-गुरुणा उपविष्ट उचितासने संप्रसृज्य सुखवस्त्रिकारजोहरणाभ्यां सशीर्षं कार्यं-समस्तकं शरीरं तथा करतलं-हस्ततलं च अमूर्च्छितः-आहारविषये मूढिमानमगतः अगृह्यः-अप्रासेषु रसेष्वनाकाङ्क्षावान् अग्रथितः-रसानुरागतन्तुभिरसन्दर्भितः अगर्हितः-आहारविषयेऽकृतगर्ह इत्यर्थः अन- ध्युपपन्नो-न रसेष्वेकाग्रमनाः अनाविलः-अकलुषः अलुब्धः-लोभविरहितः ‘अणत्तट्टिए’ति नात्मार्थ एव</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ संवर- द्वारे अहिंसाया नःमानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ १११ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>यस्यास्त्वसावनात्मार्थिकः परमार्थकारीत्यर्थः, ‘असुरसुरं’ति एवंभूतशब्दरहितं ‘अचवचवं’ति चवचवेति- शब्दरहितं अद्भुतं-अनुत्सुकं अविलम्बितं-अनतिमन्दं अपरिशादि-परिशादिवर्जितं ‘भुंजेज्जा’ इति क्रियाया विशेषणानीमानि, ‘आलोयभायणे’ति प्रकाशमुखे भाजने अथवा आलोके-प्रकाशे नान्धकारे, पिपीलिका- वालादीनामनुपलम्भात्, तथा भाजने-पात्रे, पात्रं विना जलादिसम्पतितसत्त्वादर्शनादिति, यतं-मनोवा- क्कायसंयतत्वेन प्रयत्नेन-आदरेण व्यपगतसंयोगं-संयोजनादोषरहितं ‘अणिगालं वंति रागपरिहारेणेत्यर्थः ‘विगयधूमं’ति द्वेषरहितं, आह च—“रागेण सङ्गालं दोसेण सधूमगं वियाणाहि”ति [ रागेण साङ्कारं द्वेषेण सधूमकं विजानीहि ] अक्षस्य-धुरः उपाञ्जनं-भ्रक्षणं अक्षोपाञ्जनं तच्च व्रणानुलेपनं च ते भूतं-प्राप्तं यत्तत्तथा तत्कल्पमित्यर्थः, संयमयात्रा-संयमप्रवृत्तिः सैव संयमयात्रामात्रा तत् निमित्तं-हेतुर्यत्र तत्संयमयात्रामात्रा- निमित्तं, किमुक्तं भवति?-संयमभारवहनार्थतया, इयं भावना-इह यथाऽक्षस्योपाञ्जनं भारवहनार्थैव विधी- यते न प्रयोजनान्तरे एवं संयमभारवहनार्थैव साधुर्भुञ्जीत न वर्णबलरूपनिमित्तं विषयलौल्येन वा, भोजन- विकलो हि न संयमसाधनं शरीरं धारयितुं समर्थो भवतीति ‘भुंजेज्ज’ति भुञ्जीत भोजनं कुर्वीत, तथा भोजने कारणान्तरमाह-प्राणधारणार्थतया-जीवितव्यसंरक्षणायेत्यर्थः, संयतः-साधुः, णसिति वाक्यालङ्कारे, ‘समयं’ति सम्यक्, निगमयन्नाह-एवमाहारसमितियोगेन भावितः सन् भावितो भवन्त्यन्तरात्मा अशबलासङ्क्लिष्टनिर्व्र- णचारित्रभावनाकः अशबलासङ्क्लिष्टनिर्व्रणचारित्रभावनाया वा हेतुभूतया अहिंसकः संयतः सुसाधुरिति ।</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२१-२३]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३०-३५]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ११२ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>‘पंचमगं’ति पञ्चमं भावनावस्तु आदाननिक्षेपसमितिलक्षणं, एतदेवाह-पीठादि द्वादशविधमुपकरणं प्रसिद्धं  ‘एयंपी’ति एतदपि अनन्तरोदितमुपकरणं अपिशब्दादन्यदपि संयमस्योपवृंहणार्थतया-संयमपोषणाय तथा  वातातपदंशमशकशीतपरिरक्षणार्थतया उपकरणं-उपकारकं उपधिं रागद्वेषरहितं क्रियाविशेषणमिदं ‘परिहरि-  यच्च’ति परिभोक्तव्यं, न विभूषादिनिमित्तमिति भावना, संयतेन-साधुना नित्यं-सदा तथा प्रत्युपेक्षणा-  प्रस्फोटनाभ्यां सह या प्रमार्जना सा तथा तथा, तत्र प्रत्युपेक्षणा-चक्षुर्व्यापारेण प्रस्फोटनया-आस्फोटनेन  प्रमार्जनया च-रजोहरणादिव्यापाररूपया, ‘अहो य राओ य’स्ति अहि च रात्रौ च अप्रमत्तेन भवति सततं  निक्षेप्तव्यं च-मोक्तव्यं ग्रहीतव्यं च-आदातव्यं, किं तदित्याह-भाजनं-पात्रं भाण्डं-तदेव मृन्मयं उपधिश्च-  वस्त्रादिः एतन्नयलक्षणमुपकरणं-उपकारि वस्त्विति कर्मधारयः, निगमयन्नाह-‘एवमादाने’त्यादि पूर्ववत् न-  वरं इह प्राकृतशैल्याऽन्यथा पूर्वापरपदनिपातः तेन भाण्डस्य-उपकरणस्यादानं च-ग्रहणं निक्षेपणा च-  मोचनं तत्र समितिः भाण्डादाननिक्षेपणासमितिरिति वाच्ये आदानभाण्डनिक्षेपणासमितिरित्युक्तं,  अथाध्ययनार्थं निगमयन्नाह-‘एवंमिति उक्तक्रमेण इदं-अहिंसालक्षणं संवरस्य-अनाश्रवस्य द्वारं-उपायः  सम्यक् संवृतं-आसेवितं भवति, किंविधं सदित्याह-सुप्रणिहितं-सुप्रणिधानवत् सुरक्षितमित्यर्थः, कैः किं-  विधैरित्याह-एभिः पञ्चभिरपि कारणैः-भावनाविशेषैः अहिंसापालनहेतुभिः मनोवाक्कायपरिरक्षितैरिति,  तथा नित्यं-सदा आमरणान्तं च-मरणरूपमन्तं यावत् न क्षरणात्परतोऽपि असम्भवात्, तथा एव-योगोऽ-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>१ संवर- द्वारे अहिंसाया नामानि कारका भावनाश्च सू० २३  ॥ ११२ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२१-२३] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३०-३५]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>नन्तरोदितभावनापञ्चकरूपो व्यापारो नेतव्यो-बोढव्य इति भावः, केन?-धृतिमता-स्वस्थचित्तेन मतिमता- बुद्धिमता, किम्भूतोऽयं योगः?-अनाश्रवः-नवकर्मानुपादानरूपः यतः अकलुषः-अपापस्वरूपः छिद्रमिव छिद्रं कर्मजलप्रवेशात्तन्निषेधेनाच्छिद्रः, अच्छिद्ररूपत्वादेवापरिश्रावी-न परिश्रवति कर्मजलप्रवेशतः असङ्कलिष्टो- न चित्तसङ्केशरूपः शुद्धो-निर्दोषः सर्वजिनैरनुज्ञातः-सर्वाहंतामनुमतः, ‘एव’मिति ईर्ष्यासमित्यादिभावनाप- ञ्चकयोगेन प्रथमं संवरद्वारं-अहिंसालक्षणं ‘फासियं’ति स्पृष्टमुचिते काले विधिना प्रतिपन्नं ‘पालितं’ सततं सम्यगुपयोगेन प्रतिचरितं ‘सोहियं’ति शोभितमन्येषामपि तदुचितानां दानात् अतिचारवर्जनाद्वा शोधितं वा-निरतिचारं कृतं ‘तीरितं’ तीरं-पारं प्रापितं कीर्तितं-अन्येषामुपदिष्टं आराधितं-एभिरेव प्रकारैर्निष्ठां नीतं आज्ञया-सर्वज्ञवचनेनानुपालितं भवति पूर्वकालसाधुभिः पालितत्वाद्विवक्षितकालसाधुभिश्चानु-प- श्चात् पालितमिति, केनेदं प्ररूपितमित्याह-‘एव’मित्युक्तरूपं ज्ञातमुनिना-क्षत्रियविशेषरूपेण यतिना श्री- मन्महावीरेणेत्यर्थः, भगवता-ऐश्वर्यादिभगयुक्तेन प्रज्ञापितं-सामान्यतो विनेयेभ्यः कथितं प्ररूपितं-भेदानु- भेदकथनेन प्रसिद्धं-प्रख्यातं सिद्धं-प्रमाणप्रतिष्ठितं सिद्धानां-निष्ठितार्थानां वरशासनं-प्रधानाज्ञा सिद्धवरशा- सनं इदं-एतत् ‘आघधियं’ति अर्घः-पूजा तस्य आपः-प्राप्तिर्जाता यस्य तदर्घापितं अर्घं वा आपितं-प्रापितं यत्तदर्घापितं सुष्ठु देशितं-सदेवमनुजासुरायां पर्षदि नानाविधनयप्रमाणैरभिहितं प्रशस्तं-साङ्गल्यमिति ।</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [१] ----- मूलं [२१-२३] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२१-२३]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३०-३५]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ ११३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रथमं संवरद्वारं समाप्तं ॥ इतिशब्दः समाप्तौ, ब्रवीमि-सर्वज्ञोपदेशेनाहमिदं सर्वं पूर्वोक्तं प्रतिपादयामि न स्वमनीषिकयेति । प्रश्नव्याकरणानां च षष्ठमध्ययनं चिचरणतः समाप्तम् ॥ ६ ॥</p> <p style="text-align: center;">अथ द्वितीयसंवरात्मकं सप्तममध्ययनम् ॥</p> <p>व्याख्यातं प्रथमसंवराध्ययनं, अथ सूत्रक्रमसम्बद्धमथवाऽनन्तराध्ययने प्राणातिपातविरमणमुक्तं तच्च सामान्यतोऽलीकविरमणवतामेव भवतीत्यलीकविरतिरथ प्रतिपादनीयेत्येवंसम्बद्धं द्वितीयमध्ययनमारभ्यते- अस्य चेदमादिसूत्रम्—</p> <p>जंबू! वितियं च सच्चवयणं सुद्धं सुचियं सिवं सुजायं सुभासियं सुव्वयं सुकहियं सुदिट्टं सुपतिट्टियं सुपइ-ट्टियजसं सुसंजमियवयणबुइयं सुरवरनरवसभपवरबलवगसुविहियजणवहुमयं परमसाहुधम्मचरणं तवनिय-मपरिगहियं सुगतिपहदेसकं च लोगुत्तमं वयमिणं विजाहरगणगमणविजाणसाहकं सग्गमग्गसिद्धिपह-देसकं अवितहं तं सच्चं उज्जुयं अकुडिलं भूयत्थं अत्थतो विमुद्धं उज्जोयकरं पभासकं भवति सव्वभावाण जीवलोगे अविसंवादि जहत्थमधुरं पच्चक्खं दयिवयं व जं तं अच्छेरकारकं अवत्थंतरेसु बहुएसु माणुसाणं सच्चेण महासमुहमज्जेवि मूढाणियावि पोया सच्चेण य उदगसंभमंमिवि न वुज्झइ न य मरंति धाहं ते</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>२ संवर-द्वारे सत्यस्य म-हिमा स्व-रूपं च सू० २४  ॥ ११३ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only sanelibrary.org</p>
	<p>अत्र द्वितिये श्रुतस्कन्धे प्रथमं अध्ययनं परिसमाप्तं  अथ द्वितिये श्रुतस्कन्धे द्वितियम् अध्ययनं “सत्यं” आरभ्यते  “अलिकविरति” - नामक द्वितीयं संवर-द्वारं</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

लभन्ति सच्चेण य अगणिसंभमंमि वि न डङ्गन्ति उज्जुगा मणूसा सच्चेण य तत्ततेल्लतउलोहसीसकाइं छिवन्ति धरेन्ति न य डङ्गन्ति मणूसा पव्वयकडकाहिं मुच्चन्ते न य मरन्ति सच्चेण य परिग्गहिया असिपंजरगया समराओवि णिइन्ति अणहा य सच्चवादी वह्बंधभियोगवेरघोरेहिं पमुच्चन्ति य अमित्तमङ्गाहिं निइन्ति अणहा य सच्चवादी सादेव्वाणि य देवयाओ करेन्ति सच्चवयणे रताणं । तं सच्चं भगवं तिस्थकरसुभासियं दसविहं चोइसपुव्वीहिं पाहुइत्थविदितं महरिसीण य समयप्पदिन्नं देविंदनरिंदभासियत्थं वेमाणियसाहियं महत्थं मंतोसहिविज्जासाहणत्थं चारणगणसमणसिद्धविज्जं मणुयगणाणं वंदणिज्जं अमरगणाणं अच्चणिज्जं असुरगणाणं च पूयणिज्जं अणेगपासंडिपरिग्गहितं जं तं लोकमि सारभूयं गंभीरतरं महासमुद्दाओ थिरतरगं मेरुपव्वयाओ सोमतरगं चंदमंडलाओ दित्तरं सूरमंडलाओ विमलतरं सरयनहयलाओ सुरभितरं गंधमादणाओ जेविय लोगम्मि अपरिसेसा मंतजोगा जवा य विज्जा य जंभका य अत्थाणि य सत्थाणि य सिक्खाओ य आगमा य सच्चाणिवि ताइं सच्चे पइट्टियाइं, सच्चंपिय संजमस्स उवरोहकारकं किंचि न वत्तव्वं हिंसासावज्जसंपउत्तं भेयविकहकारकं अणत्थवायकलहकारकं अणज्जं अववायविवायसंपउत्तं वेलंवं ओज्जधेज्जवहुलं निल्लज्जं लोयगरहणिज्जं दुट्ठिं दुस्सुयं अमुणियं अप्पणो थवणा परेसु निंदा न तंसि मेहावी ण तंसि धन्नो न तंसि पियधम्मो न तं कुलीणो न तंसि दाणपती न तंसि सूरु न तंसि पडिरुवो न तंसि लट्ठो न पंडिओ न बहुस्सुओ नवि य तं तवस्सी ण यावि परलोगणिच्छियमतीऽसि सव्वकालं जातिकुलरूववा-

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रश्नव्याकर-  
० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ११४ ॥

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]  
दीप  
अनुक्रम  
[३६]

प्रश्नव्याकर-  
० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ११४ ॥

हिरोगेण वावि जं होइ वज्जणिज्जं दुहओ उवयारमतिकंत्तं एवंविहं सच्चं पि न वत्तव्वं, अह केरिसकं पुणाइ सच्चं तु भासियव्वं?, जं तं दव्वेहिं पज्जवेहि य गुणेहिं कम्मेहिं बहुविहेहिं सिप्पेहिं आगमेहि य नामक्खाय- निवाउवसग्गतद्धियसमाससंधिपदहेउजोगियउणादिकिरियाविहाणधातुसरविभत्तिवन्नजुत्तं तिकलं दसविहंपि सच्चं जह भणियं तह य कम्मुणा होइ दुवालसविहा होइ भासा वयणंपिय होइ सोलसविहं, एवं अरहंतम- गुन्नायं समिक्खियं संजएण कालंमि य वत्तव्वं (सू० २४)

‘जंबू’ इत्यादि, तत्र जम्बूरिति शिष्यामन्नं ‘विइयं च’त्ति द्वितीयं पुनः संवरद्वारं ‘सत्यवचनं’ सद्ब्रह्मो-मु- निभ्यो गुणेभ्यः पदार्थेभ्यो वा हितं सत्यं, आह च—“सच्चं हियं सयामिह संतो मुणओ गुणा पयत्था वा ।” तच्च तद्वचनं सत्यवचनं, एतदेव स्तुवन्नाह-शुद्धं-निर्दोषं अत एव शुचिकं-पवित्रं शिवं-शिवहेतुः सु- जातं-शुभविष्योत्पन्नं अत एव सुभाषितं-शोभनव्यक्तवाग्रूपं शुभाश्रितं सुखाश्रितं सुधासितं वा सुव्रतं -शोभननियमरूपं शोभनो नाम मध्यस्थाः कथः [यितं] प्रतिपादको[यितव्यं] यस्य तत्सुकथितं सुदृष्टं-अतीन्द्रि- यार्थदर्शिभिर्दृढमपवर्गादिहेतुतयोपलब्धं सुप्रतिष्ठितं-समस्तप्रमाणैरुपपादितं सुप्रतिष्ठितयशः-अव्याहृतख्या- तिकं ‘सुसंजमियवयणबुइयं’ति सुसंयमितवचनैः-सुनियन्त्रितवचनैरुक्तं यत्तत्तथा, सुरवराणां नरवृषभाणां ‘पवरबलवग’त्ति प्रवरबलवतां सुविहितजनस्य च बहुमतं-सम्मतं यत्तत्तथा, परमसाधूनां-नैष्ठिकमुनीनां ध- र्मचरणं-धर्मानुष्ठानं यत्तत्तथा, तपोनियमाभ्यां परिगृहीतं-अङ्गीकृतं यत्तत्तथा, तपोनियमौ सत्यवादिन

२ संवर-  
द्वारे  
सत्यस्य म-  
हिमा स्व-  
रूपं च  
सू० २४

॥ ११४ ॥



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

या. २०

एव स्यातां नापरस्येति भावः, सुगतिपथदेशकं च लोकोत्तमं व्रतमिदमिति व्यक्तं, विद्याधरगगनगमनविद्यानां साधनं नासत्यवादिनस्ताः सिध्यन्तीति भावः स्वर्गमार्गस्य सिद्धिपथस्य च देशकं-प्रवर्तकं यत्तत्तथा अवि-  
तथं-वितथरहितं ‘तं सच्चं उल्लुगं’ति सत्याभिधानं यद् द्वितीयं संवरद्वारमभिहितं तदजुकं ऋजुभावप्रवृत्ति-  
तत्वात् तथा अकुटिलं अकुटिलस्वरूपत्वात् भूतः-सद्भूतोऽर्थः-अभिधेयो यस्य तद्भूतार्थं अर्थतः-प्रयोजनतो  
विशुद्धं-निर्दोषं प्रयोजनापन्नमिति भावः, उद्योतकरं-प्रकाशकारि, कथं?-यतः प्रभाषकं-प्रतिपादकं भवति  
केषां कस्मिन्नित्याह-सर्वभावानां जीवलोके-जीवाधारे क्षेत्रे, प्रभाषकमिति विशिनष्टि-अविसंवादि-अव्य-  
भिचारि यथार्थमिति कृत्वा मधुरं-कोमलं यथार्थमधुरं प्रत्यक्षं दैवतमिव-देवतेव यत्तदाश्चर्यकारकं-चित्तवि-  
स्मयकरकार्यकारकं, तदीदृशं केषु केषामित्याह-अवस्थान्तरेषु-अवस्थाविशेषेषु बहुषु मनुष्याणां, यदाह-  
“सत्येनाग्निर्भवेच्छीतो, गाधं दत्तेऽम्बु सत्यतः । नासिद्धिञ्च नत्ति सत्येन, सत्याद्रज्जयते फणी ॥ १ ॥” एतदेवाह  
-सत्येन हेतुना महासमुद्रमध्ये तिष्ठन्ति न निमज्जन्ति, ‘मूढाणिधाविति’ मूढं-नियतदिग्गमनाप्रत्ययं ‘अ-  
णियं’ति अग्रं तुण्डं अनीकं वा-तत्प्रवर्तकं जनसैन्यं येषां ते तथा तेऽपि पोता-बोधिस्याः, तथा सत्येन च  
उदकसम्भ्रमेऽपि-सम्भ्रमकारणत्वादुदकल्लवः उदकसम्भ्रमस्तत्रापि ‘न बुज्झइ’ति वचनपरिणामान्नोह्यन्ते-न  
प्लावयन्ते न च म्रियन्ते स्तार्थं च-गाधं च ते लभन्ते, सत्येन चाग्निस्सम्भ्रमेऽपि-प्रदीपनकेऽपि न दह्यन्ते, ऋ-  
जुका-आर्जवोपेताः मनुष्या-नराः सत्येन च तप्ततैलत्रपुलोहसीसकानि प्रतीतानि ‘छिवंति’ति लुपंति धार-

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ११५ ॥

यन्ति हस्ताञ्जलिभिरिति गम्यते न च दह्यन्ते मनुष्याः, पर्वतकटकात्-पर्वतैकदेशाद् विमुच्यन्ते न च म्रियन्ते, सत्येन च परिगृहीता युक्ता इत्यर्थः असिपञ्जरे-शक्तिपञ्जरे गताः खड्गशक्तिव्यग्रकररिपुपुरुषवेष्टिता इत्यर्थः समरादपि-रणादपि 'निति'त्ति निर्यान्ति-निर्गच्छन्ति, अनघाश्च-अक्षतशरीरा इत्यर्थः, के इत्याह-सत्यवादिनः-सत्यप्रतिज्ञाः वधबन्धाभियोगवैरघोरेभ्यः-ताडनसंयमनबलात्कारघोरशास्त्रवेभ्यः प्रमुच्यन्ते अमिन्नमध्यात्-शत्रुमध्यान्निर्यान्ति अनघाश्च-निर्दोषाः सत्यवादिनः, सादेव्यानि च-सान्निध्यानि च देवताः कुर्वन्ति सत्यवचनरतानां, आह च-“प्रियं सत्यं वाक्यं हरति हृदयं कस्य न जने?, गिरं सत्यां लोकः प्रतिपदमिमामर्थयति च । सुराः सत्याद्वाक्याद्दति मुदिताः कामिकफलमतः सत्याद्वाक्याद्दतमभिमतं नास्ति भुवने ॥ १ ॥” ‘त’मिति यस्मादेवं तस्मात्सत्यं द्वितीयं महाव्रतं भगवद्-भट्टारकं ‘तीर्थकरसुभाषितं’ जिनैः सुश्रुतं दशविधं-दशप्रकारं जनपदसम्मतसत्यादिभेदेन दशवैकालिकादिप्रसिद्धं चतुर्दशपूर्विभिः प्राभृतार्थवेदितं-पूर्वगतांशविशेषाभिधेयतया ज्ञातं महर्षीणां च समयेन-सिद्धान्तेन ‘पइन्नं’ति प्रदत्तं समयप्रतिज्ञावा-समाचाराभ्युपगमः, पाठान्तरे ‘महरिसिसमयपइन्नचिन्नं’ति महर्षिभिः समयप्रतिज्ञा-सिद्धान्ताभ्युपगमः समाचाराभ्युपगमो वेति चरितं यत्तत्तथा, देवेन्द्रनरेन्द्रैर्भाषितः-जनानामुक्तोऽर्थः-पुरुषार्थस्तत्साध्यो धर्मादिर्यस्य तत्तथा, अथवा देवेन्द्रनरेन्द्राणां भासितः-प्रतिभासितोऽर्थः-प्रयोजनं यस्य तत्तथा, अथवा देवेन्द्रादीनां भाषिताः अर्था-जीवादयो जिनवचनरूपेण येन तत्तथा, तथा वैमानिकानां साधितं-प्रतिपादितमुपा-

२ संवर-  
द्वारे  
सत्यस्य म-  
हिमा स्व-  
रूपं च  
सू० २४

॥ ११५ ॥

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

देयतया जिनादिभिर्धत्तत्तथा, वैमानिकैर्वा साधितं-कृतमासेवितं समर्थितं वा यत्तत्तथा, महार्थं-महाप्रयोजनं, एतदेवाह-मन्त्रौषधीविद्यानां साधनमर्थः-प्रयोजनं यस्य तद्विना तस्याभावात्तत्तथा, तथा चारणगणानां-विद्याचारणादिवृन्दानां श्रमणानां च सिद्धाः विद्या आकाशगमनवैक्रियकरणादिप्रयोजना यस्मात्तत्तथा, मनुजगणानां च वन्दनीयं-स्तुत्यं अमरगणानां चार्चनीयं-पूज्यं असुरगणानां च पूजनीयं अनेकपाखण्डपरिगृहीतं-नानाविधव्रतिभिरङ्गीकृतं यत्तल्लोके सारभूतं गम्भीरतरं महासमुद्रादतिशयेनाक्षोभ्यत्वात् स्थिरतरकं मेरुपर्वतात् अचलितत्वेन सौम्यतरं चन्द्रमण्डलात् अतिशयेन सन्तापोपशमहेतुत्वात् दीप्ततरं सूरमण्डलात् यथावद्वस्तुप्रकाशनात् तेजस्विनां चाल्यन्तानभिभवनीयत्वात् विमलतरं शरन्नभस्तलादतिनिर्दोषत्वात् सुरभितरमिव सुरभितरं गन्धमादनाद्-गजदन्तकगिरिविशेषात् सहृदयानामतीव हृदयावर्जकत्वात् येऽपि च लोकेऽपरिशेषा-निःशेषा मन्त्राः-हरिणेगमेषिमन्त्रादयः योगाः-वशीकरणादिप्रयोजनाः द्रव्यसंयोगाः जपाश्च-मन्त्रविद्याजपनानि विद्याश्च-प्रज्ञस्यादिकाः जृम्भकाश्च-तिर्गलोकवासिनो देवविशेषाः अस्त्राणि च-नाराचादीनि क्षेप्यायुधानि सामान्यानि वा शास्त्राणि च-अर्थशास्त्रादीनि शस्त्राणि वा-खड्गादीन्यक्षेप्यायुधानि शिक्षाश्च-कलाग्रहणानि आगमाश्च-सिद्धान्ताः सर्वाण्यपि तानि सत्ये प्रतिष्ठितानि, असत्यवादिनां न केऽपि मन्त्रादयोऽर्थाः स्वसाध्यसाधकाः प्रायो भवन्तीति भावः, तथा सत्यमपि सद्भूतार्थमात्रतया संयमस्योपरोधकारकं-बाधकं किञ्चिद्-अल्पमपि न वक्तव्यं, किंरूपं तदित्याह-हिंसया-जीववधेन सावद्येन च-पापेन आला-



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ११६ ॥

पादिना सम्प्रयुक्तं यत्तत्तथा, आह च—“तद्देव काणं काणित्ति, पंडगं पंडगत्ति य । वाहियं वा विरोगित्ति, तेणं चोरित्ति नो वए ॥१॥” [ तथैव काणं काणमिति पण्डकं पण्डकमिति वा व्याधिमन्तं वापि रोगीति स्तेनं चौरमिति नो वदेत् ॥१॥ ] भेदः—चारित्र्यभेदस्तत्कारिका विकथाः—रुयादिकथाः तत्कारकं यत्तत्तथा, तथा अनर्थ-वादो—निष्प्रयोजनो जल्पः कलहश्च—कलिस्तत्कारकं यत्तत्तथा, अनार्थ—अनार्थप्रयुक्तं अन्याय्यं च—अन्यायो-पेतं अपवादः—परदूषणाभिधानं विवादो—विप्रतिपत्तिस्तत्सम्प्रयुक्तं यत्तत्तथा, बेलम्बं—परेषां विडम्बनकारि ओजो—बलं धैर्यं च—धृष्टता ताभ्यां बहुलं—प्रचुरमोजोधैर्यबहुलं निर्लज्जं—अपेतलज्जं लोकगर्हणीयं—निन्द्यं दु-ईष्टं—असम्यगीक्षितं दुःश्रुतं—असम्यगाकर्णितं दुर्मुणितं—असम्यग्ज्ञातं आत्मनः स्तवना—स्तुतिः परेषां नि-न्दा—गर्हा, निन्दामेवाह—‘नसि’त्ति नासि न भवसि त्वमिति गम्यते मेधावी—अपूर्वश्रुतदृष्टग्रहणशक्तियुतः तथा न त्वमसि धन्यो—धनं लब्धं तथा नासि—न भवसि प्रियधर्मा—धर्मप्रियः तथा न त्वं कुलीनः—कुल-जातः तथा नासि—न भवसि दानपतिर्दानदातेत्यर्थः, तथा न त्वमसि सूरः—चारभटः तथा न त्वमसि—न भवसि प्रतिरूपो—रूपवान् न त्वमसि लष्टः—सौभाग्यवान् न पण्डितो—बुद्धिमान् न बहुश्रुतः—आकर्णिताधी-तबहुशास्त्रः बहुसुतो वा—बहुपुत्रो बहुशिष्यो वा नापि च त्वं तपस्वी—क्षपकः न चापि परलोकविषये नि-श्चिता—निःसंशया मतिरस्येति परलोकनिश्चितमतिरसि—भवसि सर्वकालं—आजन्मापीति, किं बहुनोक्तेन?, वर्जनीयवचनविषयमुपदेशसर्वस्वमुच्यते, जातिकुलरूपव्याधिरोगेण चापीति, इह जात्यादीनां समाहारद्वन्द्वः,

२ संवर-  
द्वारे  
सत्यस्य म-  
हिमा स्व-  
रूपं च  
सू० २४

॥ ११६ ॥

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

ततो जाल्यादिना निन्दितेन परचित्तपीडाकारित्वाद्यद्भवेद्भर्जनीयं-परिहर्त्तव्यं तदेवंविधं सत्यमपि न वक्तव्य-  
मिति वाक्यार्थः, तत्र जातिः-मातृकः पक्षः कुलं-पैतृकः पक्षः रूपं-आकृतिः व्याधिः-चिरस्थाता कुष्ठादिः रोगः-  
शीघ्रतरघाती ज्वरादिः वा विकल्पे अपिः समुच्चये 'दुहिलं'ति द्रोहवत् पाठान्तरेण 'दुहओ'ति द्रव्यतो भा-  
वतश्च उपचारं-पूजामुपकारं वा अतिक्रान्तं, एवंविधं तु-एवंप्रकारं पुनः सत्यमपि सद्भूततामात्रेण आस्ताम-  
सत्यं न वक्तव्यं-न वाच्यं, 'अथ केरिसर्गं'ति अथशब्दः परिप्रश्ने कीदृशकं?-किंविधं 'पुणाइं'ति इह पुनरपि  
पूर्ववाक्यार्थापेक्षयोत्तरवाक्यार्थस्य विशेषद्योतनार्थः आहन्ति वाक्यालङ्कारार्थः 'सचं तु'ति सत्यमपि भा-  
षितव्यं-वक्तव्यं यत्तद् द्रव्यैः-त्रिकालानुगतिलक्षणैः पुद्गलादिभिर्वस्तुभिः पर्यायैश्च-नवपुराणादिभिः क्रमव-  
र्त्तिभिर्धम्मैः गुणैः-वर्णादिभिः सहभाविभिर्धम्मैरेव कर्मभिः-कृष्यादिद्रव्यापारैः बहुविधैः शिल्पैः-साचा-  
र्यकैश्चित्रकर्मणादिभिः क्रियाविशेषैः आगमैश्च-सिद्धान्तार्थैर्युक्तमिति सम्बन्धः कार्यः, युक्तशब्दस्योत्तरत्र स-  
मस्तनिर्देशोऽपि प्राकृतशैलीवशात् द्रव्यादियुक्तत्वं वचनस्य तदभिधायकत्वाद्, अथवा द्रव्यादिषु विषये  
द्रव्यादिगोचरमित्यर्थः, तथा 'नामाख्यातनिपातोपसर्गतद्वितसमाससन्धिपदहेतुयोगिकोणादिक्रियाविधान-  
धातुस्वरविभक्तिवर्णयुक्तमिति तत्र नामेति पदशब्दसम्बन्धानामपदमेवमुत्तरत्रापि, तच्चाव्युत्पन्नेतरभेदाद्  
द्विधा, तत्र व्युत्पन्नं देवदत्तादि अव्युत्पन्नं डित्थेत्यादि, आख्यातपदं साध्यक्रियापदं यथा अकरोत् करोति  
करिष्यति, तत्तदर्थद्योतनाय तेषु तेषु स्थानेषु निपतन्तीति निपाताः तत्पदं निपातपदं यथा च वा खल्वित्यादि,

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२४]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३६]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- १० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ ११७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>उपसृज्यन्ते-धातुसमीपे नियुज्यन्ते इत्युपसर्गास्तद्रूपं पदमुपसर्गपदं प्र परा अपेत्यादिवत्, तस्मै हितं तद्वित- मित्याद्यर्थाभिधायका ये प्रत्ययास्ते तद्विताः तदन्तं पदं तद्वितपदं यथा गोभ्यो हितो गव्यो देशः नाभेरपत्यं नाभेय इत्यादि, समसनं समासः-पदानामेकीकरणरूपः तत्पुरुषादिस्तत्पदं समासपदं यथा राजपुरुष इ- त्यादि, सन्धिः-सन्निकर्षस्तेन पदं यथा दधीदं तद्यथेत्यादि, तथा हेतुः-साध्याविनाभूतत्वलक्षणो यथाऽनित्यः शब्दः कृतकत्वादिति, यौगिकं-यदेतेषामेव व्यादिसंयोगवत्, यथा उपकरोति सेनयाऽभियाति अभिषेणय- तीत्यादि, तथा उणादि-उणप्रभृतिप्रत्ययान्तं पदं यथा आशु खादु, तथा क्रियाविधानं-सिद्धक्रियाविधिः कान्तप्रत्ययान्त [ कृतप्रत्ययान्त ] पदविधिरित्यर्थः, यथा पाचकः पाक इत्यादि, तथा धातवो-भ्वादयः क्रिया- प्रतिपादकाः स्वरा-अकारादयः षड्जादयो वा सप्त, क्वचिद्रसा इति पाठः तत्र रसाः-शृङ्गारादयो नव, यथा—“शृङ्गारहास्यकरुणा, रौद्रवीरभयानकाः । बीभत्सान्द्रुतशान्ताश्च, नव नाट्ये रसाः स्मृताः ॥ १ ॥” विभक्तयः-प्रथमाद्याः सप्त वर्णाः-ककारादिव्यञ्जनानि एभिर्युक्तं यत्तत्तथा, अथ सत्यं भेदत आह-त्रैकाल्यं -त्रिकालविषयं दशविधमपि सत्यं भवतीति योगः, दशविधत्वं च सत्यस्य जनपदसम्मतसत्यादिभेदात्, आह च—“जणवय १ संमय २ ठवणा ३ नामे ४ रूवे ५ पडुच्चसच्चे य ६ । ववहार ७ भाव ८ जोगे ९ दसमे ओवम्मसच्चे य १० ॥ १ ॥” त्ति, तत्र जनपदसत्यं यथा उदकार्थं कौकणादिदेशरूढ्या पय इति वचनं, संमत- सत्यं यथा समानेऽपि पङ्कसम्भवे गोपालादीनामपि सम्मतत्वेनारविन्दमेव पङ्कजमुच्यते न कुवलादीति,</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>२ संवर- द्वारे सत्यस्य म- हिमा स्व- रूपं च सू० २४  ॥ ११७ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">॥ ११७ ॥</p>
	<p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [२४]</p> <p style="text-align: center;">दीप अनुक्रम [३६]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>स्थापनासत्यं जिनप्रतिमादिषु जिनादिव्यपदेशः, नामसत्यं यथा कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन इत्युच्यते, रूपसत्यं यथा भावतोऽश्रमणोऽपि तद्रूपधारी श्रमण इत्युच्यते, प्रतीतसत्यं यथा अनामिका कनिष्ठिकां प्रतीत्य दीर्घेत्युच्यते, सैव मध्यमां प्रतीत्य ह्रस्वेति, व्यवहारसत्यं यथा गिरिगततृणादिषु दृश्यमानेषु व्यवहाराद् गिरिर्दृश्यत इति, भावसत्यं यथा सत्यपि पञ्चवर्णत्वे शुक्लत्वलक्षणभावोत्कटत्वात् शुक्ला बलाकेति, योगसत्यं यथा दण्डयोगादण्ड इत्यादि, औपम्यसत्यं यथा समुद्रवत्तडाग इत्यादि, तथा ‘जह भणिअं तह य कम्मुणा होइ’ति यथा-येन प्रकारेण भणितं-भणनक्रिया दशविधसत्यं सद्भूतार्थतया भवति तथा-तेनैव प्रकारेण कर्मणा वा-अक्षरलेखनादिक्रियया सद्भूतार्थज्ञापनेन सत्यं दशविधमेव भवतीति, अनेन चेदमुक्तं भवति-न केवलं सत्यार्थं वचनं वाच्यं हस्तादिकर्माप्यव्यभिचार्यर्थसूचकमेव कर्त्तव्यं, उभयत्राप्यव्यभिचारितया पराव्यंसनस्याकुटिलाध्यवसायस्य च तुल्यत्वादिति, तथा ‘दुवालसविहा य होइ भास’ति द्वादशविधा च भवति भाषा, तथा च-“प्राकृतसंस्कृतभाषा मागधपैशाचसौरसेनी च। षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषाद्पञ्चशः ॥१॥” इयमेव षड्विधा भाषा गद्यपद्यभेदेन भिद्यमाना द्वादशधा भवतीति, तथा वचनमपि षोडशविधं भवति, तथाहि-“वयणतियं ३ लिंगतियं ६ कालतियं ९ तह परोक्खपच्चक्खं ११ । उवणीयाइचउक्कं १५ अज्झत्थं” १६ चेव सोलसमं ॥ १ ॥ तत्र वचनत्रयं एकवचनद्विवचनबहुवचनरूपं यथा वृक्षः वृक्षौ वृक्षाः, लिङ्गत्रिकं स्त्रीपुंनपुंसकरूपं यथा कुमारी वृक्षः कुण्डं, कालत्रिकं अतीतानागतवर्त्तमानकालरूपं, यथाऽकरोत्</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२४]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२४]

दीप  
अनुक्रम  
[३६]

प्रश्नव्याक  
२० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ११८ ॥

करिष्यति करोति, प्रत्यक्षं यथाऽयं एषः, परोक्षं यथा सा, तथा उपनीतवचनं-गुणोपनयनरूपं यथा रूपवानयं, अपनीतवचनं-गुणापनयनरूपं यथा दुःशीलोऽयं, उपनीतापनीतवचनं यत्रैकं गुणमुपनीय गुणान्तरमपनीयते यथा रूपवानयं किंतु दुःशीलः, विपर्ययेण तु अपनीतोपनीतवचनं तद्यथा दुःशीलोऽयं किंतु रूपवान्, अध्यात्मवचनं-अभिप्रेतमर्थं गोपयितुकामस्य सहसा तस्यैव भग्नमिति, ‘एव’मिति उक्तसत्यादिस्वरूपावधारणप्रकारेण अर्हदनुज्ञातं समीक्षितं-बुद्ध्या पर्यालोचितं संयतेन-संयमवता काले च-अवसरे वक्तव्यं, नतु जिनाननुज्ञातमपर्यालोचितमसंयतेनाकाले चेति भावना, आह च—“बुद्धीर्षं निष्कृण भासेजा उभयलो-गपरिसुद्धं । सपरोभयाण जं खलु न सव्वहा पीडजणमं तु ॥ १ ॥” [ बुद्ध्या विचार्य भाषेतोभयलोकपरि-शुद्धं । स्वपरोभयेषां यत् खलु न सर्वथा पीडाजनकं तु ॥ १ ॥ ] एतदर्थमेव जिनशासनमित्येतदाह—  
इमं च अलियपिसुणफरुसकडुयचवलवयणपरिरक्खणद्वयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चा-  
भाविकं आगमेसिभइं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदुक्खपावाणं विओसमणं, तस्स इमा पंच  
भावणाओ वितियस्स वयस्स अलियवयणस्स वेरमणपरिरक्खणद्वयाए पढमं सोऊणं संवरद्धं परमद्धं सुद्ध  
जाणिऊण न वेगियं न तुरियं न चवलं न कडुयं न फरुसं न साहसं न य परस्स पीलाकरं सावज्जं सच्चं च  
हियं च मियं च गाहगं च सुद्धं संगयमकाहलं च समिक्खितं संजतेण कालंमि य वत्तव्वं एवं अणुवीति-  
समित्तिजोगेण भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरुो सच्चज्जवसंपुत्तो, वितियं कोहो

२ संवरा-  
ध्यने  
सत्यव्रत-  
भावनाः  
सू० २५

॥ ११८ ॥

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२५]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२५]

दीप  
अनुक्रम  
[३७]

ण सेवियव्वो, कुद्धो चंडिकिओ मणूसो अलियं भणेज्ज पिसुणं भणेज्ज फरुसं भणेज्ज अलियं पिसुणं फरुसं भणेज्ज कलहं करेज्जा वेरं करेज्जा विकहं करेज्जा कलहं वेरं विकहं करेज्जा सच्चं हणेज्ज सीलं हणेज्ज विणयं हणेज्ज सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज वेसो हवेज्ज वत्थुं भवेज्ज गम्मो भवेज्ज वेसो वत्थुं गम्मो भवेज्ज एयं अन्नं च एवमादियं भणेज्ज कोहगिसंपलित्तो तम्हा कोहो न सेवियव्वो, एवं खंतीइ भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरु सच्चजवसंपन्नो, ततियं लोभो न सेवियव्वो लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं खेत्तस्स व वत्थुस्स व कतेण १ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कित्तीए लोभस्स व कएण २ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं रिद्धीय व सोक्खस्स व कएण ३ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं भत्तस्स व पाणस्स व कएण ४ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं पीढस्स व फलगस्स व कएण ५ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सेज्जाए व संथारकस्स व कएण ६ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं वत्थस्स व पत्तस्स व कएण ७ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं कंवलस्स व पायपुंछणस्स व कएण ८ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं सीसस्स व सिस्सीणीए व कएण ९ लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं अन्नेसु य एवमादिसु बहुसु कारणसत्तेसु, लुद्धो लोलो भणेज्ज अलियं तम्हा लोभो न सेवियव्वो, एवं मुत्तीय भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरु सच्चजवसंपन्नो, चउत्थं न भाइयव्वं भीतं खु भया अइति लहुयं भीतो अब्बित्तिज्जओ मणूसो भीतो भूतेहिं घिप्पइ भीतो अन्नंपिहु भेसेज्जा भीतो तवसंजमंपिहु मुएज्जा भीतो य भरं न नित्थरेज्जा सप्पुरिसनिसेवियं



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२५]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२५]

दीप  
अनुक्रम  
[३७]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ ११९ ॥

च मयं भीतो न समर्थो अणुचरिषं तम्हा न भातियव्वं भयस्स वा वाहिस्स वा रोगस्स वा जराए वा मञ्जुस्स वा अन्नस्स वा एवमादियस्स एवं धेज्जेण भाविओ भवति अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरु सच्चज्जवसंपन्नो, पंचमकं हासं न सेवियव्वं अलियाइं असंतकाइं जंपंति हासइत्ता परपरिभवकारणं च हासं परपरिवायप्पियं च हासं परपीलाकारगं च हासं भेदविमुत्तिकारकं च हासं अन्नोन्नजणियं च होज्ज हासं अन्नोन्नगमणं च होज्ज मम्मं अन्नोन्नगमणं च होज्ज कम्मं कंदप्पाभियोगमणं च होज्ज हासं आसुरियं किव्विसत्तणं च जणेज्ज हासं तम्हा हासं न सेवियव्वं एवं मोणेण भाविओ भवइ अंतरप्पा संजयकरचरणनयणवयणो सूरु सच्चज्जवसंपन्नो, एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहि पंचहिवि कारणेहि मणवयणकायपरिक्खएहि निच्चं आमरणंतं च एस जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिहो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सब्वजिणमणुत्ताओ, एवं वितियं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्ठियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवितं मुदेसियं पसत्थं वितियं संवरदारं समत्तं तिबेमि ॥ २ ॥ (सू० २५)

‘इमं चे’त्यादि इमं च-प्रत्यक्षं प्रवचनमिति योगः अलीकं-असद्भूतार्थं पिशुनं-परोक्षस्य परस्य दूषणावि-  
ट्करणरूपं परुषं-अश्राव्यभाषं कडुकं-अनिष्टार्थं चपलं-उत्सुकतयाऽसमीक्षितं यद्बचनं-वाक्यं तस्य परिर-

२ संवरा-  
ध्ययने  
सत्यव्रत-  
भावनाः  
सू० २५

॥ ११९ ॥

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२५]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२५]

दीप  
अनुक्रम  
[३७]

क्षणलक्षणो योऽर्थस्तस्य भावस्तत्ता तस्यै च अलीकपिशुनपरुषकटुकचपलवचनपरिरक्षणार्थतायै प्रावचनं-  
प्रवचनं शासनमित्यर्थः, भगवता श्रीमन्महावीरेण सुष्टु कथितं सुकथितमित्यादि ‘पररक्खणद्वयाए’ति यावत्  
पूर्ववत्, नवरं द्वितीयस्य व्रतस्य-अलीकवचनस्येति विशेषः, ‘पढमं’ति प्रथमं भावनावस्तु अनुविचिन्त्यस-  
मितियोगलक्षणं, तच्चैवं-श्रुत्वा-आकर्ण्य सद्गुरुसमीपे ‘संवरद्वं’ति संवरस्य-प्रस्तावेन मृषावादविरतिलक्ष-  
णस्य अर्थः-प्रयोजनं मोक्षलक्षणं प्रस्तुतसंवराध्ययनस्य वाऽर्थः-अभिधेयसंसंवरार्थस्तं, श्रवणाच्च ‘परमद्वं सुदु-  
जाणिऊणं’ति परमार्थ-हेयोपादेयवचनैदम्पर्यं सुष्टु-सम्यक् ज्ञात्वा न-नैव वेगितं-वेगवत् विकल्पव्याकुल-  
तयेत्यर्थः वक्तव्यमिति योगः, न त्वरितं-वचनचापल्यतः न कटुकमर्थतः न परुषं वर्णतः न साहसं-साहस-  
प्रधानमतर्कितं वा न च परस्य-जन्तोः पीडाकरं सावयं-सपापं यत्, वचनविधिं निषेधतोऽभिधाय साम्प्रतं  
विधित आह-सत्यं च-सद्गतार्थं हितं च-पथ्यं मितं-परिमिताक्षरं ग्राहकं च-प्रतिपाद्यस्य विवक्षितार्थप्रती-  
तिजनकं शुद्धं-पूर्वाक्तवचनदोषरहितं सद्गतं उपपत्तिभिरबाधितं अक्राहलं च-अमन्मनाक्षरं समीक्षितं-पूर्वं  
बुद्ध्या पर्यालोचितं संयतेन-संयमवता काले च-अवसरे वक्तव्यं नान्यथा, एवमुक्तेन भाषणप्रकारेण ‘अणु-  
वीहसमितिजोगेण’ति अनुविचिन्त्य-पर्यालोच्य भाषणरूपा या समितिः-सम्यक्प्रवृत्तिः साऽनुविचिन्त्य-  
समितिः तथा योगः-सम्बन्धः तद्रूपो वा व्यापारोऽनुविचिन्त्यसमितियोगस्तेन भावितो भवन्त्यन्तरात्मा-  
जीवः, किंविध इत्याह-संयतकरचरणनयनवदनः सूरः सत्यार्जवसंपन्न इति प्रतीतमिति ? । ‘विहयं’ति द्वि-

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२५]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२५]

दीप  
अनुक्रम  
[३७]

प्रश्नव्याक-  
२० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२० ॥

तीयं भावनावस्तु यत्क्रोधनिग्रहणं, एतदेवाह-क्रोधो न सेवितव्यः, कस्मान्कारणादित्याह-क्रुद्धः-कुपितः  
चाण्डिक्यं-रौद्ररूपत्वं सज्जानमस्येति चाण्डिक्यतो मनुष्योऽलीकं भणेदित्यादि सुगमं, नवरं वैरं-अनुश-  
यानुबन्धं विकथां-परिवादरूपां शीलं-समाधिं 'वैसो'ति द्वेषः-अप्रियो भवेत् एष वस्तु-दोषावासः गम्यः-  
परिभवस्थानं, निगमनमाह-‘एयं’ति अलीकादिकं गृह्यते, तदन्यस्य भणनक्रियाया अविषयत्वात्, अ-  
न्यच्च-उक्तव्यतिरिक्तमेवमादिकं-एवंजातीयं भणेत् क्रोधाग्निसंप्रदीप्तः सन् ‘तम्हे’त्यादि सम्पन्नो’ इत्येतदन्तं  
व्यक्तं २। ‘ततियं’ति तृतीयं भावनावस्तु, किं तदित्याह-लोभो न सेवितव्यः, कस्मादित्यत आह-लुब्धो-लो-  
भवान् लोलो-व्रते चञ्चलो भणेदलीकं, एतदेव विषयभेदेनाह-क्षेत्रस्य वा-ग्रामादेः कृषिभूमेर्वा वास्तुनो-  
गृहस्य ‘कएण’ति कृते-हेतोः लुब्धो लोलो भणेदलीकं, एवमन्यान्यप्यष्टसूत्राणि नेतव्यानि, नवरं कीर्त्तिः-  
ख्यातिः लोभस्य-औषधादिप्राप्तेः कृते तथा क्रुद्धेः-परिवारादिकायाः सौख्यस्य-शीतलञ्छायादिसुखहेतोः  
कृते तथा शय्याया-वसतेः यत्र वा प्रसारितपादैः सुष्यते सा शय्या तस्य संस्तारकस्य वा-अर्द्धतृतीयह-  
स्तस्य कम्बलखण्डादेः कृते पादप्रोञ्जनस्य-रजोहरणस्य कृते उपसंहरन्नाह-अन्येषु च एवमादिषु बहुषु कारण-  
शतेष्वित्यादि व्यक्तमेव ३। ‘चउत्थ’न्ति चतुर्थं भावनावस्तु यत् ‘न भाइयन्वं’ति न भेत्तव्यं-न भयं विधेयं  
इति, यतो भीतं भयार्त्तं प्राणिनं खुरिति वाक्यालङ्कारे भयानि-विविधा भीतयः ‘अतिंति’ति आगच्छंति,  
किंभूतं भीतं?-'लहुयं’ति लघुकं सत्त्वसारवर्जितत्वेन तुच्छं क्रियाविशेषणं वेदं तेन लघुकं-शीघ्रं, तथा भीतः

२ संवरा-  
ध्ययने  
सत्यव्रत-  
भावनाः  
सू० २५

॥ १२० ॥



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२५]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२५]

दीप  
अनुक्रम  
[३७]

१. २१



अद्वितीयः-सहायो न भवतीत्यर्थः मनुष्यो-नरः, तथा भीतो भूतैर्वा-प्रेतैर्गृह्यते-अधिष्ठीयते, तथा भीतोऽ-  
न्यमपि भेषयेत्, तथा भीतः तपःप्रधानः संयमः तपःसंयमस्तमपि हुरलङ्कारे मुञ्चेत्-त्यजेत् अलीकमपि  
ब्रूयादिति हृदयं, अहिंसादिरूपत्वात् संयमस्य, तथा भीतश्च भ्रं न निस्तरेत्, तथा सत्पुरुषनिषेचितं च  
मार्गं-धर्मादिपुरुषार्थोपायं भीतो न समर्थोऽनुचरितुं-आसेवितुं, यत एवं तस्मात् 'न भाइयव्वं'ति न भेत्तव्यं  
'भयस्स व'स्ति भयहेतोर्वाह्यात् दुष्टतिर्यङ्मनुष्यदेवादेः, तथा आत्मोद्भवादिपि नेत्याह- 'वाहिस्स व'स्ति  
व्याधेः क्रमेण प्राणापहारिणः कुष्ठादेः रोगाद्वा-शीघ्रतरप्राणापहारकाच्च ज्वरादेः जराया वा मृत्योर्वा अन्य-  
स्माद्वा तादृशाद्भयोत्पादकत्वेन व्याध्यादिसदृशाद् इष्टवियोगादेकस्मादिति, वाचनान्तरे इदमधीतं अन्य-  
स्माद्वा एवमादीति, एतन्निगमयन्नाह-एवं धैर्येण-सत्त्वेन भावितो भवत्यन्तरात्मा-जीवः, किंविधः? इत्याह-  
'संजए'त्यादि पूर्ववत् ४। 'पंचमगं'ति पञ्चमकं भावनावस्तिवति गम्यते, यदुत हास्यं न सेवितव्यं-परिहासो न  
विधेयः, यतः अलीकानि-सद्भूतार्थनिह्ववरूपाणि 'असंतगाहं'ति असन्ति असद्भूतार्थानि वचनानीति ग-  
म्यते अशोभनानि वा अशान्तानि वा-अनुपशमप्रधानानि 'जल्पन्ति' ब्रुवते 'हासइत्त'स्ति हासवन्तः प-  
रिहासकारिणः परिभवकारणं च हास्यं-अपमाननाहेतुरित्यर्थः, परपरिवादः-अन्यदूषणाभिधानं प्रिय-इष्टो  
यत्र तत्तथा तद्विधं च हास्यं, परपीडाकारकं च हास्यमिति व्यक्तं, 'भेयविमुत्तिकारकं च'स्ति भेदः-चारि-  
त्रभेदो विमूर्तिश्च-विकृतनयनवदनादित्वेन विकृतशरीराकृतिः तयोः कारकं यत्तत्तथा, तच्च हास्यं, अथवा

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [२] ----- मूलं [२५]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२५]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३७]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>प्रश्नव्याकरणं श्रीअभयदेववृत्तिः ॥ १२१ ॥</p> <p>राजदन्तादिदर्शनाद्विमुक्तेः-मोक्षमार्गस्य भेदकारकमिति वाच्ये भेदविमुक्तिकारकमित्युक्तं, अन्योऽन्यजनितं च-परस्परकृतं च भवेद्वास्यं यतस्ततोऽन्योऽन्यगमनं च-परस्परस्याभिगमनीयं च भवेत् मर्म-प्रच्छन्नपारदार्यादिदुश्चेष्टितं, तथाऽन्योऽन्यगमनं च-परस्पराधिगम्यं च भवेत्कर्म-लोकनिन्द्यजीवनवृत्तिरूपं ‘कन्दप्पाभियोग-गमणं च’त्ति कन्दर्पाश्च-कान्दर्पिका देवविशेषा हास्यकारिणो भाण्डप्राया आभियोग्याश्च-अभियोगार्हा आदेशकारिणो देवाः एतेषु गमनं-गमनहेतुर्यत्तथा तच्च भवेद्वास्यं, अयमभिप्रायो-हास्यरतिसाधुश्चारित्रलेशप्रभावाद्देवेषूपत्यमानः कान्दर्पिकेषु आभियोगिकेषु चोत्पद्यते न महर्द्विकेष्विति हास्यमनर्थायेति, आह च-“जो संजओवि एयासु अप्पसत्थासु वट्टइ कहिंचि । सो तव्विहेसु गच्छइ नियमा भइओ चरणहीणो ॥ १ ॥” [यः संयतोऽप्येतासु अप्रशस्तासु वर्त्तते कथञ्चित् । स तद्विधेषु गच्छति नियमाद् भक्तश्चरणहीनः ॥ १ ॥] ‘एयासु’त्ति कन्दर्पादिभावनास्विति, तथा ‘आसुरियं किञ्चिसत्तं च जणुज्ज हासं’ति ‘आसुरियं’न्ति असुरभावं ‘किञ्चिसत्तं’ति चाण्डालप्रायदेवविशेषत्वं वा विकल्पे जनयेत्-प्रापयेत् जन्मान्तरहास्यकारिचारित्रजीवं हास्यं-हासः, यस्मादेवं तस्माद्वासं न सेवितव्यमिति, अथैतन्निगमनमाह-एवमुक्तेन हासवर्जनप्रकारेण मौनेन-वचनसंयमेन भावितो भवन्त्यन्तरात्मा संयतादिविशेषणः, ‘एवमिणं’मित्याद्यध्ययननिगमनं पूर्वाध्ययनवद्व्याख्येयमिति । प्रश्नव्याकरणाङ्गस्य सप्तमाध्ययनविवरणं समाप्तमिति ॥</p> <p>२ संवराध्ययने सत्यव्रतं-भावनाः सू० २५</p> <p>॥ १२१ ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र द्वितिये श्रुतस्कन्धे द्वितियम् अध्ययनं परिसमाप्तं अथ द्वितिये श्रुतस्कन्धे तृतीयं अध्ययनं “दत्तानुजा” आरभ्यते</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२६]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p><b>तृतीयसंवरात्मकमष्टममध्ययनं</b></p> <p>व्याख्यातं ऋषावादसंवराख्यं द्वितीयं संवराध्ययनं, अथ सूत्रक्रमसम्बद्धमथवाऽनन्तराध्ययने ऋषावाद- विरमणमुक्तं तच्चादत्तादानविरमणवतामेव सुनिर्वाहं भवतीत्यदत्तादानविरमणमथाभिधानीयं भवतीति तदनेन प्रतिपाद्यत इत्येवंसम्बद्धमदत्तादानसंवराख्यं तृतीयं संवराध्ययनमारभ्यते, अस्य चेदमादिसूत्रम्—</p> <p>जंबू! दत्तमणुणायसंवरो नाम होति ततियं सुव्वता! महव्वतं गुणव्वतं परदव्वहरणपडिविरइकरणजुत्तं अपरिमियमणंततण्हाणुगयमहिच्छमणवयणकलुसआयाणसुनिग्गहियं सुसंजमियमणहत्थपायनिभियं निग्गंथं णेट्टिकं निरुत्तं निरासवं निब्भयं विमुत्तं उत्तमनरवसभपवरबलवगसुविहितजणसंमतं परमसाहुधम्मचरणं जत्थ य गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडंबदोणमुहसंवाहपट्टणासमगयं च किंचि दव्वं मणिमुत्तसिलप्पवा- लकंसदूसरययवरकणगरयणमादिं पडियं पम्हुट्टं विप्पणट्टं न कप्पति कस्सति कहेउं वा गेण्हिउं वा अहि- रन्नसुवन्निकेण समलेट्टुकंचणेणं अपरिग्गहसंबुडेणं लोगंमि विहरियव्वं, जंपिय होज्जाहि दव्वजातं खलगतं खेत्तगतं रत्तमंतरगतं वा किंचि पुप्फफलतयप्पवालकंदमूलतणकट्टसक्करादि अप्पं च बहुं च अणुं च थूलगं वा न कप्पती उग्गहंमि अदिण्णंमि गिण्हिउं जे, हणि हणि उग्गहं अणुन्नविय गेण्हियव्वं वज्जेयव्वो सव्व- कालं अचियत्तधरप्पवेसो अचियत्तभत्तपाणं अचियत्तपीढफलगसेज्जासंधारगवत्थपत्तकंबलदंडगरयहरण-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अथ द्वितिये श्रुतस्कन्धे तृतीयं अध्ययनं “दत्तानुजा” आरभ्यते “अदत्तादानविरति” - नामक तृतीयं संवर-द्वारं अदत्तादान-विरमणस्य स्वरूपं</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२६]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३८]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १२२ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>निसेज्जचोलपट्टगमुहपोत्तियपायपुंछणाइ भायणभंडोवहिउवकरणं परपरिवाओ परस्स दोसो परववएसेणं जं च गेण्हइ परस्स नासेइ जं च सुकयं दाणस्स य अंतरातियं दाणविप्पणासो पेसुञ्जं चैव मच्छरित्तं च, जेविय पीढफलगसेज्जासंधारगवत्थपायकंबलमुहपोत्तियपायपुंछणादिभायणभंडोवहिउवकरणं असंविभागी असंगहरुती तवतेणे य वइतेणे य रूवतेणे य आयारे चैव भावतेणे य सहकरे झञ्झकरे कलहकरे वेरकरे विकहकरे असमाहिकरे सया अप्पमाणभोती सततं अणुवद्धवेरे य निच्चरोसी से तारिसए नाराहए वयमिणं, अह केरिसए पुणाइं आराहए वयमिणं?, जे से उवहिभत्तपाणसंगहणदाणकुसले अच्चंतवालदुब्ब-लगिलाणबुद्धखमके पवत्तिआयरियउवज्जाए सेहे साहम्मिके तवस्सीकुलगणसंघचेइयट्टे य निज्जरट्टी वेयावच्चं अणिसिसयं दसविहं बहुविहं करेति, न य अचियत्तस्स गिहं पविसइ न य अचियत्तस्स गेण्हइ भत्तपाणं न य अचियत्तस्स सेवइ पीढफलगसेज्जासंधारगवत्थपायकंबलडंडगरयहरणनिसेज्जचोलपट्टयमुहपोत्तियपायपुं-छणाइभायणभंडोवहिउवकरणं न य परिवायं परस्स जंपति ण यावि दोसे परस्स गेण्हति परववएसेणवि न किंचि गेण्हति न य विपरिणामेति किंचि जणं न यावि णासेति दिन्नसुकयं दाऊण य न होइ पच्छा-ताविए संभागसीले संगहोवग्गहकुसले से तारिसते आराहते वयमिणं, इमं च परदव्वहरणवेरमणपरिर-क्खणट्टयाए पावयणं भगवया सुकहितं अत्तहितं पेच्चाभावितं आगमेसिभइं सुञ्जं नेयाउयं अकुडिलं अ-णुत्तरं सव्वदुक्खपाचाण विओवसमणं, तस्स इमा पंच भावणातो ततियस्स होंति परदव्वहरणवेरमणपरि-</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>३ धर्मद्वारे सभावना- कमदत्ता- दानविर- मणं सू० २६  ॥ १२२ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अदत्तादान-विरमणस्य स्वरूपं</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२६]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;">  <p style="text-align: center;"> रक्खणद्वयाए, पढमं देवकुलसभप्पवावसहरुक्खमूलआरामकंदरागरगिरिगुहाकम्मउज्जाणजाणसालाकुवित-  सालामंडवसुन्नघरसुसाणलेणआवणे अन्नंमि य एवमादियंमि दग्गमद्वियन्नीजहरिततसपाणअसंसत्ते अहाकडे  फासुए विवित्ते पसत्थे उवस्सए होइ विहरियव्वं, आहाकम्मबहुले य जे से आसितसंमज्जिउस्सित्तसोहियञ्जा-  यणदूमणल्लिपणअणुल्लिपणजलणभंडचालण अंतो व्हिं च असंजमो जत्थ वड्ढती संजयाण अट्ठा वज्जे-  यव्वो हु उवस्सओ से तारिसए सुत्तपडिकुट्ठे, एवं विवित्तवासवसहिसमित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा  निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरतो दत्तमणुन्नायओग्गहरुती वित्तीयं आरामुज्जाणकाणवणप्प-  देसभागे जं किंचि इक्कडं व कठिणगं च जंतुगं च परामेरकुच्चकुसडब्भपलालमूयगवक्कवपुष्फफलतयप्पवा-  लकंदमूलतणकट्टसक्करादी गेण्हइ सेज्जोवहिसस अट्ठा न कप्पए उग्गहे अदिन्नंमि गिण्हेउं जे हणि हणि उ-  ग्गहं अणुन्नविय गेण्हियव्वं एवं उग्गहसमित्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावण-  पावकम्मविरते दत्तमणुन्नायओग्गहरुती । ततीयं पीढफलगसेज्जासंथारगद्वयाए रुक्खा न छिंदियव्वा न छे-  दणेण भेयणेण सेज्जा कारेयव्वा जस्सेव उवस्सते वसेज्ज सेज्जं तत्थेव गवेसेज्जा न य विसमं समं करेज्जा न  निवायपवायउस्सुगत्तं न डंसमसगेसु सुभियव्वं अग्गी धूमो न कायव्वो, एवं संजमबहुले संवरबहुले संबुड-  बहुले समाहिवहुले धीरे काएण फासयंतो सययं अज्झप्पज्जाणजुत्ते समिए एगे चरेज्ज धम्मं, एवं सेज्जासमि-  त्तजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुन्नायउग्गहरुती । च- </p>  </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International</small>      <small>For Personal &amp; Private Use Only</small>      <small>www.jainelibrary.org</small> </p>
	<p>अदत्तादान-विरमणस्य स्वरूपं</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२३ ॥

उत्थं साहारणपिंडपातलाभे भोक्तव्वं संजएण समियं न सायसूयाहिकं न खड्दं ण वेगितं न तुरियं न च-  
वलं न साहसं न य परस्स पीलाकरसावज्जं तह भोक्तव्वं जह से ततियवयं न सीदति साहारणपिंडपाय-  
लाभे सुहुमं अदिन्नादाणवयनियमवेरमणं, एवं साहारणपिंडवायलाभे समितिजोगेण भावितो भवति अंत-  
रप्पा निच्चं अहिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुत्तायउग्गहरुती । पंचमगं साहम्मिए विणओ पउं-  
जियव्वो उवकरणपारणासु विणओ पउंजियव्वो वायणपरियट्टणासु विणओ पउंजियव्वो दाणगहणपुच्छणासु  
विणओ पउंजियव्वो निक्खमणपवेसणासु विणओ पउंजियव्वो अत्तेसु य एयमादिसु बहुसु कारणसएसु  
विणओ पउंजियव्वो, विणओवि तवो तवोवि धम्मो तम्हा विणओ पउंजियव्वो गुरुसु साहसु तवस्सीसु  
य, एवं विणतेण भाविओ भवइ अंतरप्पा णिच्चं अधिकरणकरणकारावणपावकम्मविरते दत्तमणुत्तायउग्ग-  
हरुई । एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुपणिहियं एवं जाव आघवियं सुदेसितं पसत्थं ॥  
( सू० २६ ) ततियं संवरदारं समत्तंतिवेमि ॥ ३ ॥

‘जंबू’ इत्यादि जम्बूरिल्यामन्नणं ‘दत्ताणुत्तायसंवरो नामंत्ति दत्तं च-विनीर्णमन्नादिकमनुज्ञातं च-प्रतिहा-  
रिकपीठफलकादि ग्राह्यमिति गम्यते इत्येवंरूपः संवरो दत्तानुज्ञातसंवर इत्येवंनामकं भवति तृतीयं संवरद्वा-  
रमिति गम्यते, हे सुव्रत! जम्बूनामन्! महाव्रतमिदं, तथा गुणानां-ऐहिकामुष्मिकोपकाराणां कारणभूतं व्रतं  
गुणव्रतं, किंस्वरूपमित्याह-परद्रव्यहरणप्रतिविरतिकरणयुक्तं तथा अपरिमिता-अपरिमाणद्रव्यविषया अनन्ता

३ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२३ ॥



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

वा-अक्षया या तृष्णा-विद्यमानद्रव्याव्ययेच्छा तथा यदनुगतं महेच्छं च-अविद्यमानद्रव्यविषये महाभिलाषं यन्मनो-मानसं वचनं च-वाक् ताभ्यां यत्कलुषं-परधनविषयत्वेन पापरूपमादानं-ग्रहणं तत्सुष्ठु निगृहीतं-नियमितं यत्र तत्तथा, सुसंयमितमनसा-संवृतेन चेतसा हेतुना हस्तौ च पादौ च निभृतौ-परधनादानव्या-पारादुपरतौ यत्र तत्सुसंयमितमनोहस्तपादनिभृतं, अनेन च विशेषणद्वयेन मनोवाक्कायनिरोधः परधनं प्रति दर्शितः, तथा निर्ग्रन्थं-निर्गतवाह्याभ्यन्तरग्रन्थं नैष्ठिकं-सर्वधर्मप्रकर्षपर्यन्तवर्ति नितरामुक्तं सर्वज्ञैरु-पादेयतयेति निरुक्तं अव्यभिचरितं वा निराश्रवं-कर्मादानरहितं निर्भयं-अविद्यमानराजादिभयं विमुक्तं-लोभदोषत्यक्तं उत्तमनरवृषभाणां 'पवरबलवग'त्ति प्रधानबलवतां च सुविहितजनस्य च-सुसाधुलोकस्य सम्मतं-अभिमतं यत्तथा, परमसाधूनां धर्मचरणं-धर्मानुष्ठानं यत्तथा, यत्र च तृतीये संवरे ग्रामाक-रनगरनिगमखेटकर्वटमडम्बद्रोणमुखसंवाहपत्तनाश्रमगतं च ग्रामादिव्याख्या पूर्ववत् किञ्चिद्-अनिर्दिष्टस्वरूपं द्रव्यं, तदेवाह-मणिमौक्तिकशिलाप्रवालकांस्यदूष्यरजतवरकनकरत्नादि, किमित्याह-पतितं-भ्रष्टं 'पम्हु-ङ्'ति विस्मृतं विप्रणष्टं-स्वाभिकैर्गवेषयद्भिरपि न प्राप्तं न कल्पते-न युज्यते कस्यचित् असंयतस्य संयतस्य वा कथयितुं वा-प्रतिपादयितुं अदत्तग्रहणप्रवर्त्तनं मा भूदितिकृत्वा ग्रहीतुं वा-आदातुं तन्नित्तत्त्वात्साधोः, यतः साधुनैवंभूतेन विहर्त्तव्यमित्यत आह-हिरण्यं-रजतं सुवर्णं च-हेम ते विद्येते यस्य स हिरण्यसुवर्णिक-स्तन्निषेधेनाहिरण्यसुवर्णिकस्तेन, समे-तुल्ये उपेक्षणीयतया लेष्टुकाश्चने यस्य स तथा तेन, अपरिग्रहो-

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२४ ॥

धनादिरहितः संवृतश्चेन्द्रियसंबरेण यः सोऽपरिग्रहसंवृतस्तेन, लोके-मर्त्यलोके विहर्त्तव्यं-आसितव्यं सञ्च-  
रितव्यं वा साधुनेति गम्यते, यदपि च भवेद् द्रव्यजातं-द्रव्यप्रकारः खलगतं-धान्यमलनस्थानाश्रितं क्षेत्र-  
गतं-कर्षणभूमिसंश्रितं 'रत्नमन्तरगतं व'त्ति अरण्यमध्यगतं वा, वाचनान्तरे 'जलथलगयं खेत्तमन्तरगतं  
व'त्ति दृश्यते, किञ्चिद्-अनिर्दिष्टस्वरूपं पुष्पफलत्वकप्रवालकन्दमूलतृणकाष्ठशर्करादीति प्रतीतं अल्पं वा  
मूल्यतो बहु वा तथैव अणु वा-स्तोकं प्रमाणतः स्थूलकं वा-तथैव न कल्पते-न युज्यते अचग्रहे-गृहस्थ-  
ण्डलादिरूपे अदत्ते-स्वामिनाऽननुज्ञाते ग्रहीतुं-आदातुं जे इति निपातः, ग्रहणे निषेध उक्तोऽधुना तद्विधि-  
माह—'हणि हणि'त्ति अहन्यहनि प्रतिदिनमित्यर्थः अवग्रहमनुज्ञाप्य यथेह भवदीयेऽवग्रहे इदं इदं च साधु-  
प्रायोग्यं द्रव्यं ग्रहीष्याम इति पृष्टेन तत्स्वामिना एवं कुरुतेत्यनुमते सतीत्यर्थो ग्रहीतव्यं-आदातव्यं वर्ज-  
यितव्यश्च सर्वकालं 'अचियत्त'त्ति साधुन् प्रत्यप्रीतिमतो यद् गृहं तत्र यः प्रवेशः स तथा 'अचियत्त'त्ति  
अप्रीतिकारिणः सम्बन्धि यद्गृहपातं तत्तथा तद्गृहयितव्यमिति प्रक्रमः, तथा अचियत्तपीठफलकशय्यासं-  
स्तारकवस्त्रपात्रकम्बलदण्डकरजोहरणनिषद्याचोलपट्टकमुखपोतिकापादप्रोञ्छनादि प्रतीतमेव, किमेवंविधभे-  
दमित्याह-भाजनं-पात्रं भाण्डं वा-तदेव मृन्मयं उपधिश्च-वस्त्रादिः एत एवोपकरणमिति समासस्तद्गृहयि-  
तव्यमिति प्रक्रमः, अदत्तमेव स्वामिनाऽननुज्ञातमिति कृत्वा, तथा परपरिवादो-विकत्थनं वर्जयितव्य इति,  
तथा परस्य दोषो-दूषणं द्वेषो वा वर्जयितव्यः, परिवदनीयेन दूषणीयेन च तीर्थकरगुरुभ्यां तयोरननुज्ञातत्वे-

३ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२४ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२६]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>नादत्तरूपत्वादिति, अदत्तलक्षणं हीदं—‘सामीजीवादत्तं तिथ्यरेणं तहेव य गुरुहिं’ति [ स्वामिजीवादत्ते तीर्थकरेण च तथैव गुरुभिः ] तथा परस्य-आचार्यग्लानादेर्व्यपदेशेन-व्याजेन यच्च गृह्णाति-आदत्ते वैयावृत्त्यकरादिस्तत्तेनान्येन च वर्जयितव्यं, आचार्यादेरेव दायकेन दत्तत्वादिति, न परस्य-परसम्बन्धि नाशयति-मत्सरादपहुते यच्च सुकृतं-सचरितमुपकारं वा तत्सुकृतनाशनं वर्जयितव्यं, तथा दानस्य चान्तरायिकं-विघ्नो दानविप्रणाशो दत्तापलापः, तथा पैशुन्यं चैव-पिशुनकर्म मत्सरित्वं च-परगुणानामसहनं तीर्थङ्कराद्यननुज्ञातत्वाद् वर्जनीयमिति, तथा ‘जेऽविण्’त्यादि योऽपि च पीठफलकशय्यासंस्तारकवस्त्रपात्रकम्बलमुखपोतिकापादप्रोच्छनादिभाजनभाण्डोपधुपकरणं प्रतीत्येति गम्यते अविंसंविभागी-आचार्यग्लानादीनामेषणागुणविशुद्धिलब्धं सन्न विभजतेऽसौ नाराधयति व्रतमिदमिति सम्बन्धः, तथा ‘असंगहरुह’स्ति गच्छोपग्रहकरस्य-पीठादिकस्योपकरणस्यैषणादोषविमुक्तस्य लभ्यमानस्यात्मभरित्वेन न विद्यते सङ्गहे रुचिर्यस्यासावसङ्गहरुचिः, ‘तववइतेणे य’स्ति तपश्च वाक् तपोवाचौ तयोः स्तेनः-चौरस्तपोवाक्स्तेनः, तत्र स्वभावतो दुर्बलाङ्गमनगारमवलोक्य कोऽपि कञ्चन व्याकरोति-यथा भोः! साधो स त्वं यः श्रूयते तत्र गच्छे मासक्षपकः?, एवं पृष्टे यो विवक्षितक्षपकोऽसन्नप्याह-एवमेतत्, अथवा धूर्त्ततया ब्रूते-भोः श्रावक! साधवः क्षपका एव भवन्ति, श्रावकस्तु मन्यते-कथं स्वयमात्मानमयं भट्टारकः क्षपकतया निःस्पृहत्वात् प्रकाशयतीति कृत्वैवंविधमात्मोद्धत्यपरिहारपरं सकलसाधुसाधारणं वचनमाविकरोतीत्यतः स एवायं यो मया विवक्षित इत्येवं पर-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International <span style="margin-left: 200px;">For Personal &amp; Private Use Only</span> <span style="float: right;">www.jainelibrary.org</span></p>



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२५ ॥

सम्बन्धि तप आत्मनि परप्रतिपत्तितः सम्पादयंस्तपस्तेन उच्यते, एवं भगवन् ! स त्वं वाग्मीत्यादिभावनया परसम्बन्धिनीं वाचमात्मनि तथैव सम्पादयन् वाक्स्तेन उच्यते, तथा ‘रूपवतेणे य’त्ति एवं रूपवन्तमुपलभ्य स त्वं रूपवानित्यादिभावनया रूपस्तेनो, रूपं च द्विधा-शारीरसुन्दरता सुविहितसाधुनेपथ्यं च, तत्र साधु-नेपथ्यं यथा—“देहो रुगा उमन्ने जेसिं जल्लेण फासियं अंगं । मलिणा य चोलपट्टा दोन्नि य पाया सम-कखाया ॥ १ ॥” [देहो रुजातुरः अवममन्नं येषां जल्लेनाविलमङ्गम् । मलिनाश्च चोलपट्टा द्वे च पात्रे समा-ख्याते ॥ १ ॥] तत्र सुविहिताकाररञ्जनीयजनमुपजीवितुकामोऽसुविहितः सुविहिताकारधारी रूपस्तेनः, ‘आयारे चेव’त्ति आचारे-साधुसामाचार्यां विषये स्तेनो यथा स त्वं यस्तत्र क्रियारुचिः श्रूयते इत्यादिभा-वना तथैव, ‘भावतेणे य’त्ति भावस्य-श्रुतज्ञानादिविशेषस्य स्तेनो भावस्तेनो यथा कमपि कस्यापि श्रुतविशे-षस्य व्याख्यानविशेषमन्यतो बहुश्रुतादुपश्रुत्य प्रतिपादयति यथाऽयं मयाऽपूर्वं श्रुतपर्यायोऽभ्यूहितो नान्य एवमभ्यूहितुं प्रभुरिति, तथा शब्दकरो-रात्रौ महता शब्देनोल्लापस्वाध्यायादिकारको गृहस्थभाषाभाषको वा, तथा झञ्झाकरो येन येन गणस्य भेदो भवति तत्तत्कारी येन च गणस्य मनोदुःखमुत्पद्यते तद्भाषी, तथा कलहकरः कलहहेतुभूतकर्त्तव्यकारी, तथा वैरकरः प्रतीतः विकथाकारी-रुयादिकथाकारी असमाधिकारकः-चित्तास्वास्थ्यकर्त्ता स्वस्य परस्य वा, तथा सदा अप्रमाणभोजी-द्वात्रिंशत्कवलाधिकाहारभोक्ता सततमनु-बद्धवैरश्च-सन्ततमनुबद्धं प्रारब्धमित्यर्थः वैरं-वैरिकर्म येन स तथा, तथा नित्यरोषी-सदाकोपः, ‘से तारिसे’त्ति

३ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२५ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b></p>
<p><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२६]</b></p> <p><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३८]</b></p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>स तादृशः-पूर्वोक्तरूपः ‘नाराहण वयमिणं’ति नाराधयति न निरतिचारं करोति व्रतं-महाव्रतमिदं-अदत्ता-दानविरतिरूपं, स्वाम्यादिभिरननुज्ञातकारित्वात्तस्येति । ‘अहं केरिसए’त्ति अथ परिप्रश्नार्थः, कीदृशः पुनः ‘आहं’ति अलङ्कारे आराधयति व्रतमिदं?, इह प्रश्ने उत्तरमाह—‘जे से’इत्यादि योऽसावुपधिभक्तपानानां दानं च सद्ग्रहणं च तयोः कुशलो-विधिज्ञो यः स तथा, बालश्च दुर्बलश्चेत्यादिसमाहारद्वन्द्वस्ततोऽत्यन्तं यद्बालदुर्बलग्लानवृद्धक्षपकं तत्तथा तत्र विषये वैद्यावृत्त्यं करोतीति योगः, तथा प्रवृत्त्याचार्योपाध्याये इह द्वन्द्वैकत्वात् प्रवृत्त्यादिषु, तत्र प्रवृत्तिलक्षणमिदं—“तवसंजमजोगेसुं जो जोगो तत्थ तं पवत्तेइ । असहुं च नियत्तेइ गणतत्तिल्लो पविच्ची उ ॥ १ ॥ [ तपःसंयमयोगेषु यो यत्र योग्यस्तं तत्र प्रवर्त्तयति । असहं च निवर्त्तयति गणचिन्तकः प्रवृत्तिः ॥ १ ॥ ] इतरौ प्रतीतौ, तथा ‘सेहे’त्ति शैक्षे-अभिनवप्रव्रजिते साधर्मिके-समानधर्मके लिङ्गप्रवचनाभ्यां तपस्विनि-चतुर्थभक्तादिकारिणि तथा कुलं-गच्छसमुदायरूपं चन्द्रादिकं गणः-कुलसमुदायः कोटिकादिकः सङ्घः-तत्समुदायरूपः चैत्यानि-जिनप्रतिमा एतासां योऽर्थः-प्रयोजनं स तथा तत्र च निर्जरार्थी-कर्मक्षयकामः वैद्यावृत्त्यं-व्यावृत्तकर्मरूपमुपपष्टम्भनमित्यर्थः अनिश्रितं-कीर्त्यादिनिरपेक्षं दशविधं-दशप्रकारं, आह च—“वेयावच्चं वावडभावो इह धम्मसाहणनिमित्तं । अन्नाइयाण विहिणा संपायणमेस भावत्थो ॥ १ ॥ आयरिय १ उवज्जाए २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाणं ६ । साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ संघ १० संगयं तमिह कायव्वं ॥ २ ॥” ति [ वैद्यावृत्त्यं व्यापृतभावः इह धर्मसाधननि-</p> </div> <p align="center"> <small>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</small> </p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२६ ॥

मित्तं अन्नादिकानां विधिना संपादनं एष भावार्थः ॥ १ ॥ आचार्योपाध्यायस्थविरतपखिग्लानशैक्षणाम् ।  
साधर्मिककुलगणसंघसंगतं यत् तदिह कर्त्तव्यं ॥ २ ॥ ] बहुविधं-भक्तपानादिदानभेदेनानेकप्रकारं करो-  
तीति, तथा न च-नैव च ‘अचियत्तस्स’त्ति अप्रीतिकारिणो गृहं प्रविशति, न च-नैव च ‘अचियत्तस्स’त्ति  
अप्रीतिकारिणः सक्तं गृह्णाति भक्तपानं, न च ‘अचियत्तस्स’त्ति अप्रीतिकर्तुः सेवते-भजते पीठफलकशय्या-  
संस्तारकवस्त्रपात्रकम्बलदण्डकरजोहरणनिषद्याचोलपट्टकमुखपोतिकापादप्रोञ्जनादिभाजनभाण्डोपधुपक-  
रणं, तथा न च परिवादं परस्य जल्पति, न चापि दोषान् परस्य गृह्णाति, तथा परव्यपदेशेनापि-ग्लानादि-  
व्याजेनापि न किञ्चिद् गृह्णाति, न च विपरिणमयति-दानादिधर्माद्विमुखीकरोति किञ्चिदपि जनं, न चापि  
नाशयति-अपह्वद्वारेण दत्तसुकृतं-वितरणरूपं सुचरितं परसम्बन्धि, तथा दत्त्वा च देयं-कृत्वा वैद्यावृ-  
त्त्यादिकार्यं न भवति पश्चात्तापिकः-पश्चात्तापवान्, तथा संविभागशीलः-लब्धभक्तादिसंविभागकारी तथा  
सङ्ग्रहे-शिष्यादिसङ्ग्रहणे उपग्रहे च-तेषामेव भक्तश्रुतादिदानेनोपष्टम्भने यः कुशलः स तथा ‘से तारिसे’त्ति  
स तादृशः आराधयति व्रतमिदं-अदत्तादानविरतिलक्षणं, ‘इमं चे’त्यादि इमं च-प्रत्यक्षं प्रवचनमितिसम्बन्धः  
परद्रव्यहरणविरमणस्य परिरक्षणं-पालनं स एवार्थस्तद्भावस्तत्ता तस्यैव प्रवचनं-शासनमित्यादि वक्तव्यं  
यावत् ‘परिरक्षणदृष्ट्याए’त्ति ‘पदमं’ति प्रथमं भावनावस्तु विविक्तवसतिवासो नाम, तत्राह-देवकुलं-प्रतीतं  
सभा-महाजनस्थानं प्रपा-जलदानस्थानं आवसथः-परित्राजकस्थानं वृक्षमूलं प्रतीतं आरामो-माधवील-

३ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२६ ॥



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

ताद्युपतो दम्पतिरमणाश्रयो वनविशेषः कन्दरा-दरी आकरो-लोहाद्युत्पत्तिस्थानं गिरिगुहा-प्रतीता कर्म-  
अन्तर्यत्र सुधादि परिकर्म्यते उद्यानं-पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलमुत्सवादाँ बहुजनभोग्यं यानशाला-रथादिगृहं  
कुपितशाला-तूल्यादिगृहोपस्करशाला मण्डपो-पञ्जादिमण्डपः शून्यगृहं इमशानं च प्रतीतं लयनं-शैलगृहं  
आपणः-पण्यस्थानं एतेषां समाहारद्वन्द्वस्ततस्तत्र अन्यस्मिंश्चैवमादिके-एवंप्रकारे उपाश्रये भवति विहर्त्त-  
व्यमिति सम्बन्धः, किंभूते?-द्रुकं-उदकं मृत्तिका-पृथिवीकायः बीजानि-शाल्यादीनि हरितं-दूर्वादिवन-  
स्पतिस्त्रसप्राणा-द्वीन्द्रियादयः तैरसंसक्तः-असंयुक्तो यः स तथा तत्र, यथाकृते-गृहस्थेन स्वार्थं निर्वर्त्तिते  
'फासुए'ति पूर्वोक्तगुणयोगादेव प्रासुके-निर्जीवे विविक्ते-ख्यादिदोषरहिते अत एव प्रशस्ते उपाश्रये व-  
सतो भवति विहर्त्तव्यं-आसितव्यं, यादृशे पुनर्नासितव्यं तथाऽसावुच्यते—'आहाकम्मबहुले य'ति आधया  
-साधूनां मनस्याधानेन साधूनाश्रित्येत्यर्थः यत्कर्म-पृथिव्याचारम्भक्रिया तदाधाकम्म, आह च—“हिय-  
यंमि समाहेउं एगमणेगं च गाहगं जं तु । वहणं करेइ दाया कायाण तमाहकम्मं तु ॥ १ ॥” [ हृदये समा-  
धायैकमनेकं च ग्राहकं यत्तु । वधं करोति दाता कायानां तदाधाकम्म ॥ १ ॥ ] तेन बहुलः-प्रचुरस्तद्वा बहुलं  
यत्र स तथा, 'जे से'ति य एवंविधः स वर्जयितव्य एवोपाश्रय इति सम्बन्धः, अनेन मूलगुणाशुद्धस्य परि-  
हार उपदिष्टः, तथा 'आसिय'ति आसित्तं-आसेचनमीषदृक्कच्छदक इत्यर्थः 'संमज्जिय'ति सम्मार्जनं-  
शालाकाहस्तेन कचवरशोधनं उत्सित्तं-अत्यर्थं जलाभिषेचनं 'सोहिय'ति शोभनं चन्दनमालाचतुष्कप-

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२७ ॥

रणादिना शोभाकरणं 'छायण'ति छादनं-दर्भादिपटलकरणं 'दूमण'ति सेटिकया धवलनं 'लिपणं'ति छगणादिना भूमेः प्रथमतो लेपनं 'अणुलिपणं'ति सकृल्लिप्ताया भूमेः पुनर्लेपनं 'जलणं'ति शैत्यापनोदाय वैश्वानरस्य ज्वलनं शोधनार्थं वा प्रकाशकरणाय वा दीपप्रबोधनं 'भंडचालण'ति भाण्डादीनां-पीठर-कादीनां पण्यादीनां वा तत्र गृहस्थस्थापितानां साध्वर्थं चालनं-स्थानान्तरस्थापनमेतेषां समाहारद्वन्द्वः विभक्तिलोपश्च दृश्यः, तत आसिक्तादिरूपः अन्तर्बहिश्च-उपाश्रयस्य मध्ये अमध्ये च असंयमो-जीव-विराधना यत्र-यस्मिन्नुपाश्रये वर्त्तते-भवति संयतानां-साधूनामर्थाय-हेतवे 'वज्जेयन्वो हु'ति वर्जितव्य एव उपाश्रयो-वसतिः स तादृशः सूत्रप्रतिकुष्टः-आगमनिषिद्धः, प्रथमभावनां निगमयन्नाह-एवमुक्तेनानु-ष्ठानप्रकरणे विविक्तो-लोकद्रव्याश्रितदोषवर्जितो विविक्तानां वा-निर्दोषाणां वासो-निवासो यस्यां सा विविक्तवासा सा चासौ वसतिश्च विविक्तवासवसतिस्तद्विषया या समितिः-सम्यक्प्रवृत्तिस्तया यो योगः-सम्बन्धस्तेन भावितो भवत्यन्तरात्मा, किंविध इत्याह-नित्यं-सदाऽधिक्रियते-अधिकारीक्रियते दुर्ग-तावात्मा येन तदधिकरणं-दुरनुष्ठानं तस्य यत्करणं कारापणं च तदेव पापकर्म-पापोपादानक्रिया तयो-र्विरतो यः स तथा, तथा दत्तोऽनुज्ञातश्च योऽवग्रहः-अवग्रहणीयं वस्तु तत्र रुचिर्यस्य स तथेति १ । 'बी-यं'ति द्वितीयं भावनावस्तु अनुज्ञातसंस्तारकग्रहणं नाम, तच्चैवम्-आरामो-दम्पतिरमणस्थानभूतमाधवीलता-दिगृहयुक्तः उद्यानं-पुष्पादिमदृक्षसङ्कुलादौ उत्सवादौ बहुजनभोग्यं काननं-सामान्यवृक्षोपेतं नगरासन्नं च

२ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२७ ॥

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

वनं-नगरविप्रकृष्टं एतेषां प्रदेशरूपो यो भागः स तथा तत्र यत्किञ्चिदिति-सामान्येनावग्रहणीयं वस्तु, तदेव विशेषेणाह-इच्छं वा-दृष्टं वा-तृणविशेषं एवं कठिनकं जन्तुकं च-जलाशयजं तृणविशेषमेव पर्णमित्यर्थः तथा परा-तृणविशेषः मेरा तु-मुञ्जसरिका कूर्चो-येन तृणविशेषेण कुविन्दाः कूर्चान् कुर्वन्ति कुशदर्भयोराकारकृतो विशेषः पलालं-कङ्गवादीनां मूयको-मेदपाटप्रसिद्धस्तृणविशेषः वल्बजः-तृणविशेषः पुष्पफलत्वकप्रवालकन्दमूलतृणकाष्ठशर्कराः प्रतीतास्ततः परादीनां द्वन्द्वः पुनस्ता आदिर्यस्य तत्तथा तद् गृह्णाति-आदत्ते, किमर्थं?-शय्योपधेः-संस्तारकरूपस्योपधेरथवा संस्तारकस्योपाधेश्चार्थाय-हेतवे, इह तदिति शेषो दृश्यः, ततस्तन्न कल्पते-न युज्यते अवग्रहे-उपाश्रयान्तर्वाचीनि अवग्रहाद्ये वस्तुनि अदत्ते-अननुज्ञाते शय्यादायिना ‘गिहिं जे’ति ग्रहीतुं-आदातुं जे इति निपातः, अयमभिप्रायः-उपाश्रयमनुज्ञाप्य तन्मध्यगतं तृणाद्यप्यनुज्ञापनीयं, अन्यथा तद्ग्राह्यं स्यादिति, एतदेवाह-‘हणि हणि’ति अहनि २-प्रतिदिवसं, अयमभिप्रायः-उपाश्रयानुज्ञापनादिने ‘उग्राहं’ति अवग्रहामिच्छादि अनुज्ञाप्य ग्रहीतव्यमिति, ‘एव’मित्यादि निगमनं प्रथमभावनावदवसेयं, नवरमवग्रहसमितियोगेन-अवग्रहणीयतृणादिविषयसम्यक्प्रवृत्तिसम्बन्धेनेत्यर्थः २। ‘तद्वयं’ति तृतीयं भावनावस्तु शय्यापरिकर्मवर्जनं नाम, तच्चैवं-पीठफलकशय्यासंस्तारकार्थतायै वृक्षा न छेत्तव्याः न च छेदनेन-तद्गम्याश्रितवृक्षादीनां कर्त्तनेन भेदनेन च तेषां पाषाणादीनां वा शय्या-शयनीयं कारयितव्या, तथा यस्यैव गृहपतेरुपाश्रये-निलये वसेत्-निवासं करोति शय्यां शयनीयं तत्रैव गवेषयेत्-मृगयेत् न च विषमां



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२८ ॥

सतीं समां कुर्यात् न निवातप्रवातोत्सुकत्वं कुर्यादिति वर्त्तते, न च दंशमशकेषु विषये क्षुभितव्यं-क्षोभः  
कार्यः, अतश्च दंशाद्यपनयनार्थं अग्निर्धूमो वा न कर्त्तव्यः, एवमुक्तप्रकारेण संयमबहुलः-पृथिव्यादिसंरक्ष-  
णप्रचुरः संवरबहुलः-प्राणातिपाताद्याश्रवद्वारनिरोधप्रचुरः संवृतबहुलः-कषायेन्द्रियसंवृतत्वप्रचुरः समाधि-  
बहुलः-चित्तस्वास्थ्यप्रचुरः धीरो-बुद्धिमान् अक्षोभो वा परीषहेषु, कायेन स्पृशन् न मनोरथमात्रेण, तृतीयं  
संवरमिति प्रक्रमगम्यं, सततं-सन्ततमध्यात्मनि-आत्मानमधिकृत्य आत्मात्मन्वनं ध्यानं-चित्तनिरोधस्तेन  
युक्तो यः स तथा, तत्रात्मध्यानं अमुकोऽहं अमुककुले अमुगसिस्से अमुगधम्मट्टाणटिइए न य तच्चिराहणे  
त्यादिरूपं, ‘समिण्’ति समितः समितिभिः एकः-ससहायोऽपि रागाद्यभावात् चरेद्-अनुतिष्ठेत् धम्मं-चा-  
रित्रं, अथ तृतीयभावनां निगमयन्नाह-एवं-अनन्तरोदितन्यायेन शय्यासमितियोगेन-शयनीयविषयस-  
म्यक्प्रवृत्तियोगेन शेषं पूर्ववत् ३ । इह चतुर्थं भावनावस्तु अनुज्ञातभक्तादिभोजनलक्षणं, तच्चैवं-साधारणः-  
सङ्घाटिकादिसाधर्मिकस्य सामान्यो यः पिण्डस्तस्य भक्तादेः पात्रस्य च-पतद्ब्रह्मलक्षणस्य उपलक्षणत्वादुप-  
ध्यन्तरस्य च पात्रे वा-अधिकरणे लाभो-दायकात्सकाशात्प्राप्तिः स साधारणपिण्डपात्रलाभस्तत्र सति भो-  
क्तव्यं-अभ्यवहर्त्तव्यं परिभोक्तव्यं च, केन कथमित्याह-संयतेन-साधुना ‘समिधं’ति सम्यक् यथा अद-  
त्तादानं न भवतीत्यर्थः, सम्यक्त्वमेवाह-न शाकसूपाधिकं-साधारणस्य पिण्डस्य शाकसूपाधिकं भोगे भुज्य-  
माने सङ्घाटिकादिसाधोरप्रीतिरुत्पद्यते ततस्तददत्तं भवति, तथा ‘न खद्धं’ति प्रचुरं प्रचुरभोजनेऽप्यप्रीति-

३ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२८ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२६]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३८]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>रेव, प्रचुरभोजनता च साधारणेऽपि पिण्डे भोजकान्तरापेक्षया वेगेन भुज्यमाने भवतीति तन्निषेधायाह-न वेगितं-ग्रासस्य गिलने वेगवत् न त्वरितं-मुखक्षेपे न चपलं-हस्तिग्रीवादिरूपकायचलनवत् न साहसं-अचितकिंतं अत एव न च परस्य पीडाकरं च तत्सावद्यं चेति परपीडाकरसावद्यं, किं बहुनोक्तेन?, तथा भोक्तव्यं संयतेन नित्यं यथा ‘से’ तस्य संयतस्य तद्वा तृतीयव्रतं न सीदति-न भ्रश्यति, दूरक्षं चेदं सूक्ष्मत्वादित्यत आह-साधारणपिण्डपात्रलाभे विषयभूते सूक्ष्मं-सुनिपुणमतिरक्षणीयत्वाद्गु, किं तदित्याह-अदत्तादानविरमणलक्षणेन व्रतेन यन्नियमनं-आत्मनो नियन्त्रणं तत्तथा, पाठान्तरे अदत्तादानाद्भवति-बुद्ध्या नियमेन-अवश्यंतया यद्विरमणं-निवृत्तिस्तत्तथा, एतन्निगमनायाह-एवमुक्तन्यायेन साधारणपिण्डपात्रलाभे विषयभूते समितियोगेन-सम्यक्प्रवृत्तिसम्बन्धेन भावितो भवत्यन्तरात्मा, किंभूत इत्याह-‘निचमिल्यादि तथैव ४। ‘पंचमगं’ति पञ्चमं भावनावस्तु, किं तदित्याह-साधर्मिकेषु विनयः प्रयोक्तव्यः, एतदेव विषयभेदेनाह-‘उपकरणपारणासु’त्ति आत्मनोऽन्यस्य वा उपकरणं-गलानाद्यवस्थायामन्येनोपकारकरणं तच्च पारणा च-तपसः श्रुतस्कन्धादिश्रुतस्य वा पारगमनं उपकारपारणे तयोर्विनयः प्रयोक्तव्यो, विनयश्चेच्छाकारादिदानेन बलात्कारपरिहारादिलक्षणः एकत्रान्यत्र च गुर्वनुज्ञया भोजनादिकृत्यकरणलक्षणः, तथा वाचना-सूत्रग्रहणं परिवर्त्तना-तस्यैव गुणनं तयोर्विनयः प्रयोक्तव्यो वन्दनादिदानलक्षणः, तथा दानं-लब्धस्यान्नादेर्गलानादिभ्यो वितरणं ग्रहणं-तस्यैव परेण दीयमानस्यादानं प्रच्छना-विस्मृतसूत्रार्थप्रश्नः एतासु</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International <span style="margin-left: 200px;">For Personal &amp; Private Use Only</span> <span style="float: right;">www.jainelibrary.org</span></p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२६]

दीप  
अनुक्रम  
[३८]

प्रश्नव्याक-  
र० श्री-  
अभयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १२९ ॥

विनयः प्रयोक्तव्यः, तत्र दानग्रहणयोर्गुर्वनुज्ञालक्षणः प्रच्छनायां तु वन्दनादिर्विनयः, तथा निष्क्रमणप्रवेश-  
नयोर्विनयस्तु आवश्यकानैषेधिक्यादिकरणमथवा हस्तप्रसारणपूर्वकं भूप्रमार्जनानन्तरपादनिक्षेपलक्षणाः, किं-  
बहुना? प्रत्येकं विषयभणनेनेत्यत आह-अन्येषु चैवमादिकेषु बहुषु कारणशतेषु विनयः प्रयोक्तव्यः, कस्मादे-  
वमित्याह-विनयोऽपि न केवलमनशनादि तपः अपि तु विनयोऽपि तपो वर्त्तते, अभ्यन्तरतपोभेदेषु पठितत्वात्  
तस्य, यद्येवं ततः किमत आह-तपोऽपि धर्मः, न केवलं संयमो धर्मस्तपोऽपि धर्मो वर्त्तते चारित्र्यांशत्वात्  
तस्य, यत एवं तस्माद्विनयः प्रयोक्तव्यः, केष्वित्याह-गुरुषु साधुषु तपस्विषु च-अष्टमादिकारिषु, विनयप्रयोगे  
हि तीर्थकरायनुज्ञास्वरूपादत्तादानविरमणं परिपालितं भवतीति, पञ्चमभावनानिगमनार्थमाह-एवमुक्तन्या-  
येन भावितो भवत्यन्तरात्मा, किंभूतः?-नित्यमित्यादि पूर्ववत् ५ । अध्ययनार्थोपसंहारार्थमाह-‘एवमिणं  
संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिं कारणेहिं मणवयणकायपरिरिक्खएहिं निच्चं  
आमरणंतं च एस जोगो नेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अकलुसो अच्छिहो अपरिस्साई असं-  
किलिट्ठो सुद्धो सव्वजिणमणुत्ताओ, एवं तइयं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरिअं किट्ठिअं सम्मं  
आराहियं आणाए अणुपालियं भवइ, एवं नायमुणिणा भगवया पणवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धवरसासण-  
मिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं ॥ तइयं संवरदारं समत्तं तिबेमि’ इदं च निगमनसूत्रं पुस्तकेषु किञ्चित्सा-



३ धर्मद्वारे  
सभावना-  
कमदत्ता-  
दानविर-  
मणं  
सू० २६

॥ १२९ ॥



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [३] ----- मूलं [२६]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२६]</p> <p>दीप अनुक्रम [३८]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>क्षादेव यावत्करणेन च दर्शितं, व्याख्या चास्य प्रथमसंवराध्ययनवदवसेयेति । प्रश्नव्याकरणाङ्गे समाप्तमष्ट- माध्ययनविवरणम् ॥ ३ ॥</p> <hr/> <p><b>अथ चतुर्थसंवरात्मकं नवममध्ययनम्</b></p> <p>व्याख्यातं तृतीयं संवराध्ययनं, अथ चतुर्थं ब्रह्मसंवराख्यमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सह सूत्रक्रमकृत एव सम्बन्धोऽथवाऽनन्तराध्ययनेऽदत्तादानविरमणमुक्तं तच्च प्रायो मैथुनविरमणोपेतानां सुकरं भवतीति तदि हाभिधीयत इत्ययमपरः, तदेवंसम्बन्धस्यास्येदमादिसूत्रम्—</p> <p>जंबू! एत्तो य बंधचेरं उत्तमतवनियमणाणदंसणचरित्तसम्मत्तविणयमूलं यमनियमगुणप्पहाणजुत्तं हिमवंत- महंततेयमंतं पसत्थगंभीरधिमितमञ्जं अज्जवसाहुज्जणाचरितं मोक्खमग्गं विसुद्धसिद्धिगतिनिलयं सासयम- व्वावाहमपुणब्भवं पसत्थं सोमं सुभं सिवमचलमक्खयकरं जतिवरसारक्खितं सुचरियं सुभासियं नवरि मुणिवरेहिं महापुरिसधीरसूरधम्मियधितिमंताण य सया विसुद्धं भव्वं भव्वज्जणाणुच्चिन्नं निस्संक्रियं नि- ब्भयं नित्तुसं निरायासं निरुवलेवं निव्वुत्तिघरं नियमनिप्पकंपं तवसंजममूलदलियणेम्मं पंचमहव्वयसुर- क्खियं समितिगुत्तिगुत्तं ज्ञाणवरकवाडसुकयमञ्जप्पदिन्नफलिहं संनद्धोच्छइयदुग्गइपहं सुगतिपहदेसगं च</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Educational International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र द्वितिये श्रुतस्कन्धे तृतीयं अध्ययनं परिसमाप्तं अथ द्वितिये श्रुतस्कन्धे चतुर्थं अध्ययनं “ब्रह्मचर्य” आरभ्यते “मैथुनविरमण” - नामक चतुर्थं संवर-द्वारं</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३० ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>लोगुत्तमं च वयमिणं पउमसरतलागपालिभूयं महासगडअरगतुंभूयं महाविडिमरुक्खकखंधभूयं महानग- रपागारकवाडफलिहभूयं रज्जुपिणिद्धो व इंदकेतू विसुद्धगेगगुणसंपिणद्धं जंमि य भग्गंमि होइ सहसा सव्वं संभग्गमथियचुन्नियकुसल्लियपल्लट्टपडियखंडियपरिसडियविणासियं विणयसीलतवनियमगुणसमूहं तं बंभं भगवंतं गहगणनक्खत्तारगाणं वा जहा उडुपती मणिमुत्तसिलप्पवालरत्तरयणागराणं च जहा समुद्धो वेरुलिओ चेव जहा मणीणं जहा मउडो चेव भूसणाणं वत्थाणं चेव खोमजुयलं अरविंदं चेव पुप्फजेट्टं गोसीसं चेव चंदणाणं हिमवंतो चेव ओसहीणं सीतोदा चेव निन्नगाणं उदहीसु जहा सयंभुरमणो रुयगवर चेव मंडलिकपव्वयाण पवरे एरावण इव कुंजराणं सीहोव्व जहा मिगाणं पवरे पवकाणं चेव वेणुदेवे ध- रणो जह पण्णगइंदराया कप्पाणं चेव वंभलोए सभासु य जहा भवे सुहम्मा ठितिसु लवसत्तमव्व पवरा दाणाणं चेव अभयदाणं किमिराउ चेव कंबलाणं संघयणे चेव वज्जरिसभे संठाणे चेव समचउरंसे ज्ञाणेसु य परमसुक्कज्ञाणं णाणेसु य परमकेवलं तु सिद्धं लेसासु य परमसुक्कलेस्सा तित्थंकरे जहा चेव मुणीणं वा- सेसु जहा महाविदेहे गिरिराया चेव मंदरवरे वणेसु जह नंदणवणं पवरं दुमेसु जहा जंबू सुदंसणा वीसु- यजसा जीय नामेण य अयं दीवो, तुरगवती गयवती रहवती नरवती जह वीसुए चेव, राया रहिए चेव जहा महारहगते, एवमणेगा गुणा अहीणा भवंति एकंमि बंभचेरे जंमि य आराहियंमि आराहियं वयमिणं सव्वं, सीलं तवो य विणओ य संजमो य खंती गुत्ती मुत्ती तहेव इहलोइयपारलोइयजसे य कित्ती</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाक ब्रह्मचर्यम् सू० २७  ॥ १३० ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center;">  <p style="text-align: center;"> य पञ्चओ य, तम्हा निहुएण वंभचेरं चरियव्वं सव्वओ विसुद्धं जावजीवाए जाव सेयट्टिसंजउत्ति, एवं भणियं वयं भगवया, तं च इमं—पंचमहव्वयसुव्वयमूलं, समणमणाइलसाहुसुचिन्नं । वेरविरामणपज्जवसाणं, सव्वसमुद्दमहोदधित्थं ॥ १ ॥ तित्थकरेहि सुदेसियमग्गं, नरयतिरिच्छविवज्जियमग्गं । सव्वपवित्तिमुनिम्मियसारं, सिद्धिविमाणअवंगुयदारं ॥ २ ॥ देवनरिंदनमंसियपूर्यं, सव्वजगुत्तममंगलमग्गं । दुद्धरिसं गुणनायकमेक्कं, मोक्खपहस्स वडिंसकभूर्यं ॥ ३ ॥ जेण सुद्धचरिएण भवइ सुवंभणो सुसमणो सुसाह सइसी समुणी ससंजए स एव भिक्खू जो सुद्धं चरति वंभचेरं, इमं च रतिरागदोसमोहपवहुणकरं किंमज्झपमायदोसपासत्थसीलकरणं अब्भंगणाणि य तेल्लमज्जणाणि य अभिक्खणं कक्खसीसकरचरणवदणधोवणसंवाहणगायकम्मपरिमद्दणाणुलेवणचुन्नवासधूवणसरीरपरिमंडणवाउसिकहसियभणियनट्टगीयवाइयनडनट्टकजल्लमल्लपेच्छणवेलंबक जाणि य सिंगारागाराणि य अन्नाणि य एवमादियाणि तवसंजमवंभचेरघातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं वंभचेरं वज्जेयव्वाइं सव्वकालं, भावेयव्वो भवइ य अंतरप्पा इमेहिं तवनियमसीलजोगेहिं निच्चकालं, किं ते?—अण्हाणकअदंतधावणसेयमलजल्लधारणं मूणवयकेसलोए य खमदमअचेलगखुप्पिवासलाघवसीतोसिणकट्टसेज्जाभूमिनिसेज्जापरघरपवेसलद्धावलद्धमाणावमाणानिंदणदंसमसगफासनियमतवगुणविणयमादिएहिं जहा से धिरतरकं होइ वंभचेरं इमं च अबंभचेरविरमणपरिरक्खणद्वयाए पावयणं भगवया सुकहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभदं सुद्धं नेयाउयं अकुडिलं अणुत्तरं सव्वदु- </p>  </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International</small> <span style="margin-left: 300px;"><small>For Personal &amp; Private Use Only</small></span> <span style="float: right;"><small>jainelibrary.org</small></span> </p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p style="text-align: center;">प्रश्नव्याकर ० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३१ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; text-align: center;"> <p>कखपावाण विउसवणं, तस्स इमा पंच भावणाओ चउत्थयस्स होंति अबंभचेरवेरमणपरिरक्खणह्ययाए, पढमं सयणासणघरदुवारअंगणआगासगवक्खसालअभिलोयणपच्छवत्थुकपसाहणकण्हाणिकावकासा अवकासा जे य वेसियाणं अच्छंति य जत्थ इत्थिकाओ अभिक्खणं मोहदोसरतिरागवहुणीओ कर्हिति य कहाओ बहुविहाओ तेऽवि हु वज्जणिजा इत्थिसंसत्तसंकिलिद्धा अन्नेवि य एवमादी अवकासा ते हु वज्जणिजा जत्थ मणोविब्भमो वा भंगो वा भंसगो वा अट्टं रुहं च हुज्ज झाणं तं तं वज्जेज्ज वज्जभीरू अणायतणं अंतपंतवासी एवमसंपत्तवासवसहीसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरतमणविरयगामधम्मे जित्तेदिए बंभचेरगुत्ते १ । वितियं नारीजणस्स मज्जे न कहेयव्वा कहा विचित्ता विव्वोयविलाससंपउत्ता हाससिंजारलोइयकहव्व मोहजणणी न आवाहविवाहवरकहाविव इत्थीणं वा सुभगदुभगकहा चउसट्ठिं च महिलागुणा न वन्नदेसजातिकुलरूवनामनेवरथपरिजणकह इत्थियाणं अन्नावि य एवमादियाओ कहाओ सिंजारकलुणाओ तवसंजमवंभचेरघातोवघातियाओ अणुचरमाणेणं बंभचेरं न कहेयव्वा न सुणेयव्वा न चित्तेयव्वा, एवं इत्थीकहविरतिसमितिजोगेणं भावितो भवति अंतरप्पा आरतमणविरयगामधम्मे जित्तेदिए बंभचेरगुत्ते २ । ततीयं नारीण हसितभणितं चेद्वियविप्पेक्खित्तगइविलासकीलियं विव्वोतियनइगीतवातियसरीरसंठाणवन्नकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणपयोहराधरवत्थालंकारभूसणाणि य गुज्जोवकासियाइं अन्नाणि य एवमादियाइं तवसंजमवंभचेरघातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं बंभचेरं न चक्खुसा न मणसा न</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p style="text-align: center;">४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मचर्यम्  सू० २७  ॥ १३१ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२७]  
+  
गाथाः  
दीप  
अनुक्रम  
[३९-४३]

वयसा पत्थेयव्वाइं पावकम्माइं एवं इत्थीरूवविरतिसमित्तिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरतमण-  
विरयगामधम्मे जिइंदिए वंभचेरगुत्ते ३ । चउत्थं पुव्वरयपुव्वकीलियपुव्वसंगंथसंश्रुया जे ते आवाहवि-  
वाहचोळकेसु य तिथिसु जन्नेसु उस्सवेसु य सिंगारागारचारुवेसाहिं हावभावपललियविकखेवविलास-  
सालिणीहिं अणुकूलपेम्मिकाहिं सच्चिं अणुभूया सयणसंपओगा उदुसुहवरकुसुमसुरभिचंदणसुगंधिवरवा-  
सधूवसुहफरिसवत्थभूसणगुणोववेया रमणिजाउज्जेयपउरनडनट्टकजल्लमलमुट्टिकवेलंवगकहगपवगलासग-  
आइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंवधीणियतालायरपकरणाणि य वहुणि महुरसरगीतसुस्सराइं अन्नाणि य ए-  
वमादियाणि तवसंजमवंभचेरघातोवघातियाइं अणुचरमाणेणं वंभचेरं न तातिं समणेण लब्भा दट्टुं न कहेउं  
नवि सुमरिउं जे, एवं पुव्वरयपुव्वकीलियविरतिसमित्तिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरयमणविर-  
तगामधम्मे जिइंदिए वंभचेरगुत्ते ४ । पंचमगं आहारपणीयनिद्धभोयणविवज्जते संजते सुसाहू ववगयखीरद-  
हिसप्पिनवनीयतेल्लगुलखंडमच्छंडिकमहुमज्जमंसखज्जकविगतिपरिचत्तकयाहारे ण दप्पणं न बहुसो न नि-  
तिकं न सायसूपाहिकं न खड्दं तहा भोत्तव्वं जह से जायामाता य भवति, न य भवति विव्वभमो न भं-  
सणा य धम्मस्स, एवं पणीयाहारविरतिसमित्तिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा आरयमणविरतगामधम्मे  
जिइंदिए वंभचेरगुत्ते ५ । एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुपणिहितं इमेहिं पच्चहिवि कारणेहिं  
मणवयणकायपरिरक्खिएहिं णिच्चं आमरणंतं च एसो जोगो णेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३२ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p style="text-align: center;">अकलुसो अच्छिदो अपरिस्सावी असंकलितो सुद्धो सव्वजिणमणुत्तातो, एवं चउत्थं संवरदारं फासियं पालितं सोहितं तीरितं किट्टितं आणाए अणुपालियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परुवियं पसिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसितं पसत्थं ( सू० २७ ) चउत्थं संवरदारं समत्तंतिवेमि ॥ ४ ॥</p> <p>‘जंबू’ इत्यादि, तत्र जम्बूरिति आमन्त्रणं ‘एत्तो यत्ति इतश्चादत्तादानविरमणाभिधानसंवरभणनादनन्तरं ‘बंभचेरं’ति ब्रह्मचर्याभिधानं चतुर्थं संवरद्वारमुच्यते इति शेषः, किंस्वरूपं तदित्याह-उत्तमाः-प्रधाना ये तपःप्रभृतयस्ते तथा, तत्र तपः-अनशनादि नियमाः-पिण्डविशुद्ध्यादयः उत्तरगुणाः ज्ञानं-विशेषबोधः दर्शनं-सामान्यबोधः चारित्रं-सावद्ययोगनिवृत्तिलक्षणं सम्यक्त्वं-मिथ्यात्वमोहनीयक्षयोपशमादिसमुत्थो जीवपरिणामः विनयः-अभ्युत्थानानुपचारः तत एतेषां मूलमिव मूलं-कारणं यत्तत्तथा, ब्रह्मचर्यवान् हि तपःप्रभृतीनुत्तमान् प्राप्नोति नान्यथा, यदाह—“जइ ठाणी जइ मोणी जइ झाणी वक्कली तवस्सी वा । पत्थंतो अ अबंभं बंभावि न रोयए मज्झ ॥ १ ॥ तो पढियं तो गुणियं तो मुणियं तो य चेइओ अप्पा । आवडियपे-ल्लियामंतिओवि न कुणह अकज्जं ॥ २ ॥ [यदि कायोत्सर्गवान् यदि मौनी यदि ध्यानी वल्कली तपस्वी वा । प्रार्थयान्नब्रह्म ब्रह्मापि न रोचते मत्स्यम् ॥ १ ॥ तदा पठितं तदा गुणितं तदा ज्ञानं तदा चेतित आत्मा । आपत्पतित आमन्त्रितोऽपि न करोत्यकार्यम् ॥ २ ॥] यमा-अहिंसादयः नियमाः-द्रव्याद्यभिग्रहाः पिण्डविशुद्ध्यादयो वा ते च ते गुणाना मध्ये प्रधानाश्च तैर्युक्तं यत्तत्तथा, ‘हिमवन्तमहंततेयमंतं’ति हिमवतः पर्वतविशे-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मचर्यम् सू० २७  ॥ १३२ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम

(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत

सूत्रांक

[२७]

+

गाथाः

दीप

अनुक्रम

[३९-४३]

षात् सकाशात् महत्-गुरुकं तेजस्वि-प्रभावत् यत्तत्तथा, यथा हि पर्वतानां मध्ये हिमवान् गुरुकः प्रभावांश्च एवं व्रतानामिदमिति भावः, आह च—“व्रतानां ब्रह्मचर्यं हि, निर्दिष्टं गुरुकं व्रतम् । तज्जन्यपुण्यसम्भारसं-योगाद् गुरुच्यते ॥१॥” तन्नान्तरीयैरप्युक्तं—“एकतश्चतुरो वेदाः, ब्रह्मचर्यं च एकतः । एकतः सर्वपापानि, मद्यं मांसं च एकतः ॥१॥” प्रशस्तं-प्रशस्यं गम्भीरं-अतुच्छं स्तिमितं-स्थिरं मध्यं-देहिनोऽन्तःकरणं यस्मिन् सति तत्तथा, आर्जवैः-ऋजुतोपेतैः साधुजनैराचरितं-आसेवितं मोक्षस्य च मार्ग इव मार्गो यत्तत्तथा, वाचनान्तरे प्रशस्तैः-प्रशस्यैः गम्भीरैः-अलक्ष्यदैत्यादिविकारैः स्तिमितैः-कायचापलादिरहितैः मध्यस्थैः-रागद्वेषानाक-लितैः आर्जवसाधुजनैराचरितं मोक्षमार्गस्य यत्तत्तथा, तथा विशुद्धा-रागादिदोषरहितत्वेन निर्मला या सिद्धिः-कृतकृत्यता सैव गम्यमानत्वाद् गतिर्विशुद्धसिद्धिगतिः-जीवस्य स्वरूपं सैव निलय इव निलयः स्वरूपैः सर्वसिद्धानां निलयनाद्विशुद्धसिद्धिगतिनिलयः शाश्वतः साद्यपर्यवसितत्वात् अपुनर्भवः ततः पुन-र्भवसम्भवाभावात् प्रशस्तः उक्तगुणयोगादेव सौम्यो रागाद्यभावात् सुखः सुखस्वरूपत्वात् शिवः सकल-द्वन्द्ववर्जितत्वात् अक्षयश्च तत्पर्यायाणामपि कथंचिदक्षयत्वात् अक्षतो वा पूर्णमासीचन्द्रवत् तं करोतीत्येवं-शीलं यत्तत्तथा, मकारस्त्विह पाठे आगमिकः, पाठान्तरे सिद्धिगतिनिलयं शाश्वतहेतुत्वात् शाश्वतं अन्या-वायहेतुत्वाद्वावाधं अपुनर्भवहेतुत्वाद्पुनर्भवं अत एव प्रशस्तं सौम्यं च सुखहेतुत्वाच्चिदहेतुत्वाच्च सुख-शिवं अचलनहेतुत्वाद्चलनं अक्षयकरणादक्षयकरणं ब्रह्मचर्यमिति प्रक्रमः, यतिवरैः-मुनिप्रधानैः संरक्षितं-

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b></p> <p><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b></p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३३ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>पालितं यत्तत्तथा, सुचरितं शोभनं शोभनानुष्ठानं, सुचरितत्वेऽपि नाविशेषेणोपदिष्टं मुनिभिरिति दर्शय- न्नाह-सुसाधितं-सुष्टु प्रतिपादितं, ‘नवरि’त्ति केवलं मुनिवरैः-महर्षिभिः महापुरुषाश्च ते जात्याद्युत्तमाः धी- राणां मध्ये शूराश्च-अत्यन्तसाहसधनाः ते च ते धार्मिका धृतिमन्तश्चेति कर्मधारयः अतस्तेषामेव, चशब्दस्या- वधारणार्थत्वात्, सदा विशुद्धं-निर्दोषं अथवा सदापि-सर्वदैव कुमाराद्यवस्थासु सर्वास्वपीत्यर्थः शुद्धं-निर्दोषं, अनेन चैतदपास्तं यदुत—“अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च । तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चाद्दमं चरि- ष्यसि ॥ १ ॥” इति, अत एवोच्यते—“अनेकानि सहस्राणि, कुमारब्रह्मचारिणाम् । दिवं गतानि विप्राणा- मकृत्वा कुलसन्ततिम् ॥ १ ॥” भव्यं-योग्यं कल्याणमित्यर्थः, तथा भव्यजनानुचरितं निःशङ्कितं-अशङ्क- नीयं, ब्रह्मचारी हि जनानां विषयनिःस्पृहत्वादशङ्कनीयो भवति, तथा निर्भयं, ब्रह्मचारी हि अशङ्कनी- यत्वाग्निर्भयो भवति, निस्तुषमिव निस्तुषं-विशुद्धतन्दुलकल्पं निरायासं-न खेदकारणं निरुपलेपं-स्नेहवर्जितं तथा निवृत्तेः-चित्तस्वास्थ्यस्य गृहमिव गृहं यत्तत्तथा, आह च—“क यामः क नु तिष्ठामः, किं कुर्मः किन्न कुर्महे । रागिणाश्चिन्तयन्त्येवं, नीरागाः सुखमासते ॥ १ ॥” नीरागाश्च ब्रह्मचारिण एव, तथा नियमेन- अवश्यंभावि निष्प्रकम्पं-अविचलं निरतिचारं यत्तत्तथा, व्रतान्तरं हि सापवादमपि स्यात् इदं च निरपवा- दमेवेत्यर्थः, आह च—“नवि किञ्चि अणुन्नायं पडिसिद्धं वावि जिणवरिंदेहिं । मोत्तुं मेहुणभावं ण तं विणा रागदोसेहिं ॥ १ ॥” [ नैव किञ्चिदनुज्ञातं प्रतिषिद्धं वाऽपि जिनवरिन्दैः । मुक्त्वा मैथुनभावं यत् न तद्विना</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मचर्यम् सू० २७</p> <p align="center">॥ १३३ ॥</p> </div> </div>
	<p align="center">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>रागद्वेषौ ॥ १ ॥ ] ततः पदद्वयस्य कर्मधारये निवृत्तिगृहणियमनिष्प्रकम्पमिति भवति, तपःसंयमयोर्मूलद- लिकं-मूलदलं आदिभूतद्रव्यं तस्य 'नेमं'ति निभं-सदृशं यत्तत्तथा, पञ्चानां महाव्रतानां मध्ये सुष्ठु-अ- त्यन्तं रक्षणं-पालनं यस्य तत्तथा, समितिभिः-ईर्यासमित्यादिभिर्गुप्तिभिः-मनोगुह्यादिभिर्वसत्यादिभिर्वा नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभिर्युक्तं गुप्तं वा यत्तत्तथा, ध्यानवरमेव-प्रधानध्यानमेव कपाटं सुकृतं-सुविरचितं रक्षणार्थं यस्य अध्यात्मैव च-सद्भावनारूढं चित्तमेव 'दिण्णो'त्ति दत्तो ध्यानकपाटदृढीकरणार्थं परिघः-अर्गला रक्षणार्थ- मेव यस्य तत्तथा, सन्नद्ध इव बद्ध इव ओच्छाडयत्ति-आच्छादित इव निरुद्ध इत्यर्थः दुर्गतिपथो दुर्गतिमार्गो येन तत्तथा सुगतिपथस्य देशकं-दर्शकं यत्तत्तथा तच्च, लोकोत्तमं च व्रतमिदं दुष्करत्वात्, यदाह—'देवदाणवगं- धवा जक्खरक्खस्सकिंनरा । वंभचारिं नमंसंति दुक्करं जं करिंति ते ॥ १ ॥ [ देवदानवगान्धर्वा यक्षराक्ष- सकिन्नराः । ब्रह्मचारिणं नमस्यन्ति यद् दुष्करं तत्ते कुर्वन्ति ॥ १ ॥ ] 'पञ्चसरतलागपालिभूयं'ति सरः-स्वतः- सम्भवो जलाशयविशेषः तडागश्च स एव पुरुषादिकृत इति समाहारद्वन्द्वः पद्मप्रधानं सरस्तडागं पद्मसर- स्तडागं पद्मसरस्तडागमिव मनोहरत्वेनोपादेयत्वात् पद्मसरस्तडागं-धर्मस्तस्य पालिभूतं-रक्षकत्वेन पालि- कल्पं यत्तत्तथा, तथा महाशकटारका इव महाशकटारकाः-क्षान्त्यादिगुणास्तेषां तुम्बभूतं-आधारसामर्थ्या- न्नाभिकल्पं यत्तत्तथा, महाविटपवृक्ष इव-अतिविस्तारभूरुह इव महाविटपवृक्षः-आश्रितानां परमोपकारत्व- साधर्म्याद्धर्मः तस्य स्कन्धभूतं-तस्मिन् सति सर्वस्य धर्मशाखिन उपपद्यमानत्वेन नालकल्पं यत्तत्तथा 'अ-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२७]  
+  
गाथाः  
दीप  
अनुक्रम  
[३९-४३]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १३४ ॥

हानगरपागारकवाडफलिहभूयंति महानगरमिव महानगरं-विविधसुखहेतुत्वसाधर्म्याद्धर्मः तस्य प्राकार  
इव कपाटमिव परिघमिव यत्तत् महानगरकपाटपरिघभूतमिति, रज्जुपिनद्ध इव इन्द्रकेतुः-रश्मिनियन्त्रिते-  
वेन्द्रयष्टिः विशुद्धानेकगुणसंपिनद्धं-निर्मलबहुगुणपरिवृतं, यस्मिंश्च-यत्र च ब्रह्मचर्यं भग्नं विराधिते भवति-  
सम्पद्यते सहसा-अकस्मात् सर्वं-सर्वथा सम्भ्रं घट इव मथितं-दधीव विलोडितं चूर्णितं-चणक इव पिष्टं  
कुशल्यितं-अन्तःप्रविष्टतोमरादिशल्यशरीरमिव सञ्जातदुष्टशल्यं ‘पल्लट्ट’ति पर्वतशिखराद् गण्डशैल इव  
स्वाश्रयाच्चलितं पतितं-प्रासादशिखरादेः कलशादिरिवाधो निपतितं खण्डितं-दण्ड इव विभागेन छिन्नं परि-  
शटितं-कुष्ठाद्युपहताङ्गमिव विध्वस्तं विनाशितं च-भस्मीभूतपवनविकीर्णदार्विव निस्सत्ताकतां गतं एषां  
समाहारद्वन्द्वः कर्मधारयो वा, किमेवंविधं भवतीत्याह-विनयशीलतपोनियमगुणसमूहं-विनयशीलतपो-  
नियमलक्षणानां गुणानां वृन्दं, इह च समूहशब्दस्य छान्दसत्वात्प्रसक्तनिर्देशः, ‘त’मिति तदेवंभूतं ब्रह्म-  
चर्यं भगवन्तं-भट्टारकं, तथा ग्रहगणनक्षत्रतारकाणां वा यथा उडुपतिः-चन्द्रः प्रवर इति योगस्तथेदं व्रता-  
नामिति शेषः, वाशब्दः पूर्वविशेषणापेक्षया समुच्चये, तथा मणयः-चन्द्रकान्ताद्याः मुक्ता-मुक्ताफलानि  
शिलाप्रवालानि-विद्रुमाणि रक्तरत्नानि-पद्मरागादीनि तेषामाकरा-उत्पत्तिभूमयो ये ते तथा तेषां वा यथा  
समुद्रः प्रवरस्तथेदं व्रतानामिति शेषः सर्वत्र दृश्यः, वैदूर्यं चैव रत्नविशेषो यथा मणीनां यथा मुकुटं चैव  
भूषणानां वस्त्राणामिव क्षौमयुगलं कार्पासिकवस्त्रस्य प्रधानत्वात्, इह चेशब्दो यथार्थो द्रष्टव्यः, ‘अरविंदं

धर्मद्वारे  
सभावनाकं  
ब्रह्मचर्यम्  
सू० २७

॥ १३४ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>चेव'स्ति अरविन्दं-पद्मं यथा पुष्पज्येष्ठमेवमिदं व्रतानां, 'गोसीसं चेव'स्ति गोशीर्षाभिधानं चन्दनं यथा चन्द- नानां 'हिमवंतं चेव'स्ति हिमवानिव औषधीनां, यथा हिमवान्-गिरिविशेषः औषधीनां-अद्भुतकार्यकारि- वनस्पतिविशेषाणामुत्पत्तिस्थानमेवं ब्रह्मचर्यमौषधीनां-आमशौषध्यादीनामागमप्रसिद्धानामुत्पत्तिस्थान- मिति भावः, 'सीतोदा चेव'स्ति शीतोदेव निम्नगानां-नदीनां यथा नदीनां शीतोदा प्रवरा तथेदं व्रतानामि- त्यर्थः, उदधिषु यथा स्वयम्भूरमणः-अन्तिमसमुद्रो महत्त्वे प्रवरः एवमिदं व्रतानां प्रवरमिति 'रुयगवरे चेव मंडलि ए पञ्चयाण पवरे'स्ति यथा माण्डलिकपर्वतानां-मानुषोत्तरकुण्डलवररुचकवराभिधानानां मध्ये रुच- कवरः-त्रयोदशद्वीपवर्ती प्रवरः एवमिदं व्रतानां प्रवरमिति भावः, तथा ऐरावण इव-शक्रगजो यथा कुञ्ज- राणां प्रवरः एवमिदं व्रतानां, सिंहो वा यथा सृगाणां-आटव्यपशूनां प्रवरः-प्रधानः एवमिदं व्रतानां 'पव- गाणं चेव'स्ति प्रवकाणामिव-प्रक्रमात् सुपर्णकुमाराणां यथा वेणुदेवः प्रवरः तथा व्रतानां ब्रह्मचर्यमिति प्र- कृतं, तथा धरणो यथा पन्नगेन्द्राणां-भुजगवराणां नागकुमाराणां राजा पन्नगेन्द्रराजः पन्नगानां प्रवरः एव- मिदं व्रतानामिति प्रक्रमः, कल्पानामिव-देवलोकानां यथा ब्रह्मलोकः-पञ्चमदेवलोकः तत्क्षेत्रस्य महत्त्वात् तदिन्द्रस्यातिशुभपरिणामत्वात् प्रवरः एवमिदं व्रतानां, सभासु च-प्रतिभवनविमानभाविनीषु सुधर्मसभा उत्पादसभा अभिषेकसभा अलङ्कारसभा व्यवसायसभा चेत्येवंलक्षणसु पञ्चसु मध्ये यथा सुधर्मा भवति प्रवरा तथेदं व्रतानामिति, स्थितिषु-आयुष्केषु मध्ये लवससमा-अनुत्तरसुरभवस्थितिः वाशब्दो यथाश-</p> </div> <p style="text-align: center;"> <small>Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</small> </p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- १० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३५ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>ब्रह्मार्थः ततो यथा प्रवरा-प्रधाना तथेदं व्रतानामिति, तत्रैकोनपञ्चाशत् उच्छ्वासानां लवो भवति, व्रीह्यादि- स्तम्बलवनं वा लवस्तत्प्रमाणः कालोऽपि लवः, ततो लवैः सप्तमैः-सप्तप्रमाणैः सप्तसङ्ख्यैर्विवक्षिताध्यवसाय- विशेषस्य मुक्तिसम्पादकस्यापूर्यमाणैर्या स्थितिर्वध्यते सा लवसप्तमेत्यभिधीयते, तथा 'दाणाणं चैव अभय- दाणं'ति दानानां मध्येऽभयदानमिव प्रवरमिदं, तत्र दानानि ज्ञानधर्मोपग्रहाभयदानभेदात्रीणि, 'किमिरा- गोव्व कंबलाणं'ति कम्बलानां-वासोविशेषाणां मध्ये कृमिराग इव-कृमिरागरक्तकम्बल इव प्रवरमिदं व्र- तानां, तथा 'संहणणे चैव वज्जरिसह'त्ति संहननानां षण्णां मध्ये वज्रर्षभनाराचसंहननमिव प्रवरमिदं व्रतानामिति 'संठाणे चैव चउरंसे'त्ति शेषसंस्थानानां चतुरस्रसंस्थानमिवेदं प्रवरं व्रतानां, तथा ध्यानेषु च परमशुक्लध्यानं-शुक्लध्यानचतुर्थभेदरूपं यथा प्रवरमेवमिदं व्रतेष्विति गम्यं 'नाणेषु य परमकेवलं तु सि- द्धं'ति ज्ञानेषु-आभिनिबोधिकादिषु परमं च तत्केवलं च-परिपूर्णं विशुद्धं वा मतिश्रुतावधिमनःपर्यायापे- क्षया परमकेवलं क्षायिकज्ञानमित्यर्थः तुरेवकारार्थः सिद्धं-प्रवरतया प्रसिद्धं यथा तथेदमपि व्रतेष्विति गम- नीयं, लेह्यासु च-कृष्णाद्यासु परमशुक्लेह्या-शुक्लध्यानतृतीयभेदवर्तिनी यथा प्रवरा तथेदं व्रतेष्विति गम्यं, तीर्थकरश्चैव यथा मुनीनां प्रवरस्तथेदं व्रतानां, वर्षेषु-क्षेत्रेषु यथा महाविदेहस्तथेदं व्रतेषु, 'गिरिराया चैव मंदरवरे'ति चैवशब्दस्य यथार्थत्वात् यथा मन्दरवरो-जम्बूद्वीपमेरुगिरिराजस्तथेदं व्रतराजः, वनेषु- भद्रशालनन्दनसौमनसपण्डकाभिधानेषु मेरुसम्बन्धिषु यथा नन्दनवनं प्रवरमेवमिदमिति, द्रुमेषु-तरुषु</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; border-right: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मर्चयम् सू० २७</p> <p style="text-align: center;">॥ १३५ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>मध्ये यथा जम्बूः सुदर्शनेति-सुदर्शनाभिधाना विश्रुतयशाः-विख्याता एवमिदमिति, किम्भूता जम्बूः?- यस्या नाम्नाऽयं द्वीपः जम्बूद्वीप इत्यर्थः, तथा तुरगपतिर्गजपती रथपतिर्नरपतिः यथा विश्रुतश्चैव राजा तथेद- मपि विश्रुतमिति भावः, रथिकश्चैव यथा महारथगतः पराभिभावी भवतीत्येवमिहस्यः कर्मरिपुसैन्याभि- भावी भवतीति, निगमयन्नाह-एवं-उक्तक्रमेणानेके गुणाः प्रवरत्वविश्रुतत्वादयोऽनेकनिदर्शनाभिधेयाः अ- हीनाः-प्रकृष्टा अधीना वा-स्वायत्ता भवन्ति, केत्याह-एकस्मिन् ब्रह्मचर्ये-चतुर्थे व्रते, तथा यस्मिंश्च ब्रह्मचर्ये आराधिते-पालिते आराधितं-पालितं व्रतमिदं-निर्ग्रन्थप्रव्रज्यालक्षणं सर्व-अखण्डं, तथा शीलं-समाधानं तपश्च विनयश्च संयमश्च क्षान्तिर्गुप्तिर्मुक्तिः-निर्लोभता सिद्धिर्वा तथैवेति समुच्चये तथा ऐहिकलौकिकयशांसि च कीर्त्तयश्च प्रत्ययश्च आराधिता भवन्तीति प्रक्रमः, तत्र यशः-पराक्रमकृतं कीर्त्तिः-दानपुण्यफलभूता अ- थवा सर्वदिग्गामिनी प्रसिद्धिर्यशः एकदिग्गामिनी कीर्त्तिः प्रत्ययः-साधुर्यं इत्यादिरूपा जनप्रतीतिरिति, यत् एवंभूतं तस्मान्निभृतेन-स्तिमितेन ब्रह्मचर्यं चरितव्यं-आसेवनीयं, किम्भूतं?-सर्वतो-मनःप्रभृतिकरणत्र- ययोगत्रयेण विशुद्धं-निरवचं यावज्जीवया प्रतिज्ञया यावज्जीवतया वा आजन्मेत्यर्थः, एतदेवाह-यावत् श्वेता- स्थिसंयत इति, श्वेतास्थिता च साधोर्मृतस्य क्षीणमांसादिभावे सतीति, इतिशब्दो विवक्षितवाक्यार्थस- माप्तौ, भङ्गान्तरेण ब्रह्मचर्यं व्रतं स्तोतुं प्रस्तावयति-‘एवं’वक्ष्यमाणेन वचनेन भणितं व्रतं-ब्रह्मलक्षणं भग- वता श्रीमहावीरेण ‘तं च हम्’ति तच्चेदं वचनं पद्यत्रयप्रभृतिकं-‘पञ्चमहव्यसुव्ययमूलं’ पञ्चमहाव्रतनामकानि</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>““प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३६ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>यानि सुव्रतानि तेषां मूलमिव मूलं यत् अथवा पञ्चमहाव्रताः-साधवस्तेषां सम्बन्धिनां शोभननियमानां मूलं यत् अथवा पञ्चानां महाव्रतानां सुव्रतानां च-अणुव्रतानां मूलं यत्तत्तथा, अथवा- हे पञ्चमहाव्रतसु-व्रत ! मूलमिदं ब्रह्मचर्यमिति प्रकृतं, ‘समणमणाहलसाहुसुचिणं’ ‘समणं’ति सभावं यथा भवतीत्येवं अना-विलैः-अकलुषैः शुद्धस्वभावाः साधुभिः-यतिभिः सुष्ठु चरितं-आसेवितं यत्तत्तथा, ‘वेरविरमणपञ्जवसाणं’ वै-रस्य-परस्परानुशयस्य विरमणं-विरामकरणमुपशमनयनं निवर्त्तनं पर्यवसानं-निष्ठाफलं यस्य तत्तथा, ‘सव्व-समुद्दमहोदहित्थं’ सर्वेभ्यः समुद्रेभ्यः सकाशात् महानुदधिः-स्वयंभूरमण इत्यर्थः तद्वद्यहुत्तिस्तरत्वेन तत्स-र्वसमुद्रमहोदधिस्तथा तीर्थमिव तीर्थं-पवित्रताहेतुर्यत्र तत्तथा, अथवा सर्वसमुद्रमहोदधिः-संसारोऽतिदुस्त-रत्वात्तन्निस्तरणे तीर्थमिव-तरणोपाय इव तत्तथेति वृत्तार्थः ॥ १ ॥ ‘तित्थयरेहि सुदेसियमग्गं’ति तीर्थकरैः-जिनैः सुदेशितमार्गं-सुष्ठुदशितगुह्यादितत्पालनोपायं, ‘निरयतिरिच्छविवज्जियमग्गं’ नरकतिरश्चां सम्बन्धी विवर्जितो-निषिद्धो मार्गो-गतिर्येन तत्तथा, ‘सव्वपचित्तसुनिम्मियसारं’ सर्वपवित्राणि-समस्तपावनानि सु-निर्मितानि-सुष्ठु विहितानि साराणि-प्रधानानि येन तत्तथा, ‘सिद्धिविमाणअवंगुयदारं’ सिद्धेर्विमानानां चा-प्रावृत्तं-अपगतावरणीकृतमुद्घाटितमित्यर्थो द्वारं-प्रवेशमुखं येन तत्तथेति वृत्तार्थः ॥ २ ॥ ‘देवनरिंदनमंसियपूयं’ देवानां नराणां चेन्द्रैर्नमस्थिता-नमस्कृता ये तेषां पूज्यं-अर्चनीयं यत्तत्तथा, ‘सव्वजगुत्तममंगलमग्गं’ सर्व-जगदुत्तमानां मङ्गलानां मार्गः-उपायोऽयं वा-प्रधानं यत्तत्तथा, ‘दुद्धरिसं गुणनायकमेकं’ दुर्द्धर्षं-अनभिभव-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मचर्यम् सू० २७</p> <p style="text-align: center;">॥ १३६ ॥</p> </div> </div>
	<p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>नीयं गुणान्नयति-प्रापयतीति गुणनायकमेकं-अद्वितीयमसदृशं, ‘मोक्षपथस्य-सम्यग्दर्शनादेरवतंसकभूतं-शेखरकल्पं प्रधानमित्यर्थः इति दोषकार्थः ॥ तथा येन शुद्धचरितेन-सम्यगासेवितेन भवति सुब्राह्मणो यथार्थनामत्वात् सुश्रमणः-सुतपाः सुसाधुः-निर्वाणसाधकयोगसाधकः तथा ‘स-इसि’ति स यथोक्तऋषिर्यथावद्वस्तुद्रष्टा यः शुद्धं चरति ब्रह्मचर्यमिति योगः ‘स मुनि’ति स यथोक्तो मुनिः-मन्ता स संयतः-संयमवान् स एव भिक्षुः-भिक्षणशीलो यः शुद्धं चरति ब्रह्मचर्यमिति, अब्रह्मचारी तु न ब्राह्मणादिरिति, आह च—“सकलकलाकलापकलितोऽपि कविरपि पण्डितोऽपि हि, प्रकटितसर्वशास्त्रतत्त्वोऽपि हि वेदविशारदोऽपि हि । मुनिरपि वियति विततनानाद्भुतविभ्रमदर्शकोऽपि हि, स्फुटमिह जगति तदपि न स कोऽपि हि यदि नाक्षाणि रक्षति ॥ १ ॥” तथा इदं च-वक्ष्यमाणं पार्श्वस्थशीलकरणं अनुचरता ब्रह्मचर्यं वर्जयितव्यानीत्यस्य वक्ष्यमाणपदस्य वचनपरिणामात् वर्जयितव्यमिति योगः, किम्भूतं?-रतिश्च-विषयरागो रागश्च-पित्रादिषु स्नेहरागो द्वेषश्च-प्रतीतो मोहश्च-अज्ञानमेषां प्रवर्द्धनं करोति यत्तत्तथा, किं मध्यं यस्य तत्किंमध्यं-किंशब्दस्य क्षेपार्थत्वादसारमित्यर्थः, प्रमाद एव दोषो यतः तत्तत्प्रमाददोषं, पार्श्वस्थानां-ज्ञानाचारादिबहिर्वर्तिनां साध्वाभासानां शीलं-अनुष्ठानं निष्कारणं शय्यातरपिण्डपरिभोगादि पार्श्वस्थशीलं ततः पदत्रयस्य कर्मधारयस्तस्य करणं-आसेवनं यत्तत्तथा एतदेव प्रपश्यते-अभ्यञ्जनानि च घृतवशाभ्रक्षणादिना तैलमज्जनानि च-तैलस्नानानि तथा अभीक्षणं-अनवरतं कक्षाशीर्षकरचरणवदनानां</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International <span style="margin-left: 200px;">For Personal &amp; Private Use Only</span> <span style="float: right;">www.jainelibrary.org</span></p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२७]</b> <b>+</b> <b>गाथाः</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[३९-४३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १३७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; padding: 10px;"> <p>धावनं च-प्रक्षालनं संवाहनं गात्रकर्म च-हस्तादिगात्रचम्पनरूपमङ्गपरिकर्म परिमर्दनं च-सर्वतः शरीरमलनं अनुलेपनं च-विलेपनं चूर्णः-गन्धद्रव्यक्षौद्रैर्वासश्च-शरीरादिवासनं धूपनं च-अगुरुधूमादिभिः शरीरपरिमण्डनं च-तनुभूषणं बकुशं-कर्बुरं चरित्रं प्रयोजनमस्येति बाकुशिकं-नखकेशवस्त्रसमारचनादिकं तच्च हसितं च-हासः भणितं च-प्रक्रमाद्विकृतं नाट्यं च-नृत्तं च गीतं च-गानं वादितं च-पटहादिवादनं नटाश्च-नाटयितारो नर्त्तकाश्च-ये नृत्यन्ति जल्लाश्च-वरत्राखेलकाः मल्लाश्च-प्रतीताः एतेषां प्रेक्षणं च नानाविधवंशखेलकादिसम्बन्धि वेलम्बकाश्च-विडम्बका विदूषका इति द्वन्द्वः छान्दसत्त्वाच्च प्रथमावहुवचनलोपो दृश्यः, वर्जयितव्या इति योगः, किं बहुना?., यानि च वस्तूनि शृङ्गारागाराणि-शृङ्गाररसगेहानीव अन्यानि च-उक्तव्यतिरिक्तानि एवमादिकानि-एवंप्रकाराणि तपःसंयमब्रह्मचर्याणां घातश्च देशत उपघातश्च सर्वतो विद्यते येषु तानि तपःसंयमब्रह्मचर्यघातोपघातिकानि, किमत आह-अनुचरता-आसेवमानेन ब्रह्मचर्यं वर्जयितव्यानि सर्वकालमन्यथा ब्रह्मचर्यव्याघातो भवतीति, तथा भावयितव्यश्च भवत्यन्तरात्मा एभिर्वक्ष्यमाणैः तपोनियमशीलयोगैः -तपःप्रभृतिव्यापारैः नित्यकालं-सर्वदा, 'किं ते' तद्यथा अस्नानकं चादन्तधावनं च प्रतीते 'खेदमलधारणं च' तत्र खेदः-प्रखेदः मलः-कक्खडीभूतः याति च लगति चेति जल्लो-मलविशेष एव मौनव्रतं च केशलोचश्च प्रतीतौ क्षमा च-क्रोधनिग्रहः दमश्च-इन्द्रियनिग्रहः अचेलकं च-वस्त्राभावः क्षुत्पिपासे प्रतीते लाघवं च-अल्पोपधिस्त्वं शीतोष्णे च प्रतीते काष्ठशय्या च-फलकादिशयनं भूमिनिषया</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मचर्यम् सू० २७  ॥ १३७ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>~ 277 ~</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>च-भूम्यासनं तथा परगृहप्रवेशे च शय्याभिक्षाद्यर्थं लब्धे च-अभिमताशानादौ अपलब्धे वा-ईषल्लब्धेऽ- लब्धे वा यो मानश्च-अभिमानः अपमानश्च-दैन्यं निन्दनं-कुत्सनं दंशमशकस्पर्शश्च नियमश्च-द्रव्याद्यभि- ग्रहः तपश्च-अनशनादि गुणाश्च-मूलगुणादयः विनयश्च-अभ्युत्थानादिरिति द्वन्द्वस्तत एते आदिर्येषां यो- गानां ते तथा तैर्भावयितव्योऽन्तरात्मेति प्रकृतं, भावना-अस्नानादीनामासेवा मानापमाननिन्दनदंशा- दिस्पर्शानां चोपेक्षा, कथमेभिर्भावयितव्यो भवन्त्यन्तरात्मेत्याह-यथा 'से' तस्य ब्रह्मचारिणः स्थिरतरकं भवति ब्रह्मचर्यं, 'इमं चे'त्यादि प्रवचनस्तवनं पूर्ववत् 'तस्से'त्यादि तस्य चतुर्थस्य व्रतस्येमाः पञ्च भावना भ- वन्ति अब्रह्मचर्यविरमणपरिरक्षणार्थतायै तत्र 'पढमं'ति पञ्चानां प्रथमं भावनावस्तु स्त्रीसंसक्ताश्रयवर्जन- लक्षणं, तच्चैवं-शयनं-शय्या आसनं-विष्टरं गृहद्वारं-तस्यैव मुखं अङ्गणं-अजिरं आकाशं-अनावृतस्थानं ग- वाक्षौ-वातायनः शाला-भाण्डशालादिका अभिलोक्यते यत्रस्थैस्तद्भिलोकनं-उन्नतस्थानं 'पच्छवत्थु- ग'त्ति पश्चाद्वास्तुकं-पश्चाद्गृहकं तथा प्रसाधकस्य-मण्डनस्य स्नातिकायाश्च-स्नानक्रियाया येऽवकाशा-आ- श्रयास्ते तथा ते चेति द्वन्द्वः, ततः एते स्त्रीसंसक्तेन सङ्किङ्कष्टा वर्जनीया इति सम्बन्धः, तथा अवकाशा- आश्रया 'जे य वेसियाणं'ति ये च वेद्यानां तथा आसते च-तिष्ठन्ति च यत्र-येष्ववकाशेषु च स्त्रियः, कि- म्भूताः?-अभीक्षणं-अनवरतं मोहदोषस्य-अज्ञानस्य रतेः-कामरागस्य रागस्य च-स्नेहरागस्य वर्धना-वृद्धि- कारिका यास्तास्तथा कथयन्ति च-प्रतिपादयन्ति तथा बहुविधाः-बहुप्रकाराः जातिकुलरूपनेपध्यविषयाः</p> </div> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२७]  
+  
गाथाः  
दीप  
अनुक्रम  
[३९-४३]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १३८ ॥

स्त्रीसम्बन्धिनीः पुरुषाः स्त्रियो वा यत्रेति प्रकृतं, मोहदोषेत्यादि विशेषणं कथास्वपि युज्यते, 'ते हु वज्रणि-  
ज'सि ये शयनादयो ये च वेद्यानामवकाशा येषु चासते स्त्रियः कथयन्ति च कथास्ते वर्जनीयाः, हुर्वाक्या-  
लङ्कारे, किंविधा इत्याह—'इत्थिसंसत्तसंकलिह'सि स्त्रीसंसत्तेन—स्त्रीसम्बन्धेन सङ्किहृष्टा ये ते तथा, न  
केवलमुक्तरूपा वर्जनीयाः अन्ये चैवमाद्यः अवकाशा-आश्रया वर्जनीया इति, किं बहुना?—'जत्थे'त्यादि  
उत्तरत्र वीप्साप्रयोगादिह वीप्सा दृश्या ततो यत्र यत्र जायते मनोविभ्रमो वा—चित्तभ्रान्तिः ब्रह्मचर्यमनु-  
पालयामि नवेत्येवंरूपं शृङ्गाररसप्रभवं मनसोऽस्थिरत्वं, आह च—“यत् चित्तवृत्तेरनवस्थितत्वं, शृङ्गारजं वि-  
भ्रम उच्यतेऽसौ ।” भङ्गो वा ब्रह्मव्रतस्य सर्वभङ्ग इत्यर्थः, अंशना वा—देशतो भङ्गः आर्त्स-इष्टविषयसंयोगा-  
भिलाषरूपं रौद्रं वा भवेद् ध्यानं तदुपायभूतहिंसानृतादत्तग्रहणानुबन्धरूपं तत्तदनायतनमिति योगः वर्ज-  
येत्, कोऽसावित्याह—अवद्यभीरुः—पापभीरुः वर्ज्यभीरुर्वा वर्ज्यत इति वर्ज्यं—पापं वज्रभीरुर्वा वज्रं च—वज्र-  
वद् गुरुत्वात्पापमेवेति, अनायतनं—साधूनामनाश्रय इति, किंभूतोऽवद्यभीरुः?—अन्ते—इन्द्रियाननुकूले प्रा-  
न्ते—तत्रैव प्रकृष्टतरे आश्रये वस्तुं शीलमस्येत्यन्तप्रान्तवासी, निगमयन्नाह—एवं—अनन्तरोक्तन्यायेन असं-  
सक्तः—स्त्रीभिरसम्बद्धो वासो—निवासो यस्याः सा तथाविधा या वसतिः—आश्रयस्तद्विषयो यः समिति-  
योगः—सत्प्रवृत्तिसम्बन्धः स तथा तेन भावितो भवत्यन्तरात्मा, किंविधः—आरतं—अभिविधिना आसक्तं  
ब्रह्मचर्यं मनो यस्य स आरतमनाः विरतो—निवृत्तो ग्रामस्य—इन्द्रियवर्गस्य धर्मा—लोलुपतया तद्विषयग्रहण-

४ धर्मद्वारे  
सभावनाकं  
ब्रह्मचर्यम्  
सू० २७

॥ १३८ ॥



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p>स्वभावो यस्य स तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, अत एवाह जितेन्द्रियः ब्रह्मचर्यगुप्त इति १ ॥ ‘बीहयं’ति द्वितीयं भावनावस्तु, किं तदित्याह-नारीजनस्य मध्ये-स्त्रीपर्षदोऽन्तः ‘न’ नैव कथयितव्या, केल्याह-कथा-वचनप्रबन्धरूपा विचित्रा-विविधा विविक्ता वा-ज्ञानोपष्टम्भादिकारणवर्जा कीदृशीत्याह-‘विब्बोकविलाससम्प्रयुक्ता’ तत्र विब्बोकलक्षणं इदं—“इष्टानामर्थानां प्राप्तावभिमानगर्वसम्भृतः । स्त्रीणामनादरकृतो विब्बोको नाम विज्ञेयः ॥ १ ॥” विलासलक्षणं पुनरिदं—“स्थानासनगमनानां हस्तभूनेत्रकर्मणां चैव । उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु विलासः स्यात् ॥ १ ॥” अन्ये त्वाहुः—“विलासो नेत्रजो ज्ञेयः” इति, तथा हासः-प्रहसनिकाभिधानो रसविशेषः शृङ्गारोऽपि रसविशेष एव, तयोश्च स्वरूपमिदं—“हास्यो हासप्रकृतिर्हासो विकृताङ्गवेषचेष्टाभ्यः । भवति परस्थाभ्यः स च भूम्ना स्त्रीनीचबालगतः ॥ १ ॥” तथा “व्यचहारः पुंनार्योरन्योऽन्यं रक्तयो रतिप्रकृतिः । शृङ्गारः स द्वेषा-सम्भोगो विप्रलम्भश्च ॥ १ ॥” एतत्प्रधाना या लौकिकी-असंविप्रलोकसम्बन्धिनी कथा-वचनरचना सा तथा सा वा मोहजननी-मोहोदीरिका वाशब्दो विकल्पार्थः, तथा न-नैव आवाहः-अभिनवपरिणीतस्य वधुवरस्यानयनं विवाहश्च-पाणिग्रहणं तत्प्रधाना या वरकथा-परणेतृकथा आवाहविवाहवरा वा या कथा सा तथा, साऽपि न कथयितव्येति प्रक्रमः, स्त्रीणां वा सुभगदुर्भगकथा सा, सा च सुभगा दुर्भगा वा ईदृशी वा सुभगा दुर्भगा वा भवतीत्येवंरूपा न कथयितव्येति प्रक्रमः, चतुःषष्टिश्च महिलागुणाः आलिङ्गनादीनामष्टानां कामकर्मणां प्रत्येकमष्टभेदत्वेन चतुःषष्टिर्महिलागुणा वा-</p> </div> <p style="text-align: center;">T. २४</p> <p style="font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२७]  
+  
गाथाः  
दीप  
अनुक्रम  
[३९-४३]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १३९ ॥

त्स्यायनप्रसिद्धास्ते वा न कथयितव्याः, तथा न-नैव देशजातिकुलरूपनामनेपथ्यपरिजनकथा वा स्त्रीणां कथयितव्येति प्रक्रमः, तत्र लाटादिदेशसम्बन्धेन स्त्रीणां वर्णनं देशकथा, यथा—“लाट्यः कोमलवचना रतिनिपुणा वा भवन्ती”त्याह, जातिकथा यथा—“धिकं ब्राह्मणीर्धवाभावे, या जीवन्ति मृता इव । धन्या मन्ये जने शूद्रीः, पतिलक्षेऽप्यनिन्दिताः ॥ १ ॥” तथा कुलकथा यथा—“अहो चौलुक्यपुत्रीणां, साहसं जगतोऽधिकम् । पत्युर्मृत्यौ विशंत्यग्नौ, याः प्रेमरहिता अपि ॥ १ ॥” रूपकथा यथा—“चन्द्रवक्त्रा सरोजाक्षी, सद्गीः पीनघनस्तनी । किं लाटी न मता साऽस्य, देवानामपि दुर्लभा ॥ १ ॥” नामकथा सा सुन्दरीति सत्यं सौन्दर्यातिशयसमन्वितत्वात्, नेपथ्यकथा यथा—“धिग्! नारीरौद्रीच्या बहुवसनाच्छादिताङ्गलतिकत्वात् । यथौवनं न यूनां चक्षुर्मोदाय भवति सदा ॥ १ ॥” परिजनकथा यथा—“चेटिकापरिवारोऽपि, तस्याः कान्तो विचक्षणः । भावज्ञः स्नेहवान् दक्षो, विनीतः सत्कुलस्तथा ॥ १ ॥” किं बहुना?, अन्या अपि च एवमादिकाः-उक्तप्रकाराः कथाः स्त्रीसम्बन्धिकथाः शृङ्गारकरुणाः-शृङ्गारमृदवः शृङ्गाररसेन करुणापादिका इत्यर्थः तपःसंयम-ब्रह्मचर्यघातकोपघातिकाः अलुचरता ब्रह्मचर्यं न कथयितव्या न श्रोतव्या अन्यतः न चिन्तयितव्या वा यतिजनेन, द्वितीयभावनाभिगमनायाह-एवं स्त्रीकथाविरतिसमितियोगेन भावितो भवत्यन्तरात्मा आरतमनो-विरतग्रामधर्मः जितेन्द्रियो ब्रह्मचर्यगुप्त इति प्रकटमेव २ । ‘तदर्थं’ति तृतीयं भावनावस्तु स्त्रीरूपनिरीक्षणवर्जनं, तत्रैवम्-नारीणां-स्त्रीणां हसितं भणितं-हास्यं सविकारं भणितं च तथा चेष्टितं-हस्तन्यासादि विप्रेक्षितं-

४ धर्मद्वारे  
सभावनाकं  
ब्रह्मचर्यम्  
सू० २७

॥ १३९ ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>निरीक्षितं गनिः-गमनं विलासः-पूर्वोक्तलक्षणः क्रीडितं-शूतादिक्रीडा एषां समाहारद्वन्द्वः विब्वोक्तितं-पूर्वोक्तलक्षणो विब्वोकः नाट्यं-नृत्यं गीतं-गानं वादितं-वीणावादनं शरीरसंस्थानं-ह्रस्वदीर्घादिकं वर्णो-गौरवत्वादिलक्षणः करचरणनयनानां लावण्यं-स्पृहणीयता रूपं च-आकृतिः यौवनं-तारुण्यं पयोधरौ-स्तनौ अधरः-अधस्तनौष्ठः वस्त्राणि-वसनानि अलङ्कारा-हारादयः भूषणं च-मण्डनादिना विभूषाकरणमिति द्वन्द्वस्ततस्तानि च न प्रार्थयितव्यानीति सम्बन्धः, तथा गुह्यावकाशिकानि गुह्यभूता-लज्जनीयत्वात् स्थगनीयाः अवकाशा-देशा अवयवा इत्यर्थः, अन्यानि च-हासादिव्यतिरिक्तानि एवमादिकानि-एवंप्रकाराणि तपःसंयमब्रह्मचर्यघातोपघातिकाणि अनुचरता ब्रह्मचर्यं न चक्षुषा न मनसा न वचसा प्रार्थयितव्यानि पापकानि पापहेतुत्वादिति, एवं स्त्रीरूपविरतिसमितियोगेन भावितो भवत्यन्तरात्मेत्यादि निगमनवाक्यं ध्यक्तमेवेति ३। ‘चउत्थं’ति चतुर्थं भावनावस्तु यत्कामोदयकारिवस्तुदर्शनभणनस्मरणवर्जनं, तच्चैवं-पूर्वरतं गृहस्थावस्थाभाविनी कामरतिः पूर्वक्रीडितं-गृहस्थावस्थाश्रयं शूतादिक्रीडनं तथा पूर्वं-पूर्वकालभाविनः सग्रन्थाः-श्वशुरकुलसम्बन्धसम्बद्धाः शालकशालिकादयः ग्रन्थाश्च-शालकादिसम्बद्धास्तद्गार्यास्तत्पुत्रादयः संश्रुताश्च-दर्शनभाषणादिभिः परिचिता ये ते तथा तत एतेषां द्वन्द्वस्तत एते न श्रमणेन लभ्याः द्रष्टुं न कथयितुं नापि च स्मर्तुमिति सम्बन्धः, तथा ‘जे ते’सि ये एते वक्ष्यमाणाः, केष्वित्याह—‘आवाहविवाहचोलएसुय’सि आवाहो-वध्वा वरगृहानयनं विवाहः-पाणिग्रहणं ‘चोलके’ति ‘विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम’सि</p> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२७]  
+  
गाथाः  
दीप  
अनुक्रम  
[३९-४३]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४० ॥

वचनाच्चोलकं-बालचूडाकर्म शिखाधारणमित्यर्थः, ततस्तेषु, चशब्दः पूर्ववाक्यापेक्षया समुच्चयार्थः, तिथिषु-  
मदनत्रयोदशीप्रभृतिषु यज्ञेषु-नागादिपूजासु उत्सवेषु च-इन्द्रोत्सवादिषु धे स्त्रीभिः सार्द्धं शयनसम्प्रयो-  
गास्ते न लभ्या द्रष्टुमिति योगः, किंभूताभिः?-शृङ्गारागारचारुवेषाभिः-शृङ्गाररसागारभूताभिः शोभनने-  
पथ्याभिश्चेत्यर्थः स्त्रीभिरिति गम्यते, किंभूताभिः?-हावभावप्रललितविक्षेपविलासशालिनीभिः, तत्र हावा-  
दिलक्षणं-“हावो मुखविकारः स्यात्, भावः स्याच्चित्तसंभवः । विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूयुगान्तयोः  
॥ १ ॥” अथवा विलासलक्षणमिदम्-“स्यानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्मणां चैव । उत्पद्यते विशेषो यः  
श्छिष्टः स तु विलासः स्यात् ॥ १ ॥” प्रललितं-ललितमेव, तल्लक्षणं चेदं-“हस्तपादाङ्गविन्यासो, भ्रूनेत्रो-  
ष्ठप्रयोजितः । सुकुमारो विधानेन, ललितं तत्प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥” विक्षेपलक्षणं त्विदम्-“अप्रयत्नेन रचितो,  
धम्मिल्लः श्लथबन्धनः । एकांशदेशधरणैस्ताम्बूललवलाञ्छनः ॥ १ ॥ ललाटे कान्तलिखितां, विषमां पत्रले-  
खिकाम् । असमञ्जसविन्यस्तमञ्जनं नयनाञ्जयोः ॥ २ ॥ तथाऽनादरबद्धत्वात्, ग्रन्थिर्जघनवाससः । वसु-  
धालम्बितप्रान्तः, स्कन्धात् स्रस्तं तथांशुकम् ॥ ३ ॥ जघने हारविन्यासो, रसनायास्तथोरसि । इत्यवज्ञा-  
कृतं यत् स्यादज्ञानादिव मण्डनम् ॥ ४ ॥ वितनोति परां शोभां, स विक्षेप इति स्मृतः ॥” एभिः याः शा-  
लन्ते-शोभन्ते तास्तथा ताभिः, अनुकूलं-अप्रतिकूलं प्रेम-प्रीतिर्यासां ता अनुकूलप्रेमिकास्ताभिः ‘स-  
द्धि’ति सार्द्धं-सह अनुभूता-वेदिता शयनानि च-स्वापाः सम्प्रयोगाश्च-सम्पर्काः शयनसम्प्रयोगाः, कथ-

४. धर्मद्वारे  
सभावनाकं  
ब्रह्मचर्यम्  
सू० २७

॥ १४० ॥

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p style="text-align: center;">प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>म्भूताः?—ऋतुसुखानि ऋतुशुभानि वा कालोचितानीत्यर्थः यानि वरकुसुमानि च सुरभिचन्दनं च सुगन्धयो —वरचूर्णरूपा वासश्च धूपश्च शुभस्पर्शानि सुखस्पर्शानि वा वस्त्राणि च भूषणानि चेति द्वन्द्वस्तेषां यो गुण- स्तरूपपेता—युक्तास्ते तथा, तथा रमणीयातोद्योगेयप्रचुरनटादिप्रकरणानि च न लभ्यानि द्रष्टुमिति योगः, तत्र नटाः—नाटकानां नाटयितारः नर्तका—ये नृत्यन्ति जल्ला—वरत्राखेलकाः मल्लाः—प्रतीताः मौष्टिका—मल्ला एव ये मुष्टिभिः प्रहरन्ति ‘वेलम्बग’स्ति विडम्बकाः—विदूषकाः प्रतीताः प्लवका—ये उत्प्लवन्ते नद्यादिकं वा तरन्ति लासका—ये रासकान् गायन्ति जयशब्दप्रयोक्तारो भाण्डा वा इत्यर्थः आख्यायका—ये शुभाशुभमाख्यान्ति लंखा—महावंशाग्रखेलकाः मंखाश्च—चित्रफलकहस्ता भिक्षाकाः ‘तूणइल्ला’ तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः ‘तुंब- वीणिका’ वीणावाद्काः तालाचराः—प्रेक्षाकारिविशेषाः एतेषां द्वन्द्वः तत एतेषां यानि प्रकरणानि—प्रक्रिया- स्तानि च तथा, बहूनि—अनेकविधानि ‘मधुरस्सरगीयसुस्सराइं’ति मधुरस्वराणां—कलध्वनीनां गायकानां यानि गीतानि—गेयानि सुस्वराणि—शोभनषड्जादिस्वरविशेषाणि तानि तथा, किं बहुना?—अन्यानि च—उक्त- व्यतिरिक्तानि एवमादिकानि—एवंप्रकाराणि तपःसंयमब्रह्मचर्यघातोपघातिकानि अनुचरता ब्रह्मचर्यं न- नैव तानि यानि कामोत्कोचकारीणि श्रमणेन—संयतेन ब्रह्मचारिणेति भावः ‘लम्भ’स्ति लभ्यानि उचितानि द्रष्टुं—प्रेक्षितुं न कथयितुं नापि च स्मर्तुं जे इति निपातः, निगमयन्नाह—एवं पूर्वैरतपूर्वक्रीडितविरतिसमिति- योगेन भावितो भवत्यन्तरात्मा आरतमनोविरतग्रामधर्मा जितेन्द्रियो ब्रह्मचर्यगुप्त इति ४ । ‘पंचमगं’ति प-</p> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b>
<b>प्रत</b> सूत्रांक <b>[२७]</b> + गाथाः  <b>दीप</b> अनुक्रम <b>[३९-४३]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १४१ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>श्रमं भावनावस्तु प्रणीतभोजनवर्जनं, एतदेवाह-आहारः-अशनादिः स एव प्रणीतो-गलत्स्नेहबिन्दुः स च खिग्धभोजनं चेति द्वन्द्वः तस्य विवर्जको यः स तथा, संयतः-संयमवान् सुसाधुः-निर्वाणसाधकयोगसाध-नपरः व्यपगता-अपगता क्षीरदधिसर्पिर्नवनीततैलगुडखण्डमत्स्यण्डिका यतः स तथा, मत्स्यण्डिका चेह खण्डशर्करा, मधुमद्यमांसखाद्यकलक्षणाभिर्विकृतिभिः परित्यक्तो यः स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, स एवंविधः कृतो-भुक्त आहारो येन स तथा, किमित्याह-न-नैव दर्पणं-दर्पकारकमाहारं भुंजीतेति शेषः, तथा न बहुशो दिनमध्ये न बहुकृत्व इत्यर्थः, ‘न निहगं’ति न नैत्यिकं प्रतिदिनमितियावत् न शाकसूपा-धिकं-शालनकदालप्रचुरमित्यर्थः ‘न खड्गं’ न प्रभूतं, यत आह-“जहा दवग्गी पउरिंघणे वणे, समारुओ णो-वसमं उवेति । एवंदियग्गीवि पकामभोइणो, न बंभयारिस्स हियाय कस्सइ ॥१॥” त्ति [ यथा दवाग्निः प्रचु-रेन्धने वने समारुतो नोपशममुपैति । एवमिन्द्रियाग्निरपि प्रकामभोजिनो न ब्रह्मचारिणो हिताय कस्यचित् ॥ १ ॥ ] किं बहुना?, तथा-तेन प्रकारेण हितमिताहारित्वादिना भोक्तव्यं यथा ‘से’ तस्य ब्रह्मचारिणो यात्रा-संयमयात्रा सैव यात्रामात्रं तस्मै यात्रामात्राय भवति, आह च-“जह अग्भंगण १ लेधो २ सगड-क्खवणाण जत्तिओ होइ । इय संजमभरवहणट्टयाएँ साहूण आहारो ॥ १ ॥” [ यथा अभ्यङ्गनलेपौ शक-टाक्षत्रणयोर्यावन्तौ भवतः ( योग्यौ स्यातां तावन्तौ भवतः ) एवं संयमभारवहनार्थं साधूनामाहारः ॥ १ ॥ ] न च-नैव भवति विभ्रमो-घातूपचयेन मोहोदयान्मनसो धर्मं प्रत्यस्तिरत्वं अंशनं वा-चलनं धर्मात्-ब्रह्मच-</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>४ धर्मद्वारे सभावनाकं ब्रह्मचर्यम् सू० २७  ॥ १४१ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; margin-top: 10px;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [४] ----- मूलं [२७] + गाथाः</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२७] + गाथाः  दीप अनुक्रम [३९-४३]</p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>यैलक्षणात्, निगमनमाह—एवं प्रणीमाहारविरतिसमितियोगेन भाषितो भवत्यन्तरात्मा आरतमनोविरत- ग्रामघर्मा जितेन्द्रियो ब्रह्मचर्यगुप्त इति । ‘एवमिद’मित्यादि अध्ययनार्थनिगमनवाक्यं पूर्ववद् व्याख्येयम् ॥ समासं ब्रह्मचर्याख्यचतुर्थसंवररूपनवमाध्ययनविवरणम् ॥ ४ ॥</p> <hr/> <p><b>अथ परिग्रहविरतिरूपदशमाध्ययनविवरणम् ।</b></p> <p>व्याख्यातं चतुर्थं संवराध्ययनं, अधुना सूत्रनिर्देशक्रमसम्बद्धमथवा अनन्तरं मैथुनविरमणमुक्तं तच्च स- र्वथा परिग्रहविरमण एव भवतीति तदभिधानीयमित्येवंसम्बद्धं च पञ्चममारभ्यते, तत्रादिसूत्रमिदम्— जंबू! अपरिग्रहसंबुद्धे य समणे आरंभपरिग्रहातो विरते विरते कोहमाणमायालोभा एगे असंजमे दो चेव रागदोसा तिमि य दंडगारवा य गुत्तीओ तिमि तिमि य विराहणाओ चत्तारि कसाया ज्ञाणसन्नाविकहा तहा य हुंति चउरो पंच य किरियाओ समितिइंदियमहव्वयाइं च छजीवनिकाया छच्च लेसाओ सत्त भया अट्ट य मया नव चेव य बंधचेरवयगुत्ती दसप्पकारे य समणधम्मे एकारस य उवासकाणं वारस य भि- क्खुपडिमा किरियठाणा य भूयगामा परमाधम्मिया गाहासोलसया असंजमअबंधणायअसमाहिठाणा सबला परिसहा सूयगड्झयणदेवभावणउद्देसगुणपकप्पपावसुतमोहणिज्जे सिद्धातिगुणा य जोगसंगहे ति-</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र द्वितिये श्रुतस्कन्धे चतुर्थं अध्ययनं परिसमाप्तं अथ द्वितिये श्रुतस्कन्धे पञ्चमं अध्ययनं “अपरिग्रह” आरभ्यते “परिग्रह-विरमण” - नामक पंचमं संवर-द्वारं</p>

आगम  
(१०)

“प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४२ ॥

तीसा आसातणा सुरिंदा आदिं एकातिथं करेत्ता एकुत्तरियाए वड्डिए तीसातो जाव उ भवे तिकाहिका विर-  
तीपणिहीसु अविरतीसु य एवमादिसु बहूसु ठाणेषु जिणपसत्थेषु अवितहेसु सासयभावेसु अवट्टिएसु संकं  
कंखं निराकरेत्ता सद्दहते सासणं भगवतो अणियाणे अगारवे अलुद्धे अमूढमणवयणकायगुत्ते ( सू० २८ )  
जम्बूरित्यामञ्जणे अपरिग्रहो-धर्मोपकरणवर्जपरिग्राह्यवस्तुधर्मोपकरणमूर्च्छावर्जितः तथा संवृतश्चेन्द्रिय-  
कषायसंवरेण यः स तथा स च भ्रमणो भवति, चकारात् ब्रह्मचर्यादिगुणयुक्तश्चेति, एतदेव प्रपञ्चयन्नाह-  
आरम्भः-पृथिव्याद्युपमर्हः, परिग्रहो द्विधा-बाह्योऽभ्यन्तरश्च, तत्र बाह्यो धर्मसाधनवर्जो धर्मोपकरणमूर्च्छा  
च, आन्तरस्तु मिथ्यात्वाविरतिकषायप्रमाददुष्टयोगरूपः, आह च-‘पुढवाइसु आरम्भो परिग्रहो धम्मसा-  
हणं मोत्तुं । मुच्चा य तत्थ बज्झो इयरो मिच्छत्तमाइओ ॥ १ ॥’ त्ति [ पृथ्व्यादिष्वारम्भः परिग्रहो धर्मसा-  
धनं मुक्त्वा । मूर्च्छा च तत्र बाह्यः इतरो मिथ्यात्वादिकः ॥१॥ ] अनयोश्च समाहारद्वन्द्वः अतस्तस्मात् विरतो  
-निवृत्तो यः स भ्रमण इति वर्त्तते, तथा विरतो-निवृत्तः क्रोधमानमायालोभात्, इह समाहारद्वन्द्वत्वा-  
देकवचनं, अथ मिथ्यात्वलक्षणान्तरपरिग्रहविरतत्वं प्रपञ्चयन्नाह-एकः-अविवक्षितभेदत्वादविरतलक्षणै-  
कस्वभावत्वाद्वा असंयमः-असंयतत्वं, द्वावेव च रागद्वेषौ बन्धने इति शेषः, त्रयश्च दण्डाः-आत्मनो दण्ड-  
नात् दुष्प्रणिहितमनोवाक्कायलक्षणाः, गौरवाणि च-गृह्यभिमानाभ्यामात्मनः कर्मणो गौरवहेतवः ऋद्धिरस-  
सातविषयाः परिणामविशेषाः, त्रीणीति प्रकृतमेव, तथा ‘गुत्तीओ तिण्णि’त्ति गुत्तयो मनोवाक्कायलक्षणा

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ रा-  
गादिआ-  
शातना-  
न्तानां  
वर्णनं  
सू० २८

॥ १४२ ॥

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

अनवद्यप्रवीचाराप्रवीचाररूपाः, तिस्रश्च विराधनाः-ज्ञानादीनां सम्यगनुपालनाः, चत्वारः कषायाः-क्रोधा  
दयः ध्यानानि-एकाग्रतालक्षणानि आर्त्तरौद्रधर्म्यशुक्लाभिधानानि संज्ञाः-आहारभयमैथुनपरिग्रहसंज्ञाभि-  
धानाः विकथाः-स्त्रीभक्तदेशराजकथालक्षणाः तथा च भवन्ति चतस्रः, पञ्च च क्रियाः-जीवव्यापारात्मिकाः  
कायिक्याधिकरणिकीप्राद्वेषिकीपारितापनिकीप्राणातिपातक्रियालक्षणा भवन्तीति सर्वत्र क्रिया दृश्या, तथा  
'समितिइंद्रियमहच्चयाइ घंत्ति समितीन्द्रियमहाव्रतानि पञ्च भवन्तीति प्रकृतं, तत्र समितयः-ईर्यास-  
मित्यादयः निरवद्यप्रवृत्तिरूपाः इन्द्रियाणि-स्पर्शनादीनि महाव्रतानि च-प्रतीतान्येवेति, तथा षट् जीवनि-  
कायाः-पृथिव्यादयः षट् च लेख्याः-कृष्णनीलकापोततेजःपद्मशुक्लनामिकाः, तथा 'सत्त भय'त्ति सप्त भयानि,  
इहलोकभयं-स्वजातीयात् मनुष्यादेर्मनुष्यादिकस्यैव भयं परलोकभयं-विजातीयात्तिर्यगादेः मनुष्यादिकस्य  
भयं, आदानभयं-द्रव्यमाश्रित्य भयं अकस्माद्भयं-बाह्यनिमित्तानपेक्षं आजीविकाभयं-वृत्तिभयमित्यर्थः  
मरणभयं अश्लोकभयमिति, 'अद्द य मय'त्ति अष्टौ च मदाः-मदस्थानानि, तद्यथा—“जाई १ कुल २ बल ३  
रूवे ४ तव ५ ईसरिए ६ सुए ७ लाभे ८ ।” नव चैव ब्रह्मचर्यगुप्तयः, “वसहि १ कह २ निसजिं ३ दिव ४  
कुडुंतर ५ पुव्वकीलिए ६ पणीए ७ । अतिमायाहार ८ विभूसणा य ९ णव बंभगुत्तीओ ॥ १ ॥” त्ति एवंल-  
क्षणा भवन्तीति गम्यं, दशप्रकारश्च श्रमणधर्मो, यथा—खंती य १ महव २ ज्जव ३ मुत्ती ४ तव ५ संजमे  
य बोद्धवे ६ । सच्चं सोयं ८ अर्किचणं च ९ बंभं च १० जइधम्मो १० ॥ १ ॥” एकादश चोपासकानां-



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

प्रश्नव्याक-  
२० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४३ ॥

श्रावकाणां प्रतिमा भवन्तीति गम्यं “दंसण १ वय २ सामाहय ३ पोसह ४ पडिमा ५ अबंभ ६ सच्चित्ते ७।  
आरंभ ८ पेस ९ उद्दिद्ववज्जए १० समणसूए य ॥ १ ॥” इह च गाथायां प्रतिमेति-कायोत्सर्गः अत्र-  
ह्यादिषु पञ्चसु पदेषु वर्जकशब्दो योजनीयः, तथा द्वादश च भिक्षुप्रतिमाः-साधूनामभिग्रहविशेषाः, ता-  
श्चेमाः-मासाहं सत्तंता ७ पहमा १ विय २ तिय ३ सत्त राइदिणा । अहराइ ११ एगराइ १२ भिक्खुपडि-  
माण बारसगं ॥ १ ॥” ति, तत्रैकमासिकी द्विमासिकीत्यादयः सप्त अष्टमीनवमीदशम्यस्तु प्रत्येकं सप्तरात्रि-  
न्दिवमानाः एकादशी अहोरात्रमाना द्वादशी एकरात्रमानेति, इतः सूत्रं सूचामात्रमेव पुस्तकेषु दृश्यते, त-  
च्चैवं परिपूर्णाकृत्याध्येयम्-‘किरियाठाणा यत्ति त्रयोदश क्रियास्थानानि-व्यापारभेदाः, तद्यथा-शरीराद्यर्थ  
दण्डोऽर्थदण्डः १ एतद्व्यतिरिक्तोऽनर्थदण्डो २ हिंसिष्यतीत्याद्याश्रित्य दण्डो हिंसादण्डः ३ अनभिसन्धिना  
दण्डोऽकस्माद्दण्डः ४ मित्रादेरमित्रादिवुद्ध्या विनाशनं दृष्टिविपर्यासितादण्डः ५ मृषावाददण्डः ६ अदत्ता-  
दानदण्डः ७ अध्यात्मदण्डः-शोकाद्यभिभव इत्यर्थः ८ मानदण्डो-जालादिमदः ९ मित्रद्वेषदण्डः-मात्रा-  
दीनामल्पापराधेऽपि महादण्डनिवर्त्तनलक्षणः १० मायादण्डः ११ लोभदण्डः १२ ऐर्ष्यापथिकः-केवलयोगप्र-  
त्ययः कर्मबन्ध इति १३, ‘भूयगाम’स्ति चतुर्दश भूतग्रामाः-जीवसमूहाः, तत्रैकेन्द्रियाः सूक्ष्माः १ वादराश्च २  
द्वीन्द्रियाः ३ त्रीन्द्रियाः ४ चतुरिन्द्रियाः ५ पञ्चेन्द्रियाः संज्ञिनः ६ असंज्ञिनश्चेति ७ सप्त, एते प्रत्येकं पर्यासकाप-  
र्यासकभेदात् द्विधेति चतुर्दश, ‘परमाहम्मिय’स्ति पञ्चदश परमाधार्मिकाः-नारकाणां दुःखोत्पादका असुरकु-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ रा-  
गादिआ-  
शातना-  
स्तानां  
वर्णनं  
सू० २८

॥ १४३ ॥

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

मारविशेषाः, ते चामी—“अंबे २ अंबरिसी चैव २, सामे य ३ सबलेवि य ४ । रुहे ५ उवरुहकाले ७, महा-  
कालेत्ति ८ आवरे ॥ १ ॥ असिपत्ते ९ धणू १० कुंभे ११, बालुय १२ वेयरणि १३ त्तिय । खरस्सरे १४ महा-  
घोसे १५, एते पण्णरसाऽऽहिया ॥ २ ॥” इति, “गाहासोलसा यत्ति षोडश गाथाषोडशानि गाथेति गाथा-  
भिधानं षोडशमध्ययनं येषां तानि गाथाषोडशकानि—सूत्रकृताङ्गस्य प्रथमश्रुतस्कन्धाध्ययनानि, तानि चै-  
तानि—“समओ १ वेयालीयं २ उवसगपरिण ३ थीपरिण ४ । निरयविभत्ती ५ वीरत्थओ य ६  
कुसीलाण परिभासा ७ ॥ १ ॥ वीरिय ८ कम्म ९ समाही १० मग्ग ११ समोसरण १२ अहतहं १३ गंधो  
१४ । जमईयं १५ तह गाहासोलसमं १६ चैव अज्झयणं ॥ २ ॥” “असंजमत्ति सप्तदशविधः असंयमः, स  
चायं—‘पुढवि १ दग २ अगणि ३ मारुय ४ वणप्फह ५ वि ६ ति ७ चउ ८ पर्णिदि ९ अज्जीवे १० । पेह ११  
उवेह १२ पमज्जण १३ परिट्ठवण १४ मणो १५ वई १६ काए १७ ॥ १ ॥” “अवंभत्ति अष्टादशविधमब्रह्म, त-  
च्चैवं—“ओरालियं च दिव्वं मणवयकायाण करणजोगेहिं । अणुमोयणकारावणकरणेणऽट्टारसावंभं ॥१॥”—  
ति, औदारिकं मनःप्रभृतिकरणानामनुमोदनादियोगैः नवधा एवं दिव्यमपीत्यष्टादशधा, ‘नायत्ति एकोन-  
विंशतिज्ञाताध्ययनानि, तानि चामूनि—“उक्खित्तनाए १ संघाडे २, अंडे ३ कुम्मे य ४ सेलए ५ । तुंवे य  
६ रोहिणी ७ मल्ली ८, मायंदी ९ चंदिमा इय १० ॥ १ ॥ दावह्वे ११ उदगणाए १२, मंडुक्के १३ तेयलीइ य  
१४ । णंदिफले १५ अवरकंका १६, आइत्ते १७ सुसुम १८ पुंडरिए १९ ॥ २ ॥” “असमाहिठाणत्ति विंशति-

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४४ ॥

रसमाधिस्थानानि-चित्तास्वास्थ्यस्याश्रयाः, तानि चामूनि-द्वृतचारित्वं १ अप्रमार्जितचारित्वं २ दुष्प्रमार्जित-  
चारित्वं ३ अतिरिक्तशय्यासनिकत्वं ४ आचार्यपरिभाषित्वं ५ स्थविरोपघातित्वं ६ भूतोपघातित्वं ७ सङ्घ-  
लनत्वं-प्रतिक्षणरोषणत्वं ८ क्रोधनत्वं-अत्यन्तक्रोधनत्वमित्यर्थः ९ पृष्ठमांसकत्वं-परोक्षस्यावर्णवादित्वमि-  
त्यर्थः १०, अभीक्षणमवधारकत्वं शङ्कितस्याप्यर्थस्यावधारकत्वमित्यर्थः ११ नवानामधिकरणानामुत्पादनं १२  
पुराणानां तेषामुदीरकत्वं १३ सरजस्कपाणिपादत्वं १४ अकालस्वाध्यायकरणं १५ कलहकरत्वं कलहहेतुभूत-  
कर्त्तव्यकारित्वमित्यर्थः १६ शब्दकरत्वं-रात्रौ महाशब्देनोद्भाषित्वं १७ झञ्जाकारित्वं गणस्य चित्तभेदका-  
रित्वं मनोदुःखकारिवचनभाषित्वं वा १८ सूरप्रमाणभोजित्वं-उदयादस्तमयं यावद् भोक्तृत्वमित्यर्थः १९ एष-  
णायामसमतित्वं चेति २०, ‘सबला यंति एकविंशतिः शबलाः-चारित्रमालिन्यहेतवः, ते चामी-हस्तकर्म १  
मैथुनमतिक्रमादिना २ रात्रिभोजनं ३ आधाकर्मणः ४ शय्यातरपिण्डस्य ५ औद्देशिकक्रीतापमित्यकाच्छेद्या-  
निसृष्टादेश्च भोजनं ६ प्रत्याख्याताशनादिभोजनं ७ षण्मासान्तर्गणाद् गणान्तरसङ्क्रमणं ८ मासस्यान्तस्त्रि-  
कृत्वो नाभिप्रमाणजलावगाहनं ९ मासस्यान्तस्त्रिर्मासाकरणं १० राजपिण्डभोजनं ११ आकुट्टया प्राणाति-  
पातकरणं १२ एवं मृषावादनं १३ अदत्तग्रहणं १४ तथैवानन्तर्हितायां सचित्तपृथिव्यां कायोत्सर्गादिकरणं  
१५ एवं सस्नेहसरजस्कायिकायां १६ अन्यत्रापि प्राणिबीजादियुक्ते १७ आकुट्टया मूलकन्दादिभोजनं १८  
संवत्सरस्यान्तर्दशकृत्वो नाभिप्रमाणजलावगाहनं १९ संवत्सरस्यान्तर्दशमायास्थानकरणं २० अभीक्षणं शी-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ रा-  
गादिआ-  
शातना-  
न्तानां  
वर्णनं  
सू० २८

॥ १४४ ॥



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२८]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[४४]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">२५</p> <p>तोदकमुतहस्तादिनाऽशनादेर्ग्रहणं १ भोजनं २ चेति । द्वाविंशतिः परीषदाश्च, ते चामी—“खुहा १ पि- वासा २ सीउणहं ३-४ दंसा ५ चेल ६ ऽरई ७ त्थिओ ८ । चरिया ९ निसीहिया १० सेजा ११ अक्कोसा १२ वह १३ जायणा १४ ॥ १ ॥ अलाभ १५ रोग १६ तणफासा १७ मलसक्कारपरीसहा १८-१९ । पण्णा २० अन्नाण २१ सम्मत्तं २२, इय बावीस परीसहा ॥ २ ॥” ‘सूयगडउज्जयण’त्ति त्रयोविंशतिः सूत्रकृताध्यय- नानि, तत्र समयादीनि प्रथमश्रुतस्कन्धभावीनि प्रागुक्तान्येव षोडश द्वितीयश्रुतस्कन्धभावीनि चान्यानि सप्त, तद्यथा—“पुंडरिय १ किरियठाणं २ आहारपरिण ३ पच्चखाणकिरिया ४ य । अणयार ५ अह ६ णालं- द ७ सोलसाइं च तेवीसं ॥ १ ॥”ति, ‘देव’त्ति चतुर्विंशतिर्देवाः, तत्र गाथा—“भवण १ वण २ जोइ ३ वेमाणिया य ४ दस अट्ट पंच एगविहा ।” इति, “चउवीसं देवा केई पुण बेति अरहंता” ‘भावण’त्ति पञ्च- विंशतिर्भावनाः, ताश्च इहैव प्रतिमहाव्रतं पञ्च पञ्चाभिहिताः, ‘उद्देस’त्ति षड्विंशतिरुद्देशनकाला दशाकल्प- व्यवहाराणां, तत्र गाथा—“दस उद्देसणकाला दसाण छेवेव होंति कप्पस्स । दस चेव य ववहारस्स होंति सब्बेवि छब्बीसं ॥ १ ॥” ‘गुण’त्ति सप्तविंशतिरनगारगुणाः, तत्र महाव्रतानि पञ्च ५ इन्द्रियनिग्रहाः पञ्च १० क्रोधादिविवेकाश्चत्वारः १४ सत्यानि त्रीणि, तत्र भावनासत्यं-शुद्धान्तरात्मा करणसत्यं-यथोक्तप्रति- लेखनाक्रियाकरणं योगसत्यं-मनःप्रभृतीनामवितथत्वं १७ क्षमा १८ विरागता १९ मनःप्रभृतिनिरोधाश्च २२ ज्ञानादिसम्पन्नता २५ वेदनादिसहनं २६ मारणान्तिकोपसर्गसहनं २७ चेति, अथवा “वयच्छक्क ६ मिंदियाणं च</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only jainelibrary.org</p>

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४५ ॥

निग्गहो ११ भावकरणसच्चं च १३ । स्वमया १४ विरागयावि य १५ मणमार्हणं निरोहो य १८ ॥ १ ॥ का-  
याण छक्क २४ जोगम्मि जुत्तया २५ वेयणाहियासणया २६ । तह मरणंते संलेहणा य २७ एएऽणगारगुणा ॥२॥”  
‘पक्कप्प’त्ति अष्टाविंशतिविधः आचारप्रकल्पः निशीथान्तमाचाराङ्गमित्यर्थः, स चैवम्—“सत्थपरिण्णा १  
लोगविजओ २ सीओसणिज्ज ३ सम्मत्तं ४ । आवंति ५ धुव ६ विमोहो ७ उवहाणसुयं ८ महपरिण्णा ९ ॥१॥”  
प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्याध्ययनानि, द्वितीयस्य तु “पिंडेसण १ सेज्ज २ इरिया ३ भासजाया य ४ वत्थपाएसा  
५-६ । उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिक्कया १४ भावण १५ विमुत्ती १६ ॥ २ ॥ उग्घाह १ अणुग्घाह २ आरूवणा ३  
तिविहमो णिसीहं तु । इइ अट्ठावीसविहो आयारपक्कप्पनामोत्ति ॥ ३ ॥” उद्घातिकं यत्र लघुमासादिकं  
प्रायश्चित्तं वर्णयते, अनुद्घातिकं यत्र गुरुमासादि, आरोपणा च यत्रैकस्मिन् प्रायश्चित्ते अन्यदप्यारोप्यत  
इति । ‘पावसुय’त्ति एकोनत्रिंशत् पापश्रुतप्रसङ्गाः, ते चामी—“अट्ठ निमित्तंगाहं दिव्वु १ प्पायं २ तलक्ख  
३ भोमं च ४ । अंग ५ सर ६ लक्खण ७ वंजणं ८ च तिविहं पुणोक्केक्कं ॥ १ ॥ सुत्तं वित्ती तह वत्तियं च  
पावसुयमउणतीसविहं । गंधन्व २५ णट्ठ २६ वत्थुं २७ आउं २८ धणुवेयसंजुत्तं २९ ॥ २ ॥” ‘मोहणिज्जे’त्ति  
त्रिंशत् मोहनीयस्थानानि—महाभोहवन्धहेतवः, तानि चामूनि-जलनिबोलनेन त्रसानां विहिंसनं १ एवं ह-  
स्तादिना मुखादिश्रोतसः स्थगनेन २ वर्षादिना शिरोवेष्टनतः ३ मुद्गरादिना शिरोऽभिघातेन ४ भवोद-  
धिपतितजन्तूनां द्वीपकल्पस्य देहिनो हननं ५ सामर्थ्ये सत्यपि घोरपरिणामाद् ग्लानस्यौषधादिभिरप्रतिच-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ रा-  
गादिआ-  
शातना-  
न्तानां  
वर्णनं  
सू० २८

॥ १४५ ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

रणं ६ तपस्विनो बलात्कारेण धर्माद् भ्रंसनं ७ सम्यग्दर्शनादिमोक्षमार्गस्य परेषां विपरिणामकरणेनापकार-  
करणं ८ जिनानां निन्दाकरणं ९ आचार्यादिखिसनं १० आचार्यादीनां ज्ञानादिभिरुपकारिणां कार्येषु अ-  
प्रतितर्पणं ११ पुनः पुनरधिकरणस्य-दृपप्रयाणकदिनादेः कथनं १२ वशीकरणादिकरणं १३ प्रत्याख्यातभो-  
गप्रार्थनं १४ अभीक्षणमबहुश्रुतत्वेऽप्यात्मनो बहुश्रुतत्वप्रकाशनं १५ एवमतपस्विनोऽपि तपस्विताप्रकाशनं  
१६ बहुजनस्यान्तर्धूमेनाग्निना हिंसनं १७ स्वयंकृतस्याकृत्यस्यान्यकृतत्वाविर्भावनं १८ विचित्रमायाप्रकारैः  
परवञ्चनं १९ अशुभपरिणामात् सत्यस्यापि मृषेति सभायां प्रकाशनं २० अक्षीणकलहत्वं २१ विश्रम्भोत्पा-  
दनेन परधनापहरणं २२ एवं परदारलोभनं २३ अकुमारत्वेऽप्यात्मनः कुमारत्वभणनं २४ एवमब्रह्मचारित्वे-  
ऽपि ब्रह्मचारिताप्रकाशनं २५ येनैश्वर्यं प्रापितस्तस्यैव सत्के द्रव्ये लोभकरणं २६ यत्प्रभावेन ख्यातिं गतस्तस्य  
किञ्चिदन्तरायकरणं २७ राजसेनाधिपराष्ट्रचिन्तकादेर्बहुजननायकस्य हिंसनं २८ अपश्यतोऽपि पश्यामीति  
मायया भणनं २९ अवज्ञया देवेष्वहमेव देव इति प्रख्यापनमिति ३० । ‘सिद्धाद्गुणा’स्ति एकत्रिंशत्सिद्धा-  
दिगुणाः-सिद्धानामादित एव गुणाः सिद्धानां वा आत्यन्तिका गुणाः सिद्धातिगुणाः, ते चैवं-‘से ण तंसे  
ण चउरंसे ण वट्टे ण मंडले ण आयते’ इति संस्थानपञ्चकस्य निषेधतः वर्णपञ्चकस्य गन्धद्वयस्य रसपञ्चकस्य  
स्पर्शाष्टकस्य वेदत्रयस्य च, तथा अकायः असङ्गः अरुहश्चेति, आह च-“पडिसेहणसंठाणे ५ वण्ण ५ गन्ध  
२ रस ५ फास ८ वेदे य ३ । पण पण दुपणट्ट तिहा इगतीस अकायऽसंगऽरुहा ॥ १ ॥” अथवा क्षीणाभि-



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४६ ॥

निबोधिकज्ञानावरणः क्षीणश्रुतज्ञानावरण इत्येवं कर्मभेदानाश्रित्यैकत्रिंशत्, आह च—‘णव दरिसणम्मि चत्तारि आउए पंच आदिमे अंते । सेसे दो दो भेया खीणभिलावेण इगतीसं ॥ १ ॥’ ति [ नव दर्शने चत्वारि आयुषि आचे पञ्च अन्ये पञ्च शेषेषु द्वौ द्वौ भेदौ क्षीणाभिलापेन ॥ १ ॥ ] ‘जोगसंगह’त्ति ‘द्वारि-शद्योगसङ्गहाः’ योगानां-प्रशस्तव्यापाराणां सङ्गहाः, ते चामी—“आलोयणा १ गिरवलावे-आचार्यस्याप-रिश्रावित्वमित्यर्थः २ आवइसु ददधम्मया ३ । अणिसिओवहाणे य-अनिश्रितं तप इत्यर्थः ४ सिक्खा-सूत्रार्थग्रहणं ५ णिप्पडिकम्मया ६ ॥ १ ॥ अण्णायया-तपसोऽप्रकाशनं ७ अलोभे य ८ तितिकखा-परीषह-जयः ९ अज्जवे १० सुई-सत्यसंयम इत्यर्थः ११ । सम्मदिट्ठी-सम्यक्त्वशुद्धिः १२ समाही य १३, आयारे विणओवए-आचारोपगतं १४ विनयोपगतं चेत्यर्थः १५ ॥ २ ॥ धिईमई य-अदैन्यं १६ संवेग १७ पणिही माया न कार्येत्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठानं १९ संवरे २० । अत्तदोसोवसंहारे २१ सव्वकामविरत्तया २२ ॥ ३ ॥ पच्चक्खाणं-मूलगुणविषयं २३ उत्तरगुणविषयं च २४ विउस्सग्गे २५, अप्पमाए २६ लवालवे क्षणे २ सामाचार्यनुष्ठानं २७ । द्वाणसंवरजोगे य २८, उदए मारणंतिए २९ ॥ ४ ॥ संगणं च परिणणा ३०, पच्छित्त-करणे इय ३१ ॥ आराहणा य मरणंते ३२, बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ त्रयस्त्रिंशदाशातनाः, एवं चैताः-राह-णियस्स सेहो पुरओ गंता भवति आसायणा सेहस्सेत्येवमभिलापो दृश्यः, तत्र रत्नाधिकस्य पुरतो गमनं १ स्थानं-आसनं २ निषदं ३ एवं पार्श्वतो गमनं ४ स्थानं ५ निषदं ६ एवमासन्ने गमनं ७ स्थानं ८ निषदं ९ विचार-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ रा-  
गादिआ-  
शातना-  
न्तानां  
वर्णनं  
सू० २८

॥ १४६ ॥

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२८]

दीप  
अनुक्रम  
[४४]

भूमौ तस्य पूर्वमाचमनं १० ततो निवृत्तस्य पूर्वं गमनागमनालोचनं ११ रात्रौ को जागर्तीति पृष्ठे तद्वचना-  
प्रतिश्रवणं १२ आलापनीयस्य पूर्वतरमालापनं १३ लब्धस्याशनादेरन्यस्यै पूर्वमालोचनं १४ एवमन्यस्योपद-  
र्शनं १५ एवं निमन्त्रणं १६ रत्नाधिकमनापृच्छयान्यस्यै भक्तादिदानं १७ स्वयं प्रधानतरस्य भोजनं १८ व्याह-  
रतो रत्नाधिकस्य वचनाप्रतिश्रवणं १९ रत्नाधिकस्य समक्षं बृहता शब्देन बहुधा भाषणं २० व्याहृतस्य किं  
भणसीति भणनं २१ प्रेरणायां कोऽसि त्वमित्येवमुल्लुण्ठवचनं २२ ग्लानं प्रतिचरेत्याद्यादेशे त्वमेव किं न  
प्रतिचरसीत्यादिभणनं २३ धर्मं देशयति गुरावन्यमनस्कत्वं २४ कथयति गुरौ न स्मरसीति भणनं २५  
धर्मकथाया आच्छेदनं २६ भिक्षावेला वर्त्तत इत्यादिवचनतः पर्षदो भेदनं २७ पर्षदस्तथैव स्थितायाः धर्म-  
कथनं २८ गुरुसंस्तारकस्य पादघटनं २९ गुरुसंस्तारके निषदनं ३० एवमुच्चासने ३१ एवं समासने ३२ गुरौ  
किञ्चित् पृच्छति तत्रगतस्यैवोत्तरदानं चेति ३३ । ‘सुरिंदंति द्वात्रिंशत्सुरेन्द्रा विंशतिर्भवनपतिषु दश वैमा-  
निकेषु द्वौ ज्योतिष्केषु चन्द्रसूर्याणामसङ्ख्यातत्वेऽपि जातिग्रहणाद् द्वितयमेवेति, इयं चेन्द्रसङ्ख्या यद्यपि व-  
क्ष्यमाणसूत्रगत्या न प्रतीयते तथापि ग्रन्थान्तरादवसेया, भवन्तीत्यनुवर्त्तते सर्वत्र, इह स्थाने ‘एएसु’त्ति  
वाक्यशेषो द्रष्टव्यः, तेन य एते एकत्वादिसङ्ख्यापेता असंयमादयो भावा भवन्ति एतेषु, किंभूतेषु?—आदिमं-  
प्रथमं एकादिकं—एकद्वित्रयादिकं सङ्ख्याविशेषं कृत्वा—विधाय एकोत्तरिकया वृद्ध्या इति गम्यते वर्द्धितेषु-  
सङ्ख्याधिक्यं प्राप्तेषु कियतीं सङ्ख्यां यावद्बुद्धेर्भित्याह—‘तीसातो जाव ‘भवे तिकाहिया’ त्रिंशद्यावद् भ-

<p>आगम (१०)</p>	<p>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः) श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२८]</p>
<p>प्रत सूत्रांक [२८]  दीप अनुक्रम [४४]</p>	<p>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border-right: 1px solid black; padding-right: 5px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १४७ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>वृत्ति- जायते त्रिकाधिका त्रयस्त्रिंशत्तं यावद्बृद्धेष्वित्यर्थः, अनेन च क्रियास्थानादिपदानां सङ्केपार्थसूत्रेऽन- धीतापि सङ्ख्या यथोक्ता दर्शिता भवति, तत एवं वृद्धेष्वेतेषु शङ्कादि निराकृत्य यः शासनं श्रद्धत्त इति स- म्बन्धनीयं, तथा विरतयः-प्राणातिपातादिविरमणानि प्रणिधयः-प्रणिधानानि विशिष्टैकाग्रत्वानि तेषु अवि- रतिषु च-अविरमणेषु अन्येषु च-उक्तव्यतिरिक्तेषु एवमादिकेषु-एवंप्रकारेषु बहुषु स्थानेषु-पदार्थेषु सङ्ख्यास्था- नेषु वा चतुस्त्रिंशदादिषु जिनप्रशस्तेषु-जिनप्रशासितेषु अवितथेषु-सत्येषु शाश्वतभावेषु-ओघतोऽक्षयस्व- भावेषु अत एवावस्थितेषु-सर्वदाभाविषु, किमत आह-शङ्कां-सन्देहं काङ्क्षां-अन्यान्यमतग्रहणरूपां निरा- कृत्य सद्गुरुपर्युपासनादिभिः श्रद्धत्ते-श्रद्धधाति शासनं-प्रवचनं भगवतो-जिनस्य श्रमण इति प्रक्रमः, पुनः किंभूतः?-अनिदानो-देवेन्द्राद्यैश्वर्याप्रार्थकः अगौरवः-ऋद्ध्यादिगौरववर्जितः अलुब्धः-अलंपटः अमूढो-मनो- वचनकायगुसश्च यः स तथेति ॥ अपरिग्रहसंवृतः श्रमण इत्युक्तमधुना अपरिग्रहत्वमेव प्रक्रान्ताध्ययनाभिधेयं वर्णयन्नाह— जो सो वीरवरवयणविरतिपवित्ररवहुविहृष्पकारो सम्मत्तविसुद्धमूलो धितिकंदो विणयवेतितो निग्गत- तिलोक्कविपुलजसनिविडपीणपवरसुजातखंधो पंचमहव्वयविसालसालो भावणतयंतज्झाणसुभजोगनाण- पल्लववरंकुरधरो बहुगुणकुसुमसमिद्धो सीलसुगंधो अणहव्वफलो पुणो य मोक्खवरवीजसारो मंदरगिरि- सिहरचूलिका इव इमस्स मोक्खवरमुत्तिमग्गस्स सिहरभूओ संवरवरपादपो चरिमं संवरदारं, जत्थ न</p> </div> <div style="width: 15%; border-left: 1px solid black; padding-left: 5px;"> <p>५ धर्मद्वारे परिग्रहवि- रतौ संव- रपादपः भिक्षाअ- सन्निधि- र्भावनाश्च सू० २९  ॥ १४७ ॥</p> </div> </div> <p style="font-size: small; text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

कप्पइ गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमगयं च किंचि अप्पं व बहुं व अणुं व थूलं व तस-  
थावरकायदच्चजायं मणसावि परिघेत्तुं ण हिरन्नसुवन्नखेत्तवत्थु न दासीदासभयकपेसहयगयगवेलगं च न  
जाणजुगसयणाइ ण छत्तकं न कुंडिया न उवाणहा न पेहुणवीयणतालियंटका ण यावि अयतउयतंवसीस-  
ककंसरयसजातरूवमणिमुत्ताधारपुडकसंखदंतमणिसिंगसेलकायवरचेलचम्मपत्ताइं महरिहाइं परस्स अ-  
ज्झोववायलोभजणणाइं परियहेउं गुणवओ न यावि पुप्फफलकंदमूलादियाइं सणसत्तरसाइं सव्वधन्नाइं  
तिहिवि जोगेहिं परिघेत्तुं ओसहभेसज्जभोयणट्टयाए संजएणं, किं कारणं?, अपरिमितणाणदंसणधरेहिं सील-  
गुणविणयतवसंजमनायकेहिं तिथयरेहिं सव्वजगज्जीववच्छलेहिं तिलोयमहिएहिं जिणवरिंदेहिं एस जोणी  
जंगमाणं दिट्ठा न कप्पइ जोणिसमुच्छेदोत्ति तेण वज्जंति समणसीहा, जंपिय ओदणकुम्मासगंजत्तप्प-  
णमंधुभुज्जियपलसूपसक्कुलिवेदिमवरसरकचुन्नकोसगपिंडसिहरिणिवट्टमोयगखीरदहिसप्पिनवनीततेल्लगुल-  
खंडमच्छंडियमधुमज्जमंसखज्जकवंजणविधिमादिकं पणीयं उवस्सए परघरे व रत्ते न कप्पती तंपि सन्निहिं  
काउं सुविहियाणं, जंपिय उद्धिट्ठवियरचियगपज्जवजातं पक्किणपाउकरणपामिच्चं भीसकजायं कीयकड-  
पाहुडं च दाणट्टपुन्नपगडं समणवणीमगट्टयाए व कयं पच्छाकम्मं पुरेकम्मं नितिकम्मं मक्खियं अतिरित्तं  
मोहरं चैव सयगगहमाहडं मट्ठिउवलित्तं अच्छेज्जं चैव अणीसट्टं जं तं तिहीसु जन्नेसु ऊसवेसु य अंतो व  
बहिं व होज्ज समणट्टयाए ठवियं हिंसासावज्जसंपउत्तं न कप्पती तंपिय परिघेत्तुं, अह केरिसयं पुणाइ क-

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४८ ॥

पति !, जं तं एकारसपिंडवायसुद्धं किणणहणणपयणकयकारियाणुमोयणनवकोडीहिं सुपरिसुद्धं दसहि  
य दोसेहिं विप्पमुकं उगमउप्पायणेसणाए सुद्धं ववगयचुयचवियचत्तदेहं च फासुयं ववगयसंजोगमणिं-  
गालं विगयधूमं छट्टाणनिमित्तं छक्कायपरिरक्खणट्टा हणिं हणिं फासुकेण भिक्खेण वट्टियव्वं, जंपिय समणस्स  
सुविहियस्स उ रोगायंके बहुप्पकारंमि समुप्पन्ने वाताहिकपित्तसिंभअतिरित्तकुविय तह सन्निवातजाते  
व उदयपत्ते उज्जलबलविउलकक्खडपगाढदुक्खे असुभकडुयफरुसे चंडफलविवागे महवभए जीवियंत-  
करणे सव्वसरीरपरितावणकरे न कप्पती तारिसेवि तह अप्पणो परस्स वा ओसहभेसज्जं भत्तपाणं च तंपि  
संनिहिकयं, जंपिय समणस्स सुविहियस्स तु पडिग्गहधारिस्स भवति भायणभंडोवहिउवकरणं पडिग्गहो  
पादबंधणं पादकेसरिया पादठवणं च पडलाई तिन्नेव रयत्ताणं च गोच्छओ तिन्नेव य पच्छाका रयोहरण-  
चोलपट्टकमुहणंतकमादीयं एयंपिय संजमस्स उववृहणट्टयाए वायायवदंसमसगसीयपरिरक्खणट्टयाए  
उवगरणं रागदोसरहियं परिहरियव्वं संजएण णिच्चं पडिलेहणपप्फोडणपमज्जणाए अहो य राओ य अप्प-  
मत्तेण होइ सततं निक्खिवियव्वं च गिण्हियव्वं च भायणभंडोवहिउवकरणं, एवं से संजते विमुत्ते निस्संगे  
निप्परिग्गहरुई निम्ममे तिन्नेहबंधणे सव्वपावविरते वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिमुत्तालेडुकंचणे  
समे य माणावमाणणाए समियरते समितरागदोसे समिए समितीसु सम्महिट्ठी समे य जे सव्व-  
पाणभूतेसु से हु समणे सुयधारते उज्जुते संजते स साहू सरणं सव्वभूयाणं सव्वजगवच्छले सच्चभासके

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १४८ ॥

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

य संसारंतद्विते य संसारसमुच्छिन्ने सततं मरणाणुपारते पारगे य सव्वेसिं संसयाणं पवयणमायाहिं अट्टहिं  
अट्टकम्मगंठीविमोयके अट्टमयमहणे ससमयकुसले य भवति सुहदुक्खनिव्विसेसे अबिंभतरवाहिरंमि सया  
तवोवहाणंमि य सुट्टुज्जुते खंते दंते य हियनिरते ईरियासमिते भासासमिते एसणासमिते आयाणभंडम-  
त्तनिकखेवणासमिते उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिते मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिं-  
दिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ने तवस्सी खंतिखमे जित्तिदिए सोधिए अणियाणे अबहिलेस्से अममे  
अकिंचणे छिन्नगंधे निरुवलेवे सुविमलवरकंसभायणं व मुक्कतोए संखेविव निरंजणे विगयरागदोसमोहे  
कुम्मो इव इंदिएसु गुत्ते जच्चकंचणगं व जायरूवे पोक्खरपत्तं व निरुवलेवे चंदो इव सोमभावयाए सूरु  
व्व दित्तेए अचले जह मंदरे गिरिवरे अक्खोभे सागरो व्व थिमिए पुढवी व सव्वफाससहे तवसा च्चिय  
भासरासिल्लिब्व जाततेए जलियहुयासणो विव तेयसा जलंते गोसीसचंदणपिव सीयले सुगंधे य हरयो  
विव समियभावे उग्घोसियसुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं व पागडभावेण सुद्धभावे सौंडीरे कुंजरोव्व वस-  
भेव्व जायथामे सीहे वा जहा मिगाहिवे होति दुप्पधरिसे सारयसलिलं व सुद्धहियये भारंडे चेव अप्पमत्ते  
खग्गिसिणं व एगजाते खाणुं चेव उट्टकाए सुत्तागारेव्व अप्पडिकम्मे सुत्तागारावणस्संतो निवायसरण-  
प्पदीपज्झाणमिव निप्पकंपे जहा खुरो चेव एगधारे जहा अही चेव एगदिट्ठी आगासं चेव निरालंवे वि-  
हगे विव सव्वओ विप्पमुक्के कयपरनिलए जहा चेव उरए अप्पडिबद्धे अनिलोव्व जीवोव्व अप्पडिहयगती



आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १४९ ॥

गामे गामे एकरायं नगरे नगरे य पंचरायं दूइजंते य जितिंदिए जितपरीसहे निब्भओ विऊ सच्चित्ता-  
चिस्तमीसकेहिं दव्वेहिं विरायं गते संचयातो विरए मुत्ते लहुके निरवकंखे जीवियमरणासविप्पमुक्के निस्सं-  
धि निव्वणं चरित्तं धीरे काएण फासयंते सततं अङ्गप्पज्झाणजुत्ते निहुए एगे चरेज्ज धम्मं । इमं च परि-  
ग्गहवेरमणपरिरक्खणद्वयाए पावयणं भगवया सुकहियं अत्तहियं पेच्चाभाविकं आगमेसिभदं सुद्धं नेयाउयं  
अकुडिलं अणुत्तरं सब्बदुक्खपावाण विओसमणं तस्स इमा पंच भावणाओ चरिमस्स वयस्स होंति परि-  
ग्गहवेरमणरक्खणद्वयाए—पढमं सोइंदिएण सोच्चा सदाइं मणुन्नभद्दगाइं, किं ते?, वरमुरयमुइंगप-  
णवदहुरकच्छभिवीणाविपंचीवल्लियवद्धीसकसुघोसनेंदिसूसरपरिवादिणिघंसतूणकपव्वकतंतीतलतालतुडिय-  
निग्घोसगीयवाइयाइं नडनट्टकजलमलमुट्टिकवेलेवककहकपवकलासगआइक्खकलंखमंखतूणइल्लतुंववीणिय-  
तालायरपकरणाणि य बहूणि महुरसरगीतसुस्सरातिं कंचीमेहलाकलावपत्तरकपहेरकपायजालगघंदि-  
यखिंखिणिरयणोरुजालियच्छुद्धियनेउरचलणमालियकणगनियलजालभूसणसदाणि लीलचंक्कममाणानूदी-  
रियाइं तरुणीजणहसियभणियकलरिभित्तमंजुलाइं गुणवयणाणि व बहूणि महुरज्जणभासियाइं अत्तेसु य  
एवमादिएसु सहेसु मणुन्नभद्दएसु ण तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न  
विनिग्घायं आवज्जियव्वं न लुभियव्वं न तुसियव्वं न हसियव्वं न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि  
सोइंदिएण सोच्चा सदाइं अमणुन्नपावकाइं, किं ते?, अक्कोसफरुसखिंसणअवमाणणतज्जणनिब्भंछणदि-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १४९ ॥

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

त्तवयणतासणउक्कजियरुत्तरडियकंदियनिगघुट्टरसियकलुणविलवियाइं अन्नेसु य एवमादिएसु सद्देसु अम-  
गुण्णपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं न निंदियव्वं न खिसियव्वं न छिंदियव्वं न भिंदियव्वं  
न वहेयव्वं न दुगुंछावत्तियाए लब्भा उप्पाएउं, एवं सोत्तिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा मणुन्नाऽम-  
णुन्नसुब्भिदुब्भिरागदोसप्पणिहियप्पा साह मणवयणकायगुत्ते संबुडे पणिहित्तिंदिए चरेज्ज धम्मं १ । वितियं  
चक्खिदिएण पासिय रूवाणि मणुन्नाइं भद्दकाइं सच्चित्ताचित्तमीसकाइं कट्ठे पोत्थे य चित्तकम्मे लेप्पकम्मे  
सेले य दंतकम्मे य पंचहिं वण्णेहिं अणेगसंठाणसंथियाइं गंठिसव्वेडिमपूरिमसंघातिमाणि य मल्लाइं बहुवि-  
हाणि य अहियं नयणमणसुहकराइं वणसंडे पव्यते य गामागरनगराणि य खुदियपुक्खरिणिवावीदी-  
हियगुंजालियसरसरपंतियसागरविलपंतियखादियनदीसरतलागवप्पिणीफुल्लुप्पलपउमपरिमंडियाभिरामे अ-  
णेगसउणगणमिहुणविचरिए वरमंडवविविहभवणतोरणचेतियदेवकुलसभप्पवावसहसुकयसयणासणसीयर-  
हसयडजाणजुगसंदणनरनारिगणे य सोमपडिरूवदरिसणिज्जे अलंकितविभूसिते पुव्वकयतवप्पभाव-  
सोहग्गसंपउत्ते नडनट्टगजल्लमल्लमुट्टियवेलंबगकहगपवगलासगआइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियतालायर-  
पकरणाणि य बहूणि सुकरणाणि अन्नेसु य एवमादिएसु रूवेसु मणुन्नभद्दएसु न तेसु समणेण सज्जि-  
यव्वं न रज्जियव्वं जाव न सइं च मइं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि चक्खिदिएण पासिय रूवाइं अमणुन्नपा-  
वकाइं, किं ते?, गंडिकोठिककुणिउदरिक्कल्लपइल्लकुज्जपंगुलवामणअंधिलगएगचक्खुविणिहयसप्पिसल्लग-

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५० ॥

वाहिरोगपीलियं विगयाणि य मयककलेवराणि सकिमिणकुहियं च दव्वरासिं अन्नेसु य एवमादिपसु अम-  
णुन्नपावतेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव न दुगुंलावत्तियावि लब्भा उप्पातेउं, एवं चकिंखदियभाव-  
णाभावितो भवति अंतरप्पा जाव चरेज्ज धम्मं २। ततियं घाणिदिण्ण अग्घाइय गंधातिं मणुन्नभद्दाइं,  
किं ते?, जलयथलयसरसपुप्फफलयणभोयणकुट्टतगरपत्तचोददमणकमरुयएलारसपिक्कमंसिगोसीससरसचं-  
दणकप्पूरलवंगअगरकुंकुमकक्कोलउसीरसेयचंदणसुगन्धसारंगजुत्तिवरधूववासे उउयपिंडिमणिहारिमगंधि-  
एसु अन्नेसु य एवमादिपसु गंधेसु मणुन्नभद्दाएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सतिं च मइं च तत्थ  
कुज्जा, पुणरवि घाणिदिण्ण अग्घातिय गंधाणि अमणुन्नपावकाइं, किं ते?, अहिमडअस्समडहत्थिमडगो-  
मडविगसुणगसियालमणुयमज्जारसीहदीवियमयकुहियविणट्टकिविणबहुदुरभिगंधेसु अन्नेसु य एवमादिपसु  
गंधेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव पणिहियपंचिदिण्ण चरेज्ज धम्मं ३। चउत्थं जिब्भि-  
दिण्ण साइय रसाणि उ मणुन्नभद्दाइं, किं ते?, उग्गाहिमविहपाणभोयणगुलकयखंडकयतेलघयकय-  
भक्खेसु बहुविहेसु लवणरससंजुत्तेसु महुमंसवहुप्पगारमज्जियनिट्टाणगदालियं वसेहंबदुद्धदहिसरयमज्जवरवा-  
रुणीसीहुकाविसायणसायद्वारसवहुप्पगारेसु भोयणेसु य मणुन्नवन्नगंधरसफासवहुदव्वसंभितेसु अन्नेसु य  
एवमादिपसु रसेसु मणुन्नभद्दाएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं जाव न सइं च मतिं च तत्थ कुज्जा, पुण-  
रवि जिब्भिदिण्ण सायिय रसातिं अमणुन्नपावगाइं, किं ते?, अरसविरससीयलुक्खणिज्जप्पाणभोयणाइं

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिन्नाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५० ॥



आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

२६

दोसीणवावन्नकुहियपूइयअमणुन्नविणद्वपसूयबहुदुब्धिगंधियाइं तित्तकडुयकसायअंबिलरसलिंडनीरसाइं अ-  
न्नेसु य एवमातिएसु रसेसु अमणुन्नपावएसु न तेसु समणेण रूसियव्वं जाव चरेज्ज धम्मं ४। पंचमंगं  
फासिदिण फासिय फासाइं मणुन्नभइकाइं, किं ते?, दगमंडवहारसेयचंदणसीयलविमलजलविहिकुसुमस-  
त्थरओसीरमुत्तियमुणालदोसिणापेहुणउक्खेवगतालियंटवीयणगजणियसुहसीयले य पवणे गिमहकाले सु-  
हफासाणि य बहूणि सयणाणि आसणाणि य पाउरणगुणे य सिसिरकाले अंगारपतावणा य आयवनिद्धम-  
उयसीयउसिणलहुया य जे उदुसुहफासा अंगसुहनिव्वुइकरा ते अन्नेसु य एवमादितेसु फासेसु मणुन्नभ-  
इएसु न तेसु समणेण सज्जियव्वं न रज्जियव्वं न गिज्जियव्वं न मुज्जियव्वं न विणिग्घायं आवज्जियव्वं  
न लुभियव्वं न अज्जोववज्जियव्वं न तूसियव्वं न हसियव्वं न सतिं च मतिं च तत्थ कुज्जा, पुणरवि  
फासिदिण फासिय फासार्तिं अमणुन्नपावकाइं, किं ते?, अणेगवधबंधतालणंकणअतिभारारोवणए अंगभं-  
जणसूतीनखप्पवेसगायपच्छणणलक्खारसखारतेलकलकलंततउअसीसककाललोहसिंचणहडिबंधणरज्जुनिग-  
लसंकलहत्थंडुयकुंभिपाकदहणसीहपुच्छणउब्बंधणसूलभेयगयचलणमलणकरचरणकन्ननासोडुसीसळेयणजि-  
व्वंभंछणवसणनयणहिययदतंभजंणजोत्तलयकसप्पहारपादपण्हिजाणुपत्थरनिवायपीलणकविकच्छुअगाणि वि-  
च्छुयडक्कवायातवदंसमसकनिवाते दुट्टणिज्जसीहियदुब्धिकक्खडगुरुसीयउसिणलुक्खेसु बहुविहेसु अन्नेसु य  
एवमाइएसु फासेसु अमणुन्नपावकेसु न तेसु समणेण रूसियव्वं न हीलियव्वं न निंदियव्वं न गरहियव्वं न खिसि-

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९-३०]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२९-३०]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[४५-४७]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div data-bbox="324 399 515 1093" style="width: 15%;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १५१ ॥</p> </div> <div data-bbox="515 399 1792 1093" style="width: 70%; text-align: center;"> <p>यत्त्वं न छिंदियत्त्वं न भिंदियत्त्वं न वहेयत्त्वं न दुगुंछावत्तिर्यं च लब्धा उप्पाएउं, एवं फासिंदियभावणाभावितो भवति अंतरप्पा मणुन्नामणुन्नसुड्भिभुड्भिरागदोसपणिहियप्पा साहू मणवयणकायगुत्ते संबुडे पणिहित्ति- दिए चरिज्ज धम्मं ५ । एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ सुप्पणिहियं इमेहिं पंचहिवि कारणेहिं मणवयकायपरिरिक्खएहिं निच्चं आमरणंतं च एस जोगो नेयव्वो धितिमया मतिमया अणासवो अक- लुसो अच्छिहो अपरिस्सावी असंकिलिट्ठो सुद्धो सव्वज्जिमणुन्नातो, एवं पंचमं संवरदारं फासियं पालियं सोहियं तीरियं किट्ठियं अणुपालियं आणाए आराहियं भवति, एवं नायमुणिणा भगवया पन्नवियं परूवियं पसिद्धं सिद्धं सिद्धवरसासणमिणं आघवियं सुदेसियं पसत्थं पंचमं संवरदारं सम्मत्तंतिवेमि । एयातिं व- थाइं पंचवि सुव्वयमहव्वयाइं हेउसयविचित्तपुकलाइं कहियाइं अरिहंतसासणे पंच समासेण संवरा वित्थ- रेण उ पणवीसतिसमियसहियसंबुडे सया जयणघडणसुविसुद्धदंसणे एए अणुचरिय संजते चरमसरीरधरे भविस्सतीति (सू० २९) पणहावागरणे णं एगो सुयक्खंधो दस अज्जयणा एकसरगा दससु चैव दिवसेसु उदिसिज्जंति एगंतरेसु आयंबिलेसु निरुद्धेसु आउत्तभत्तपाणएणं अंगं जहा आयारस्स (सू० ३०) ॥ इति प्रश्नव्याकरणाख्यं दशमाङ्गं सूत्रतः समाप्तम् ॥ ग्रन्थाग्रम् १३००</p> <p>‘जो सो’त्ति योऽयं वक्ष्यमाणविशेषणः संवरवरपादपः चरमं संवरद्वारमिति योगः, किम्भूतः संवरवरपादप इत्याह-वीरवरस्य-श्रीमन्महावीरस्य यद्वचनं-आज्ञा ततः सकाशाद्या विरतिः-परिग्रहान्निवृत्तिः सैव प्रवि-</p> </div> <div data-bbox="1792 399 1982 1093" style="width: 15%;"> <p>५ धर्मद्वारे परिग्रहवि- रतौ संव- रपादपः भिक्षाअ- सन्निधि- र्भावनाश्च सू० २९  ॥ १५१ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२९]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[४५]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="text-align: center; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>स्तरो-विस्तारो यस्य संवरवरपादपस्य स तथा, बहुविधः-अनेकप्रकारः स्वरूपविशेषो यस्य स तथा, तत्र सं- वरपक्षे बहुविधप्रकारत्वं विचित्रविषयापेक्षया क्षयोपशमाद्यपेक्षया च पादपपक्षे च मूलकन्दादिविशेषापे- क्षयेति ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, सम्यक्त्वमेव-सम्पददर्शनमेव विशुद्धं-निर्दोषं मूलं-कन्दस्याधोवृत्ति यस्य स तथा, धृतिः-चित्तस्वास्थ्यं सैव कन्दः-स्कन्धाधोभागरूपो यस्य स तथा, विनय एव वेदिका-पार्श्वतः परिकररूपा यस्य स तथा, ‘निगमयतेलोकं’ति प्राकृतत्वात् त्रैलोक्यनिर्गतं-त्रैलोक्यगतं भुवनत्रयव्यापकं अत एव विपुलं-विस्तीर्णं यद् यशः-ख्यातिस्तदेव निश्चितो-निश्चिदः पीनः-स्थूलः पीवरो-महान् सुजातः-सुनि- ष्पन्नः स्कन्धो यस्य स तथा, पञ्च महाव्रतान्येव विशाला-विस्तीर्णाः शालाः-शाखा यस्य स तथा, भावनैव- अनित्यत्वादिचिन्ता त्वक्-वत्कलं यस्य, वाचनान्तरे भावनैव त्वगन्तो-वत्कावसानं यस्य स तथा, ध्यानं च-धर्मध्यानादि शुभयोगाश्च-सद्ग्यापाराः ज्ञानं च-बोधविशेषः तान्येव पल्लववरा-अङ्कुराः प्रवालप्रवरप्र- रोहाः तान् धारयति यः स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, बहवो ये गुणा-उत्तरगुणाः शुभफलरूपा वा त एव कुसुमानि तैः समृद्धो-जातसमृद्धिर्यः स तथा, शीलमेव-ऐहिकफलानपेक्षप्रवृत्तिः समाधानमेव वा सुगन्धः-सद्गन्धो यत्र स तथा, ‘अणुहवफलो’ति अनाश्रवः-अनाश्रवः नवकर्मानुपादानं स एव फलं यस्य स तथा, पुनश्च-पुनरपि मोक्ष एव वरबीजसारो-मिञ्जालक्षणः सारो यस्य स तथा, मन्दरगिरिशिखरे-मेरु- धराधरशिखरे या चूलिका-चूडा सा तथा सा इव अस्य-प्रत्यक्षस्य मोक्षवरे-वरमोक्षे सकलकर्मक्षयलक्षणे</p> </div> <p style="text-align: center; font-size: small;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५२ ॥

गन्तव्ये मुक्तिरेव-निर्लोभतैव मार्गः-पन्था मोक्षवरमुक्तिमार्गस्तस्य शिखरभूतः-शेखरकल्पः, कोऽसावि-  
त्याह-संवर एव-आश्रवनिरोध एव वरपादपः-प्रधानद्रुमः संवरवरपादपः, पञ्चप्रकारस्यापि संवरस्य उक्त-  
स्वरूपत्वे सत्यपि प्रकृताध्ययनमनुसरन्नाह-चरमं-पञ्चमं संवरद्वारं-आश्रवनिरोधमुखमिति, पुनर्विशेषय-  
न्नाह-यत्र-चरमसंवरद्वारे परिग्रहविरमणलक्षणे सति न कल्पते-न युज्यते परिग्रहीतुमिति सम्बन्धः, किं  
तदित्याह-ग्रामाकरनकरखेटकवर्षटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमगतं वा ग्रामादिव्याख्यानं पूर्ववत् वाशब्दो  
उत्तरपदापेक्षया विकल्पार्थः किञ्चिदिति-अनिर्दिष्टस्वरूपं सामान्यं सर्वमेवेत्यर्थः अल्पं वा-स्वल्पं मूल्यतो  
बहु वा-मूल्यत एव अणुं वा-स्तोकं प्रमाणतः स्थूलं वा-महत् प्रमाणत एव स तथा, 'तसथावरकायद्व-  
जायंति असकायरूपं-शङ्खादि सचेतनमचेतनं वा एवं स्थावरकायरूपं-रत्नादि द्रव्यजातं-वस्तुसामान्यं मन-  
साऽपि-चेतसाऽपि आस्तां कायेन परिग्रहीतुं-स्वीकर्तुं, एतदेव विशेषेणाह-न हिरण्यसुवर्णक्षेत्रवास्तु क-  
ल्पते परिग्रहीतुमिति प्रक्रमः, दासीदासभृतकप्रेष्यहयगजगवेलकं वा दास्यादयः प्रतीताः 'न यानयुग्यश-  
यनासनानि' यानं-रथादिकं युग्यं-वाहनमात्रं गोल्लकदेशप्रसिद्धो वा जंपानविशेषः न छत्रकं-आतपवारणं  
न कुण्डिका-कमण्डलुः नोपानहौ प्रतीते न पेहुणव्यञ्जनतालवृन्तकानि पेहुणं-मयूरपिच्छं व्यञ्जनं-वंशादि-  
मयं तालवृन्तकं-व्यञ्जनविशेष एव न चापि-नापि च अयो-लोहं त्रपुकं-वंगं ताम्रं-शुभ्रं (त्वं) सीसकं-नागं  
कांस्यं-त्रपुकताम्रसंयोगजं रजतं-रूप्यं जातरूपं-सुवर्णं मणयः-चन्द्रकान्ताद्याः मुक्ताधारपुटकं-शुक्ति-स-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५२ ॥

आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

स्पुटं शङ्खः-कम्बुः दन्तमणिः-प्रधानदन्तो हस्तिप्रभृतीनां दन्तजो वा मणिः शृङ्गं-विषाणं शैलः-पाषाणः पा-  
ठान्तरेण 'लेस'ति तत्र श्लेषः-श्लेषद्रव्यं काचवरः-प्रधानकाचः चेलं-वस्त्रं चर्म-अजिनमेतेषां द्रव्यः तत एषां  
सत्कानि यानि पात्राणि-भाजनानि तानि तथा महार्हाणि-महार्धानि बहुमूल्यानीत्यर्थः, परस्य-अन्यस्य  
अध्युपपातं च-ग्रहणैकाग्रचित्तां लोभं च-मूर्च्छां जनयन्ति यानि तानि अध्युपपातलोभजनानि 'परि-  
यद्विउ'ति परिकर्षयितुं परिवर्द्धयितुं वा परिपालयितुमित्यर्थः, न कल्पन्त इति योगः, 'गुणवओ'ति गुण-  
वतो मूलगुणादिसम्पन्नस्येत्यर्थः न चापि पुष्पफलकन्दमूलादिकानि सनः ससदशो येषां व्रीह्यादीनां तानि  
सनससदशकानि सर्वधान्यानि त्रिभिरपि योगैः-मनःप्रभृतिभिः परिग्रहीतुं कल्पन्त इति प्रकृतमेव, कि-  
मित्याह-औषधभैषज्यभोजनार्थाय-तत्रौषधं-एकाङ्गं भैषज्यं-द्रव्यसंयोगरूपं भोजनं-प्रतीतमेव 'संज्ञणं'ति  
विभक्तिपरिणामात् संयतस्य-साधोः, किं कारणं?-को हेतुरकल्पने, उच्यते, अपरिमितज्ञानदर्शनधरैः-सर्व-  
विद्विः शीलं-समाधानं गुणाः-मूलगुणादयः विनयः-अभ्युत्थानादिकः तपःसंयमौ प्रतीतौ तान्नयन्ति-  
वृद्धिं प्रापयन्ति ये ते तथा तैः, तीर्थकरैः-शासनप्रवर्तकैः सर्वजगज्जीववत्सलैः सर्वैः त्रैलोक्यमहितैः जिनाः-  
छद्मस्थवीतरागा तेषां वराः केवलिनः तेषां इन्द्रास्तीर्थकरनामकर्मोदयवर्त्तित्वाद् ये ते तथा तैः, एषा पुष्प-  
फलधान्यरूपा योनिः-उत्पत्तिस्थानं जगतां-जङ्गमानां त्रसानामित्यर्थो दृष्टा-उपलब्धा केवलज्ञानेन, ततश्च  
न कल्पते-न सङ्गच्छते योनिःसमुच्छेदः-योनिध्वंसः कर्तुमिति गम्यते, परिग्रहे औषधाद्युपयोगे च तेषां

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५३ ॥

सोऽवश्यं भावीति, इतिशब्द उपदर्शने, येनैवं तेन वर्जयन्ति-परिहरन्ति पुष्पफलधान्यभोजनादिकं, के ?  
श्रमणसिंहाः-मुनिपुङ्गवाः, यदपि च ओदनादि तदपि न कल्पते-सन्निधीकर्तुं सुविहितानामिति सम्बन्धः,  
तत्र ओदनः-कूरः कुल्माषाः-माषाः ईषत्स्विन्ना मुद्गादय इत्यन्ये गंजन्ति-भोज्यविशेषः तर्पणाः-सक्तवः ‘मं-  
धु’न्ति बदरादिचूर्णः ‘भुज्जिय’न्ति धानाः ‘पल्ल’न्ति तिलपुष्पपिष्टं सूपो-मुद्गादिविकारः शष्कुली-तिल-  
पर्पटिका वेष्टिमाः प्रतीताः वरसरकाणि चूर्णकोशकानि च रुद्धिगम्यानि पिण्डो-गुडादिपिण्डः शिखरिणी-  
गुडमिश्रं दधि ‘वट्’न्ति घनतीमनं मोदका-लड्डुकाः क्षीरं दधि च व्यक्तं सर्पिः-घृतं नवनीतं-ब्रक्षणं तैलं  
गुडं खण्डं च कण्ठ्यानि मच्छण्डिका-खण्डविशेषः मधुमद्यमांसानि प्रतीतानि खाद्यानि-अशोकवर्त्तयः  
व्यञ्जनानि-तक्रादीनि शालनकानि वा तेषां ये विधयः-प्रकाराः ते खाद्यकव्यञ्जनविधयस्तत एतेषां मोदका-  
दीनां द्रव्यः तत एते आदिर्यस्य तत्तथा प्रणीतं-प्रापितं उपाश्रये-वसतौ परिग्रहे वा अरण्ये-अटव्यां न  
कल्पते-न सङ्गच्छते तदपि सन्निधीकर्तुं-सञ्चयीकर्तुं सुविहितानां-परिग्रहपरिवर्जनेन शोभनानुष्ठानानां  
सुसाधूनामित्यर्थः, आह च-‘विडमुद्गेदिमं लवणं तैलं सर्पिश्च फाणितं । ण ते संनिहिमिच्छन्ति, नायपु-  
त्तवए रया ॥ १ ॥’ इति, [विडमुद्गेदिमं लवणं तैलं सर्पिश्च फाणितं । न तानि सन्निधातुमिच्छन्ति ज्ञात-  
पुत्रवचसि रताः ॥ १ ॥] यदपि चोद्दिष्टादिरूपमोदनादि न कल्पते तदपि च परिग्रहीतुमिति सम्बन्धः, उ-  
द्दिष्टं-यावदर्थिकान् पाखण्डिनः श्रमणान्-साधून् उद्दिश्य दुर्भिक्षापगमादौ यद्भिक्षावितरणं तदौद्देशिक-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५३ ॥



आगम  
(१०)

## प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

मुद्दिष्टं, आह च—“उद्दिसिय साहुमाई ओमव्वयभिव्ववियरणं जं च”ति [ अवमव्यये साध्वादिकमु-  
दिश्य यद्भिक्षावितरणं ] स्थापितं-प्रयोजने याचितं गृहस्थेन च तदर्थं स्थापितं यत्तत् स्थापितं, आह च—  
“ओहासियस्वीराईठावणं ठवण साहुण्डाए” [ याचितानां क्षीरादीनां साधूनामर्थाय स्थापनं स्थापना ] रचि-  
तकं-मोदकचूर्णादि साध्वाद्यर्थं प्रताप्य पुनर्मोदकादितया विरचितं, औद्देशिकभेदोऽयं कर्माभिधान उक्तः,  
पर्यवजातं-पर्यवः-अवस्थान्तरं जातो यत्र तत्पर्यवजातं कूरादिकमुद्धरितं दध्यादिना विमिश्रितं करम्बादिकं  
पर्यायान्तरमापादितमित्यर्थः अयमप्यौद्देशिकभेदः कृताभिधान उक्तः, प्रकीर्णं-विक्षिप्तं विच्छर्दितं-परिशाटी-  
त्यर्थः, अनेन च छर्दिताभिधान एषणादोष उक्तः, ‘पाउकरण’ति प्रादुःक्रियते-अन्धकारापवरकादेः साध्वर्थं  
बहिःकरणेन दीपमण्यादिधरणेन वा प्रकाश्यते यत्तत् प्रादुष्करणमशानादि, आह च—“णीयडुवारंधारे  
गवक्खकरणाइ पाउओ पाउ । करणं तु” [ नीचद्वारेऽन्धकारे गवाक्षकरणादि प्रादुष्करणं तु ] ‘पामिच्चं’ति  
अपमित्यकं उद्यतकं-उच्छिन्नमित्यर्थः आह च—“पामिच्चं जं साहुण्डा ओछिदिउं दियावेति”ति [ अपमित्यं  
यत् साधूनामर्थाय उद्यतकं गृहीत्वा ददाति ] एषां च समाहारद्वन्द्वः, ‘मीसक’ति मिश्रजातं साध्वर्थं गृह-  
स्थार्थं चादित उपस्कृतं, आह च—“पढमं चिय गिहिसंजयमीसोवक्खडाह मीसं तु” [ प्रथममेव गृहिसंय-  
तयोर्मिश्रं उपस्करणादि मिश्रं तु ] ‘कीयगड’ति क्रीतेन-क्रयेण कृतं-साधुदानाय कृतं क्रीतकृतं, आह च—  
‘दव्वाइएहिं किणणं साहुण्डाए कीयं तु’ [ द्रव्यादिभिः साधूनामर्थाय क्रयणं क्रीतं तु ] ‘पाहुडं व’ति

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५४ ॥

प्राभृतं प्राभृतिकेत्यर्थः, तल्लक्षणं चेदम्—“सुदुमेयरमुस्सकणभवसकणमो य पाहुडिया” [सूक्ष्मेतरत् उ-  
त्त्वष्कणभवष्कणं च प्राभृतिका ] ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः समाहारद्वन्द्वः, वाशब्दः पूर्ववाक्यापेक्षया  
विकल्पार्थः, दानमर्थो यस्य तदानार्थं, पुण्यार्थं प्रकृतं-साधितं पुण्यप्रकृतं, पदद्वयस्य द्वन्द्वः, तथा श्रमणाः  
पञ्चविधाः ‘निगन्धसकतावस गेरुयआजीव पंचहा समणा’ वनीपकाश्च-तर्कुकास्त एवार्थः-प्रयोजनं यस्य त-  
त्तथा तद्भावस्तथा तथा, वा विकल्पार्थः कृतं-निष्पादितं, इह कश्चिद्दाता दानमेवालंबते दातव्यं मयेति अ-  
न्यस्तु पुण्यं पुण्यं मम भूयादित्येवं अन्यस्तु श्रमणान् अन्यस्तु वनीपकानिति चत्वारोऽप्यौद्देशिकस्य भेदा एते  
उक्ता इति, “पच्छाकम्म”ति पश्चात्-दानानन्तरं कर्म-भाजनधावनादि यत्राशनादौ तत्पश्चात्कर्म ‘पुरेक-  
म्मंति पुरो-दानात् पूर्वं कर्म-हस्तधावनादि यत्र तत्पुरःकर्म ‘णिइयं’ति नैत्यिकं सार्वदिकमवस्थितं मनुष्य-  
पोषादिप्रमाणं ‘मक्खियं’ति उदकादिना संसृष्टं, यदाह—“मक्खियमुदकाइणा उ जं जुत्तं” [अक्षितं यदु-  
दकादिना युक्तं।] अयमेषणादोष उक्तः, ‘अतिरिक्तं’ति, ‘वत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ  
भणितो। पुरिसस्स महिलियाए अट्टावीसं भवे कवला ॥ १ ॥” एतत्प्रमाणातिक्रान्तमतिरिक्तं, अयं च  
मण्डलीदोष उक्तः ‘मोहरं चेव’ति मौख्येण पूर्वसंस्तवपश्चात्संस्तवादिना बहुभाषित्वेन यल्लभ्यते तन्मौ-  
खरं अयमुत्पादनादोष उक्तः, ‘सयग्गह’ति स्वयं-आत्मना दत्तं गृह्यते यत्तत्स्वयंग्राहं, अयमपरिणताभि-  
धान एषणादोष उक्तः, दायकस्य दानेऽपरिणतत्वादिति, ‘आहडं’ति स्वग्रामादेः साध्वर्थमाहृतं-आनीतं,

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५४ ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

आह च—“सग्गामपरग्गामा जमाणियं आहडं तु तं होइ।” [स्वग्रामात् परग्रामात् यदानीतमाहृतं तु तद्भवति] ‘मट्टिओवलित्तं’ति, उपलक्षणत्वान्मृत्तिकाग्रहणस्य मृत्तिकाजतुगोमयादिना उपलिसं सत् यदु-  
द्विच ददाति तन्मृत्तिकोपलिसं उद्विन्नमित्यर्थः, आह च—“छगणाइणोवलित्तं उद्विन्दिय जं तमुद्विण्णं”  
[छगणादिनोपलिसमुद्विच यत्तदुद्विन्नं] ‘अच्छेणं चैव’त्ति आच्छेयं यदाच्छिद्य भृत्यादिभ्यः स्वामी ददाति,  
आह च—“अच्छेज्जं अच्छिन्दिय जं सामिय भिच्चमाईणं” [यत् स्वामी भृत्यादिभ्य आच्छिद्य ददाति तदा-  
च्छेयं] अनिसृष्टं-बहुसाधारणं सत् यदेक एव ददाति “अणिसिद्धं सामण्णं गोद्वियभत्ताइ ददउ एगस्स”  
[गोष्ठीकभक्तादि यत् सामान्यं तदेकस्य ददतोऽनिसृष्टं] एतेषूद्दिष्टादिषु प्राय उद्गमदोषा उक्ताः, तथा  
यत्तत्तिथिषु-मदनत्रयोदश्यादिषु यज्ञेषु-नागादिपूजासु उत्सवेषु च-शक्रोत्सवादिषु अन्तर्बहिर्वा उपाश्र-  
यात् भवेत् श्रमणार्थं स्थापितं-दानायोपस्थापितं हिंसालक्षणं यत्सावद्यं तत्सम्प्रयुक्तं न कल्पते तदपि च  
परिग्रहीतुं, अथेति परप्रश्ने, कीदृशं?-किंविधं ‘पुणाइ’ति पुनः कल्पते-सद्गच्छते परिग्रहीतुमोदनादीनि  
प्रकृतं, उच्यते, यत्तदेकादशपिण्डपातशुद्धं-आचारस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धप्रथमाध्ययनस्यैकादशभिः पिण्ड-  
पाताभिधायकैरुद्देशैर्विशुद्धं-तदुक्तदोषविमुक्तं यत्तत्तथा, तथा ऋयणं हननं-विनाशनं पचनं च-अग्निपाक  
इति द्वन्द्वः एषां यानि कृतकारितानुमोदनानि-स्वयं करणकारणानुमतयः तानि तथा त एव नवकोट्यो वि-  
भागा इति समासः, ताभिः सुपरिशुद्धं-निर्दोषं दशभिश्च दोषैर्विमुक्तं ते च शङ्कितादय एषणादोषाः,



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५५ ॥

उद्गमः-आधाकर्मादिः षोडशविधः उत्पादना-धाव्यादिका षोडशविधैव एतद्द्वयमेषणागवेषणाभिधाना  
उद्गमोत्पादनैषणा तथा शुद्धं, 'ववगयचुयचावियचत्तदेहं च'सि व्यपगतं-ओघतया चेतनापर्यायादचे-  
तनत्वं प्राप्तं च्युतं-जीवनादिक्रियाभ्यो भ्रष्टं व्यावितं-तेभ्य एव आयुःक्षयेण भ्रंसितं त्यक्तदेहं-परित्यक्तजी-  
वसंसर्गसमुत्थशक्तिजनिताहारादिपरिणामप्रभवोपचयं यत्तत्तथा चः समुच्चये तथा प्रासुकं च-निर्जी-  
वमित्येतत्पूर्वोक्तस्यैव व्याख्यानं कल्पते ग्रहीतुमिति प्रक्रमः, तथा व्यपगतसंयोगमनङ्गारं विगतधूमं चेति पू-  
र्ववत्, षट् स्थानकानि निमित्तं यस्य भैक्षवर्त्तनस्य तत्तथा, तानि चामूनि-“वेयण १ वेयावच्चे २ इरिय-  
डाए ३ य संजमडाए ४ । तह पाणवत्तियाए ५ छट्टं पुण धम्मचिंताए ॥ १ ॥”सि [क्षुदादि वैयावृत्त्यं ईर्यार्थं  
संयमार्थं तथा प्राणप्रत्ययाय षष्ठं पुनर्धर्मचिन्तायै ॥ १ ॥] षट्कायपरिरक्षणार्थमिति व्यक्तं, 'हणिं हणि'न्ति  
अहनि अहनि प्रतिदिनं सर्वथापीत्यर्थः प्रासुकेन भैक्ष्येण-भिक्षादिसमूहेन वर्त्तितव्यं-वृत्तिः कार्या, तथा  
यदपि च औषधादि तदपि सन्निधिकृतं न कल्पत इत्यक्षरघटना, कस्य न कल्पत इत्याह-श्रमणस्य-  
साधोः सुविहितस्य-अपार्श्वस्थादेः, तुर्वाक्यालङ्कारे, कस्मिन् सतीत्याह-रोगातङ्को-रोगो ज्वरादिः स चासा-  
वातङ्कश्च-कृच्छ्रजीवितकारी रोगातङ्कः तत्र बहुप्रकारे-विविधे समुत्पन्ने-जाते 'वायाहिक'सि वाताधिक्यं  
'पित्तसिंभाइरित्तकुविय'सि पित्तसिंभयोः-वायुश्लेष्मणोरतिरिक्तकुपितं-अतिरेककोपः पित्तसिंभातिरिक्त-  
कुपितं तथेति तथाप्रकार औषधादिविषयो यः सन्निपातो-वातादित्रयसंयोगः जातः-सम्पन्नः तथा तत्पद-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५५ ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

त्रयस्य द्वन्द्वैकत्वं ततस्तत्र च सति, अनेन च रोगातङ्कनिदानमुक्तं, तथा उदयप्राप्ते-उदिते सति, केत्याह-  
उज्ज्वलं-सुखलेशवर्जितं बलं-बलवत् कष्टोपक्रमणीयं विपुलं-विपुलकालवेद्यं त्रितुलं वा-त्रीन् मनःप्रभृ-  
तीन् तुलयति-तुलामारोपयति कष्टावस्थीकरोतीति त्रितुलं कर्कशं-कर्कशद्रव्यमिवानिष्टं प्रगाढं-प्रकर्षवत् य-  
दुःखं-असुखं तत्तथा तत्र, किंभूते इत्याह-अशुभः असुखो वा कटुकद्रव्यमिवानिष्टः परुषः-परुषस्पर्शद्रव्य-  
मिवानिष्ट एव चण्डो-दारुणः फलविपाकः-कार्यनिष्ठा दुःखानुबन्धलक्षणो यस्य तत्तथा तत्र, महद्भयं  
यस्मात्तन्महाभयं तत्र जीवितान्तकरणे-सर्वशरीरपरितापनकरे न कल्पते-न युज्यते, तादृशोऽपि-रोगात-  
ङ्कादौ यादृशो न सोढुं शक्यते ‘तह’त्ति तेन प्रकारेण पुष्टालम्बनं विना, सालम्बनस्य पुनः कल्पत एव,  
यतः—“काहं अछित्तिं अहुवा अहीहं, तवोवहाणेसु य उज्जमिस्सं । गणं व णीईएँ उ सारविस्सं, सालम्ब-  
सेवी समुवेइ सुक्खं ॥ १ ॥” [ करिष्याम्यच्छित्तिमथवाऽध्येये तपउपधानयोश्चोद्यंस्यामि । गणं वा नीत्या-  
प्रवर्त्तयिष्यामि सालम्बनसेवी समुपयाति मोक्षं ॥ १ ॥ ] आत्मने परस्मै वा निमित्तं औषधभैषजं भक्तपानं  
च तदपि न सन्निधिकृतं-सञ्चयीकृतं परिग्रहविरतत्वात् यदपि च श्रमणस्य सुविहितस्य तुशब्दो भाषा-  
मात्रे पतद्ग्रहधारिणः-सपात्रस्य भवति भाजनं च-पात्रं भाण्डं च-मृन्मयं तदेव उपधिश्च-औधिकः उप-  
करणं च-औपग्रहिकं अथवा भाजनं च भाण्डं चोपधिश्चैलेवंरूपमुपकरणं भाजनं भाण्डोपध्युपकरणं, तदे-  
वाह-पतद्ग्रहः-पात्रं पात्रबन्धनं-पात्रबन्धः पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जनपोतिका पात्रस्थापनं-यत्र कम्ब-

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५६ ॥

लखण्डे पात्रं निधीयते पटलानि-भिक्षावसरे पात्रप्रच्छादकानि वस्त्रखण्डानि 'तिन्नेव'त्ति तानि च यदि सर्वस्तोकानि तदा त्रीणि भवन्ति, अन्यथा पञ्च सप्त चेति, रजस्त्राणं च-पात्रवेष्टनचीवरं गोच्छकः-पात्र-वस्त्रप्रमार्जनहेतुः कम्बलशकलरूपः त्रय एव प्रच्छादा द्वौ सौत्रिकौ तृतीय ऊर्णिकः रजोहरणं प्रतीतं चोल-पट्टकः-परिधानवस्त्रं मुखानन्तकं-मुखवस्त्रिका एषां द्वन्द्वः तत एतान्यादिर्यस्य तत्तथा, एतदपि संयमस्यो-पवृंहणार्थं-उपष्टम्भार्थं न परिग्रहसंज्ञया, आह—“जंपि वत्थं च पायं वा, कंबलं पायपुंछणं । तंपि संजम-लज्जडा, धारंति परिहरंति य ॥ १ ॥ परिभुञ्जते इत्यर्थः, 'न सो परिग्रहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा । मुच्छा परिग्रहो वुत्तो, इति वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥” अस्मद्गुरुणेत्यर्थः [ यदपि वस्त्रं च पात्रं वा कम्बलं पादप्रो-च्छनं । तदपि संयमलज्जार्थं धारयन्ति परिभुञ्जते च ॥ १ ॥ न स परिग्रह उक्तो ज्ञातपुत्रेण तायिना । मूर्च्छा परिग्रह उक्त इत्युक्तं महर्षिणा ॥ २ ॥ ] तथा वातातपदंशमशकशीतपरिरक्षणार्थतया उपकरणं-रजोहर-णादिकं रागद्वेषरहितं यथा भवतीत्येवं परिहर्त्तव्यं-परिभोक्तव्यं संयतेन नित्यं, एवमपरिग्रहताऽस्य भवति, आह च—“अज्जत्थविसोहीए उवगरणं वाहिरं परिहरंतो । अपरिग्रहोत्ति भणितो जिणेहिं तेलोक्कदं-सीहिं ॥ १ ॥” [ अध्यात्मविशोद्धया बाह्यमुपकरणं परिभुञ्जन् अपरिग्रह इति भणितो जिनैस्त्रैलोक्यदर्शिभिः ॥१॥ ] तथा प्रत्युपेक्षणं-चक्षुषा निरीक्षणं प्रस्फोटनं-आस्फोटनं आभ्यां सह या प्रमार्जना-रजोहरणादिक्रिया सा तथा तस्यां 'अहो य राओ यंत्ति रात्रिन्दिवं अप्रमत्तेन-अप्रमादिना भवति सततं निक्षेप्तव्यं-मोक्तव्यं

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५६ ॥



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

ग्रहीतव्यं चेति, किन्तदित्याह—भाषणभंडोवहिउवगरणं, एवं-अनेन न्यायेन संयतः-संयमी विमुक्तः-  
त्यक्तधनादिः निःसङ्गः-अभिष्वङ्गवर्जितः निर्गता परिग्रहे रुचिर्यस्य स तथा निर्ममो-प्रमेतिशब्दवर्जी निःस्नेह-  
बन्धनश्च यः स तथा, सर्वपापविरतः, वास्यां-अपकारिकायां चन्दने च-उपकारके समानः-तुल्यः कल्पः-  
समाचारो विकल्पो वा यस्य स तथा, द्वेषरागविरहित इत्यर्थः, समा-उपेक्षणीयत्वेन तुल्या तृणमणिमुक्ता  
यस्य स तथा, लेष्टौ काश्चने च समः-उपेक्षकत्वेन तुल्यो यः स तथा, ततः कर्मधारयः, समश्च हर्षदैन्या-  
भावात् मानेन-पूजया सहापमानता तस्यां, शमितं-उपशमितं रजः-पापं रतं वा-रतिर्विषयेषु रयो वा-  
औत्सुक्यं येन शमितरजाः शमितरतः शमितरयो वा-शमितरागद्वेषः समितः समितिषु पञ्चसु सम्यग्दृष्टिः-  
सम्यग्दर्शनी, समश्च यः सर्वप्राणभूतेषु, तत्र प्राणा-द्वीन्द्रियादित्रसाः भूतानि-स्यावराः, ‘से ह्यु समणे’ति  
स एव श्रमण इति वाक्ये निष्ठा, किंभूतोऽसावित्याह-श्रुतधारकः ऋजुकः-अवक्रः उद्यतो वा-अनलसः  
संयमी, सुसाधुः-सुष्टु निर्वाणसाधनपरः शरणं-त्राणं सर्वभूतानां-शुथिव्यादीनां रक्षणादिना सर्वजगद्-  
त्सलः-सर्वजगद्वात्सल्यकर्ता हित इत्यर्थः, सत्यभाषकश्चेति, संसारान्ते स्थितश्च ‘संसारसमुच्छिण्णे’ति समु-  
च्छिन्नसंसारः सततं-सदा मरणानां पारगः सर्वदेव तस्य न बालादिमरणानि भविष्यन्तीत्यर्थः, पारगश्च  
सर्वेषां संशयानां छेदक इत्यर्थः, प्रवचनमातृभिरष्टाभिः-समितिपञ्चकगुप्तित्रयरूपाभिः करणभूताभिरष्टक-  
र्मरूपो यो ग्रन्थिस्तस्य विमोचको यः स तथा, अष्टमानसधनः-अष्टमदस्थाननाशकः स्वसमयकुशलश्च-स्व-

२७

Jain Education International

For Personal & Private Use Only

www.jainelibrary.org

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५७ ॥

सिद्धान्तनिपुणश्च भवति सुखदुःखनिर्विशेषो-हर्षादिरहित इत्यर्थः, ‘अभिन्तरवाहिरे’ति अभ्यन्तरस्यैव शरीरस्य कर्मलक्षणस्य तापकत्वादाभ्यन्तरं-प्रायश्चित्तादि षड्विधं बाह्यस्याप्यौदारिकलक्षणस्य शरीरस्य ताप-कत्वाद् बाह्यं-अनशनादि षड्विधं अनयोश्च द्वन्द्वस्तत आभ्यन्तरवाह्ये सदा-नित्यं तप एव उपधानं-गुणोपष्ट-म्भकारि तपउपधानं तत्र च सुष्ठुयुक्तः-अतिशयेनोद्यतः क्षान्तः-क्षमावान् दान्तश्च-इन्द्रियदमेन ‘हियनिरए’ति आत्मनः परेषां च हितकारीत्यर्थः, पाठान्तरे धृतिनिरतः, ‘ईरिए’त्यादीनि दश पदानि पूर्वोक्तार्थप्रपञ्चरूपाणि प्रतीतार्थान्येव, तथा त्यागात्-सर्वसङ्गत्यागात् संविग्रमनोज्ञसाधुदानाद्वा ‘लज्जु’ति रज्जुरिव रज्जुः सरलत्वात् धन्यो-धनलाभयोगयोग्यत्वात् तपस्वी प्रशस्ततपोयुक्तत्वात् क्षान्त्या क्षमते न त्वसामर्थ्यादिति क्षान्तिक्षमः जितेन्द्रिय इति व्यक्तं शोभितो गुणयोगात् शोधितो वा शुद्धिकारी सुहृद्वा सर्वप्राणिमित्रं अनिदानो-निदानपरिहारी संयमात् न बहिर्लेश्या-अन्तःकरणवृत्तिर्यस्य सोऽबहिर्लेश्यः अममो-ममकारवर्जितः अ-किञ्चनो-निर्द्रव्यः छिन्नग्रन्थः-वृद्धितस्नेहः पाठान्तरे ‘छिण्णसोय’ति छिन्नशोकः अथवा छिन्नश्रोताः, तत्र श्रोतो द्विविधं-द्रव्यश्रोतो भावश्रोतश्च, तत्र द्रव्यश्रोतो-नद्यादिप्रवाहः भावश्रोतश्च-संसारसमुद्रपात्यशुभो लोकव्यवहारः स छिन्नो येन स तथा, निरूपलेपः-अविद्यमानकर्मानुलेपः एतच्च विशेषणं भाविनि भूतवदु-पचारमाश्रित्योच्यते, सुविमलवरकांस्यभाजनमिव विमुक्तो यः श्रमणपक्षे तोयमिव तोयं-सम्बन्धहेतुः स्नेहः शङ्ख इव निरञ्जनः-अविद्यमानरञ्जनः साधुपक्षे रञ्जनं-जीवस्वरूपपरञ्जनकारि रागादिकं वस्तु, अत

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भाविनाश्च  
सू० २९

॥ १५७ ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

एवाह-विगतरागद्वेषमोहः, कूर्म इव इन्द्रियेषु गुप्तः यथा हि कच्छपः ग्रीवापञ्चमैश्चतुर्भिः पदैः कदाचिद् गुप्तो भवतीत्येवं साधुरपीन्द्रियेषु, इन्द्रियानाश्रित्येत्यर्थः, जात्यकाञ्चनमिव जातरूपः रागादिकुद्रव्यापोहाल्लङ्घ-  
स्वरूप इत्यर्थः, पुष्करपत्रमिव-पद्मदलमिव निरुपलेपो भोगगृद्धिलेपापेक्षया, चन्द्र इव सौम्यतया पाठान्तरेण सौम्यभावतया-सौम्यपरिणामेन अनुपतापकतया सूर इव दीप्ततेजाः-तपस्तेजः प्रतीत्य अचलो-निश्चलः परी-  
षहादिभिः यथा मन्दरो गिरिवरो मेरुरित्यर्थः अक्षोभः-क्षोभवर्जितः सागर इव स्तिमितः भावकल्लोलर-  
हितः तथा पृथिवीव सर्वस्पर्शाविषहः शुभाशुभस्पर्शेषु समचित्त इत्यर्थः, 'तवसाविय'त्ति तपसाऽपि च हेतु-  
भूतेन भस्मराशिच्छन्न इव जाततेजाः-बहिः, भावनेह-यथा भस्मच्छन्नो बहिरन्तर्ज्वलति बहिर्म्लानो भवती-  
त्येवं श्रमणः शरीरमाश्रित्य तपसा म्लानो भवति अन्तः शुभलेइयया दीप्यत इति, ज्वलितहुताशन इव तेजसा ज्वलन् साधुपक्षे तेजो-ज्ञानं भावतमोविनाशकत्वात्, गोशीर्षचन्द्रनमिव शीतलो मनःसन्तापो-  
पशमनात् सुगन्धिश्च शीलसौगन्ध्यात् हृदक इव-नद इव सम एव समिकः स्वभावो यस्य स तथा, यथा हि वाताभावे हृदः समो भवति अनिश्चोन्नतजलोपरिभाग इत्यर्थः तथा साधुः सत्कारन्यत्कारयोरनुन्नता-  
निम्नभावतया समो भवतीति, उद्घृष्टसुनिर्मलमिवाददर्शमण्डलतलं प्रकटभावेन-निर्मायतया अनिगूहित-  
भावेन सुखभावः-शोभनस्वरूपः शुद्धभावो वेति शोण्डीरः-चारभटः कुञ्जर इव परीषहसैन्यापेक्षया वृषभ इव जातस्थामा-अङ्गीकृतमहाव्रतभारोद्बहने जातसामर्थ्यः सिंहो वा यथा मृगाधिप इति स्वरूपविशेषणं



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५८ ॥

भवति दुष्प्रवृत्त्यः-अपरिभवनीयो मृगाणामिव साधुः परीषहाणामिति, शारदसलिलमिव शुद्धहृदयो यथा शारदं जलं शुद्धं भवतीत्येवमयं शुद्धहृदय इति भावना, भारण्ड इव अप्रमत्तः यथा भारण्डाभिधानः पक्षी अप्रमत्तश्चकितो भवतीत्येवमयमपीति, खड्गः-आटव्यश्चतुष्पदविशेषः स खोकशृङ्गो भवतीत्युच्यते खड्गविषाणमिवैकजातो रागादिसहायवैकल्यादेकीभूत इत्यर्थः, स्थाणुरिवोर्ध्वकायः कायोत्सर्गकाले शून्यागारमिवाप्रतिकर्म इति व्यक्तं ‘सुण्णागारावणस्संतो’ति शून्यागारस्य शून्यापणस्य चान्तः-मध्ये वर्त्तमानः, किमिव किंविध इत्याह-निर्वातशरणप्रदीपध्यानमिव-वातवर्जितगृह्दीपज्वलनमिव त्रिष्प्रकम्पो-दिव्याद्युपसर्गसंसर्गोऽपि शुभध्याननिश्चलः ‘जहा खुरे चेव एगधारे’ति चेवशब्दः समुच्चये यथा क्षुर एकधार एवं साधुरुत्सर्गलक्षणैकधारः ‘जहा अही चिब एगदिट्ठि’ति यथा अहिरेकदृष्टिः-बद्धलक्षः एवं साधुर्मोक्षसाधनैकदृष्टिः ‘आगासं चेव निरालंबे’ति आकाशमिव निरालम्बो यथा आकाशं निरालम्बनं-न किञ्चिदालम्बते एवं साधुर्ग्रामदेशकुलाद्यालम्बनरहित इत्यर्थः, विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः, निष्परिग्रह इत्यर्थः, तथा परकृतो निलयो-वसतिर्यस्य स परकृतनिलयो यथोरगः-सर्पः, तथा अप्रतिबद्धः-प्रतिबन्धरहितः अनिल इव-वायुरिव जीव इव वा अप्रतिहतगतिः, अप्रतिहतविहार इत्यर्थः, ग्रामे ग्रामे चैकरात्रं यावत् नगरे नगरे च पञ्चरात्रं ‘दृहज्जंते’ इति विहरंश्चेत्यर्थः, एतच्च भिक्षुप्रतिमाप्रतिपन्नसाध्वपेक्षया सूत्रमवगन्तव्यं, कुत एवंविधोऽसावित्याह-जितेन्द्रियो-जितपरीषहो यत इति, निर्भयो-भयरहितः ‘विउ’ति विद्वान्-गीतार्थः

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५८ ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

पाठान्तरेण विशुद्धो-निरतिचारः सचित्ताचित्तमिश्रकेषु द्रव्येषु विरागतां गतः सञ्चयाद्विरतः मुक्त इव मुक्तः लघुकः गौरवत्रयत्यागात् निरवकाङ्क्षः-आकाङ्क्षावर्जितः जीवितमरणयोराशया-वाञ्छया विप्रमुक्तो यः स तथा, निःसन्धि-चारित्रपरिणामव्यवच्छेदाभावेन निःसन्निधानं निर्ब्रणं-निरतिचारं चारित्रं-संयमो धीरो-बुद्धिमान् अक्षोभो वा कायेन-कायक्रियया न मनोरथमात्रेण स्पृशन् सततं-अनवरतं अध्यात्मना-शुभमनसा ध्यानं यत्नेन युक्तो यः स तथा निभृतः-उपशान्तः एको रागादिसहायाभावात् चरेद्-अनुपालयेत् धर्म-चारित्रलक्षणमिति । ‘इमं चेत्यादि रक्खणट्टयाए’ इत्येतदन्तं सुगमं, नवरं अपरिग्रहरूपं विरमणं यत्तत्तथा ‘पढमं’ति पञ्चानां मध्ये प्रथमं भावनावस्तु शब्दनिःस्पृहत्वं नाम, तच्चैवं-श्रोत्रेन्द्रियेण श्रुत्वा शब्दान् मनोज्ञाः सन्तो ये भद्रकास्ते मनोज्ञभद्रकास्तान् ‘किंते’ति तद्यथा वरसुरजा-महामर्दलाः सृदङ्गा-मर्दला एव पणवा-लघुपटहाः ‘दहुर’ति दर्दुरदः चर्मावनद्रमुखः कलशः कच्छभी-वाद्यविशेषः वीणा विपञ्ची वल्लकी च वीणाविशेषाः वल्लीसकं-वाद्यविशेष एव सुघोषा-घण्टाविशेषः नन्दी-द्वादशतूर्यनिर्घोषः तानि चामूनि—“भंभा मउंद महल हुडुक्क तिलिमा य करड कंसाला । काहल वीणा वंसो संखो पणवओ य बारसमो ॥ १ ॥” तथा सूसरपरिवादिनी-वीणाविशेष एव वंशो-वेणुः तूणको-वाद्यविशेषः पर्वकोऽप्येवं तञ्जी-वीणाविशेष एव तला-हस्ततालास्तालाः-कंसिकाः तलताला वा-हस्ततालाः एतान्येव तूर्याणि-वाद्यानि एषां यो निर्घोषो-नादः तथा गीतं-गेयं वादितं च-वाद्यं सामान्यमिति द्वन्द्वः ततः श्रुत्वेति योगात् द्वितीया,

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १५९ ॥

तथा नटनर्त्तकजल्लमल्लमौष्टिकविडम्बककथकप्लवकलासकाख्यायकलंखमंखतूणहल्लतुंबवीणिकतालाचरैः पूर्व-  
व्याख्यातैः प्रक्रियन्ते-विधीयन्ते यानि तानि नटादिप्रकरणानि, तानि च कानीत्याह-बहूनि अनेकानि  
मधुरस्वराणां-कलध्वनीनां गाथकानां यानि गीतानि सुस्वराणि तानि श्रुत्वा तेषु श्रमणेन न सक्तव्यमिति  
सम्बन्धः, तथा काञ्ची-कट्याभरणविशेषः मेखलापि तद्विशेष एव कलापको-ग्रीवाभरणं प्रतरकाणि प्रहेरकः-  
आभरणविशेषः पादजालकं-पादाभरणं घण्टिकाः-प्रतीताः किंकिण्यः-क्षुद्रघण्टिकाः तत्प्रधानं ‘रयण’ति  
रत्नसम्बन्धी उर्वोः-वृहज्जङ्घयोर्जालकं यत्तत्तथा ‘छुड्डिय’ति क्षुद्रिका आभरणविशेषः नूपुरं-पादाभरणं चलन-  
मालिकाऽपि तथैव कनकनिगडानि जालकं चाभरणविशेषः एतान्येव भूषणानि तेषां ये शब्दास्ते तथा तान्  
किंभूतानित्याह-लीलाचङ्कम्यमाणानां-हेलया कुटिलगमनं कुर्वाणानामुदीरितान्-सञ्जातान् लीलासञ्चरण-  
सञ्जनितानित्यर्थः, तथा तरुणीजनस्य यानि हसितानि भणितानि च कलानि च-माधुर्यविशिष्टध्वनिविशे-  
षरूपाणि रिभितानि- खरघोलनावन्ति मञ्जुलानि च-मधुराणि तानि तथाऽतस्तानि, तथा गुणवचनानि च-  
स्तुतिवादांश्च बहूनि-प्रचुराणि मधुरजनभाषितानि-अमत्सरलोकभणितानि श्रुत्वा, किमित्याह-तेष्वित्यु-  
त्तरस्येह सम्बन्धात् तेषु अन्येषु चैवमादिकेषु-एवंप्रकारेषु शब्देषु मनोज्ञभद्रकेषु न, तेष्विति योजितमेव,  
श्रमणेन सक्तव्यमिति सम्बन्धः कार्यः, न रक्तव्यं-न रागकार्यः न गर्दितव्यं-अप्रासेष्वाकाङ्क्षा न कार्या न  
मोहितव्यं-तद्विपाकपर्यालोचनायां न मूढेन भाव्यं न विनिघातं-तदर्थमात्मनः परेषां वा विनिहननं आपत्तव्यं

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १५९ ॥



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

न लोब्धव्यं-सामान्येन लोभो न विधेयः न तोष्टव्यं-प्राप्तौ न तोषो विधेयः न हसितव्यं-प्राप्तौ विस्मयेन हासो न विधेयो न स्मृतं वा-स्मरणं मर्ति वा-तद्विषयं ज्ञानं 'तत्थ'सि तेषु शब्देषु कुर्यात्, पुनरपि चेति-शब्दगतं प्रकारान्तरं पुनरन्यदपि चोच्यत इत्यर्थः, श्रोत्रेन्द्रियेण श्रुत्वा शब्दान् अमनोज्ञाः सन्तो ये पापकास्ते अमनोज्ञपापकाः तान् 'किंते'सि तद्यथा आक्रोशो-त्रियस्वेत्यादि वचनं परुषं-रे मुण्ड! इत्यादिकं खिसनं-निन्दावचनं अशीलोऽसावित्यादिकं अपमानं-अपूजावचनं यूयमित्यादिवाच्ये त्वमित्यादि यथा, तर्जनं-ज्ञा-स्यसि रे इत्यादि वचनं निर्भर्त्सनं-अपसर मे दृष्टिमागादित्यादिकं दीप्तवचनं-कुपितवचनं त्रासनं-फेत्का-रादिवचनं भयकारि उत्कूजितं-अव्यक्तमहाध्वनिकरणं रुदितं-अश्रुविमोचनयुक्तं शब्दितं रदितं-आरट्टीरूपं क्रन्दितं-आक्रन्दः इष्टवियोगादाविव निर्धुष्टं-निर्धोषरूपं रसितं-शूकरादिशब्दितमिव करुणोत्पादकं विल-पितं-आर्त्तस्वरूपमित्येतेषां द्वन्द्वः ततस्तानि श्रुत्वा तेष्विति सम्बन्धात् तेषु-आक्रोशादिशब्देषु अन्येषु चैवमादिकेषु शब्देषु अमनोज्ञपापकेषु न, तेष्विति योजितमेव, श्रमणेन रोषितव्यं न हीलितव्यं-नावज्ञा कार्या न निन्दितव्यं-निन्दा न कार्या न खिसितव्यं-लोकसभक्षं निन्दा न कार्या न छेत्तव्यं-अमनोज्ञहेतो-र्द्रव्यस्य छेदो न कार्यः न भेत्तव्यं-तस्यैव भेदो न विधेयः न वहेयव्यं-न वधो विधेयः न जुगुप्सावृत्तिका वा-जुगुप्सावर्त्तनं लभ्या-उचितोत्पादयितुं-जनयितुं स्वस्य परस्य वा, प्रथमभावनाभिगमनार्थमाह-एवं-उक्तनीत्या श्रोत्रेन्द्रियविषया भावना-श्रोत्रेन्द्रियं निरोद्धव्यं अन्यथा अनर्थ इत्येवंरूपा परिभावना आलो-

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १६० ॥

चना तथा भावितो-वासितो भवति-जायते अन्तरात्मा, ततश्च मनोज्ञामनोज्ञत्वाभ्यां ये ‘सुष्मिदुष्मि’ति  
शुभाशुभाः शब्दा इति गम्यते तेषु क्रमेण यौ रागद्वेषौ तयोर्विषये प्रणिहितः-संवृतः आत्मा यस्य स तथा,  
साधुः-निर्वाणसाधनपरः मनोवचनकायगुप्तः संवृतः-संवरवान् पिहितेन्द्रियो-निरुद्धदृष्टीकः प्रणिहितेन्द्रियो  
वा तथाभूतः सन् चरेद्-अनुचरेदनुपालयेत् धर्म-चारित्रं १ ॥ ‘विहयं’ति द्वितीयं भावनावस्तु चक्षुरिन्द्रि-  
यसंवरो नाम, तच्चैवम्-चक्षुरिन्द्रियेण दृष्ट्वा रूपाणि नरयुग्मादीनि मनोज्ञभद्रकाणि सचित्ताचित्तमिश्रकाणि,  
केत्याह-काष्ठे-फलकादौ पुस्तो च-वस्त्रे चित्रकर्मणि प्रतीते लेप्ये-वृ(सृ)त्तिकाविशेषे शैले च पाषाणे दन्तक-  
र्मणि च-गजविषाणविषयायां रूपनिर्माणक्रियायां पञ्चभिर्वर्णैर्युक्तानीति गम्यते, तथा अनेकसंस्थानसंस्थि-  
तानि ग्रन्थिमं-ग्रन्थनेन निष्पन्नं मालावत् वेष्टिमं-वेष्टनेन निर्वृत्तं पुष्पगेन्दुकवत् पूरिमं-पूरणेन निर्वृत्तं पुष्प-  
पूरितवंशपंजरकरूपशेखरकवत् संघातिमं-संघातेन निष्पन्नं इतरेतरनिवेशितनालपुष्पमालावत् एषां  
द्वन्द्वः, कानि चैतानीत्याह-माल्यानि-मालासु साधूनि पुष्पाणीत्यर्थः, बहुविधानि चाधिकं-अत्यर्थं नयनम-  
नसां सुखकराणि यानि तानि तथा, तथा वनखण्डान् पर्वतांश्च ग्रामाकरनगराणि च प्रतीतानि क्षुद्रिका-  
जलाशयविशेषः पुष्करणी-पुष्करवती वर्चुला वापी-चतुष्कोणा दीर्घिका-ऋजुसारणी गुञ्जालिका-वक्रसा-  
रणी सरःसरःपङ्क्तिः यत्रैकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन् अन्यस्मादन्यत्र सञ्चारकपाटकेनोदकं सञ्चरति सा सरः-  
सरःपङ्क्तिः सागरः-समुद्रो विलपङ्क्तिः-धातुखनिपद्धतिः ‘खाइय’ति खातवलयं नदी-निम्नगा सरः-ख-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १६० ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

भावजो जलाश्रयविशेषः तडागः कृतकः ‘वप्पिण’स्ति केदाराः एषां द्वन्द्वः ततस्तान् दृष्ट्वेति प्रकृतं, किंभू-  
तान्? - फुल्लैः-विकसितैर्नीलोत्पलादिभिः पद्मैः-सामान्यैः पुण्डरीकादिभिः परिमण्डिता ये अभिरामाश्च-  
रम्यास्ते तथा तान्, अनेकशकुनिगणानां मिथुनानि विचरितानि-संचरितानि येषु ते तथा तान्, वरम-  
ण्डपाः-प्रतीताः, विविधानि भवनानि-गृहाणि तोरणानि-प्रतीतानि चैत्यानि-प्रतिमाः देवकुलानि-प्रतीतानि  
सभा-बहुजनोपवेशनस्थानं प्रपा-जलदानस्थानं आवसथः-परित्राजकवसतिः सुकृतानि शयनानि-शय्या  
आसनानि च-सिंहासनादीनि शिबिका-जम्पानविशेषः पार्श्वतो वेदिका उपरि च कूटाकृतिः .....-प्रतीतः  
शकटं-गत्री यानं-गत्रीविशेष एव युग्यं-वाहनं गोल्लदेशप्रसिद्धं वा जंपानं स्यन्दनो-रथविशेषः नरनारीग-  
णश्चेति द्वन्द्वस्ततः तांश्च, किंभूतान्? -सौम्याः-अरौद्राः प्रतिरूपाः-द्रष्टारं २ प्रति रूपं येषां ते दर्शनीयाश्च  
-मनोज्ञा ये ते तथा तान्, अलङ्कृतविभूषितान् क्रमेण सुकुटादिभिश्च वस्त्रादिभिश्च पूर्वकृतस्य तपसः प्रभा-  
वेन यत्सौभाग्यं-जनादेयत्वं तेन सम्प्रयुक्ता ये ते तथा तान्, तथा नटनर्त्तकजल्लमल्लमौष्टिकविडम्बककथकल्ल-  
वकलासकाख्यायकलङ्कमङ्कतूणइल्लतुम्बवीणिकतालाचरैः पूर्वव्याख्यातैः प्रक्रियन्ते यानि तानि तथा, तानि  
च कानीत्याह-बहूनि सुकरणानि-शोभनकर्माणि दृष्ट्वेति प्रकृतं, तेष्विति सम्बन्धात् तेषु अन्येषु चैवमादि-  
केषु रूपेषु मनोज्ञभद्रकेषु न श्रमणेन सक्तव्यं न रक्तव्यं यावत्करणात् न गर्दितव्यमित्यादीनि षट् पदानि  
दृश्यानि, न स्मृतिं वा मतिं वा तत्र-तेषु रूपेषु कुर्यात्, पुनरपि चक्षुरिन्द्रियेण दृष्ट्वा रूपाणि अमनोज्ञयाप-



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १६१ ॥

कानि 'किंते'त्ति तद्यथा—'गण्डी'त्यादि वातपित्तश्लेष्मसन्निपातजं चतुर्धा गण्डं तदस्यास्तीति गण्डी-गण्ड-  
मालावान् कुष्ठं-अष्टादशभेदमस्यास्तीति कुष्ठी, तत्र सप्त महाकुष्ठानि, तद्यथा—“अरुणो १ हुंवर २ रिश्य-  
जिह्व ३ करकपाल ४ काकन ५ पौंडरीक ६ दद्रु ७ कुष्ठानीति, महत्त्वं चैषां सर्वधात्वनुप्रवेशादसाध्यत्वाच्चेति,  
एकादश क्षुद्राणि, तद्यथा—स्थूलमारुक् १ महाकुष्ठै २ ककुष्ठा ३ चर्मदल ४ विसर्प ५ परिसर्प ६ विचर्चिका ७  
सिध्मः ८ किटिभः ९ पामा १० शतारुका ११ संज्ञानि एकादशेति सर्वाण्यपि अष्टादश, सामान्यतः कुष्ठं  
सर्वं सन्निपातजमपि वातादिदोषोत्कटतया भेदभाग्भवतीति, 'कुणि'त्ति गर्भाधानदोषात् ह्रस्वैकपादो न्यूनै-  
कपाणिर्वा कुणिः, कुंठ इत्यर्थः, 'उदर'त्ति जलोदरी तत्राष्टावुदराणि तेषां मध्ये जलोदरमसाध्यमिति तदिह  
निर्दिष्टं, शेषाणि त्वचिरोत्थानि साध्यानि, तानि चाष्टावेवं—“पृथक् ३ समस्तैरपि चानिलाचैः ४, झीहोदरं ५  
बद्धगुदं ६ तथैव । आगन्तुकं ७ सप्तमष्टमं तु, जलोदरं ८ चेति भवन्ति तानि ॥ १ ॥” “कच्छुल्ल'त्ति कण्डूति-  
मान् 'पङ्क'त्ति पदं श्लीपदं पादादौ काठिन्यं यदुक्तं—“प्रकुपिता वातपित्तश्लेष्माणोऽधः प्रपन्ना वंक्ष्णोरुजङ्घा-  
स्वतिष्ठमानाः कालान्तरेण पादमाश्रित्य शनैः शनैः शोफमुपजनयन्ति यत्तत् श्लीपदमाचक्षते” “पुराणोदक-  
भूयिष्ठाः, सर्वर्तुषु च शीतलाः । ये देशास्तेषु जायन्ते, श्लीपदानि विशेषतः ॥ १ ॥ पादयोर्हस्तयोर्वापि, जा-  
यते श्लीपदं नृणाम् । कर्णोष्ठनासास्वपि च, कचिदिच्छन्ति तद्विदः ॥ २ ॥” कुब्जः-पृष्ठादौ कुब्जयोगात् पङ्कलः-  
पङ्कलः चङ्गमणासमर्थः वामनः-खर्वशरीरः एते च मातापितृशोणितशुक्रदोषेण गर्भस्य दोषोद्भवाः कुब्जवाम-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १६१ ॥

आगम

(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत

सूत्रांक

[२९]

दीप

अनुक्रम

[४५]

नकादयो भवन्तीति, उक्तं च—“गर्भे वातप्रकोपेण, दोहदे वाऽपमानिते । भवेत् कुब्जः कुणिः पङ्गुर्मूको मन्मन एव वा ॥ १ ॥” ‘अंधिल्लग’स्ति अन्ध एवान्धिल्लको-जाल्यन्धः, ‘एगचक्खु’स्ति काणः, एतच्च दोषद्वयं गर्भगतस्योत्पद्यते जातस्य च, तत्र गर्भस्थस्य दृष्टिभागमप्रतिपन्नं तेजो जाल्यन्धत्वं करोति तदेकाक्षिगतं काणत्वं विधत्ते तदेव रक्तानुगतं रक्ताक्षं पित्तानुगतं पिङ्गाक्षं श्लेष्मानुगतं शुक्लाक्षमिति, ‘विणिह्य’स्ति विनिहृतचक्षुरित्यर्थः, तत्र यज्जातस्य चक्षुर्विनिहनेनान्धकत्वं काणत्वं वा तदनेन दर्शितमिति, ‘सप्पिसल्लग’स्ति सह पिसल्लकेन-पिशाचकेन वर्त्तते यः स तथा ग्रहगृहीत इत्यर्थः, अथवा सर्पतीति सर्पी-पीठसर्पी स च गर्भदोषात् कर्मदोषाद्वा भवति, स किल पाणिगृहीतकाष्ठः सर्पतीति, शल्यकः-शल्यवान् शूलादिशल्यभिन्न इत्यर्थः, व्याधिना-विशिष्टचित्तपीडया चिरस्थायिगदेन वा रोगेण-रूजया सद्योघातिगदेन वा पीडितो यः स तथा, ततो गण्ड्यादिपदानामेकत्वद्वन्द्वः तद् दृष्ट्वेति प्रकृतं, विकृतानि च मृतककडेवराणि ‘सकिमिण-कुहियं व’स्ति सह कृमिभिर्यः कुथितश्च स तथा तं वा द्रव्यराशिं-पुरुषादिद्रव्यसमूहं दृष्ट्वेति प्रकृतं, तेष्विति सम्बन्धात् तेषु गण्ड्यादिरूपेषु अन्येषु चैवमादिकेषु रूपेषु अमनोज्ञपापकेषु न श्रमणेन रोषितव्यं यावत्करणान्न हीलितव्यमित्यादीनि षट् पदानि दृश्यानि न जुगुप्सावृत्तिकापि लभ्या उचिता योग्येत्यर्थः उत्पादयितुं, निगमयन्नाह-एवं चक्षुरिन्द्रियभावनाभाविनो भवति अन्तरात्मेत्यादि व्यक्तमेव २ । ‘तइयं’ति तृतीयं भावनावस्तु गन्धसंवृतत्वं, तच्चैवम्-प्राणेन्द्रियेणाप्राय गन्धान् मनोज्ञभद्रकान् ‘किं ते’स्ति तद्यथा जलजस्थलजसर-

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १६२ ॥

सपुष्पफलपानभोजनानि प्रतीतानि कुष्ठं-उत्पलकुष्ठं 'तगर'त्ति गन्धद्रव्यविशेषः पत्रं-तमालपत्रं 'चोय'त्ति त्वक् दमनकः-पुष्पजातिविशेषः मरुकः-प्रतीतः एलारसः-सुगन्धिफलविशेषरसः 'पिक्कमंसि'त्ति पक्का-संस्कृता मांसीति-गन्धद्रव्यविशेषः गोशीर्षाभिधानं सरसं यच्चन्दनं तत्तथा कर्पूरो-घनसारः लवङ्गानि-फलविशेषाः अगुरुः-दारुविशेषः कुङ्कुमं-कश्मीरजं कल्लोलानि-फलविशेषाः ओशीरं-वीरणीमूलं श्वेतचन्दनं-श्रीखण्डं खेदो वा-स्यन्दश्चन्दनं-मलयजं सुगन्धानां-सद्गन्धानां साराङ्गानां-प्रधाचदलानां युक्तिः-योजनं येषु वरधूपवासेषु ते तथा ते च ते वरधूपवासाश्चेति समासः ततस्तानाघ्राय तेष्विति योगात् तेषु 'उजय-पिण्डिमनीहारिमगंधिएसु'त्ति ऋतुजः-कालोचित इति भावः पिण्डिमो-बहलः निर्हारिमो-दूरनिर्यायी यो गन्धः स विद्यते येषु ते तथा तेषु अन्येषु चैवमादिकेषु गन्धेषु मनोज्ञभद्रकेषु न श्रमणेन सक्तव्यमित्यादिकं किं ते इत्येतदन्तं पूर्ववत्, तथा अहिमृतादीन्येकादश प्रतीतानि नवरं वृकः-ईहासृगः द्वीपी-चित्रकः एषां चाहिमृतादीनां द्रव्यः द्वितीयाबहुवचनं दृश्यं तत आघ्रायेति क्रिया योजनीया, ततस्तेष्विति योगात् तेषु किंविधेष्वित्याह-मृतानि-जीवविमुक्तानि कुथितानि-कोथमुपगतानि विनष्टानि पूर्वाकारविनाशेन 'किमि-ण'त्ति कृमिवन्ति बहुदुरभिगन्धानि च-अत्यन्तममनोज्ञगन्धानि यानि तानि तथा तेषु अन्येषु चैवमादिकेषु गन्धेषु अमनोज्ञपापकेषु न श्रमणेन रोषितव्यमित्यादि पूर्ववत् ३। 'चउत्थं'ति चतुर्थं भावनावस्तु जिह्वेन्द्रियसंवरः, तच्चैवम्-जिह्वेन्द्रियेणास्वाद्य रसांस्तु मनोज्ञभद्रकान् 'किंते'त्ति तद्यथा अवगाहः-स्नेहबोलनं तेन पाकतो निर्वृत्त-

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १६२ ॥



आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

२८

मवगाहिमे-पकान्नं खण्डखाद्यादि विविधपानं-द्राक्षापानादि भोजनं-ओदनादि गुडकृतं-गुडसंस्कृतं खण्डकृतं च-खण्डसंस्कृतं लड्डुकादि तैलघृतकृतं-अपूपदि आखाद्येति प्रकृतं, तेष्विति सम्बन्धात् तेषु भक्ष्येषु-शष्कु-लिकाप्रभृतिषु बहुविधेषु-विचित्रेषु लवणरससंयुक्तेषु तथा मधुमांसे प्रतीते बहुप्रकारा मज्जिका निष्ठानकं-प्रकृष्ट-मूल्यनिष्पादितम् यदाह-“णिट्वाणं जा सयसहस्रं” [निष्ठानकथा या शतसहस्रं (व्ययितं) ] दालिकाम्लं-इड्डुरिकादि सैन्धाम्लं-सन्धानेनाम्लीकृतमामलिकादि दुग्धं दधि च प्रतीते ‘सर’ति सरको गुडघातकीसिद्धं मद्यं वरवारुणी-मदिरा सीधुकापिशायने-मद्यविशेषौ तथा शाकमष्टादशं यत्राहारे स शाकाष्टादशः ततश्चैषां द्रव्यैः ततस्ते च ते बहुप्रकाराश्चेति कर्मधारयः ततस्तेषु, शाकाष्टादशता चैवमाहारस्य-“सूयोदणो २ जवणं ३ तिण्णं य मंसाइ ६ गोरसो ७ जूसो ८ । भक्खा ९ गुललावणिया १० मूलफला ११ हरिययं १२ डागो १३ ॥१॥ होइ रसाल् य १४ तहा पाणं १५ पाणीय १६ पाणगं चैव १७। अट्टारसमो सागो निरुव हओ १८ लोहओ पिंडो ॥२॥”ति ‘तिण्णं य मंसाइ’ति जलचरादिसत्त्वानि ‘जूसो’ति मुद्गतन्दुलजीरकडुभाण्डादिरसः ‘भक्ख’ति खण्डखाद्यादीनि ‘गुललावणिय’ति गुलपर्पटिका लोकप्रसिद्धा गुडघाना वा मूलफलान्येकमेव पदं ‘हरित-गं’ति जीरकादि हरितं ‘डागो’ति वस्तुलादिभर्जिका ‘रसाल्’ति मज्जिका ‘पाणं’ति मद्यं ‘पाणीयं’ति जलं ‘पाणगं’ति द्राक्षापानकादि ‘सागो’ति तक्रसिद्धशाक इति, तथा भोजनेषु विविधेषु शालनकेषु मनोजवर्ण-गन्धरसस्पर्शानि तानि बहुद्रव्यैः सम्भृतानि च-उपस्कृतानि तानि तथा तेषु अन्येषु चैवमादिकेषु मनोज-

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूल+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]

दीप  
अनुक्रम  
[४५]

प्रश्नव्याक-  
र० श्रीअ-  
भयदेव०  
वृत्तिः  
॥ १६३ ॥

भद्रकेषु श्रमणेन न सक्तव्यमित्यादि पूर्ववत्, तथा पुनरपि जिह्वेन्द्रियेणास्वाद्य रसान् अमनोज्ञपापकान्  
'किंते'ति तद्यथा अरसानि-अविद्यमानाहार्यरसानि हिङ्गवादिभिरसंस्कृतानीत्यर्थः विरसानि-पुराणत्वेन  
विगतरसानि शीतानि-अनौचित्येन शीतलानि रूक्षाणि-निःस्नेहानि 'निज्जप्पि'ति निर्याप्यानि च याप-  
नाऽकारकाणि निर्वलानीत्यर्थः यानि पानभोजनानि तानि तथाऽतस्तानि, तथा 'दोसीणं'ति दोषान्नं रात्रिप-  
र्युषितं व्यापन्नं-विनष्टवर्णं कुथितं-कोथवत् पूतिकं-अपवित्रं कुथितपूतिकं वा-अत्यन्तकुथितं अत एवा-  
मनोज्ञं-असुन्दरं विनष्टं-अत्यन्तविकृतावस्थाप्राप्तं ततः प्रसूतः बहुदुरभिगन्धो येन तत्तथा तत एतेषां द्वन्द्वो-  
ऽतस्तानि तथा, तिक्तं च निम्बवत् कटुकं च शुष्यादिवत् कषायं च विभीतकवत् आम्लरसं च तक्रवत्  
लिद्रं च-अशैवलपुराणजलवत् नीरसं च-विगतरसमिति द्वन्द्वोऽतस्तानि आस्वाद्य तेष्विति योगात् तेष्वन्येषु  
चैवमादिकेषु रसेष्वमनोज्ञपापकेषु न श्रमणेन रोषितव्यमित्यादि पूर्ववत् ४। 'पंचमकं'ति पञ्चमकं भावनावस्तु  
स्पर्शनेन्द्रियसंवरः, तच्चैवं-स्पर्शनेन्द्रियेण स्पृष्ट्वा स्पर्शान् मनोज्ञभद्रकान् 'किंते'ति तद्यथा-‘द्वगमंडव'ति  
उदकमण्डपाः उदकक्षरणयुक्ताः हाराः प्रतीताः श्वेतचन्दनं-श्रीखण्डं शीतलं विमलं च जलं-पानीयं विविधाः  
कुसुमानां सस्तराः-शयनानि ओशीरं-वीरणीमूलं मौक्तिकानि-मुक्ताफलानि मृणालं-पद्मनालं 'दोसिण'ति  
चन्द्रिका चेति द्वन्द्वोऽतस्ताः, तथा पेहुणानां-मयूराङ्गानां य उत्क्षेपकः स च तालवृन्तं च-वीजनकं च एतानि  
वायुदीरकाणि वस्तूनि तैर्जनिताः सुखाः-सुखहेतवः शीतलाश्च-शीता ये ते तथा तांश्च पवनान्-वायून्

५ धर्मद्वारे  
परिग्रहवि-  
रतौ संव-  
रपादपः  
भिक्षाअ-  
सन्निधि-  
र्भावनाश्च  
सू० २९

॥ १६३ ॥

आगम  
(१०)

प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)

श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत  
सूत्रांक  
[२९]


दीप  
अनुक्रम  
[४५]

क?—ग्रीष्मकाले—उष्णकाले तथा सुखस्पर्शानि च बहूनि शयनानि आसनानि च प्रावरणगुंणांश्च—शीतापहा-  
रकत्वादीन् शिशिरकाले—शीतकाले अङ्गरेषु प्रतापनाः शरीरस्याङ्गारप्रतापनाः ताश्च आतपः—सूर्यतापः स्नि-  
ग्धमृदुशीतोष्णलघुकाश्च ये ऋतुसुखाः—हेमन्तादिकालविशेषेषु सुखकराः स्पर्शा अङ्गसुखं च निर्वृत्तिं च-  
मनःस्वास्थ्यं कुर्वन्ति ये ते तथा तान् स्पृष्ट्वा इति प्रकृतं, तेष्विति सम्बन्धात् तेषु अन्येषु चैवमादिकेषु स्पर्शेषु  
मनोज्ञभद्रकेषु न श्रमणेन सक्तव्यमित्यादि पूर्ववत् । तथा पुनरपि स्पर्शनेन्द्रियेण स्पृष्ट्वा स्पर्शान् अमनोज्ञपा-  
पकान् ‘किंते’ति तद्यथा अनेको—बहुविधो बन्धो—रज्ज्वादिभिः संयमनं बधो—विनाशः ताडनं—चपेटादिना  
अङ्गनं—तप्तायःशालाकयाऽङ्ककरणं अतिभारारोहणं अङ्गभञ्जनं—शरीरावयवप्रमोदनं सूचीनां मखेषु प्रवेशो  
यः स तथा गात्रस्य—शरीरस्य प्रक्षणनं—जीरणं गात्रप्रक्षणनं तथा लाक्षारसेन क्षारतैलेन तथा ‘कलकल’ति  
कलकलशब्दं करोति यत्तत्कलकलं अतितप्तमित्यर्थः तेन त्रपुणा सीसकेन—काललोहेन च यत् सेचनं—अभि-  
षेचनं यत्तत्तथा, हृडीबन्धनं—खोटकक्षेपः रज्ज्वा निगडैः संकलनं हस्ताण्डुकेन च यानि बन्धनानि तानि त-  
च्छब्दैरेवोक्तानि तथा कुम्भ्यां—भाजनविशेषे पाकः—पचनं दहनमग्निना सिंहपुच्छनं—शेफत्रोटनं उद्वन्धनं—  
उल्लम्बनं शूलभेदः—शूलिकाप्रोतनं गजचरणमलणं करचरणकर्णनासौष्ठशीर्षच्छेदनं च प्रतीतं जिह्वाञ्छनं—  
जिह्वाकर्षणं वृषणनयनहृदयाद्दन्तानां यद् भञ्जनं—आमर्दनं तत्तथा, योक्रं—यूपे वृषभसंयमनं लता—कम्बा  
कषो—वर्द्धः एषां ये प्रहारास्ते तथा पदपार्णिः—पादपार्णिः जानु—अष्टीवत् प्रस्तराः—पाषाणाः एषां यो निपातः



<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p style="text-align: center;"><b>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p style="text-align: center;"><b>श्रुतस्कन्धः [२], ----- अध्ययनं [५] ----- मूलं [२९-३०]</b></p>
<p style="text-align: center;"><b>प्रत</b> सूत्रांक <b>[२९-३०]</b></p> <p style="text-align: center;"><b>दीप</b> अनुक्रम <b>[४५-४६]</b></p>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="display: flex; justify-content: space-between;"> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>प्रश्नव्याकर० श्रीअभयदेव० वृत्तिः ॥ १६४ ॥</p> </div> <div style="width: 70%; border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>—पतनं स तथा, पीडनं—यन्नपीडनं कपिकच्छुः—तीव्रकण्डूतिकारकः फलविशेषः अग्निः—वह्निः ‘विच्छुयडक्क’त्ति वृश्चिकदंशः वातातपदंशमशकनिपातश्चेति द्वन्द्वः ततस्तान् स्पृष्ट्वा दुष्टनिषद्या—दुरासनानि दुर्निषीधिकाः—कृष्टस्वाध्यायभूमीः स्पृष्ट्वा तेष्विति सम्बन्धात् तेषु कर्कशगुरुशीतोष्णरूक्षेषु बहुविधेषु अन्येषु चैवमादिकेषु स्पृष्ट्वा शैष्वमनोज्ञपापकेषु न तेषु श्रमणेन रोषितव्यमित्यादि पञ्चमभावनानिगमनं पूर्ववत् ५ । इह पञ्चमसंवरे शब्दादिषु रागद्वेषनिरोधनं यद्भावनात्वेनोक्तं तत्तेषु तदनिरोधे परिग्रहः स्यादिति मन्तव्यं, तद्विरत एव चापरिग्रहो भवतीति, आह च—“जे सहस्रवरसंगंधमागए, फासे य संपप्प मणुण्णपावए । गेही पओसं न करेज्ज पंडिए, स होति दंते विरए अकिंचणे ॥ १ ॥” त्ति [ य आगतान् शब्दरूपरसगन्धान् स्पर्शाश्च मनोज्ञपापकान् संप्राप्य । गृद्धिं प्रद्वेषं च न कुर्यात् पण्डितः स भवति दान्तो विरतोऽकिञ्चनः ॥ १ ॥ ] ‘एवमिण’मित्यादि पञ्चमसंवराध्ययननिगमनं पूर्ववदिति । अथ संवरपञ्चकस्य निगमनार्थमाह—एतानि पञ्चापि हे सुव्रत शोभननियम! महाव्रतानि संवररूपाणि हेतुशतैः—उपपत्तिशतैर्विचिक्तैः—निर्दोषैः पुष्कलानि—विस्तीर्णानि यानि तानि तथा, यानि केल्याह—कथिताः—प्रतिपादिताः अर्हच्छासने—जिनागमे पञ्च समासेन—सङ्क्षेपेण संवराः—संवरद्वाराणि विस्तारेण तु पञ्चविंशतिः प्रतिव्रतं भावनापञ्चकस्य संवरतया प्रतिपादितत्वादिति । अथ संवरासेविनो भाविनीं फलभूतामवस्थां दर्शयति—समितः ईर्यासमित्यादिभिः पञ्चविंशतिसङ्ख्याभिरनन्तरोदिताभिः भावनाभिः सहितो ज्ञानदर्शनाभ्यां सुविहितो वा संवृतश्च कषायेन्द्रियसंवरेण यः स तथा सदा—</p> </div> <div style="width: 15%; border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>५ धर्मद्वारे परिग्रहविरतौ संवरपादपः भिक्षाअसन्निधिर्भावनाश्च सू० २९ ॥ १६४ ॥</p> </div> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p>अत्र द्वितिये श्रुतस्कन्धे पञ्चमं अध्ययनं परिसमाप्तं</p>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<b>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b> <b>श्रुतस्कन्धः [--], ----- अध्ययनं [--] ----- मूलं [२९-३०]</b>
<b>प्रत</b> <b>सूत्रांक</b> <b>[२९-३०]</b>  <b>दीप</b> <b>अनुक्रम</b> <b>[४५-४७]</b>	<p style="text-align: center;">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px; text-align: center;"> <p>सर्वदा यत्नेन-प्राप्तसंयमयोगेषु प्रयत्नेन घटनेन-अप्राप्तसंयमयोगप्राप्त्यर्थघटनया सुविशुद्धं दर्शनं-श्रद्धान- रूपं यस्य स तथा, एतान् उक्तप्रकारान् संवरान् अनुचर्य-आसेव्य संयतः-साधुः चरमशरीरधरो भविष्यति पुनः शरीरस्याग्रहीता भविष्यतीति भावः, वाचनान्तरे पुनर्निगमनमन्यथाऽभिधीयते यदुत एतानि पञ्चापि सुव्रत! महाव्रतानि लोकधृतिद्वयानि श्रुतसागरदर्शितानि तपःसंयमव्रतानि शीलगुणधरव्रतानि सत्यार्ज- वव्रतानि नरकतिर्यञ्चानुजदेवगतिविवर्जकानि सर्वजिनशासनकानि कर्मरजोविदारकाणि भवशतविमो- चकानि दुःखशतविनाशकानि सुखशतप्रवर्त्तकानि कापुरुषदुरुत्तराणि सत्पुरुषतीरितानि निर्वाणगमनस्वर्ग- प्रयाणकानि पञ्चापि संवरद्वाराणि समाप्तानीति ब्रवीमीति ॥ समाप्ता श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गटीका ॥</p> <p>नमः श्रीवर्द्धमानाय, श्रीपार्श्वप्रभवे नमः । नमः श्रीमत्सरस्वत्यै, सहायेभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ इह हि गमनिकार्यं यन्मयाऽभ्यूहयोक्तं, किमपि समयहीनं तद्विशोध्यं सुधीभिः । नहि भवति विधेया सर्वथाऽस्मिन्नुपेक्षा, दयितजिनमतानां ताधिनां चाङ्गिवर्गे ॥ २ ॥ परेषां दुर्लक्ष्या भवति हि विवक्षा स्फुटमिदं, विशेषाद्बुद्धानामतुलवचनज्ञानमहसाम् । निराग्रायाधीभिः पुनरतितरां मादृशजनैः, ततः शास्त्रार्थं मे वचनमनघं दुर्लभमिह ॥ ३ ॥ ततः सिद्धान्ततत्त्वज्ञैः, स्वयमूढ्यः सुयत्नतः । न पुनरस्मदाख्यात, एव ग्राह्यो नियोगतः ॥ ४ ॥ तथैव माऽस्तु मे पापं, सङ्गमत्युपजीवनात् । वृद्धन्यायानुसारित्वात्, हितार्थं च प्रवृत्तितः ॥ ५ ॥</p> </div> <p style="text-align: center;">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<b>अत्र द्वितियः श्रुतस्कन्धः परिसमाप्तः</b>

<b>आगम</b> <b>(१०)</b>	<p align="center"><b>प्रश्नव्याकरणदशा” - अंगसूत्र-१० (मूलं+वृत्तिः)</b></p> <p align="center"><b>श्रुतस्कन्धः [--], ----- अध्ययनं [--] ----- मूलं [२९-३०]</b></p>
<p>प्रत सूत्रांक [२९-३०]</p> <p>दीप अनुक्रम [४५-४७]</p>	<p align="center">मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [१०], अंग सूत्र - [१०] “प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 10px;"> <p>प्रश्नव्याक- र० श्रीअ- भयदेव० वृत्तिः ॥ १६५ ॥</p> <p>यो जैनाभिमतं प्रमाणमनघं व्युत्पादयामासिवात्, प्रस्थानैर्विविधैर्निरस्य निखिलं बौद्धादिसम्बन्धि तत् । नानावृत्तिकथाकथापथमतिक्रान्तं च चक्रे तपः, निःसम्बन्धविहारमप्रतिहतं शास्त्रानुसारात् तथा ॥ ६ ॥ तस्याचार्यजिनेश्वरस्य मदवद्वादिप्रतिस्पर्द्धिनस्तद्वन्धोरपि बुद्धिसागर इति ख्यातस्य सुरेशुवि । छन्दोबन्धनिबद्धबन्धुरवचःशब्दादिसल्लक्ष्मणः, श्रीसंविन्नविहारिणः श्रुतनिधेश्चारित्रचूडामणेः ॥ ८ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्यसूरिणा विवृतिः कृता । प्रश्नव्याकरणाङ्गस्य, श्रुतभक्त्या समासतः ॥ ९ ॥ निर्वृतिककुलनभस्तलचन्द्रोणाख्यसूरिमुख्येन । पण्डितगणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥ १० ॥</p> <p align="center">इति श्रीचन्द्रकुलाम्बरनभोमणिश्रीमदभयदेवाचार्यविहितविवरणयुतं प्रश्नव्याकरणनामकं दशममङ्गं समाप्तिमगमत् ॥ श्रीप्रश्नव्याकरणं सम्पूर्णम् ॥ ग्रंथाग्रं ५६३०</p> <p align="right">ग्रन्थकृतः प्रस्ततिः ॥ १६५ ॥</p> </div> <p align="center">Jain Education International For Personal &amp; Private Use Only www.jainelibrary.org</p>
	<p align="center"><b>मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः (आगमसूत्र १०)</b></p> <p align="center"><b>“प्रश्नव्याकरण-दशा” परिसमाप्तः</b></p>



नमो नमो निम्मलदंसणस्स  
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

पूज्य आगमोद्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधितः संपादितश्च  
प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्र” [मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः]

(किञ्चित् वैशिष्ट्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुनः संकलितः  
“प्रश्नव्याकरणदशा” मूलं एवं वृत्तिः” नामेण  
परिसमाप्तः

Remember it's a Net Publications of 'jain\_e\_library's'